गोवर्धन वास्तव्य परम पूज्य पाद
श्रीश्रील कृष्णदास सिद्ध बाबा-विरचित

श्री श्री गौर गोविन्द-लीलामृत गुटिका

पण्डित 108 श्री श्रीमद् अनन्तदास बाबा जी महाराज

Scanned by CamScanner

समर्पण

कलियुग पावनावतार श्री श्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु
जिनकी कृपा से मुझ जैसे अज्ञ व्यक्ति के
चित्त में भी स्फूर्ति प्राप्त हुई है,
उन्हीं लीला स्मरण-निष्ठ
वैष्णवगणों के श्री कर
कमलों में, गंगाजल
से गंगा पूजा
के समान,
परम भक्ति पूर्वक
यह ग्रंथ-रत्न रूपी निर्माल्य
समर्पित
हुआ
है।

Scanned by CamScanner

नित्यलीला-सूची पत्र

विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	1
निशांत-कृत्य	2
निशांत लीला नवद्वीप	5
निशांत लीला ब्रजधाम	9
प्रातर्लीला नवद्वीप	18
प्रातर्लीला ब्रजधाम	21
पूर्वाह्न लीला नवद्वीप	55
पूर्वाह्न लीला ब्रजधाम	55
मध्याह्न लीला नवद्वीप	66
मध्याह्न लीला ब्रजधाम	67
अपराह्न लीला नवद्वीप	147
अपराह्न लीला ब्रजधाम	148
सायाह्न लीला नवद्वीप	158
सायाह्न लीला ब्रजधाम	158
प्रदोष लीला नवद्वीप	170
प्रदोष लीला ब्रजधाम	170
रात्रि लीला नवद्वीप	182
रात्रि लीला ब्रजधाम	183

नैमित्तिक लीला- सूची पत्र

विषय	पृष्ठ
बसंत पंचमी से फल्गुनी पूर्णिमा तक नवद्वीप में उत्सव का स्थान निरूपण	205
बसन्त उत्सव	207
श्रीअद्वैताचार्य प्रभु का आविर्भाव महोत्सव	222
श्रीमन्नित्यानंद प्रभु का आविर्भाव महोत्सव	223
होली लीला	223
श्रीशिव चतुर्दशी लीला	232
फाल्गुनी पूर्णिमा (महाप्रभु का आविर्भाव महोत्सव)	233
झूलन लीला	235
यूथेश्वरी मिलन	238

Scanned by CamScanner

विषय पृष्ठ

श्रीराम नवमी...238
श्रीराधा का जावटालय गमन...238
दान लीला...239
श्रीनृसिंह चतुर्दशी...243
श्रीराधा का पित्रालय गमन...243
नौका विहार लीला...244
झूलन लीला...245
रक्षा बन्धन लीला...248
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी प्रसंग...248
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी लीला...251
नवमी लीला...254
श्रीराधाष्टमी लीला...255
नवमी लीला...259
श्रीश्री वामन देव का जन्म महोत्सव...260
श्रीश्रीराधारानी की वृन्दावन में राज्याभिषेक लीला...261
श्रीराधा का जावटालय गमन...263
दीपावली तथा अन्नकूट लीला प्रसंग...263
कार्तिक अमावस्या दीपदान लीला...264
प्रतिपद लीला अन्नकूट महोत्सव...266
भ्रातृ द्वितीया लीला...267
चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण कालीन लीला...268

परिशिष्ट (स्मरण मंजरी)

निशांत लीला...269
प्रातर्लीला...274
पूर्वाह्न लीला...290
मध्याह्न लीला ...301
अपराह्न लीला...329
सायाह्न लीला...331
प्रदोष लीला...335
रात्रि लीला...340

Scanned by CamScanner

पण्डित १०८ श्रीमद् अनन्तदास बाबाजी महाराज

Scanned by CamScanner

श्रीअद्वैत-श्रीकर युगल चिह्न

Scanned by CamScanner

श्रीअद्वैत- श्रीपद युगल चिह्न

Scanned by CamScanner

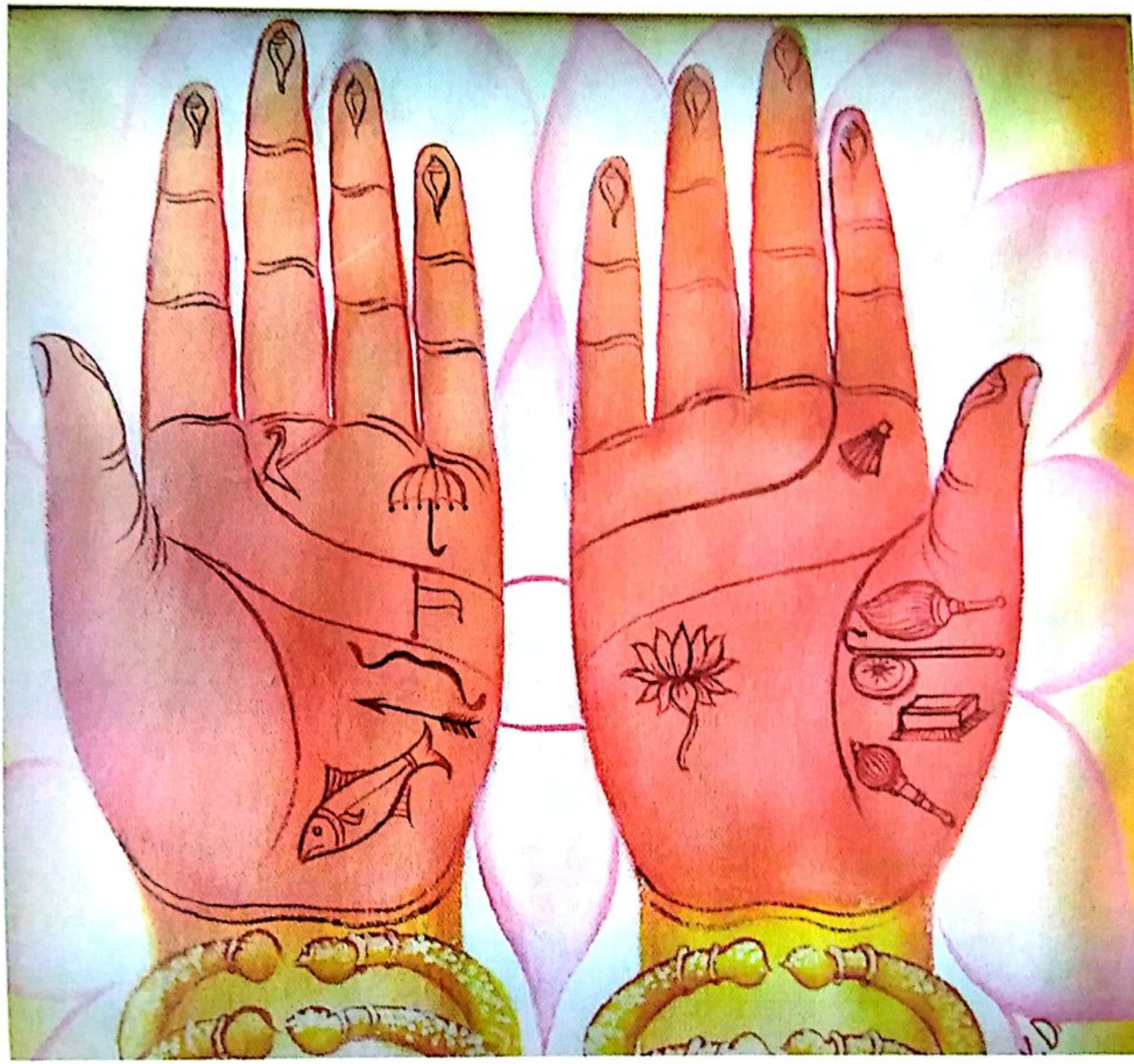

श्रीनित्यानन्द-श्रीकर युगल चिह्न

Scanned by CamScanner

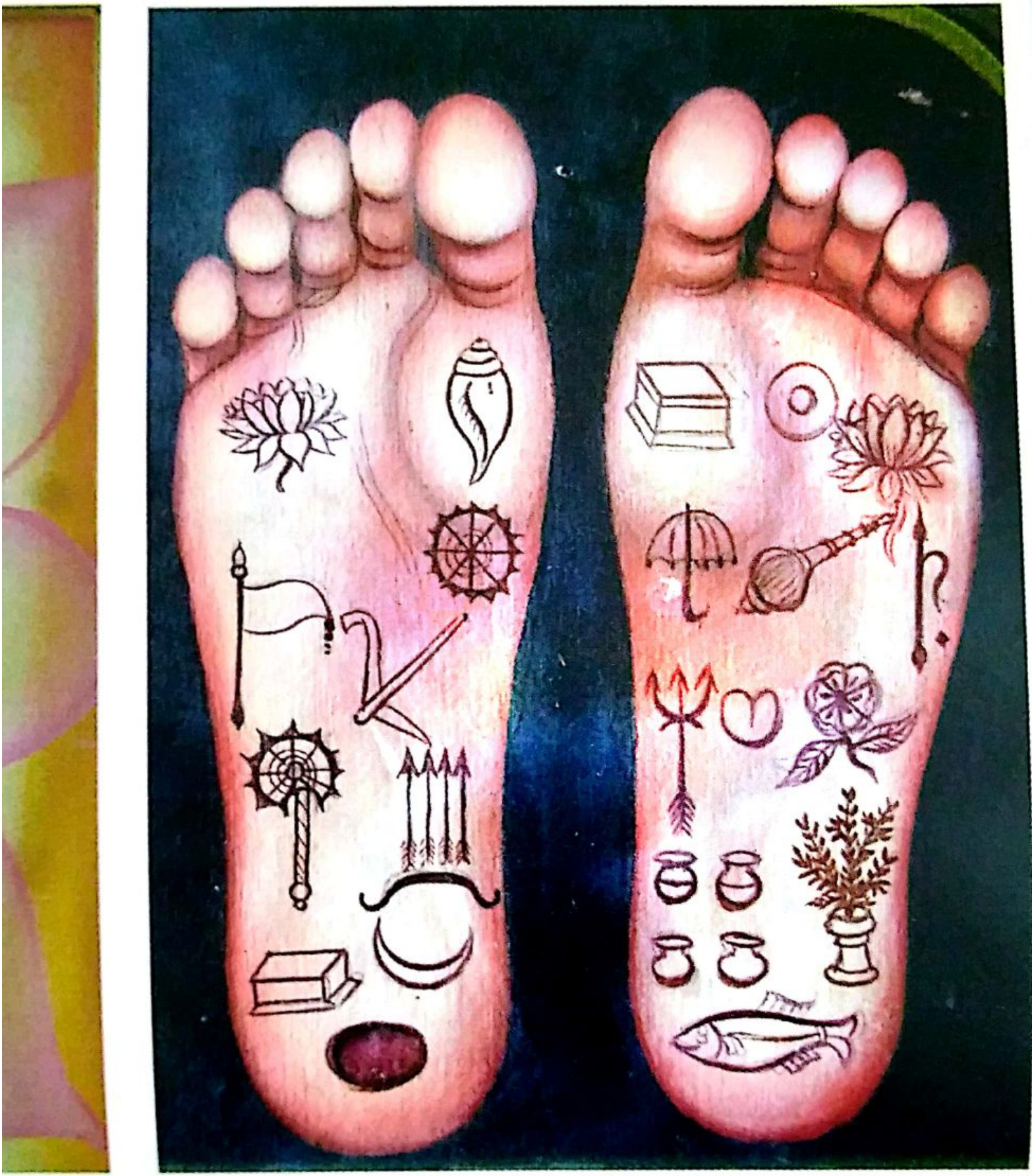

श्रीनित्यानन्द- श्रीपद युगल चिह्न

Scanned by CamScanner

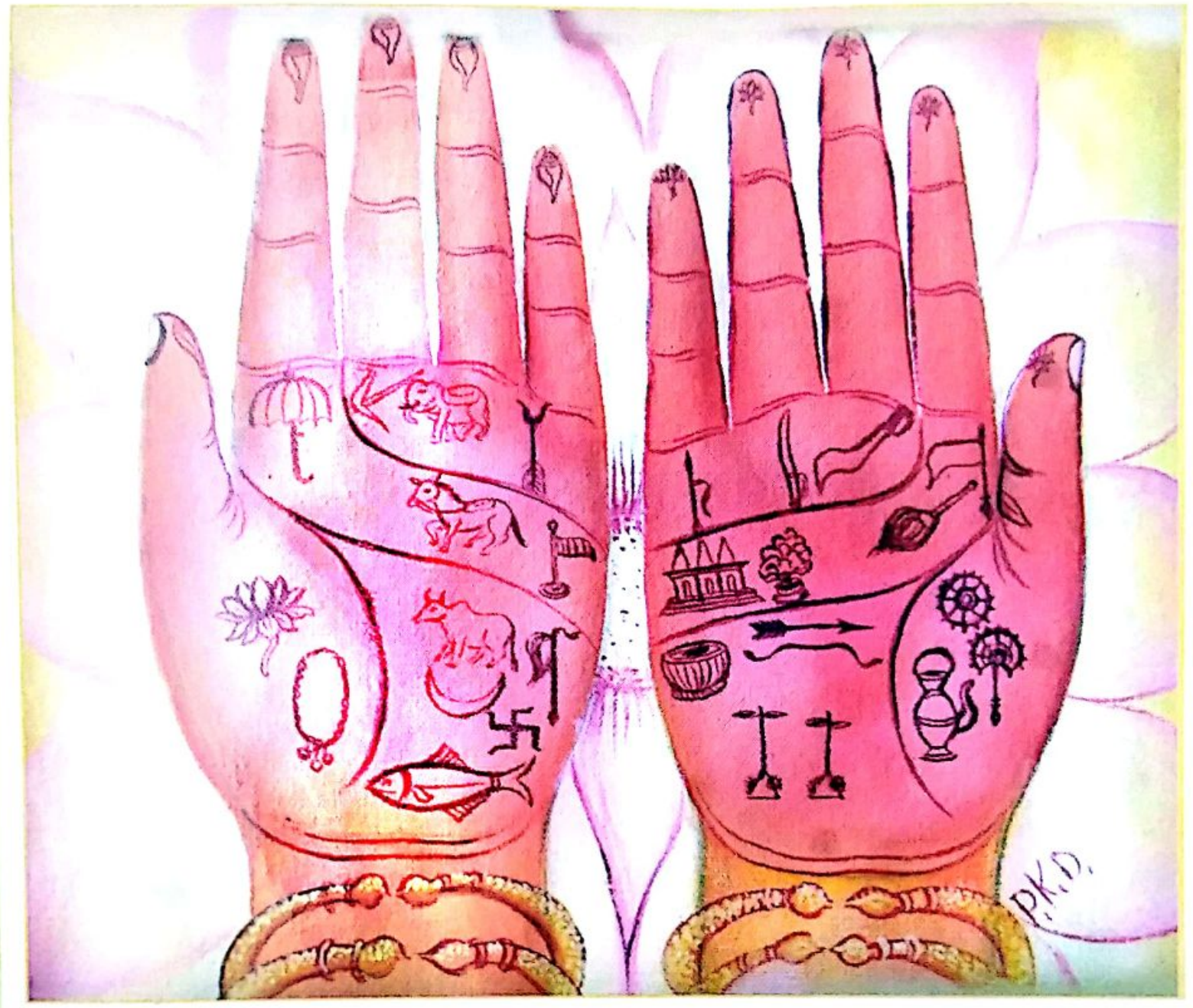

श्रीगौरांग-श्रीकर युगल चिह्न

Scanned by CamScanner

श्रीगौरांग- श्रीपद युगल चिह्न

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण-श्रीकर युगल चिह्न

(वर्णन पृष्ठ संख्या १३७ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

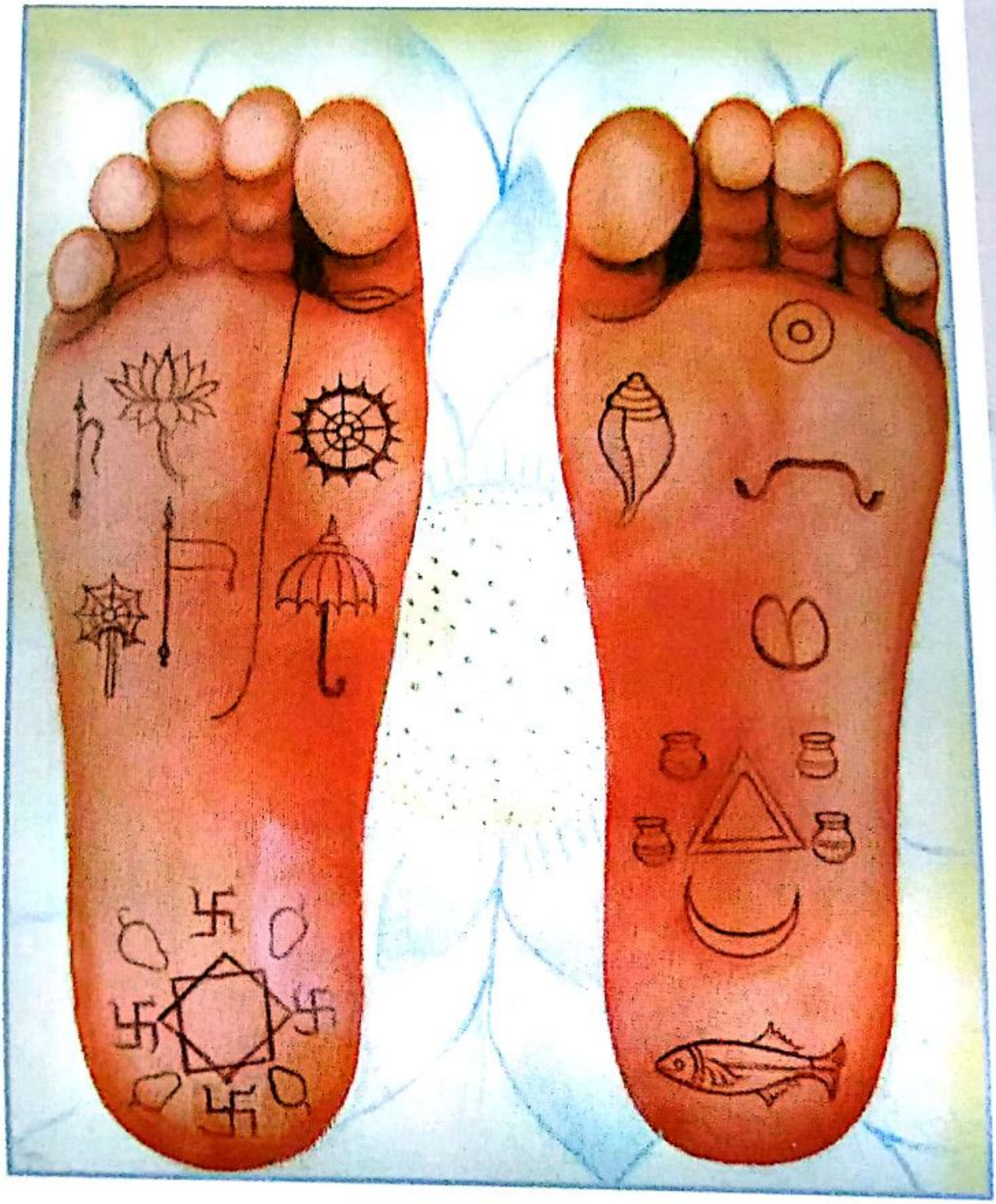

श्रीकृष्ण- श्रीपद युगल चिह्न

(वर्णन पृष्ठ संख्या १३५ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

श्रीराधा-श्रीकर युगल चिह्न

(वर्णन पृष्ठ संख्या

Scanned by CamScanner

श्रीराधा- श्रीपद युगल चिह्न

Scanned by CamScanner

श्री श्री गौर विधुर्जयति

श्री श्री गौरगोविन्द-लीलामृत गुटिका

मंगला चरणम्

अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
सव्वैराम्नाय चूड़ामणिभिरपि न संलक्ष्यन्ते यत् स्वरूपम्
श्रीशब्रह्माद्यगम्या सुमधुर-पदवी कापि यस्यातिरम्या।
येनाकस्माज्जगत् श्रीहरिरस मदिरा मत्तमेतदव्यधायि-
श्रीमच्चैतन्यचंद्रः स किम् मम गिरां गोचरश्चेतसो वा।।

अखिल श्रुति शिरोमणिगण भी जिनके स्वरूप का सम्यक रूप से निर्णय नहीं कर पार्ती, जिनके अर्पित अति रम्य कोई अनिर्वचनीय सुमधुर भक्ति पथ ब्रह्मा, महादेव तथा कमलादेवी के लिए भी दुर्ज्ञेय, जो इस विश्व को अकस्मात श्री श्री राधा-माधव के प्रेम रस मदिरा में प्रमत्त कर रहे हैं—क्या वे ही श्रीमच्चैतन्य चन्द्रमा मेरे वाक्य तथा मन के गोचर होंगे ?

गौर-श्याम-रुचोज्ज्वलाभिरमलैरक्ष्मोर्विलासोत्सवै
र्नृत्यंतीभिरशेष मादन-कला-वैदग्ध्य-दिग्धात्मभिः।
अन्योन्य-प्रियता-सुधा-परिमलस्तोमोन्मदाभिः सदा
राधामाधव-माधुरिभिरभितश्चित्तं ममाक्रम्यतां।।

राधा माधव की माधुरी समूह गौरश्याम दीप्ति द्वारा उज्ज्वल, नयन युगल के अमल उत्सव-विलास से नृत्यशील, अशेष मादन कला वैदग्धी द्वारा लिप्त स्वरूप एवं परस्पर के प्रियता-सुधा-परिमल द्वारा परमामोदित-वही राधामाधव माधुरी-समूह द्वारा सर्वदा मेरे चित्त को सर्वतोभावेन आक्रान्त करें।

संख्यापूर्वक नामगाननतिभिः कालावसानीकृतौ
निद्राहारविहारकादिविजितौ चात्यंतदीनौ च यौ।
राधाकृष्णगुणस्मृतेर्मधुरिमानन्देन सन्मोहितौ
वन्दे रूप-सनातनौ-रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ।।

जिन्होंने संख्या पूर्वक नाम कीर्तन तथा नमस्कारादि भजन में नियत काल व्यतीत किया, भजन के प्रभाव से आहार-निद्रा को जय करके जो अष्ट कालीन श्री श्री राधाकृष्ण के माधुर्य-स्मरणानंद में विवश हुए जा रहे हैं- उन्हीं दैन्य की खनि (खान) श्री रूप, सनातन, गोपाल भट्ट, रघुनाथ भट्ट, रघुनाथ दास तथा श्री जीव इन षड् गोस्वामियों के श्री चरणों की वन्दना करता हूँ।

Scanned by CamScanner

निशान्तकृत्य

साधक ब्रामुहूर्त में शय्या त्यागकर-

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे॥
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण पाहिमाम्
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण रक्षमाम्॥

इत्यादि नाम कीर्तन करें। तत्पश्चात् श्रीगुरु के चरणों में प्रणाम करके पृथ्वी से प्रार्थना करें।

"समुद्र मेखले देवि! पर्व्वत स्तनमंडले।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्य मे॥"

तत्पश्चात् बाहर जाकर हस्तपदादि धोकर दन्त धावन करें। तब रात्रि में पहने गये वस्त्रों का परित्याग करके धुले हुए वस्त्रों को धारण कर गृह के मध्य पूर्वाभिमुख होकर शुद्धासन पर बैठें एवं साधारण आचमन करते हुए अपने ईष्ट मंत्र का जप करें। तब निश्चल मन से श्री गुरुदेव का स्मरण करें यथा-

"कृपामरंदान्वित-पाद पंकजं श्वेताम्बरं गौररुचिं सनातनम्।
सन्दं सुमाल्याभरणं गुणालयं स्मरामि सद्भक्तिमयं गुरुं हरिम्॥"

तत्पश्चात् श्रीगुरुचरणों में प्रणाम करें—

"अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

उसके पश्चात परमगुरु, परात्पर गुरु, परमेष्ठी गुरु सभी को प्रणाम करके श्री गुरुप्रणाली के अनुसार सभी गुरुवर्ग के श्री चरणों में प्रणाम करें। तत्पश्चात् श्री मन्महाप्रभु के चरणों में प्रणाम एवं विज्ञप्ति (प्रार्थना) पाठ करें।

"आनन्दलीलामय-विग्रहाय हेमाभ-दिव्यच्छवि-सुन्दराय।
तस्मै महाप्रेमरसप्रदाय, चैतन्य-चन्द्राय नमो नमस्ते।।"

विज्ञप्ति (प्रार्थना)

"संसार-दुःखजलधौ पतितस्य काम-क्रोधादिनक्रमकरैः कवलीकृतस्य।
दुर्व्वासना-निगड़ितस्य निराश्रयस्य चैतन्यचंद्र मम देहि पदावलम्बम्॥"

इसी प्रकार से श्री नित्यानंद प्रभु, श्री अद्वैत प्रभु, श्री गदाधर, श्रीवास इन सभी का प्रणाम मंत्र एवं विज्ञप्ति पाठ करें। * तत्पश्चात् श्रीनवद्वीप एवं श्री गंगा को प्रणाम करें। तब अष्ट महान्त द्वादस गोपाल, अष्ट

* सभी का प्रणाम-मंत्र आदि उद्धृत करना सम्भव नहीं। साधनामृत चन्द्रिकादि से वैष्णवों की नित्य कर्म पद्धति संग्रह करें।

Scanned by CamScanner

कविराज, अष्ट गोस्वामी एवं चार द्वारपालों के चरणों में प्रणाम करें। तत्पश्चात् वृन्दावन में श्री गुरु रूपा सखी के चरणों में प्रणाम करें–

"राधा–सम्मुख–संसक्तां सखीसंग–निवासिनीम्।
तामहं सततं वंदे परां गुरु रूपा–सखीम्॥"

तत्पश्चात् उसी सिद्ध प्रणाली अनुसार श्री गुरु मंजरी वर्ग का नाम उच्चारण करके सभी के चरणों में "अमुक मंजरी श्री चरण कमलेभ्यो नमः" इत्यादि मंत्रों द्वारा प्रणाम करें। तत्पश्चात् श्री राधारानी के श्री चरणों में प्रणाम एवं विज्ञप्ति पाठ करें।

"रसोत्सव–विलासिन्यै नमस्ते परमेश्वरी। कृष्णप्राणाधिके राधे परमानंदविग्रहे।।
प्रणमामि महा नृत्यमर्यीत्वामति सुन्दरीं। रत्नालंकृतशोभाढ़यां कुसुमार्चितविग्रहाम्॥"

विज्ञप्तिः

"भवतीमभिवाद्य चाटुभिर्वर मूर्जेश्वरि वर्यमर्थये।
भवदीयतया कृपां यथा मयि कुर्यादधिकां वकान्तकः॥"

तत्पश्चात श्री कृष्ण का प्रणाम एवं विज्ञप्ति–पाठ करें–

"नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च।
जगत्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।
नमो नलिननेत्राय वेणुवाद्य–विनोदिने।
राधाधरसुधापान–शालिने वनमालिने।।"

विज्ञप्तिः

"प्रणिपत्य भवन्तमर्थये पशुपालेन्द्रकुमार! काकुभिः।
ब्रजयौवतमौलि–मालिका करुणापात्रमिमं जनं कुरु।।"

तत्पश्चात् श्री बलदेव, श्री यशोदा, श्री नन्द, श्री रोहिणी, श्री वृषभानु, श्री कीर्तिदा, श्री पूर्णिमासी के चरणों का स्मरण एवं प्रणाम करें उसके पश्चात् श्री वृन्दा, श्री तुलसी, श्री वन्दावन, श्री यमुना, श्री राधाकुण्ड श्यामकुण्ड एवं बृजवासी गणों के चरणों में प्रणाम करें। तत्पश्चात् श्री वैष्णव चरणों में प्रणाम करें–*

* श्रील सिद्ध बाबा द्वारा रचित साधनामृत चंद्रिका के अनुसार विस्तृत निशांत कृत्य श्लोकानुवाद के सहित लिखा गया है। जो संक्षिप्त भाव से वंदना करके लीला स्मरण करने के इच्छुक हैं वे कृपया–

वंदेऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च।
श्रीरूपं साग्रजातं सहगणरघुनाथान्वितं तं सजीवम्॥
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्ण चैतन्य देवम्।
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललिता श्रीविशाखान्वितांश्चा॥

इत्यादि श्लोक पाठ द्वारा सभी को प्रणाम करके स्मरण आरम्भ कर सकते हैं।

Scanned by CamScanner

"वांछाकल्पतरूभ्यश्च कृपासिंधुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।"

तत्पश्चात् संख्या नाम कीर्तन सहित निशांत लीला स्मरण एवं यथा समय अष्ट कालीय लीला स्मरण करें।

श्रीमती राधारानी का बरसाना एवं जावट में गमनागमन एवं स्थितिकाल —

१. माघी शुक्ल तृतीया से वैशाख शुक्ल द्वितीया तक—३ मास बरसाना में स्थिति।

२. वैशाख शुक्ल तृतीया से अषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा तक —१ मास २९ दिन यावट में स्थिति।

३. अषाढ़ शुक्ल द्वितीया रथ यात्रा से आश्विन शुक्ल द्वादशी तक—३ मास ११ दिन बरसाना में स्थिति।

४. आश्विन शुक्ल त्रयोदशी से माघ शुक्ल द्वितीया तक—३ मास २० दिन यावट में स्थिति।

Scanned by CamScanner

श्री श्री गौर विधुर्जयति

श्री श्री गौरगोविन्द-लीलामृत गुटिका

अथ श्री श्री अष्ट कालीय लीला

निशांत लीला: नवद्वीप (६ दण्ड)

(रात्रि ३ बजकर ३६ मि. से प्रातः ६ बजे तक)

श्री श्री नवद्वीप लीला की वन्दना :

श्रीगौरांगमहाप्रभोश्चरणयो र्या केश-शेषादिभिः
सेवागम्यतया स्वभक्तविहिता सान्यैर्यया लभ्यते।
तां तन्मानसिकीं स्मृतिं प्रथयितुं भाव्या सदा सत्तमै
नौंमि प्रात्यहिकं तदीय चरितं श्रीमन्नवद्वीपजम्॥

ब्रह्मा, शिव तथा शेषादि के लिए भी अगम्य जो श्री गौरांग महाप्रभु की श्रीचरणसेवा उनके निज भक्त गणों को ही प्राप्त होती है एवं महात्मा गण जो सतत भावना करते हैं, अन्यान्य भी जिससे वही सेवा लाभ करने में सक्षम हों, इसीलिए मैं उनकी मानस सेवा स्मृति का विस्तार करते हुए श्रीमन्नवद्वीप में नित्य होने वाली लीला को प्रणाम करता हूँ।

श्री नवद्वीप लीला का अष्ट कालीय सूत्र :

रात्र्यन्ते शयनोत्थित सुरसरित्स्नातो वभौ यः प्रगे,
पूर्वाह्णे सगणैर्लसत्युपवने तैर्भाति मध्याह्न के।
यः पूर्यामपराह्णके निजगृहे सायं गृहेऽथांगने,
श्रीवासस्य निशामुखे निशिवसन् गौरः स नो रक्षतु।।

जो निशांत काल में शय्या त्याग करते हैं, प्रातः गंगा स्नान करते हैं, पूर्वाह्ण एवं मध्याह्न में अपने गणों सहित उपवन में नाना लीलाओं द्वारा शोभा को प्राप्त हो रहे हैं, अपराह्न में नगर भ्रमण करके सायंकाल में अपने गृह में एवं प्रदोष तथा रात्रि में श्री वास आँगन में रहते हैं, वही गौरांग महाप्रभु हम सब की रक्षा करें।

Scanned by CamScanner

श्री श्री नवद्वीप निशांत लीला सूत्र :

प्रगे श्रीवासस्य द्विजकुलरवैर्निष्कुट वरे,
प्रतिध्वान-प्रखैः सपदि गतनिद्रं पुलकितं।
हरेः पार्श्वे राधास्थितिमनुभवन्तं नयनजैः
जलैः संसिक्तांग वर-कनकगौरं भज मनः।।

जो निशांत में श्री वास पुष्पोद्यान में पक्षी गणों के कल कूजन को श्रवण कर निद्राभंग होने पर ब्रज भाव में पुलकित चित्त से निकुँज मंदिर में कृष्ण के निकट श्री राधा की स्थिति का अनुभव कर अश्रुधारा से सिक्त होते हैं- हे मन! तुम शुद्ध कनक कांतिमय उन्हीं श्री गौर सुन्दर का भजन करो।

श्री श्री नवद्वीपः महाप्रभु की शयन शोभा एवं जागरण :

श्री गंगा से घिरा हुआ चिन्मधुर श्री नवद्वीप धाम विराजित है। इसके मध्य में श्री मन्महाप्रभु का आलय है। इसके ईशान कोण में श्री वास का आलय है। इसके ईशान कोण में श्री वास का पुष्पोद्यान गंगा तीर तक विस्तृत है। जो छः ऋतुओं से निसेवित एवं शोभायमान परिवेश के कारण अतिशय मनोरम है। इसी उद्यान में श्री मन्महाप्रभु, श्री नित्यानंद प्रभु एवं श्री अद्वैत प्रभु के नाना मणि रत्नों से जड़ित तीन चौआरी मंडप स्थित हैं। मध्य में श्री मन्महाप्रभु का हेमकान्त मणिमय, दक्षिण में श्री नित्यानंद प्रभु का सूर्यकान्त मणिमय एवं उत्तर में श्री अद्वैत प्रभु का चन्द्रकान्त मणिमय मंडप स्थित है। प्रत्येक मंडप की चारों दिशाओं के वहिर्द्वार, वनमाला एवं पुष्प मालाओं द्वारा शोभा पा रहे हैं। विविध मणियों द्वारा जड़ित दीवारों की कान्ति तरंग मालाओं के समान झलमल कर रही है। द्वार एवं खिड़कियों के कपाट समूह इन्द्र नील मणियों से जड़ित हैं। मंडप की भूमि स्वर्णमय है एवं नाना मणियों से चित्रित है। शिखर देश स्वर्ण कुंभ, चक्र एवं ध्वजा पताका से सुशोभित है। रात्रि में तीनों प्रभु अपने-अपने मंडप में रत्नमय पलंग पर शयन कर रहे हैं।

निशान्त में सपरिकर महाप्रभु का शयन।

परिकरगण भी अपने-अपने प्रभु के मंडप के चारों ओर गृह समूहों में शयन कर रहे हैं। जैसे-श्री मन्महाप्रभु के मन्दिर की पूर्व दिशा में गदाधर, श्री वास एवं हरिदासादि भक्त गण, दक्षिण में स्वरूप दामोदर आदि अष्ट महान्त, पश्चिम में श्रीनरहरि सरकार, मुरारि आदि भक्तगण एवं उत्तर में श्री रूप, सनातनादि अष्ट गोस्वामी निज-निज गणों के साथ शयन कर रहे हैं। श्री मन्नित्यानंद प्रभु के मंडप के चारों ओर यथा क्रम में श्री वीरचन्द्र, रामदास, उद्धारण दत्तादि भक्तगण एवं श्री अद्वैत प्रभु के मंडप के चारों ओर श्री अच्युतानंद, श्री यदुनन्दनादि क्रम पूर्वक शयन कर रहे हैं। साधक दास अपने परिवार के अनुरूप श्री गुरु वर्ग के शयनालय में श्री गुरु के पाद मूल में शयन कर रहा है। विविध वृक्ष लताओं पर नाना प्रकार के पक्षी एवं भृंगसमूह शयन कर रहे हैं।

Scanned by CamScanner

निशांत काल के आगमन होने पर सेवा अभ्यास वशत: साधक दास ने जागृत होकर हस्त मुखादि प्रक्षालन करके श्री गुरुदेव को पादसंवाहन पूर्वक जगाकर उनके हस्त मुखादि प्रक्षालन कराये। इसी प्रकार से गुरु वर्ग की सेवा की। निशांत में श्रीवास उद्यान की क्या मनोरम शोभा है! स्निग्ध-मलय पवन मल्लिका तथा मालती के हृदय में सिहरन जगाकर मृदुमन्द गति से जैसे स्वच्छन्द नृत्य करते हुए चल रही हो। मलय पवन एवं चन्द्र किरणों का स्नेह भरा स्पर्श पाकर पुष्प समूह के विकसित होने पर सुगन्ध से दिशाऐं व्याप्त हो रही हैं। इसी सुगन्ध से भृंग समूह जागृत होकर मृदु मधुर गुंजन के साथ पुष्पों का मधुपान कर रहे हैं। कोकिलादि मधुर स्वर से पंचमतान में कूजन कर रहे हैं।

निशान्त में श्रीवास उद्यान की शोभा।

साधक दास श्री गुरुदेव के आदेश से एवं श्री रूप-सनातनादि गोस्वामी वर्ग के आनुगत्य में श्रीमन्महाप्रभु की निशांत कालोचित सेवा सामग्री सुसज्जित करने लगा। सर्व प्रथम श्री मन्महाप्रभु के मंडप बरामदों को सुगन्धित जल एवं स्वर्ण झाड़ू द्वारा मार्जन करके सूखे वस्त्र द्वारा पोंछकर सुखाया। तत्पश्चात् पूर्व के बरामदे में सुन्दर लोम निर्मित आसन (गलीचा) बिछाकर उस पर तीनों प्रभु के बैठने के लिए तीन रत्नासन रखे एवं उनके प्रष्ठ तथा पार्श्व भाग सुकोमल गद्दी द्वारा सजाये। उनके मुखादि प्रक्षालन के लिए स्वर्ण पात्र में जल भरकर सूखे वस्त्र से ढ़ककर उसके निकट स्वर्ण कुल्लादानी रखी। कुसुम चयन करके माला गूँथकर तीनों प्रभु के तिलक आदि के लिए चंदन, केसर आदि घिसकर स्वर्ण पात्र में रखा। आरती के लिए घृत कर्पूर बत्ती, सुगंधित पुष्प, धूपादि रत्न थाल में सजाकर स्वर्ण चौकी पर यथा स्थान रखकर श्री मृदंग करतालादि सुसज्जित करके रखे। इसके बाद श्री नित्यानंद प्रभु एवं श्री अद्वैत प्रभु के शयन मंदिर के बरामदों को भी सुगन्धित जल एवं स्वर्ण झाड़ू से स्वच्छ किया।

साधक द्वारा सेवा सामग्री को सजाना।

उसी समय श्री मन्महाप्रभु द्वारा पुष्प सौरभ, भ्रमर एवं पक्षियों की कलरव ध्वनि से जागृत होकर वृन्दावन की मधुर स्मृति में प्रेमावेश में हुँकार करने पर उसके श्रवण से सभी जागृत हुए। श्री मन्नित्यानंद प्रभु एवं श्री अद्वैत प्रभु द्वारा शय्या त्याग करने पर सेवक गण ने अपने परिकर गण सहित दोनों प्रभु का मुख प्रक्षालन कराया। सभी ने श्री मन्महाप्रभु के शयन मन्दिर में आगमन कर उनकी शयन शोभा दर्शन करने की लालसा से खिड़की रन्ध्रों (छिद्रों) में दृष्टि अर्पण की। श्रीमन्महाप्रभु मणिमय पलंग पर ऋतु कालोचित दुग्ध फेन के समान शय्या पर शयन कर रहे हैं। सुतप्त स्वर्ण कान्ति के समान श्रीअंगच्छटा, आजानुलंबित बाहु, कमल दलायत नयन, अरुण वस्त्र एवं उत्तरीय सुशोभित महाभावनिधि श्रीगौरसुन्दर अश्रु कम्पादि सात्विक भाव से विभूषित होकर ब्रज निकुन्ज में सुदिव्य नायक-नायिका श्रीराधामाधव के (शयनावस्था में) आलिंगन भाव का अनुकरण कर रहे हैं। अर्ध निमिलित नेत्रों से एवं अस्पष्ट मधुर वचनों से कुछ कह रहे हैं—वह जागृत हैं या स्वप्न देख रहे हैं यह समझ में

निशान्त में महाप्रभु का भावावेश।

Scanned by CamScanner

नहीं आता। उनके पलंग के ऊपर कमल स्वस्तिकादि चिह्न एवं नाना रत्नों के झालर युक्त एक विचित्र चंदवा पलंग के चारों कोणों में स्थित चार स्वर्ण दंडों से बंधा हुआ है। श्रीगौरांग की स्निग्ध उज्ज्वल अंगच्छटा से मणि प्रदीपावली चम्पक कली की भाँति दिखाई पड़ रही है। पलंग के चारों ओर स्वर्ण चौकी पर सुगंधित जल, पान पात्र ताम्बूल पात्र एवं चामर व्यजनादि सेवा सामग्री सुसज्जित है। स्वर्ण पिंजरे में शुक पक्षी शोभा पा रहा है।

श्रीस्वरूप गोस्वामी के इंगित पर शुक महाप्रभु को प्रबोधन करने के उद्देश्य से अति विनम्र वचनों से कहने लगा—हे प्रभु विश्वम्भर! हे शचीनन्दन! हे नवद्वीप चन्द्र! आपकी जय हो। रात्रि शेष हुई एवं प्रभात हुआ। पूर्वदिशा में अरुण आलोक फूट चुका है। चन्द्रकिरण तथा मलय पवन के सुकोमल स्पर्श से विकसित कुसुम समूह की मधुर गंध से आकुल होकर भँवर कुल गुँजन कर रहे हैं। कोकिलादि पक्षीगण मधुर स्वर में कूजन कर रहे हैं। आपके प्रिय श्री नित्यानंद प्रभु, श्री अद्वैत प्रभु एवं स्वरूपादि भक्त वृन्द आपके जागरण की प्रतीक्षा में आपके शयन मंदिर के चारों ओर अवस्थान कर रहे हैं। नगरवासी सभी ब्राह्मण गण गंगा स्नान करके स्तव-स्तोत्रादि का पाठ करते हुए अपने-अपने घर जा रहे हैं। परम उत्कंठिता आपकी माता आपको जगाने के लिए जब तक आपके शयन मंदिर में गमन न करें तब तक आप अपने गृह जाकर शयन करें।

शुक द्वारा प्रबोधन, महाप्रभु का जागरण एवं भावावेश।

शुक की बात श्रवण कर महाप्रभु भावावेश में शय्या पर अंगड़ाई ले रहे हैं- जैसे डोरी रहित स्वर्ण धनुष टंकार हो। तत्पश्चात् शय्या त्याग कर पलंग पर बैठकर जमुहाई ले रहे हैं, उनकी दंतकान्ति जैसे कर्पूर बत्ती के समान उनके मुख चंद्र की आरती कर रही हो। नासिका पुट प्रफुल्लित! सर्वांग में पुलकावली कदंब केसर की भाँति शोभा पा रही है। ब्रज निकुँज में श्री श्री राधा माधव के रसालस की मधुर स्मृति में कमल नयनों से अश्रु धारा प्रवाहित हो रही है- जैसे स्वर्ण मेरु से मन्दाकिनी प्रवाहित हो रही हो! श्वास प्रश्वास द्रुतगति से चल रहा है। अनुराग के कारण नयन युगल अरुण वर्ण के हो गये हैं।

श्री मन्महाप्रभु के श्री अंग में विचित्र भाव विकार को देखकर भक्त वृन्द सहित दोनों प्रभु पुलकित (रोमांचित) मन से उनके शयन मंदिर में प्रवेश कर यथा स्थान बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का भाव जानकर ब्रज निकुँज में श्री श्री राधा कृष्ण की निशांत लीला (कुँज भंग पद) गान करने लगे। गान श्रवणकर श्रीमन्महाप्रभु श्रीराधाभाव में ब्रजलीला में मग्न हुए। दोनों प्रभु एवं भक्त वृन्द भी अपने-अपने सिद्ध स्वरूप में ब्रजलीला में आविष्ट हुए। श्री गुरु कृपा से साधक भी अपने मंजरी स्वरूप में ब्रजरस की सेवा में निमग्न हुआ।

Scanned by CamScanner

निशान्तलीला ब्रजधाम (६ दण्ड)

रात्रि ३ बजकर ३६ मिनट से प्रातः ६ बजे तक

श्रीश्रीब्रजलीला की वन्दना :

श्रीराधाप्राणबन्धोश्चरणकमलयोः केशशेषाद्यगम्या
या साध्या प्रेमसेवा ब्रजचरितपरैर्गाढ़लौल्यैकलभ्या।
सा स्यात् प्राप्ता यया तां प्रथयितुमधुना मानसीमस्य सेवां
भाव्यां रागाध्वपांथैर्ब्रजमनुचरितं नैत्यिकं तस्य नौमि।।

ब्रह्मा, शिव, शेषादि के लिए भी अगोचर श्री राधा के प्राण बन्धु श्री कृष्ण की प्रेम सेवा, जो मात्र ब्रज चरित के प्रगाढ़ लोभ द्वारा ही साध्य है, ब्रज भाव से लुब्ध राग पथ के पथिक गण के लिए भावनीय है, उसी नैत्यिक मानसी सेवा विस्तार के लिए मानस में उसे प्रणाम करता हूँ।

श्रीश्रीअष्टकालीन ब्रजलीला सूत्र :

कुंजाद्गोष्ठं निशांते प्रविशति कुरुते दोहनान्नाशनाद्यां
प्रातः सायंचलीलां विहरति सखिभिः संगवे चारयन् गाः।
मध्याह्ने चाथ नक्तं विलसति विपिने राधयाद्धापराह्ने
गोष्ठं याति प्रदोषे रमयति सुहृदो यः स श्रीकृष्णोऽवतान्नः॥

जो निशांत काल में कुँज से गोष्ठ (गोचारण भूमि) को गमन करते हैं, प्रातः एवं संध्या काल में गोदोहन तथा भोजनादि लीला करते हैं, पूर्वाह्न में सखाओं के संग गोचारण के लिए जाते हैं, मध्याह्न एवं रात्रि काल में वन के मध्य श्री राधा के संग विलास करते हैं, एवं अपराह्न में गोष्ठ गमन एवं प्रदोष में सुहृद सखागणों के साथ क्रीड़ा करते हैं—वही श्री कृष्ण हमारी रक्षा करें।

श्री श्री ब्रज धाम निशांत लीला सूत्रः

रात्र्यन्ते त्रस्त-वृन्देरित बहूवि-रवैर्बोधितौ कीरशारी-
पद्यैर्हृद्यैरहृद्यैरपि सुखशयनादुत्थितौ तौ सखिभिः।
दृष्टौ हृष्टौ तदात्वोदित-रतिललितौ कक्खटिगीः सशंकौ
राधाकृष्णौ सतृष्णावपि निजनिजधाम्न्यापततल्पौ स्मरामि।।

निशांत काल में शंकिता वृन्दा द्वारा निद्रा भंग के लिए प्रेरित शुक सारी के प्रिय एवं अप्रिय काव्य को श्रवण कर प्रबोधित (जागृत होकर), तत्कालोचित रति रस में भरकर अति सुललित, सखियों द्वारा दृष्ट, कक्खटी नाम की वानरी की ध्वनि से शंकित, परस्पर एक-दूसरे का सतृष्ण नयनों से दर्शन करते हुए जो अपने-अपने भवन को गमन पूर्वक शय्या पर शयन करते हैं—उन्हीं श्री श्री राधा कृष्ण का स्मरण करता हूँ।

Scanned by CamScanner

ब्रजधाम : श्रीश्रीराधाकृष्ण की शयन शोभा एवं शय्या त्याग तथा अचिन्त्य महायोग पीठ :

चिन्मधुर धाम श्री वृन्दावन का सर्वोत्तम अंग श्री गोविन्द स्थली है। उत्तर से प्रवाहित होते हुए श्री यमुना ने पूर्व एवं पश्चिम से दो निर्झर रूप बाहुओं द्वारा गोविन्द स्थली को आवृत (आलिंगन) किया हुआ है। यह कूर्म पीठ के समान क्रमोन्नत है। मध्य स्थल में श्री श्री राधा कृष्ण का योगपीठ नामक मणि मन्दिर विद्यमान है। जो चारों कोनों से चार कल्प वृक्षों द्वारा घिरा हुआ है। इसके अन्दर चारों दिशाओं में चार मंडप एवं चार कुँज विद्यमान हैं। ईशान कोण में माधवी मंडप, अग्नि कोण में मालती मंडप, नैऋत्य कोण में नवमल्लिका मंडप एवं वायु कोण में स्वर्ण यूथी मंडप स्थित है। उत्तर में श्वेताम्बुज कुँज है यहाँ श्री श्री राधा कृष्ण की पाशा क्रीड़ा होती है, पूर्व में नीलाम्बुज कुँज में वेशभूषा होती हैं, दक्षिण में अरुणाम्बुज कुँज में भोजन होता है एवं पश्चिम में हेमाम्बुज कुँज में शयन लीला होती है। इसके बाहर मंडलाकार में अष्ट सखियों के कुँज हैं। इसके बाहर दो गुनी संख्या में सोलह, बत्तीस इत्यादि क्रम से सहस्र सखियों के कुँज विद्यमान हैं। इसके बाह्य मंडल में चारों दिशाओं में चार द्वारी सखियों के कुँज-पूर्व में वृन्दा, दक्षिण में वृन्दारिका, पश्चिम में मेनका एवं उत्तर में मूरला देवी का कुँज स्थित है।

श्री श्री राधा कृष्ण रास विलास के अंत में हेमांबुज कुँज में शयन कर रहे हैं। सखी गण अपने-अपने कुँज में शयन कर रही हैं। उत्तर में श्रीगुरु मंजरी गण एवं श्री गुरुदेवी के चरण मूल में साधक दासी शयन कर रही है। चारों ओर विविध वृक्ष लताओं पर भृंग एवं पक्षी कुल शयन कर रहे हैं। माधवी लता से आवृत आम्र वृक्ष पर कोकिल-कोकिला, मालती लतावृत अनार वृक्ष पर शुक, स्वर्ण यूथी आवृत द्राक्षा पर शारिका, यूथीलता आवृत कदंब पर मयूर-मयूरी, नवमल्लिका आवृत पीलू वृक्ष पर कबूतर-कबूतरी, लताओं पर भ्रमर-भ्रमरी एवं भूमि पर ताम्रचूड़ (मुर्गा) आदि शयन कर रहे हैं।

निशांत काल होने पर सेवा अभ्यास वशत: किंकरी गणों की निद्रा स्वत: ही भंग हुई। वे चकित नेत्रों से चारों ओर देखकर सेवाकाल व्यतीत नहीं हुआ ऐसा जानकर एकान्त में अपनी शय्या पर बैठकर जमुहाई लेते हुए परस्पर परिहास रस का विस्तार करने लगीं। उसी समय मलय पवन एवं चंद्र किरणों के स्पर्श से कुसुम समूह विकसित होकर सुगन्ध से चारों दिशाओं को व्याप्त करने लगे। भृंग कोकिलादि जगकर श्री युगल को जगाने के लिए उत्कंठित होकर भी वृन्दा देवी के आदेश की अपेक्षा में अपने-अपने स्थान पर मौन रहकर अवस्थान करने लगे। साधक दासी ने शय्या त्याग कर अपने हस्त मुखादि प्रक्षालन करने के बाद श्री गुरु देवी को श्री चरण कमल संवाहन द्वारा जगाकर उनके हस्त मुखादि प्रक्षालन कराये। इसी प्रकार श्री गुरु मंजरी वर्ग एवं रूपादि मंजरी वर्ग की भी सेवा की। तत्पश्चात् गुरुदेवीके आज्ञाक्रम से निकुँज मंदिर के बरामदे एवं वेदी समूह को सुगन्धित जल तथा स्वर्ण झाड़ू से स्वच्छ करके सूखे वस्त्र से पोंछकर आसनादि बिछाकर रखा। श्री युगल के मुख प्रक्षालन के लिए स्वर्ण झारि (स्वर्ण पात्र) में सुगन्धित जल को सूखे वस्त्र से ढ़ककर इसके निकट स्वर्ण कुल्लादानी

श्रीमंजरी की निशान्त की सेवा।

Scanned by CamScanner

रखी। चंदन, कुंकुम, केसर आदि घिसकर अलग-अलग स्वर्ण पात्रों में रखा। अंगूर, अनार एवं अन्यान्य सुमिष्ट फलों का अमृत के समान रस निकालकर पीने के लिए स्वर्ण पात्र में रखकर इसके निकट पान पात्र रखा। कर्पूरादि द्वारा सुगन्धित सुपक्व स्वर्ण वर्ण ताम्बूल वीटिका (ग्रन्थि) तैयार करके रखी। आरती के लिए घृत कर्पूर बत्ती सुसज्जित करके पुष्प चयन कर माल्य गूँथकर रखी। इसी प्रकार से ऋतु के अनुसार समस्त सेवा सामग्री तैयार करके रखी।

इधर वृन्दा देवी ने यथा समय जागृता होकर चकित नेत्रों से चारों ओर देखते हुए श्री श्रीराधाकृष्ण के जागरण का समय जानकर पक्षी गणों को ध्वनि करने के लिए इंगित किया एवं ललितादि सखी गण के संग श्री श्री राधा कृष्ण के शयन मंदिर के चारों ओर खिड़की के छिद्र में नयन अर्पण करते हुए श्री युगल की शयन शोभा दर्शन करने लगीं। साधक दासी सभी के चरणों में प्रणाम कर श्री गुरुदेवी के बायें खड़ी होकर युगल माधुरी दर्शन कर विभोर हुई।

श्री श्री राधा माधव अलौकिक माधुर्य से शयन मंदिर को आलोकित करते हुए रत्न पलंग की कुसुम शय्या पर शयन कर रहे हैं। रति रसालस में श्री अंग के वस्त्राभूषण अस्त-व्यस्त हो गये हैं। श्री कृष्ण की अंगच्छटा से मंदिर का एक प्रांत नील वर्ण तथा श्री राधा की अंगकान्ति से दूसरा प्रांत पीत वर्ण हो गया है। श्री कृष्ण के

श्रीश्रीराधाकृष्ण की शयन शोभा।

वाम बाहु में प्रिया जी का मस्तक तथा प्रियाजी के बाहु द्वारा श्री कृष्ण का कंठ आलिंगित है। श्री कृष्ण के दाहिने जानु द्वारा प्रियाजी का विशाल नितंब आवृत है, श्री कृष्ण वक्ष स्थल में उनका उरोज अर्पित है एवं श्री कृष्ण के मुख चंद्र के साथ उनका मुख चंद्र सम्मिलित है। रत्न पलंग के चारों कोनों पर चार स्वर्ण दंड के ऊपर स्वस्तिक, कमलादि चिह्नित मुक्ता के झालर युक्त एक विचित्र चंदवा बंधा हुआ है। चारों ओर दीवार में संलग्न रत्नप्रदीप धारिणी स्वर्ण प्रतिमा समूह विराजित हैं एवं श्री राधा कृष्ण के पूर्वराग के चित्र माल्य द्वारा सुसज्जित हैं। इत्र, गुलाब जल तथा मृगनाभि (कस्तूरी) आदि की गंध से कुँजगृह सुगन्धित है। पलंग के चारों ओर स्वर्ण चौकी पर पानक, मोदक (लड्डू) एवं ताम्बूलादि विविध सेवा सामग्री सुसज्जित है।

श्री युगल के निरुपम (तुलना-रहित) शोभा सिंधु में सखी मंजरी गणों के मत्स्याकृत नयन महासुख पूर्वक तैरने लगे। परस्पर मधुर अस्पस्ट वचनों द्वारा रसोदगार करने लगीं। कोई बोलती है—देखो सखी! युगल की

सखीगणों का रसोद्‌गार।

शोभा जैसे हेमकांत मणि के साथ नीलकांत मणि जड़ित हो। अन्य सखी ने कहा—सखी! वह तो कठिन है, ये दोनों अति सुकोमल हैं, मेरा मन कह रहा है जैसे नील कमल एवं स्वर्ण कमलिनी सौन्दर्य रस से ढ़ल-ढ़ल कर रही हो। यह सुनकर कोई कहती है—कमल भी तो रात्रि में म्लान हो जाता है—मेरे मन से ये जैसे नवजलद के साथ विद्युत लता जड़ित हो। कोई कहती है—विद्युत लता तो चंचला है किन्तु ये स्थिरा हैं, ये जैसे नवतमाल से कनकलता प्रेम पूर्वक जड़ित हो। कोई कहती है—सखी! वह तो स्थावर है ये तो साक्षात् श्रृँगार एवं प्रेम रस की मिलन माधुरी

Scanned by CamScanner

हैं। हमारे श्रीयुगल के संग तुलना देने योग्य इस विश्व में कुछ भी नहीं है—इनकी तुलना ये ही हैं। कोई कहती है—सखी! देखो देखो, प्रियतम की गोद में निद्रिता श्री मती के श्री मुख पर कैसी मधुर हास्य रेखा फूट रही है। अन्य सखी ने कहा—ऐसा लगता है कि मधुर वदन को देखकर हँसी थीं, उसी समय निद्रा सखी ने आकर्षण किया है, इसीलिए श्री मुख पर हास्य रेखा लगी रह गई है—सखीगणों के रसोद्‌गार को श्रवण कर साधक दासी पुलकित (रोमांचित) प्राणों से रससागर में गोते लगाने लगी।

इधर वृन्दा देवी के इशारे पर पक्षी भृंगादि मृदु मधुर स्वर में गान करने लगे। मधु के लोभ से भृंगकुल प्रस्फुटित पुष्प गुच्छों के मध्य रतिपति के मंगल शंख ध्वनि की भाँति गुंजन करने लगे। मदन की वीणा के समान कोकिल कुल पंचम तान में 'कुहू कुहू' का आलाप करने लगे। 'के का' के स्वर में युगल के प्रबोधन में मयूर मयूरी प्रवृत्त हुए। पक्षियों के कल कूजन से श्री राधा कृष्ण जागृत होने पर भी विच्छेद के भय से परस्पर के प्रगाढ़ आलिंगन में आबद्ध होकर शयन कर रहे हैं। रजनी व्यतीत होने पर अतिशय चंचल होने पर भी क्रीड़ा सुखमय मोहन-शय्या त्यागकर उठने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। उसी समय भागवतार्थ प्रवीण श्री शुक मुनि जैसे मधुर भागवत कथा द्वारा विश्व की माया निद्रा का भंजन करने में दक्ष एवं विचक्षण (चतुर) हैं, उसी प्रकार ब्रज निकुँज में 'दक्ष' एवं 'विचक्षण' नामक दो शुक ने वृन्दा के आदेश से ब्रजनवयुगल की

शुक-सारी की प्रबोधनी गीति।

रसालस रूप सुख निद्रा भंजन के लिए मधुर प्रबोधिनी गीति गाना प्रारम्भ किया। दक्ष ने कहा—हे निखिल कन्दर्प विलास प्रवीण! हे गोपीजन लोचनामृत! हे प्राण प्रिया के प्रेम तरंगिणी के मत्त मातंगज! हे स्वमाधुरी प्रवाह से निखिल भुवन के प्लावन कारिन! हे रस सागर! प्रियतमा के अधर रसास्वाद सुख में मग्न होकर निद्रित होना आपके लिए कोई विचित्र नहीं हैं। किंतु आपकी विलास सम्पादन कारिणी जो यह क्षणदा (रात्रि) है, इस समय तक क्षणदा अर्थात उत्सव दायिनी थी, इस समय यह विगत होकर क्षणदा (दा धातु छेदन अर्थ में) आपके रसोत्सव को खंडित कर रही है। अतएव शीघ्र जागृत होइये। तत्पश्चात विचक्षण कहने लगा—हे गोकुलानन्द! हे नन्द चित्त सागर सुधांशु! हे ब्रजेश्वरी के पुण्यलता प्रसून! * हे प्रभो! निद्रा त्याग करो। प्रियतमा के प्रगाढ़ आलिंगन पाश को शिथिल करो। शीघ्र ही अपने गृह (बृज) को गमनोन्मुख हो। प्रभात हो चुका है, पूर्व दिशा में अरुण आलोक फूट चुका है। आपकी जननी आपके वदन चंद्र के दर्शन की आशा से इसी समय पौर्णमासी देवी के साथ आपके शयन कक्ष में आने वाली हैं। अतएव गृह जाकर बन्धुवर्ग को सुखी करो। तत्पश्चात् मधुर भाषिणी सारी बोलने लगी—हे गोकुल बंधो! हे रस सिन्धो! आपकी जय हो! अब शशि के समान शुभ्र शय्या त्याग करके परम प्रीतिमयी भुजमूलाश्रिता, रति श्रम से क्लान्ता कान्ता को प्रबोधित करें। हे ब्रजनाथ! तरुणी गणों के प्रति स्वतः ही निर्दयी यह अरुण वेग पूर्वक उदयाचल पर आ रहा है, यमुना तट त्याग करके शीघ्र ही

* विचक्षण ने मातापिता की स्मृति जगाकर मधुररस मग्न श्रीकृष्ण के चित्त को उद्‌बुद्ध करने की चेष्टा की। जिस कारण से मधुर रस के साथ वात्सल्य रस का विरोध दृष्ट होता है।

Scanned by CamScanner

अपने गृह को गमन करें। तत्पश्चात् सूक्ष्मधी नामक सारिका श्री राधा जी से कहने लगी- हे ईश्वरि! आप सौभाग्य से त्रैलोक्य की श्रेष्ठा रमणी गणों को भी चमत्कृत कर रही हो। आपकी जय हो! हे कमल मुखी! विलास श्रम से गाढ़ आलस्य में आप निशांत में भी निद्रा सुख में मग्न हो रही हो। इसमें आपका कोई भी दोष नहीं। किन्तु हे साध्वी! पूर्व दिक् वधु चन्द्रावली सखी की भाँति आपके सुख में असहिष्णु होकर रक्तिम राग से रंजिता (रंगीन) हो उठी है- अतएव शीघ्र शय्या त्याग करो। इस प्रकार पुनः पुनः शुक सारी के प्रबोधन वाक्य से श्री कृष्ण प्रियाजी के अंग से अपने अंग को मृदु भाव से आकर्षण करते हुए धीरे-धीरे शय्या पर उठ बैठे। प्रीति पूर्वक प्रियाजी को गोद में लेकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से उनकी माधुरी दर्शन करने लगे। आलस्य त्याग के लिए श्री मती प्राणनाथ की गोद में ही अंगड़ाई लेते हुए जृम्भा (जमुहाई) त्याग करने लगीं। दंत किरण रूपी माणिक्य राशि द्वारा जैसे अपने श्री मुख चंद्र की आरती कर रही हों।

नयन रूपी प्यालों द्वारा दोनों परस्पर एक दूसरे के माधुर्य मधु का पान करने लगे। ब्रजचंद्रमा अपने अंकों

श्रीराधाकृष्ण का शय्या त्याग।

में उत्तान शयना (पीठ के बल सोयी हुई), मृदु रोदन के साथ मधुर स्मित मुखी (मुस्कान युक्त मुख वाली), अर्धउन्मुक्त कबरी (अर्धमुक्त जूड़ा), विमर्दित कुसुम माला, अस्त-व्यस्त रत्न हारा, बाहर से अवसाद ग्रस्ता एवं हृदय से प्रफुल्लित कान्ता की रस द्वारा सज्जित इस रूप माधुरी का दर्शन कर परमानन्द लाभ करते हैं। पारस्परिक रूप माधुर्य का दर्शन कर दोनों विलास लालसा में अधीर हो पड़े। अति मधुर अलस विलासमय चेष्टा समूह प्रकाश पाने लगा।

इधर प्रभात होने के भय से भीता (डरी हुई) एवं चकिता होकर सखी गणों ने वस्त्रों से अपने वदन चंद्र को आवृत कर लज्जित भाव से एक दूसरे को पहले कुँज में प्रवेश करने के लिए उत्साहित करते हुए हास्य के साथ कुँज में प्रवेश किया। सखी गणों के दर्शन से प्रियाजी शीघ्र ही लज्जा के साथ कान्त की गोद से उतर कर श्री

श्रीराधा का भाव साबल्य।

कृष्ण के पीत वस्त्र से अपने अंग को आच्छादित कर सलज्जिता भाव से कान्त के वाम भाग में बैठ गयीं। सखी गण श्री राधा माधव के श्री अंग एवं विलास शय्या पर विविध विलास चिह्नादि दर्शन कर परमानन्द सागर में निमग्न हुई। वह सभी श्री कृष्ण से कहने लगीं—हे माधव आपने हमारी सखी की समस्त सुसज्जित वेश-भूषा को नष्ट कर दिया है, अतः शीघ्र ही वेश रचना कर दो, हम सभी सखी को घर ले जायेंगी। श्री कृष्ण सखियों के वाक्य श्रवण कर वेश रचना करते हुए उनके भाव साबल्य (नाना प्रकार के भाव एवं संवेगों का मिश्रण) के दर्शन की आशा से सखियों के समक्ष रजनी विलास कालीन श्रीमती के रति रसावेशमय प्रागल्भ्य (प्रकटीकरण) का वर्णन करने लगे। यह श्रवण कर लज्जावती प्रियाजी के हाव-भाव हेलादि श्रृँगार रसमय अपूर्व अंग माधुरी एवं मनोहर कटाक्ष का दर्शन कर सखी गणों के सहित श्री कृष्ण सुख सागर की तरंगों में गोते लगाने लगे।

उसी समय श्री गुरुदेवी के इशारे पर साधक दासी ने स्वर्ण जल पात्र में सुगन्धित जल एवं स्वर्ण कुल्लादानी लाकर श्री युगल का मुख प्रक्षालन कराकर प्रीति पूर्वक सूखे वस्त्र से पोंछा। तत्पश्चात् अमृतोपम पानक का

Scanned by CamScanner

पान कराकर श्री मुख में ताम्बूल अर्पण कर माल्य चन्दनादि से भूषित कर मणि दर्पण दिखाया। सभी सेवायें प्रीति पूर्वक प्राणों से ढ़ली हुई हैं! तत्पश्चात् साधक किंकरी ने सज्जित आरती का पात्र श्री रूप मंजरी के हस्त में प्रदान किया, उन्होंने वह पात्र ललिता जी के हस्त में प्रदान किया। श्री ललिता ने श्री युगल की आरती की

मंजरी की प्रेमपूर्वक सेवा।

यह आरती अत्यंत प्रीति का अनुष्ठान है। घृत कर्पूर बत्ती द्वारा युगल की अलाई-बलाई दग्ध करके वस्त्र द्वारा अमंगल राशि को पोंछ दिया गया। तत्पश्चात् शंख जल से श्री अंग का अमृत सिचंन किया गया। कोई सखी चामर डुला रही है, कोई हाथ ताली बजा रही है, कोई पुष्प वर्षा कर रही है एवं कोई उल्लू ध्वनि कर रही है। श्रीश्रीराधाकृष्ण की उज्ज्वल रूप माधुरी का दर्शन कर सभी परमानन्द पूर्वक नृत्य गीत में मग्न हुई।

नवद्वीप : प्रभुत्रय की आरती आदि एवं भावावेश :

श्री नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्री वास के पुष्पोद्यान में शयन मंडप में परिकर गणों से घिरे हुए अपनी शय्या पर विराजमान हैं। ब्रज निकुँज में श्री श्रीराधा माधव के आरती के स्मरणानन्द में प्रभु ने प्रेमावेश में हुँकार की। उसे श्रवण कर भक्त वृन्द ने बाह्य दशा लाभकर आरती गान समाप्त किया। श्रीमन्महाप्रभु ने बाह्यदशा को प्राप्त होकर श्री मन्नित्यानंद प्रभु एवं श्री अद्वैत प्रभु को प्रेमालिंगन किया। भक्त वृन्द ने श्री मन्महाप्रभु के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। तत्पश्चात् महाप्रभु बरामदे में सुसज्जित रत्नासन पर बैठ गये, दक्षिण में श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु एवं बायें श्री अद्वैत प्रभु बैठे। तब श्री गुरुदेव के इशारे पर साधक दास ने स्वर्ण जल पात्र के सुगन्धित जल से एवं स्वर्ण कुल्लादानी में तीनों प्रभु के श्री मुख प्रक्षालन कराकर सूखे वस्त्र से पोंछे। तत्पश्चात् तीन प्रभु की वेशभूषा रचना करके माल्य चंदनादि अर्पण कर मणि दर्पण दिखलाया। उसके बाद श्री रूप गोस्वामी के हाथ में सज्जित आरती पात्र अर्पण करने पर उन्होंने उसे श्रीस्वरूप गोस्वामी के हाथ में प्रदान किया, तथा श्री स्वरूप गोस्वामी ने तीनों प्रभु की आरती की। श्री मन्महाप्रभु दर्पण में मुख छवि का दर्शन कर ब्रजभाव में आविष्ट हुए। श्री स्वरूप महाप्रभु के मन को जानकर ब्रज में श्री राधा कृष्ण के निकुँज मंदिर से गृह गमनादि लीलापद का गान करने लगे। पद श्रवण कर सभी भावाविष्ट दशा में ब्रज रस में मग्न हुए।

ब्रजधाम : श्रीश्रीराधाकृष्ण का गृह गमन एवं शयन :

ब्रज निकुँज में सखी गणों द्वारा श्रीराधाकृष्ण की आरती दर्शन एवं नृत्य कीर्तन में विभोर होकर गृह गमन विस्मृत होने पर श्री वृन्दा देवी ने सशंकित चित्त से उन्हें गृह भेजने के उद्देश्य से शुभा नाम की सारी को इशारा किया। शुभा कहने लगी—"हे कमल नयने! हे सखी! तुम्हारी सास शय्या त्याग कर—हे राधे! तुम्हारा पति इसी समय सेवकों द्वारा दुग्धभार वहन कराकर गोष्ठ (गोचारण भूमि) से आगमन करेगा। तुम शीघ्र शय्या त्याग कर वास्तु पूजा करो, यह बात कहने के पूर्व ही तुम कुँज से अलक्षित रूप से अपने शयन मंदिर को गमन

Scanned by CamScanner

करो।" तब श्री कृष्ण को लक्ष्य कर शुभा कहने लगी—"हे कृष्ण! श्री मती की सास सतत ही इनके चरित्र से संदिग्धा रहती है, अभिमन्यु भी सार्थक नामा (सब प्रकार से क्रोधी), कटुभाषी एवं छिन्द्रान्वेशी (दूसरों में दोष निकालने वाला) है। फिर मंद बुद्धि ननदिनी सर्वथा रोषान्विता होकर वृथा अपवाद करती रहती है। रात्रि प्राय: व्यतीत हो चुकी है, इस सरल स्वभाववती का परित्याग क्यों नहीं करते?" सारी के वाक्य रूपी मंदर पर्वत पात से श्री राधा का हृदय सिन्धु विक्षुब्ध हुआ, उनके दोनों नयन चंचल मीन के समान घूमने लगे। उन्होंने श्री कृष्ण वियोग में दु:खिता होकर श्री कृष्ण का पीतोत्तरीय अंग पर रखकर शय्या त्याग की। भय से व्याकुल श्री मती के चंचल नयन तथा श्री मुख की कमनीय कांति का दर्शन करते-करते श्री कृष्ण भी श्री मती के नीलोत्तरीय को ग्रहण करते हुए शय्या से उठकर एक दूसरे का हस्त धारण कर सशंकित चित्त से कुँज से निकल पड़े। श्री कृष्ण बायें हाथ से प्रियाजी के हस्त को धारण कर तथा दाहिने हाथ में वंशीधारण कर तड़िन्माला विजड़ित नव जलधर की भाँति शोभा पाने लगे। तत्पश्चात् सेवा परायणा सखीगणों में से कोई स्वर्ण जल पात्र, कोई स्वर्ण दंड युक्त चामर, कोई मणि दर्पण, कोई कुंकुम चंदन पात्र, कोई मणि जड़ित ताम्बूल पात्र, कोई पिंजरा बद्ध सारिका लेकर कुँज से निकल पड़ी। किसी ने सिंदूर का पात्र, किसी ने छिन्न मुक्ता हार के सब मुक्ता समूह उठाकर अपने वस्त्रांचल में बांध लिये। श्री रति मंजरी ने शय्या से कर्ण भूषण लेकर श्री मती के कर्णों में पहना दिये। श्री रूप मंजरी ने शय्या से कंचुलिका (स्तनावृत वस्त्र) लेकर गुप्त रूप से श्री मती को प्रदान की। श्री गुण मंजरी पीक दानी से युगल के चर्बित ताम्बूल लेकर मंजरी गणों को प्रदान करते हुए गमन करने लगीं। मंजुलाली मंजरी ने श्री युगल के छिन्न माल्य एव चंदनादि के निर्माल्य प्रसाद किंकरियों में बाँट दिये। श्याम के अंग पर नील वसन तथा राई के अंग पर पीत वसन देखकर सखीगण कौतुक पूर्वक वस्त्र से मुख ढ़ककर हँसते हुए एक दूसरी सखियों को नयन भंगिमा द्वारा दिखाने लगीं। किंतु श्री राधा कृष्ण इसके कारण को न समझते हुए एक दूसरे का मुख दर्शन करते हुए मुग्ध की भाँति खड़े हुए। तब श्री ललिता सखी श्री युगल के लीलामृत पान के विघ्नकारी अरुण की निंदा करते हुए श्रीमती से कहने लगीं—"हे राधे! यह देखो प्रभात में वरांगना गणों (उत्तमा स्त्रियों) के रमण के संग लीला भंग करने के पाप से अरुण के दोनों पैर विगलित होने पर भी वह अपने स्वभाव का परित्याग नहीं कर पाया। अत: 'स्वभाव सभी के लिए दुस्त्यज है' यह महाजन वाणी सत्य है। ललिता की बात सुनकर मधुर हास्य युक्त मुख से श्रीमती ने कहा- "ललिते! अरुण पदहीन होने पर भी अस्ताँचल को जाकर क्षणार्धकाल में ही गगन मंडल का लंघन कर पुन: पूर्व में उदयाँचल पर आकर उदित हुआ है। यदि इसके पैर होते तो यह रात्रि का नाम भी नहीं रखता।" तब श्री कृष्ण श्री वृन्दावन की प्रभात कालीन रमणीय शोभा का दर्शन कर प्रियाजी के निकट श्रृँगार रसमय भाव से वर्णन करने लगे-"हे प्रिये! यह देखो, प्रभात काल के समागत (संयुक्त) होने पर अन्य नायिका के संभोग चिह्नांकित नायक का दर्शन कर नायिका जैसे ईर्ष्या में भरकर रक्त वर्ण हो जाती है, उसी प्रकार पूर्व दिक्वधू

सखीसह श्रीराधाकृष्ण का निकुँज भवन त्याग एवं गृह गमन :

Scanned by CamScanner

पान कराकर श्री मुख में ताम्बूल अर्पण कर माल्य चन्दनादि से भूषित कर मणि दर्पण दिखाया। सभी सेवायें प्रीति पूर्वक प्राणों से ढ़ली हुई हैं! तत्पश्चात् साधक किंकरी ने सज्जित आरती का पात्र श्री रूप मंजरी के हस्त में प्रदान किया, उन्होंने वह पात्र ललिता जी के हस्त में प्रदान किया। श्री ललिता ने श्री युगल की आरती की

मंजरी की प्रेमपूर्वक सेवा।

यह आरती अत्यंत प्रीति का अनुष्ठान है। घृत कर्पूर बत्ती द्वारा युगल की अलाई-बलाई दग्ध करके वस्त्र द्वारा अमंगल राशि को पोंछ दिया गया। तत्पश्चात् शंख जल से श्री अंग का अमृत सिचंन किया गया। कोई सखी चामर डुला रही है, कोई हाथ ताली बजा रही है, कोई पुष्प वर्षा कर रही है एवं कोई उल्लू ध्वनि कर रही है। श्रीश्रीराधाकृष्ण की उज्ज्वल रूप माधुरी का दर्शन कर सभी परमानन्द पूर्वक नृत्य गीत में मग्न हुई।

नवद्वीप : प्रभुत्रय की आरती आदि एवं भावावेश :

श्री नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्री वास के पुष्पोद्यान में शयन मंडप में परिकर गणों से घिरे हुए अपनी शय्या पर विराजमान हैं। ब्रज निकुँज में श्री श्रीराधा माधव के आरती के स्मरणानन्द में प्रभु ने प्रेमावेश में हुँकार की। उसे श्रवण कर भक्त वृन्द ने बाह्य दशा लाभकर आरती गान समाप्त किया। श्रीमन्महाप्रभु ने बाह्यदशा को प्राप्त होकर श्री मन्नित्यानंद प्रभु एवं श्री अद्वैत प्रभु को प्रेमालिंगन किया। भक्त वृन्द ने श्री मन्महाप्रभु के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। तत्पश्चात् महाप्रभु बरामदे में सुसज्जित रत्नासन पर बैठ गये, दक्षिण में श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु एवं बायें श्री अद्वैत प्रभु बैठे। तब श्री गुरुदेव के इशारे पर साधक दास ने स्वर्ण जल पात्र के सुगन्धित जल से एवं स्वर्ण कुल्लादानी में तीनों प्रभु के श्री मुख प्रक्षालन कराकर सूखे वस्त्र से पोंछे। तत्पश्चात् तीन प्रभु की वेशभूषा रचना करके माल्य चंदनादि अर्पण कर मणि दर्पण दिखलाया। उसके बाद श्री रूप गोस्वामी के हाथ में सज्जित आरती पात्र अर्पण करने पर उन्होंने उसे श्रीस्वरूप गोस्वामी के हाथ में प्रदान किया, तथा श्री स्वरूप गोस्वामी ने तीनों प्रभु की आरती की। श्री मन्महाप्रभु दर्पण में मुख छवि का दर्शन कर ब्रजभाव में आविष्ट हुए। श्री स्वरूप महाप्रभु के मन को जानकर ब्रज में श्री राधा कृष्ण के निकुँज मंदिर से गृह गमनादि लीलापद का गान करने लगे। पद श्रवण कर सभी भावाविष्ट दशा में ब्रज रस में मग्न हुए।

ब्रजधाम : श्रीश्रीराधाकृष्ण का गृह गमन एवं शयन :

ब्रज निकुँज में सखी गणों द्वारा श्रीराधाकृष्ण की आरती दर्शन एवं नृत्य कीर्तन में विभोर होकर गृह गमन विस्मृत होने पर श्री वृन्दा देवी ने सशंकित चित्त से उन्हें गृह भेजने के उद्देश्य से शुभा नाम की सारी को इशारा किया। शुभा कहने लगी—"हे कमल नयने! हे सखी! तुम्हारी सास शय्या त्याग कर—हे राधे! तुम्हारा पति इसी समय सेवकों द्वारा दुग्धभार वहन कराकर गोष्ठ (गोचारण भूमि) से आगमन करेगा। तुम शीघ्र शय्या त्याग कर वास्तु पूजा करो, यह बात कहने के पूर्व ही तुम कुँज से अलक्षित रूप से अपने शयन मंदिर को गमन

Scanned by CamScanner

करो।" तब श्री कृष्ण को लक्ष्य कर शुभा कहने लगी—"हे कृष्ण! श्री मती की सास सतत ही इनके चरित्र से संदिग्धा रहती है, अभिमन्यु भी सार्थक नामा (सब प्रकार से क्रोधी), कटुभाषी एवं छिन्द्रान्वेशी (दूसरों में दोष निकालने वाला) है। फिर मंद बुद्धि ननदिनी सर्वथा रोषान्विता होकर वृथा अपवाद करती रहती है। रात्रि प्राय: व्यतीत हो चुकी है, इस सरल स्वभाववती का परित्याग क्यों नहीं करते?" सारी के वाक्य रूपी मंदर पर्वत पात से श्री राधा का हृदय सिन्धु विक्षुब्ध हुआ, उनके दोनों नयन चंचल मीन के समान घूमने लगे। उन्होंने श्री कृष्ण वियोग में दु:खिता होकर श्री कृष्ण का पीतोत्तरीय अंग पर रखकर शय्या त्याग की। भय से व्याकुल श्री मती के चंचल नयन तथा श्री मुख की कमनीय कांति का दर्शन करते-करते श्री कृष्ण भी श्री मती के नीलोत्तरीय को ग्रहण करते हुए शय्या से उठकर एक दूसरे का हस्त धारण कर सशंकित चित्त से कुँज से निकल पड़े। श्री कृष्ण बायें हाथ से प्रियाजी के हस्त को धारण कर तथा दाहिने हाथ में वंशीधारण कर तड़िन्माला विजड़ित नव जलधर की भाँति शोभा पाने लगे। तत्पश्चात् सेवा परायणा सखीगणों में से कोई स्वर्ण जल पात्र, कोई स्वर्ण दंड युक्त चामर, कोई मणि दर्पण, कोई कुंकुम चंदन पात्र, कोई मणि जड़ित ताम्बूल पात्र, कोई पिंजरा बद्ध सारिका लेकर कुँज से निकल पड़ी। किसी ने सिंदूर का पात्र, किसी ने छिन्न मुक्ता हार के सब मुक्ता समूह उठाकर अपने वस्त्रांचल में बांध लिये। श्री रति मंजरी ने शय्या से कर्ण भूषण लेकर श्री मती के कर्णों में पहना दिये। श्री रूप मंजरी ने शय्या से कंचुलिका (स्तनावृत वस्त्र) लेकर गुप्त रूप से श्री मती को प्रदान की। श्री गुण मंजरी पीक दानी से युगल के चर्बित ताम्बूल लेकर मंजरी गणों को प्रदान करते हुए गमन करने लगीं। मंजुलाली मंजरी ने श्री युगल के छिन्न माल्य एव चंदनादि के निर्माल्य प्रसाद किंकरियों में बाँट दिये। श्याम के अंग पर नील वसन तथा राई के अंग पर पीत वसन देखकर सखीगण कौतुक पूर्वक वस्त्र से मुख ढ़ककर हँसते हुए एक दूसरी सखियों को नयन भंगिमा द्वारा दिखाने लगीं। किंतु श्री राधा कृष्ण इसके कारण को न समझते हुए एक दूसरे का मुख दर्शन करते हुए मुग्ध की भाँति खड़े हुए। तब श्री ललिता सखी श्री युगल के लीलामृत पान के विघ्नकारी अरुण की निंदा करते हुए श्रीमती से कहने लगीं—"हे राधे! यह देखो प्रभात में वरांगना गणों (उत्तमा स्त्रियों) के रमण के संग लीला भंग करने के पाप से अरुण के दोनों पैर विगलित होने पर भी वह अपने स्वभाव का परित्याग नहीं कर पाया। अत: 'स्वभाव सभी के लिए दुस्त्यज है' यह महाजन वाणी सत्य है। ललिता की बात सुनकर मधुर हास्य युक्त मुख से श्रीमती ने कहा- "ललिते! अरुण पदहीन होने पर भी अस्ताँचल को जाकर क्षणार्धकाल में ही गगन मंडल का लंघन कर पुन: पूर्व में उदयाँचल पर आकर उदित हुआ है। यदि इसके पैर होते तो यह रात्रि का नाम भी नहीं रखता।" तब श्री कृष्ण श्री वृन्दावन की प्रभात कालीन रमणीय शोभा का दर्शन कर प्रियाजी के निकट श्रृँगार रसमय भाव से वर्णन करने लगे-"हे प्रिये! यह देखो, प्रभात काल के समागत (संयुक्त) होने पर अन्य नायिका के संभोग चिह्नांकित नायक का दर्शन कर नायिका जैसे ईर्ष्या में भरकर रक्त वर्ण हो जाती है, उसी प्रकार पूर्व दिक्वधू

सखीसह श्रीराधाकृष्ण का निकुँज भवन त्याग एवं गृह गमन :

Scanned by CamScanner

प्रभात में मिले हुए अपने कान्त सूर्य को अन्य दिशा रूपी कान्ता के संग में कषायितांग (रक्तिम अंग)देखकर ईर्ष्या में भरकर रक्त वर्ण हो रही है। नायिका जैसे नायक के संग में विहार काल में अतिशय आनन्द के कारण सीत्कार करती है उसी प्रकार बसन्त रूपी कान्त के समागम से यह अटवी भी कबूतर के घूत्कार के छल से सीत्कार कर रही है। कान्त के आगमन की आकांक्षा से यह देखो यह चक्रवाकी अरुण किरण से भी अधिक अरुणिम रक्त कमल को आनन्द में विह्वल होकर चुंबन कर रही है। पद्म गंध वाही सुशीतल मलय पवन लता रूपी नर्तकियों को नृत्य शिक्षा देते-देते प्राण कान्त के साथ रमणी कुल के स्वेदवारि (पसीने) का निवारण करते हुए मृदु मंद गति से प्रवाहित हो रही है।'' इस प्रकार परस्पर वाक् विलास रंग में रत होकर सखी सह श्री युगल के गृह गमन को विस्मृत देखकर वृन्दा देवी के द्वारा वृद्धा मर्कटी कक्खटी को इशारा करने पर वृक्ष पर बैठकर कक्खटी कहने लगी—''सज्जन, पूजनीया प्रातः संध्या रूपा तपस्विनी रक्त वस्त्र पहने हुई ऊर्ध्वोत्पन्न किरण मालाओं से जटिला (जटायुक्ता) होकर उपस्थित हो चुकी है।'' 'ज-टि-ला' इन तीन वर्णों को सुनने मात्र से ही अति भीत राधाकृष्ण को स्खलित वसन तथा केश के माल्यादि को उठाते हुए पृथक-पृथक वन पथ से भागते देखकर सखी गण भी चकित चित्त से इधर-उधर भागने लगीं। परस्पर के विच्छेद भय से श्री श्री राधा माधव का वदन कमल अतिशय मलिन हो गया। असहनीय विरह व्यथा से अधीर होकर दोनों एक दूसरे को कातर सहित देखने लगे! समयाभिज्ञा सखीगणों ने पुनः मिलने का आस्वासन देखकर दोनों को धैर्य बंधाया। इसी प्रकार से सकातर कदंब खंडी * तक आकर विरह जनित दुखित चित्त से श्री कृष्ण नन्दीश्वर की ओर एवं सखीगणों सहित श्रीमती जावट की ओर जाने लगीं। परम तृष्णामय अनुराग के स्वभाव वशतः श्रीमती ललिता से बोलीं- ''सखी! श्री कृष्ण संगामृत लाभ के लिए प्रलोभिता करके मुझे अभी-अभी गृह से लाकर पुनः गृह को क्यों ले जा रही हो? अनुराग वती प्रबल तृष्णा में सब कुछ विस्मृत हो रही हैं। यह जानकर सखीगण सरस परिहास का विस्तार करते हुए श्रीमती को गृह ले चलीं। इसी प्रकार गुरुजनों से छिपकर खिड़की द्वार (पुर में स्थित पीछे वाले गुप्त द्वार) से होकर पुर में प्रवेश किया। द्वार से सखी गणों ने अपने-अपने गृह को गमन किया। विशाखा के साथ श्री राधा के पुर में प्रवेश करने पर साधक मंजरी ने शयन

श्रीराधा का विश्राम।

गृह के बरामदे में स्वर्ण चौकी पर श्री राधा को बिठाकर सुगन्धित जल से उनके चरणों को धोकर अपने उत्तरीय वस्त्र से प्रेम पूर्वक पोंछा। श्री राधा द्वारा शयनालय में प्रवेश कर रत्न पलंग पर शयन करने पर किंकरी उनके चरण संवाहन करने लगी। श्रीमती कृष्ण विरह से व्याकुलिता होकर स्वप्न में प्राणनाथ के दर्शन की आशा से निद्रामग्न हुई। तब मंजरी गण, श्री गुरु मंजरी गण एवं साधक किंकरी अपने-अपने गृह चली गई। साधक दासी ने क्रमपूर्वक मंजरी गण एवं श्री गुरु मंजरी गण को शयन एवं उनके पाद संवाहन कर निद्रिता कराकर अपने गृह में शयन किया।

इति ब्रज की निशांत लीला समाप्त।

* श्रीराधा के बरसाना में वास के समय दुमन वन में परस्पर का विच्छेद होता है।

Scanned by CamScanner

नवद्वीप : प्रभुत्रय का गृह गमन तथा विश्राम :

यहाँ नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्री वास के पुष्पोद्यान में शयन मंडप के बरामदे में भक्तवृन्द के साथ भावाविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी क्रम से श्रीश्रीराधाकृष्ण के सखियों सहित अपने-अपने गृह गमन एवं शयन पद गान करने लगे। महाप्रभु श्रवण करते-करते भावावेश में हुँकार कर अर्धबाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी ने पद गान समाप्त किया। महाप्रभु ने अर्धबाह्य दशा में परिकर गणों के साथ अपने गृह को गमन किया। दाहिने श्री नित्यानंद प्रभु, बायें श्री अद्वैत प्रभु एवं पीछे भक्त वृन्द ब्रजभाव में चकित नेत्रों से इधर-उधर देखते हुए कभी तेज कभी मंदगति से महाप्रभु के पुर के पूर्व सिंह द्वार पर पहुँचे। महाप्रभु ने वहाँ से दोनों प्रभु एवं भक्त वृन्द को यथा योग्य प्रेमालिंगनादि कर विदाई देकर पुर में प्रवेश किया। सबके द्वारा निज-निज गृह गमन करने पर भी प्रेमाधिक्य वशतः श्रीनित्यानंद प्रभु ने महाप्रभु के संग पुर में प्रवेश किया। उनके जाने के पश्चात् गोस्वामीगण एवं श्री गुरु वर्ग के सहित साधक दास ने पुर में प्रवेश कर महाप्रभु को उनके शयनालय के बरामदे में स्वर्ण चौकी पर बिठाकर सुगन्धित जल से उनके पाद प्रक्षालन कर उत्तरीय वस्त्र से पोंछा। महाप्रभु द्वारा गृह में रत्न पलंग पर शयन करने पर साधक दास ने पाद संवाहन किया। महाप्रभु के निद्रित होने पर साधक दास ने क्रम पूर्वक श्री नित्यानंद प्रभु से लेकर श्री गुरुदेव पर्यन्त पाद संवाहनादि द्वारा उन्हें निद्रित कराकर अपने गृह में विश्राम किया।

इति नवद्वीप की निशांत लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

प्रातर्लीला: नवद्वीप (६ दंड)

(प्रात: ६ बजे से लेकर दिन ८-२४ मिनट तक)

श्री श्री नवद्वीप : प्रातर्लीला सूत्र :

पश्यन्तीं स्व-सुतं शती भगवती संकीर्तने विक्षतं
प्रातर्हा कथमेव ते वपुरिदं सूनो बभूव क्षतम।
इथं लापनत: स्वपुत्र-वपुषि व्यग्रा स्पृशन्ती मुहु-
स्तल्पाज् जागरयाञ्चकार यमहं तं गौरचन्द्रं भजे।।
भक्तै: सार्धमुपागतैर्भुवि नतै: श्रीवास-गुप्तादिभि:
पृच्छ्दभि: कुशलं प्रगे परिमिलन् प्रक्षाल्य वक्त्रं जलै:।
पुष्पादि-प्रतिवासितै: सुकथयन् स्वप्नानुभूतां कथां
स्नात्वाद्याद्धरिशेषमोदनवरं यस्तं हि गौरं भजे।।

प्रात: काल में भगवती शची माता जिन्होंने अपने पुत्र विश्वम्भर के संकीर्तन में विक्षत अंगो को देखकर हाय! हाय! पुत्र! तुम्हारा शरीर इस प्रकार से क्षत कैसे हुआ? यह कहकर अति व्यग्र भाव से जिनके शरीर को स्पर्श करते हुए पुन: पुन: लालन करते-करते जिन्हें शय्या पर जागृत कराया था—मैं उन्हीं श्री गौरचन्द्र का भजन करता हूँ।

प्रभात में श्री वास पंडित, मुरारी गुप्त आदि भक्त वृन्द श्री गौरांग के निकट आकर उनसे दण्डवत प्रणाम पूर्वक कुशल पूछते हैं। श्री गौरांग गुलाब पुष्प द्वारा सुगन्धित जल से मुख प्रक्षालन करके उनके साथ मिलन अंत में भाव पूर्ण स्वप्नानुभूत बात कहकर स्नान के अंत में अति उत्कृष्ट श्री कृष्ण प्रसादान्न का भोजन करते हैं, मैं उन्हीं श्री गौरचंद्र का भजन करता हूँ।

नवद्वीप: महाप्रभु का शय्या त्याग एवं भावावेश :

श्री धाम नवद्वीप में प्रात: काल में साधक दास ने 'श्री गौर नाम' उच्चारण करते हुए शय्या त्याग कर दंत धावन आदि प्रात: कृत्य समाप्त करके श्री गुरु वर्ग से लेकर गोस्वामी वर्ग तथा तीन प्रभु के शौचालय को सुगन्धित जल से मार्जन कर धूपादि द्वारा सुगन्धित करके हस्त पादादि प्रक्षालन कर गंगा स्नान के लिए गमन किया। गंगा स्नान कर प्रार्थना एवं स्तवादि का पाठ करते हुए गृह आने पर तिलकादि धारण करके श्री गुरुदेव के शयन मंदिर के प्रांगणादि को स्वर्ण झाड़ू से मार्जन करके उनकी दंत धावन वेदी पर स्वर्ण चौकी, सुगन्धित जलपात्र, शुष्क गमछा, आम्र पत्र पूटिका (आम के सुकोमल पत्र से निर्मित दंतकाष्ठ) सुगंधी चूर्ण एवं स्वर्ण जिह्वा शोधनी रखी। सुगन्धित जल से भरा हुआ स्वर्ण जल पात्र एवं कोमल सुगंधित मिट्टी बाह्यागार में रखी। तत्पश्चात् श्री गुरुदेव के शयन कक्ष में जाकर श्री चरण संवाहन द्वारा उन्हें जगाकर उनके प्रात: कृत्य, दंत

Scanned by CamScanner

धावनादि के समाप्त होने पर श्री गुरुदेव के पीछे-पीछे जल पात्र लेकर गंगा स्नान के लिए गमन किया। श्री गुरुदेव के द्वारा गंगा को प्रणाम एवं मस्तक पर जल छिड़क कर गंगा स्नान करने के बाद ऊपर आने पर साधक ने उनकी अंग मार्जनादि सेवा करके शुष्क श्वेत वस्त्र पहनाये। श्री गुरुदेव के द्वारा स्तवादि पाठ करते हुए गृह आने पर साधक दास जल पात्र एवं आर्द्र वस्त्रादि लेकर उनका अनुगमन करता है। श्री गुरुदेव के गृह आने पर साधक दास ने उनके पाद प्रक्षालन करके उन्हें आसन पर बिठाकर तिलकादि वेश-भूषा रचना करायी। (इसी प्रकार अपने-अपने सेवक गण द्वारा समस्त गुरू वर्ग एवं गोस्वामी वर्ग की भी सेवा होती है।) तत्पश्चात् श्री गुरुदेव ने तुलसी को जल सिंचन, परिक्रमा एवं दण्डवत प्रणामादि किया। उसी प्रकार साधक दास भी गुरुदेव का आनुगत्य करता है। तत्पश्चात् श्री गुरुदेव के साथ जाकर श्री गुरुवर्ग के साथ मिलते हुए साधक दास ने भी क्रमपूर्वक दण्डवत प्रणामादि किया। त्तपश्चात् सभी ने मिलकर श्री मन्नित्यानंद प्रभु के शयन मंदिर में जाकर प्रातः कालोचित सेवा द्रव्यादि को यथा स्थान पर सुसज्जित करके रखा। श्री मन्नित्यानंद प्रभु शय्या त्याग करके प्रातः कृत्यादि समापन करने पर परिकरों सहित महाप्रभु के शयन मंदिर में आते हैं। सपार्षद श्री अद्वैत प्रभु तथा श्री गदाधर, श्री वासादि भक्त वृन्द भी प्रातः कृत्यादि समापन के अंत में पुर शोभा दर्शन करते हुए श्री मन्महाप्रभु के पुर में प्रवेश करते हैं।

महाप्रभु का पुर वर्णन :

श्री मन्महाप्रभु के पुर की दीवार स्वर्णमय हैं। चारों दिशाओं में चार द्वार हैं। प्रत्येक बहिर्द्वार बन्धन माला (बंदनवार) तथा पुष्प मालाओं से सुशोभित है। चारों द्वारों से होकर चार चौड़े मार्ग मध्य में आकर मिलते हैं। प्रत्येक मार्ग के दोनों ओर लगाये गये रत्नमय वृक्ष लतायें शोभा पा रहे हैं। पूर्व दिशा में विशिष्ट शोभा युक्त विचित्र सिंह द्वार है। शिखर देश स्वर्ण कुंभ, ध्वजा, पताकादि से सुशोभित है। पुर के चार खंडों में तीस चक हैं। ईशान कोण के खंड में शची माता के छः चक हैं—ईशान के भाग में कुआ है, उसके दक्षिण में श्री जगन्नाथ मिश्र का आलय है, उसके पश्चिम में शची माता का आलय, उसके पश्चिम में तीन प्रभु के श्रृँगार गृह, उसके उत्तर में तीन प्रभु के दंत धावन एवं स्नान गृह, उसके पूर्व में ईशान दास का गृह है। अग्नि कोण में बारह चक का महाप्रभु का खंड है- उसके वायु कोण में महाप्रभु का शयन आलय, उसके दक्षिण में महाप्रभु का भोजनालय, उसके दक्षिण में नारायण का मन्दिर, उसके दक्षिण में रत्न भण्डार, उसके पूर्व में चन्द्रशाला, उसके उत्तर में नृत्य आँगन (यहाँ पर भागवत पाठ एवं कीर्तनादि होता है), उसके उत्तर में बंधु बैठक, उसके उत्तर में योगपीठ पुष्पोद्यान, उसके पूर्व में रिक्त चक (यहाँ पर भक्त सम्मेलन होता है), उसके दक्षिण में अतिथि भवन, उसके दक्षिण में दास गणों का गृह, उसके दक्षिण में कूप का भाग है। नैऋत्य कोण में आठ चक का विष्णुप्रिया देवी का खण्ड, उसके ईशान में शचीमाता का खण्ड, सीता देवी एवं मालिनी आदि का भोजनालय, उसके दक्षिण में विष्णु प्रिया की बैठक, उसके दक्षिण में विष्णुप्रिया का रसोई गृह, उसके पश्चिम में उनका रत्न भण्डार, उसके उत्तर में दासीगणों का आलय, उसके उत्तर में विष्णुप्रिया का शयनालय, उसके उत्तर में कूप, कुण्ड, अंगन वेदी, मंडप, स्नान, श्रृँगार,

Scanned by CamScanner

षड्-ऋतु वनादि युक्त चक हैं। उसके बाद वायु कोण में चार चकों का श्री लक्ष्मी प्रिया का खंड-उसके ईशान में रत्न भण्डार, उसके दक्षिण में लक्ष्मीप्रिया की बैठक, उसके पश्चिम में उनका शयनालय, उसके उत्तर में दासीगणों का आलय-कुल मिलाकर तीस भाग हैं।

पुर के चारों ओर स्थित स्वर्ण दीवार के बाहर क्रम पूर्वक केलावन, फूलवन तथा फलवन वेष्टित (वृत्ताकार रूप में) हैं। पुर के उत्तर में कदली वन (केला वन) के मध्य तीन प्रभु का बाह्यागार स्थित है। पुर के चारों ओर स्थित चारों द्वारों से रत्न जड़ित चार मार्ग गंगा तीर तक जाते हैं। उनके दोनों ओर बकुल वृक्षों की श्रेणी है। मूल गंगा के जल प्रवाह से नवद्वीप धाम चारों ओर से घिरा हुआ है। जिनका जिस दिशा में गृह है उसी दिशा से भक्तवृन्द महाप्रभु के पुर में प्रवेश करते हैं। उत्तर द्वार से श्री गोस्वामी पाद गण आगमन करते हैं। साधक दास गोस्वामीगणों की आज्ञा क्रम से सुगन्धित जल एवं स्वर्ण झाड़ू द्वारा प्राँगणादि एवं वेदी समूह का मार्जन करता है। तीन प्रभु के बाह्यागार के लिए स्वर्ण जलपात्र में जल एवं सुगंधित कोमल मिट्टी रखकर उनकी दंत धावन वेदी पर कोमल आम्रपत्र पूटिका (आम के सुकोमल पत्र द्वारा निर्मित दंत काष्ठ), सुगंधी चूर्ण, स्वर्ण जिह्वा शोधनी, स्वर्ण जल पात्र में सुगन्धित जल एवं स्वर्ण कुल्लादानी अलग-अलग सुसज्जित करके रखे। उसके बाद स्नान वस्त्र, सुगंधी नारायण तेल, सुगन्धित उबटन आदि तीन प्रभु की स्नान वेदी पर सजाकर रखे। श्रृँगार वेदी पर अगुरु, धूप धूमेर अग्न्याधार (धूप डालकर सुगन्धित धुंआ निकालने का अग्निपात्र), मणि दर्पण, कंघी, पीत वस्त्रों की जोड़ी, माल्य, चंदन एवं अलंकारादि सजाकर रखे। बैठक गृह का मार्जन करके भागवत पाठ के लिए व्यास आसन, तीन प्रभु एवं भक्त वृन्द के बैठने के लिए आसन आदि बिछाकर रखे।

साधक दास की प्रातः कालीन सेवा।

उसी समय शची माता के महाप्रभु को जगाने के लिए अन्तः पुर से आगमन करने पर दोनों प्रभु, भक्त वृन्द एवं साधक दास सभी ने उनको दण्डवत प्रणाम किया। शचीमाता वात्सल्य प्रेम में द्रवीभूत चित्त से महाप्रभु को जगाने के लिए पुकारती हुई उनके शयनालय में प्रवेश करके प्रभु के पलंग पर अपने बायें हाथ पर देह भार डालते हुए दाहिने हाथ से प्रभु को लालन करते हुए बोलती हैं- हे बाप विश्वम्भर! हे निमाई! शीघ्र उठो, प्रातः काल हुआ। तुम्हारे प्रिय श्री वास आदि भक्त वृन्द उत्कंठित चित्त से तुम्हारे दर्शन करने के लिए आकर सभी प्रांगण में अवस्थान कर रहे हैं। तत्पश्चात् शची माँ रात्रि के नृत्य कीर्तन विलास में श्री मन्महाप्रभु के अंग में पछाड़ द्वारा क्षत चिह्नादि देखकर कहने लगीं- हाय! हाय! पुत्र! तुम्हारे अंग किस प्रकार इतने क्षत हुए? यह कहकर माँ अश्रुपूर्ण नेत्रों से व्यग्र भाव से उनके शरीर का स्पर्श करते हुए पुनः पुनः लालन करने लगीं। महाप्रभु द्वारा शय्या त्याग कर माता के चरणों में दण्डवत प्रणाम करके भूमि संलग्न चरणों से पलंग पर बैठने पर माता दासगणों को गौर चंद्र के प्रातः कृत्य एवं स्नानादि का आदेश देकर अंतः पुर में प्रवेश कर गईं। तब दोनों प्रभु एवं भक्त वृन्द द्वारा महाप्रभु के शयनालय में प्रवेश करने पर उन्होंने दोनों प्रभु को आलिंगन करके आसन पर बिठाया। श्री वास, मुरारी आदि भक्त वृन्द द्वारा महाप्रभु के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम पूर्वक

Scanned by CamScanner

कुशल प्रश्न पूछने पर महाप्रभु भाव में भरकर स्वप्नानुभूत ब्रज माधुरी का वर्णन करते-करते प्रेमावेश में अतिशय विह्वल हो पड़े। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु के भाव को जानकर ब्रज के जावट में श्री राधा के निकट मुखरा का आगमन, श्री राधा का जागरण, श्यामा सखी के साथ रसोद्‌गार तथा मधुरिका गमन आदि पद गान करने लगे। श्रवण कर महाप्रभु अश्रु कंपादि सात्विक विकार युक्त होकर श्री राधा भाव में विभोर हुए। भक्त वृन्द भी अपने-अपने सिद्ध स्वरूप में ब्रजलीला में आविष्ट हुए।

प्रातर्लीलाः ब्रजधाम (६ दंड)

(प्रातः ६ बजे से लेकर दिन ८-२४ मिनट तक)

श्री श्री ब्रजधामः प्रातर्लीला सूत्र :

राधां स्नात-विभूषितां ब्रजपयाहूतां सखीभिः प्रगे
तद्‌गेहे विहितान्नपाकरचनां कृष्णावशेषाशनाम्।
कृष्णं बुद्धमवाप्तधेनुसदनं निर्बूढ़-गोदोहनं
सुस्नातं कृतभोजनं सहचरैस्तांचाथ तंचाश्रये।।

जो प्रातः काल में स्नान के अंत में विविध अलंकारों से भूषिता होकर एवं यशोदा द्वारा बुलाये जाने पर नन्दालय में विभिन्न प्रकार के अन्नादि रसोई करती हैं एवं श्री कृष्ण भुक्तावशेष भोजन करती हैं, उन्हीं श्री राधा को एवं जो प्रातः काल में जागकर गोशाला गमन करते हैं यथा नियम गोदोहन, स्नान एवं सहचरों के साथ भोजन करते हैं- उन्हीं श्री कृष्ण का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।

ब्रजधामः श्री राधा द्वारा शय्या त्याग तथा रसोद्‌गारादि :

प्रातः काल ब्रज के जावट में साधक मंजरी ने अपने गृह में शय्या से उठकर दंत धावनादि प्रातः कृत्य समापन करके श्री गुरु देवी आदि एवं श्री राधा के बाह्यागार को सुगन्धित जल एवं केश द्वारा मार्जन करके धूप द्वारा सुगन्धित किया। तत्पश्चात् स्नान करके श्री राधा के प्रसादी वस्त्रालंकरादि से भूषिता होकर श्री गुरुदेवी के शयन गृह के प्राँगणादि का मार्जन करके प्रातः कृत्य की सेवा सामग्री सुसज्जित करके रखी। इसके बाद श्रीगुरुदेवी के पाद संवाहन द्वारा उनको जगाकर उनके प्रातः कृत्यादि के अंत में उनको स्नान कराकर वस्त्रालंकार द्वारा भूषिता कराया। (श्री गुरु मंजरीगणों की सेवा भी अपनी-अपनी किंकरियों द्वारा इसी प्रकार से होती है।) उसके बाद श्री गुरु देवी के अनुगमन में साधक दासी श्री गुरु मंजरी वर्ग के संग मिलकर श्री राधा के पुर में प्रवेश करती है। श्री रूप मंजर्यादि भी स्नान, श्रृँगार के अन्त में श्री राधा के पुर में आगमन करती हैं। सभी पुर शोभा दर्शन करते हुए पुर में प्रवेश करती हैं।

Scanned by CamScanner

विविध मणिरत्नों से जड़ित पुरी कोटि-कोटि चन्द्र प्रभा को भी पराभूत करके प्रकाशमान हो रही है। दासी गणों द्वारा दधि मंथन की ध्वनि के साथ गेंहू पीसने की ध्वनि मिलकर समुद्र कल्लल वत् प्रतीत हो रही है। पुर की चारों दिशाओं की दीवारें स्वर्णमय हैं। पूर्व एवं दक्षिण दिशाओं में हीरे जड़ित कपाट युक्त दो विशाल द्वार हैं। उत्तर एवं पश्चिम में दो खिड़की के द्वार हैं। पुर के चारों ओर षड् ऋतु वन में श्रेणी युक्त वृक्ष लतायें, फूल एवं फलों के भार से अवनत होकर शोभा पा रहे हैं। मन्दार,पारिजात, सन्तान एवं हरिचन्दनादि वृक्ष समूह मृदु मन्द वायु से आन्दोलित होकर चारों दिशाओं को पुष्पों की गन्ध से सुगन्धित कर भृंग कुल को उन्मत्त कर रहे हैं। वृक्ष पर प्रफुल्लिता लतायें विपुल पुष्प गुच्छ से शोभायमान होकर मृदुल पवन स्पर्श से उत्तमा नट की भाँति नृत्य भंगी प्रकाश करते हुए दर्शकों के चित्त को मुग्ध कर रही हैं। कोकिलादि पक्षी समूह मधुर स्वर में गान कर रहे हैं एवं मयूर कुल परमानन्द पूर्वक नृत्य कर रहे हैं। पुर की उत्तर दिशा में स्वर्ण कदली वन में माधवी, मालती, स्वर्ण यूथी एवं नवमल्लिकादि के कुँज में श्री राधा एवं अनंग मंजरी का बाह्यागार है। पुर के चारों ओर क्रमश: कदली वन, फूल वन तथा फल वन परिवेष्टित (चारों ओर से घेरा हुए) हैं। चारों द्वारों से चार मार्ग मध्य में आकर मिल रहे हैं। पुर चार खण्ड एवं पच्चीस चक में विभक्त है।

श्रीराधा का पुर शोभा (जावट) वर्णन।

ईशान कोण के खण्ड में जटिला के नौ चक (भाग) हैं—वायु कोण में गोप गोल का गृह है, इसके पूर्व में जटिला का शयन गृह, इसके पूर्व में दुर्मद का गृह, इसके दक्षिण में आयान (अभिमन्यु गोप) का गृह, इसके पश्चिम में आयान की बैठक, इसके पश्चिम में भण्डार गृह, इसके दक्षिण में रसाई गृह, इसके पूर्व में भोजनालय, इसके पूर्व में बंधु बैठक है। श्री राधा के तीन खण्डों में सोलह चक (भाग) हैं। अग्नि कोण के खण्ड में छ: चक हैं—इसके ईशान कोण में श्यामला का गृह, इसके दक्षिण में चन्द्र शाला, इसके पश्चिम में सखीगणों का आलय, इसके उत्तर में मंजर्यादि दासी गणों का आलय, इसके पश्चिम में श्री राधा का भोजनालय, इसके दक्षिण में श्री मती की बैठक है। नैऋत्य कोण के खण्ड में छ: चक हैं—इसके ईशान कोण में श्रीराधा एवं श्रीअनंग मंजरी का श्रृँगारालय, इसके दक्षिण में श्री राधा का शयनालय (इसी शयनालय से पुर की दक्षिण दिशा में गुप्त मार्ग द्वारा अभिसारादि होता है।), इसके दक्षिण में अंनग मंजरी का शयनालय, इसके पश्चिम में मिष्टान्न भण्डार एवं रसोई गृह, इसके उत्तर में रत्न भण्डार, इसके उत्तर में दुग्ध भण्डार है। वायु कोण के खण्ड में चार चक हैं—इसके ईशान में श्री राधा एवं अनंग मंजरी का दंत धावनालय, इसके दक्षिण में उनका स्नानालय, इसके पश्चिम में घृत भण्डार एवं इसके उत्तर में चिड़िया घर है। कुल चार खण्डों में पच्चीस चक हैं।

श्री राधा रानी के बरसाना में अवस्थान काल में वृषभानु पुर की शोभा स्मरणीय है। वृषभानुपुर की मनोरम शोभा वर्णनातीत है। ब्रह्मा स्वयं शैल के रूप में विराजते हैं। उसी शैल के ऊपर सुशोभित पुर विराजमान है। चारों दिशायें मणि माणिक्य जड़ित स्वर्ण दीवार द्वारा घिरी हुई हैं। पुर के चारों ओर चार द्वारों में हीरे द्वारा निर्मित

Scanned by CamScanner

अष्ट कपाट हैं। पूर्व दिशा में अत्युच्च सिंह द्वार है—जिसकी कांति से दिग्मंडल समालोकित है। उसके ऊपर स्वर्ण कुंभ, बंधनमाला (माला द्वारा बंधा हुआ), ध्वजा, पताका आदि से सुशोभित है। पुर के पूर्व द्वार से

वृषभानुपुर वर्णन।

किंचित वक्र होकर पश्चिम द्वार तक पथ स्थित हैं। उत्तर द्वार से दक्षिण द्वार तक अतिसरल रूप से पथ सुशोभित है। इस प्रकार से पुर चार खण्डों में विभक्त होकर नाना मणि-मणिक्य से जड़ित तीस चकों में है। ईशान कोण के खण्ड में ग्यारह चक हैं—उसके ईशान में श्री दाम की बैठक है, उसके दक्षिण में उनका शयनालय, उसके दक्षिण में बंधु बैठक, श्री दाम की बैठक के पश्चिम में वृषभानु महाराज की बैठक, उसके दक्षिण में उनका शयनालय-नाना मणि माणिक्य द्वारा चित्रित है। उसके चारों कोने में चार रत्नालय, बन्धन माला, स्वर्ण कुंभ, ध्वजा, पताकादि से सुशोभित हैं। उसके दक्षिण में वृषभानु बाबा का भोजनालय, उसके दक्षिण में सूर्य मन्दिर, उसके पश्चिम में रसोई गृह (यहां कच्ची अर्थात् दाल, चावल, सब्जी आदि की रसाई होती है), उसके मध्य में चूल्हा, वेदी, कूप इत्यादि सुशोभित हैं। उसके उत्तर में भंडार गृह, उसके उत्तर में कीर्तिदा माता का शयनालय, उसके उत्तर में धात्री, दासी तथा भृत्याादि का आलय, सब मिलकर ग्यारह चक हैं। उसके बाद अग्नि कोण के खण्ड में सात चक हैं—उसके ईशान में श्री नन्द महाराज का आलय, उसके दक्षिण में श्री बलदेव का आलय, उसके दक्षिण में रोहिणी माता का आलय, उसके पश्चिम में यशोदा माता का शयनालय, उसके उत्तर में श्री कृष्ण का आलय, उसके पश्चिम में राई का भोजनालय, उसके दक्षिण मे श्री राधा की बैठक है। श्री राधा की आविर्भाव तिथि के उपलक्ष्य में निमन्त्रित श्री नन्द महाराजादि इन्हीं गृहों में अवस्थान करते हैं। नैऋत्य कोण के खण्ड में आठ चक हैं। इसके ईशान में अनंग मंजरी का शयनालय है, उसके दक्षिण में ललितादि सखीगणों का शयनालय है, उसके दक्षिण में श्रीमती राधा का शयनालय है, उसके बाहर के प्रांगण में स्फटिक मणि का स्तंभ हैं, स्वर्ण दंड से स्वर्ण श्रृँखला द्वारा बंधा हुआ मणि मुक्तादि निर्मित झूला सुशोभित है। इसी शयनालय के ऊपर मणिमय चन्द्र शालिका पर स्थित रत्न सिंहासन पर बैठकर श्रीमती प्रेमानंद में श्री कृष्ण का दर्शन करती हैं। इसके दक्षिण में दुग्ध भण्डार, इसके पश्चिम में पक्का मिष्टान्न रन्धनालय, उसके मध्य में चूल्हा, वेदी तथा कूपादि सुशोभित हैं। वायु कोण में चार चक का एक खण्ड है— उसके अग्नि कोण में यूथेश्वरी गणों का आलय, उसके उत्तर में चन्द्र शाला, उसके बगल में पृथक रूप से आयान एवं दुर्मद का आलय, कभी-कभी वे आकर उसमें वास करते हैं। उसके पश्चिम में चिड़िया घर, उसके दक्षिण में राई एवं अनंग मंजरी का दंतधावन तथा स्नान वेदी सुशोभित है। सब मिलाकर चार खण्ड में तीस चक हैं।

साधक मंजरी की प्रातः कालीन सेवा।

साधक दासी ने श्री गुरु देवी के आज्ञा क्रम से एवं श्री रूप मंजरी के आनुगत्य में श्री राधा के गृह, आँगन एवं चबूतरादि को स्वर्ण झाड़ू एवं सुगंधित जल से स्वच्छ करके श्री राधा एवं अनंग मंजरी के प्रातः कृत्यादि के लिए यथा स्थान स्वर्ण पात्र में सुगंधित जल एवं सुगंधित कोमल मिट्टी रखी। दंत धावन- वेदी पर कोमल आम्र पत्र पूटिका (आम

Scanned by CamScanner

के सुकोमल पत्र द्वारा निर्मित दातुन), सुगंधी चूर्ण (मंजन), स्वर्ण जिह्वा शोधनी, स्वर्ण पात्र में सुगन्धित जल, गमछा एवं स्वर्ण कुल्लादानी रखी। दोनों के लिए ही स्नान वेदी पर सुगंधित नारायण तेल, उबटन, स्नान वस्त्र एवं सुगन्धित जल रखा। श्रृँगार मंडप पर नीलाम्बर, चतुः सम (कस्तूरी, कर्पूर, कुंकुम, केसर का मिश्रण), चंदन, केसर, कर्पूर, कुंकुम, आलता, सिंदूरादि भिन्न-भिन्न स्वर्ण कटोरियों में सुसज्जित करके रखे। मणिहार, रत्नांगुरीयक (बिछुआ), मणिकंकण, स्वर्ण कंघी, मणि दर्पण एवं धूप तथा अगुरु, धुँए का अग्न्याधार आदि सज्जित करके रखे। भोजन गृह में आसन बिछाकर स्वर्ण थाल, पान पात्र (गिलास) सुगन्धित जल आदि यथा स्नान रखे। बैठक गृह में आसनादि सुसज्जित किया। बैठक गृह मरकत मणि से जड़ित है, इन्द्र नील मणि के कपाट युक्त चार द्वार एवं आठ खिड़किया हैं। गृह के मध्य में श्री राधा का अष्ट मणि जड़ित पलंग है। उस पर गद्दी तकिया, गोल तकिया सुसज्जित करके अष्ट सखियों के बैठने के लिए आठों दिशाओं में स्वर्ण चौकी सजाकर रखीं। अन्य छोटी-छोटी स्वर्ण चौकियों पर कर्पूर, चंदन, केसरादि के पात्र, ताम्बूल पात्र, स्वर्ण जल पात्र, चामर, व्यजनादि सजाकर रखे।

इस अवसर पर ललितादि सखीगण के अपनी-अपनी परिचारिकाओं द्वारा स्नान एवं अलंकारादि से विभूषिता होकर अपने-अपने गृह से आगमन करने पर किंकरी गणों ने उन सभी को प्रणाम किया एवं सभी

प्रातः श्रीराधा की शयन शोभा।

मिलकर श्री राधा के शयन मन्दिर में प्रवेश करके श्रीमती की शयन शोभा दर्शन करने लगीं। अष्ट मणि जड़ित स्वर्ण पलंग की दुग्ध फेन वत् शय्या पर श्रीमती राधिका शयन कर रही हैं। वह शय्या विचित्र उपाधान एवं पार्श्वोपाधानादि से परिशोभित है। शय्या के ऊपर रत्नझालर युक्त चंदवा, चारों ओर से मणि प्रदीपावली चम्पक कलिका की भाँति शोभा पा रही हैं। पलंग के चारों ओर मणि जड़ित स्वर्ण चौकी पर सुगन्धित पीने के जल का स्वर्ण जल पात्र, ताम्बूल, कर्पूर, चंदन, कुंकुम, केसर, कस्तूरी, एवं सिंदूरादि के मणिमय पात्र, चामर, व्यजनादि एवं पीकदानी आदि सज्जित हैं। सखीगण शोभा दर्शन करते हुए एक दूसरे से बोल रही हैं—'देखो सखि! श्री राधा की शय्या जैसे क्षीरसिन्धु हो—उस पर स्वर्ण राजहंसी के समान श्रीमती विराजित हैं, कोई बोलती है।—'सखी! श्री कृष्ण के लीला रूपी क्षीर सागर में श्री राधा की मनो हंसिनी विचरण कर रही है।' इस प्रकार के रसोद्गार में सखीगण आनंद रस में निमग्न हैं। इसी अवसर पर मुखरा श्री राधा को जगाने के लिए बुलाते-बुलाते आकर उपस्थित हुई—'हे राधे! हे पुत्री! तुम कहाँ हो।' यह बात बोलते—बोलते श्रीमती के

मुखरा द्वारा श्रीराधा का प्रबोधन।

शयन द्वार पर आई। 'हे पुत्री! प्रातः काल हो चुका है सभी जागृत हो चुके हैं। आज रविवार है, यह भूल गई? शीघ्र शय्या त्याग कर एवं स्नानादि करके अभीष्ट सिद्धि के लिए सूर्य पूजा करो।' इस प्रकार बोलते-बोलते श्री राधा के शयन गृह में प्रवेश किया। विशाखा मुखराके वाक्य सुनकर जाग उठीं तथा अलसाते हुए श्री राधा से कहा—'सखी! शीघ्र उठो! शीघ्र उठो!' तरंगराशि से पूर्ण सरोवर में आन्दोलिता स्वर्ण हंसी के समान श्रीमती मुखरा एवं विशाखा के वाक्य

Scanned by CamScanner

से जागृता होकर भी सुरतश्रम में अलसाकर पुनः सो गई। तब समयाभिज्ञा रति मंजरी द्वारा उन्हें प्रबोधित करने पर श्री मती अपनी बहुमूल्य शय्या से जागृत होकर उठ बैठीं। सहसा मुखरा श्री राधा के अंग पर पीतवसन देखकर संदिग्ध चित्त से कहने लगीं- 'हाय! यह क्या प्रमाद! यह क्या प्रमाद! हे विशाखे। कल संध्या काल में श्री कृष्ण के अंग पर मैने जो पीत वस्त्र देखा था वही तो यहाँ पर तुम्हारी सखी के अंग पर देख रही हूँ।

श्रीराधा के अंग पर पीतवसन देखकर मुखरा का संदेह एवं विशाखा द्वारा समाधान।

अकलंक कुलोत्पन्ना गणों का यह क्या व्यवहार है!! मुखरा के वाक्य से चकित होकर चंचल दृष्टि से विशाखा श्रीमती के वक्ष पर पीतोत्तरीय देखकर शंकिता होने पर भी प्रत्युत्पन्न मतित्व वशतः तत्क्षण मुखरा से कहने लगीं—'हे मुग्धे! हे स्वभावान्धे! खिड़की के छिद्र से गृह के अन्दर तरुण सूर्य की अरुणिम किरण माला के स्पर्श से स्वर्ण वर्णा सखी के नील वसन ही पीताम्बर के समान दिखाई दे रहे हैं। अतएव सती शिरोमणि मेरी सखी के प्रति अकारण कलंकारोप न करो।' मुखरा द्वारा विशाखा के वाक्य के प्रति ध्यान करते ही किसी किंकरी ने एक निमिष में पीत वसन हटाकर श्री मती के अंग पर नीलोत्तरीय डाल दी। श्री राधा के अंग पर मुखरा नील वसन देखकर लज्जिता होकर चली गई।

इसके बाद ललितादि सखीगण श्रीमती के शयन कक्ष में प्रविष्ट होकर संध्या गगन में तारों की राशि की भाँति मंडली बद्ध होकर राधा शशी को घेरकर बैठ गयीं। सखी गणों के आने पर विचित्र परिहास रस की तरंग

सखी गणों के साथ श्रीराधा का हास्य परिहास।

उठी। सखी गण श्री राधा के अंग पर रति चिह्नादि दर्शन कर उनसे परिहास करना चाहेंगी ऐसा जानकर मृदु हास्य से श्री मती बोलीं—'सखीगण! अभी मैंने एक विचित्र स्वप्न देखा है। वंशीधारी, पीताम्बर, मयूर पुच्छ भूषित एक श्यामल किशोर ललिता को सहसा पकड़कर चुंबन आलिंगन आदि विलास करके चला गया।' यह सुनकर ललिता ने कहा—'सखी राधे! अपनी बात को अन्यों पर क्यों थोप रही हो? वही विलास का चिह्न तुम्हारे वक्ष तथा मुख पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है।' तब किसी सखी ने कहा—'सखी गण! तुम सभी श्री मती के प्रति इस प्रकार की आशंका मत करो। कल वन में एक धृष्ट शुक ने अनार फल के भ्रम में इसके वक्ष पर एवं बिम्ब फल के भ्रम में इसके अधर पर क्षत कर दिया है।' यह सुनकर श्री राधा ने कहा—'मेरा यदि इस प्रकार हुआ है तब तुम सभी के चिह्न समूह किसने किये हैं? "श्रीमती

श्यामला सखी का आगमन तथा श्रीराधा का रसोद्गार।

की बात सुनकर सखीगण लज्जिता होकर हँसने लगीं। इसी समय श्री राधा के सानुरागमय रसोद्गार के श्रवण की लालसा से वहाँ पर श्यामला सखी का आगमन होने पर श्री मती ने उल्लास में भरकर उसे आलिंगन कर अपने निकट बिठाया। इससे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे स्वयं कांति ही श्यामला को आवृत किये हुए हो। श्रीमती सानुराग में भरकर रात्रि विलास को विस्मृत होते हुए कहने लगीं—'सखी! श्यामले!

Scanned by CamScanner

अभी तुम्हारी बात ही सोच रही थी, ठीक इसी मुहूर्त में तुम्हारा आगमन हुआ। हे सखी! यदि इसी प्रकार मेरी तृष्णा तरु सफल हो, तभी आज सुप्रभात समझूँगी। हे सुन्दरी श्यामे! मेरी यही तृष्णा तरु निरंतर वृद्धि को प्राप्त हो रही है, सखीगण भी इसे निरंतर सिंचन कर रही हैं, तथापि यह फलित नहीं होती इसका कारण क्या है? हाय! न जाने कब मैं महानन्द से इस फल को देख पाऊँगी। श्री मती की बात सुनकर श्यामला परिहास पूर्वक बोली—'सखी राधे! तुम्हारी तृष्णा तरु यदि नहीं फल रही है तो यह अविलम्ब ही निश्चित रूप से फलेगी। किन्तु हे अलसांगी! लगता है कि इस तरु का फल अति विचित्र ही होगा। क्योंकि जो सदैव आस्वाद्यमान होकर भी अनुभवहीनों के समान निरंतर अपने को अनुभव करा रहा है। जिसके अरुण वर्ण रस से तुम्हारे नेत्रों की पक्ष्मराशि (पलकें) अरुणिम हो गयी हैं, वह फल तुम्हारे नेत्र गोचर नहीं हुआ यही आश्चर्य है! हे कमलमुखी! जिस फल के पुनः पुनः आस्वादन से तुम्हारे अधर पर व्रण हुआ है—उस फल का तुमने आस्वादन नहीं किया यह उससे भी अधिक आश्चर्य है!! यह सुनकर श्री मती ने कहा—'सखी श्यामे! मेरी मर्म वेदना न समझकर तुम मुझसे परिहास कर रही हो। सखी! मंडराते हुए मेघों की रात्रि में क्षण प्रभा के क्षणिक आलोक से नयनों का अंधकार जैसे दुगुना हो जाता है, इसी प्रकार इस जीवन में श्री कृष्ण ने क्षणार्ध काल के लिए दर्शन देकर तत्क्षणात अदर्शन की विरह ज्वाला से हृदय को केवल दुगुना संतप्त किया है।' श्री मती के इस प्रबल तृष्णामयी अनुराग के परिणाम को जानकर श्यामला ने कहा—'हे सखी! प्रातः स्नान के बिना जैसे सदाचारी व्यक्ति की किसी भी कार्य में प्रवृत्ति नहीं देखी जाती है, ठीक उसी प्रकार तुम्हारे श्री मुख कमल से प्रवाहित होकर रात्रि विलास रूपी सुधामयी गंगा में स्नान नहीं करने से मेरी किसी भी कार्य में प्रवृत्ति नहीं होती। अतः हे राधे! अवहित्था (भावगोपन) को त्यागकर किंचित रजनी विलास माधुरी आस्वादन कराओ।' श्यामला की बात सुनकर श्री मती ने कहा—'हे श्यामले! रात्रि काल निकुँज निलय (गृह) में जब मैं श्याम-सौदामिनी की नवनीलकांति धारा से अभिषिक्त हो रही थी, तब कोई मुझे असंख्य मदन की नाट्य रंग भूमि में ले गया। मेरा सम्पूर्ण शरीर कंदर्प राशि से व्याप्त हो रहा था, परम उत्सुकता से मुझे अतिशय व्याकुलता हो गयी थी! सखि! मैं सभ्य रूप से उसी अनंग नट समूह की नृत्य कला का दर्शन करते-करते इस प्रकार विह्वला हुई कि मैंने अपनी समस्त इन्द्रिय वृत्ति रूपी मुद्रा उन्हीं नट गणों के हाथों में समर्पण कर दी। हे श्यामे! उसके बाद कैसा विचित्र रंग प्रकट हुआ कि शत प्रचेष्टा के बाद भी मैं उसे स्मरण नहीं कर पा रही हूँ।' श्यामला ने कहा—'राधे! यह बड़े ही आश्चर्य की बात है। जो अपनी नाट्य कला द्वारा कंदर्प कोटि नटों को विस्मय में आविष्ट करते हैं, उन्हीं दुर्गम विलास सिन्धु नटराज को कंदर्प रण में नचाकर भी तुम सभ्य के रूप में केवल नृत्य ही देख रही हो—यह तुमने अलिक (मिथ्या) बात कही है?' श्री मती ने कहा—'श्यामले! तुम जो कह रही हो और मैं जो कह रही हूँ इसके अलावा भी तुम्हारे तथा मेरे लिए अज्ञात और कितनी सैकड़ों अनुभूतियाँ हैं जो मेरे अंतर में विराज रही हैं—उन्हें मैं प्रकाश करने में सर्वथा अक्षम हूँ। कहो सखी! यह क्या इन्द्रजाल है या स्वप्न या मेरा चित्त विभ्रम मात्र है!! यह मैं कुछ भी निर्णय नहीं कर पा रही हूँ। तृष्णातुर सुप्त

Scanned by CamScanner

व्यक्ति स्वप्न में स्निग्ध पेय वस्तु का पान करके भी जैसे तृष्णातुर ही रहता है, उसी प्रकार श्री कृष्ण के साथ रजनी विलास तृप्ति के अभाव में स्वप्न के समान ही मिथ्या वत् बोध हो रहा है।' श्यामला ने हँसते-हँसते हरिहास की मुद्रा में कहा—"सखी राधे! यह स्वप्न या इन्द्रजाल कुछ भी नहीं है, यथार्थ में तुम्हारे चित्त में विभ्रम हुआ है। जिसकी अधर सुधा की मधुर गंध दूर से ही कुलांगना गणों को अंधा कर देती है, वही अधर मधु अति मात्रा में पान करने पर इस प्रकार की भ्रान्ति हुई है।"

श्यामला के साथ प्रेममयी श्री राधा के रसोद्गारों के इस प्रकार के शत-शत उत्सों (फव्वारों) में सखी मंजरी गणों के प्राण रूपी मीन मन सुख से तैरने लगे। इसी समय वहाँ मधुरिका नाम की प्रिय सखी का आगमन हुआ। मधुरिका नन्दालय से होकर आई हैं, ऐसा जानकर सखी गणों द्वारा नन्दालय की वार्ता पूछने पर मधुरिका

मधुरिका सखी का आगमन तथा श्रीकृष्ण का जागरणादि कथन।

श्री कृष्ण की जागरणादि प्रातः कालीन लीला वर्णन करने लगीं—'हे राधे! नन्दालय में माँ यशोमति श्री कृष्ण गोचारण से क्लान्त होकर प्रातः काल में निद्रामग्न हैं ऐसा जानकर श्री कृष्ण की निद्रा भंग के भय से व्यग्र भाव से दासी गणों को दधि मंथन के उच्च शब्द करने से रोक रही हैं, इसी अवसर पर श्री कृष्ण दर्शन की लालसा से पौणमासी देवी नन्दालय में आगमन कर सुखमय नन्द भवन को श्वेतद्वीप के समान अनुभव कर रही हैं। समुद्र से निकले हुए विचित्र रत्न समूहोंसे परिशोभित, मन्थन जनित गव्य बिन्दु समूहों से रम्यांगन, प्रेमस्निग्ध- जनों से परिपूर्ण एवं दुग्ध फेन की भाँति अनन्तरूप सुख शय्या पर निद्रित अच्युत विशिष्ट नन्द भवन के दर्शन से उन्होंने परमानन्द लाभ किया, माता यशोदा पौर्णमासी देवी को साक्षात् तपस्या श्री के समान देखकर हर्ष सहित उठते हुए बोलीं—'हे भगवती आइये! आइये! क्या सौभाग्य है! प्रातः ही आपका दर्शन लाभ किया। हे ब्रज जनों की वंदनीया! आपके श्री चरणों में प्रणाम करती हूँ।' श्री यशोदा से प्रणता होने पर आलिंगन करके तथा आशीर्वाद करते हुए पति पुत्र तथा गो समूहों सहित यशोदा की कुशल पूछी। श्री यशोदा ने सब कुशल निवेदन करके उत्कंठिता पौर्णमासी देवी के साथ श्री कृष्ण के शयनालय में प्रवेश किया। इसी समय पर बलदेव के साथ भद्रसेन, स्तोक कृष्ण, गोभट्ट, सुबल, अर्जुन, श्रीदाम, सुदाम, दाम, उज्ज्वल, किंकणी आदि श्री कृष्ण के सखागण आकर उन्हें बुलाने लगे—'हे कृष्ण! उठो-उठो'—शीघ्र जागृत होओ, प्रभात हो गया है। दादा बलाई तुम्हारे लिए आंगन में प्रतीक्षा कर रहे हैं।' सखागण के आह्वान से मधु मंगल की निद्रा भंग हुई। बटु ''ही ही'' कर हँसते-हँसते उच्च स्वर से बुलाने लगा—'हे कृष्ण उठो शीघ्र गोष्ठ को चलो चलें' बटु के वाक्य से श्री कृष्ण जागृत होकर भी घूर्णाकुल नेत्रों से

यशोदा द्वारा श्रीकृष्ण का प्रबोधन।

शय्या त्याग करने में सक्षम नहीं हुए। क्षीर सागर के रत्न मंदिर में अनन्त शय्या के ऊपर योग निद्रा में निद्रित श्री भगवान को प्रलय के अन्त होने पर जैसे वेदमाता जागृत कराती हैं, उसी प्रकार ब्रजेश्वरी माता श्री कृष्ण को प्रबोधित करने लगीं। पलंग के ऊपर अपने वाम हस्त को रखते हुए उस पर अपना अंगभार अर्पण करते हुए, दाहिने

Scanned by CamScanner

हाथ से श्री कृष्ण को लालन करते-करते वात्सल्य में भरकर कहने लगीं—"हे पुत्र, उठो-उठो, पुत्र मुख दर्शन से जननी आनन्द लाभ करने लगीं। तुम्हारे अदर्शन से गाभी कुल अपने बछड़ों को स्तनपान नहीं करा रही है। फिर भी तुम्हारे पिता तुम्हारे निद्रा भंग के भय से स्वयं गोष्ठ के लिए चले गये हैं। तुम्हारे सखागण आ चुके हैं उनके साथ गो दोहन के लिए गोष्ठ में जाओ। यह क्या! बलदेव का नील वसन तुम्हारे अंग पर क्यों?" यह कहकर माता नील वसन धनिष्ठा के हाथ में देते हुए रात्रि विलास जनित श्री कृष्ण के अंग में नखक्षतादि चिह्न देखकर कहने लगीं—"देखो भगवती! कमल दल की अपेक्षा भी सुकोमल पुत्र के अंग चंचल बालकगणों के संग मल्लयुद्ध में किस प्रकार से क्षत हुए हैं। कितना धातु राग अंग में लगा हुआ है! हाय! इसका क्या प्रतिकार है मैं नहीं जानती।" स्नेहमयी माता यह बात बोलते-बोलते नयनों से नीर तथा दुग्ध धारा से शय्या को भिगोने लगीं। जननी के स्नेह भरे वाक्य से श्री कृष्ण के लज्जित एवं संकुचित नेत्र देखकर मधुमंगल करने लगा—"हे मातः। चंचल बाला आली कुल (बालक समूह, श्लेषार्थ में बाला या ब्रजांगना समूह) बोलने से भी नहीं मानते, सुचंचल सखा के साथ वे इसी प्रकार से क्रीड़ा करते हैं।" उसके बाद श्री कृष्ण माता के निकट मधुर बाल्य भाव प्रकाश करते हुए शय्या त्याग कर अंगड़ाई एवं जमुहाई लेने लगे। दशनांशु (दांतों की छटा) जाल द्वारा जैसे मुख चन्द्र की आरती कर रहे हों। उसके बाद श्री कृष्ण ने शय्या त्याग कर पौर्णमासी एवं माता के श्री चरणों की वन्दना की। तत्पश्चात् माता के आदेश से दास गणों ने श्री कृष्ण को मणि पीठ पर बिठाकर उनके मुख प्रक्षालनादि कराने पर माता ने अपने वसनाँचल से श्री कृष्ण के सर्वांग पोंछ कर अस्त-व्यस्त केश पाश का जूड़ा बांध कर ललाट पर गोरोचन का रक्षा तिलक अंकन किया एवं हार, माल्यादि तथा मणिमय मुकुट पहनाया।

श्रीराम कृष्ण की आरती, भोजन तथा गोशाला गमन।

उसी समय बलदेव श्री कृष्ण के पास खड़े हो गये, माँ ने दोनों की कर्पूर बत्ती द्वारा आरती की। तब रोहिणी, अंबा, किलिंबादि श्री कृष्ण की बाल्य माधुरी गान करने लगीं। तत्पश्चात् माता ने सखागणों के साथ श्री कृष्ण को माखन मिश्री का भोजन कराया। उसके बाद श्रीकृष्ण-बलदेव ने भी सखाओं के साथ गोदोहन के लिए गोशाला को गमन किया। गोशाला गमन करते समय श्री कृष्ण का जो अद्भुत माधुर्य सिंधु उच्छसित (उमंग से उछाल भरना) होने लगा, अट्टालिका से ब्रजसुन्दरीगण उस माधुर्य को देखकर विमोहित होकर अपने नेत्र रूपी कमल से उसी प्रेम के देवता की अर्चना करने लगीं। बटु मधुमंगल विविध परिहास रसमय वाक्यों से सखाओं के साथ श्री कृष्ण को हँसाने लगे। इसी प्रकार सभी ने

श्रीराधा का दन्तधावन प्रातः कृत्यादि।

गोशाला में प्रवेश किया। गाभि गण द्वारा श्री कृष्ण-बलदेव के दर्शन से वात्सल्य में द्रवित होने पर उनके स्तनों से स्वयं ही दुग्ध धारा प्रवाहित होने लगी। श्री कृष्ण गाभि गण को आह्वान एवं अंगों पर खुजलाहट आदि द्वारा परमानंदित कर गोदोहन करने लगे। सखीसह श्रीमती को इस प्रकार लीलामृत आस्वादन कराकर श्यामला सहित मधुरिका के जाने पर श्री मती प्रिय विरह में हत बुद्धि होकर क्षण काल को भी युग के

Scanned by CamScanner

समान अनुभव करने लगीं। तब भी दासी गणों ने सयत्न उनका प्रातः कृत्यादि सम्पादन कराया। श्री मती को दन्त धावन वेदी पर बिठाकर कोई किंकरी स्वर्ण जल पात्र से श्री मती के कर कमलों पर धीरे-धीरे जल डालने लगी। श्रीमती के मुख के अन्दर तथा मुख मंडल को धोने के बाद किसी दासी ने सुकोमल आम्र पत्र पूटिका (दंत शोधन काष्ठ) उनके श्री हस्त में प्रदान की। इसके द्वारा श्री मती ने दंत शोधन करके अपनी दंतावली की विशेष कांति बृद्धि की। किसी दासी द्वारा उनके हस्त में धनुराकृति स्वर्ण जिह्वा शोधनी देने पर श्री मती उसे दोनों कोमल कर कमलों से अंगुष्ठ तथा तर्जनी द्वारा उसके दोनों प्रांतों को धारण कर जिह्वा शोधन करने लगीं इससे उनके सिर नयनादि थोड़ा कंपित होने लगे एवं अलकावली (केश) श्री मुख मंडल पर पतित होने लगी। किसी रहस्यमयी लीला विशेष की स्मृति से सखीगण हँसने लगी, यह देखकर श्री मती के मुख पर भी हास्य माधुरी फूट उठी। श्रीमती द्वारा पुनः मुख के अन्दर तथा मुख मंडल को धोने पर किसी दासी ने शुष्क वस्त्र के द्वारा हस्त मुख पोंछकर मणि दर्पण दिखलाया। श्री कृष्ण के परमानन्द प्रदायी मुख मंडल का दर्शन कर श्री मती ने हास्य सुधा से मुख मंडल को पुनः धोया। तत्पश्चात् श्रीमती के बाह्य कृत्यादि करके आने पर साधक दासी ने उन्हें स्वर्ण चौकी पर बिठाकर सुगंधी मिट्टी तथा सुगन्धित जल द्वारा श्री हस्त तथा चरण धोकर सुकोमल वस्त्र से पोंछा। तब सखी गण श्री कृष्ण विरहिनी श्रीमती में भावान्तर लाने के लिए क्रीड़ा विहंगम (पक्षी) लाकर श्री राधा के सम्मुख क्रीड़ा कराने लगीं। नयनानन्द जनक लाभा कुक्कुटादि पक्षी की अपूर्व क्रीड़ा एवं युद्ध कौशल देखकर श्री राधा क्रमपूर्वक रसान्तरिता होकर सखियों के साथ आनन्द लाभ करने लगीं।

नवद्वीप : महाप्रभु का स्नान, श्रृँगारादि एवं भावावेश :

श्री गौर सुन्दर अपने शयनालय में परिकर गणों से घिरे हुए राधा भाव में आविष्ट हैं। श्री राधा के आनन्दानुभव में प्रभु प्रेमावेश में हुँकार करते हैं। हुँकार श्रवण कर भक्त वृन्द बाह्य ज्ञान लाभ करते हैं। एवं स्वरूप गोस्वामी गान समाप्त करते हैं। तब महाप्रभु बाह्य दशा प्राप्त होकर दोनों प्रभु तथा भक्त वृन्द को यथा योग्य आलिंगन तथा संभाषणादि करके दंतधावन वेदी पर जाकर बैठ गये। साधक दास द्वारा श्री गुरुदेव के इशारे पर स्वर्ण जलपात्र में जल, आम्र पत्र पूटिका, सुगंधी चूर्ण एवं स्वर्ण जिह्वा शोधनी द्वारा महाप्रभु को दंतधावन कराने पर मुक्ताफल निंदी (मुक्ता फल की भी निन्दा करने वाली) अपूर्व दंतकांति विकसित हुई। तत्पश्चात् प्रभु के बाह्य कृत्य करके आने पर साधक दास सुगंधी मृत्तिका एवं सुगन्धित जल से प्रभु के श्री हस्त तथा चरण धुलाकर शुष्क वस्त्र से पोंछता है। इसी प्रकार से साधक दास श्री नित्यानंद प्रभु तथा श्री अद्वैत प्रभु को दंत धावन तथा प्रातः कृत्यादि सेवा सम्पादन कराता है। तत्पश्चात् सपरिकर तीन प्रभु के गंगा स्नान के लिए गमन करने पर साधक दास सुगंधी तेल, उबटन तथा वस्त्रादि सेवोपकरण समूह तथा गंगापूजा के द्रव्यादि लेकर उनका अनुगमन करने लगा। गंगा

श्रीमन्महाप्रभु एवं दोनों प्रभु का प्रातःकृत्य तथा भक्तवृन्द के साथ स्नान श्रृँगारादि।

Scanned by CamScanner

तीर पर पहुँचने पर सपरिकर महाप्रभु गंगा को प्रणाम करके सिर पर जल धारण कर नाना मणिमय सोपान विशिष्ट अपने स्नान घाट की वेदी पर बैठ गये। दासगण ने तीनों प्रभु को स्नान वस्त्र पहनाकर सुगंधी नारायण तेल से चरणों से मस्तक तक तेल की मालिश कर सुगन्धित चूर्ण की उबटन लगाई। तत्पश्चात् तीनों प्रभु द्वारा भक्त वृन्द के साथ जल क्रीड़ा तथा स्नानादि समापन करने पर दास गण ने उनकी अंग मार्जनादि सेवा की। उसके बाद तीनों प्रभु के श्री अंगों को पोंछकर श्रीमन् महाप्रभु को पीत वर्ण के वस्त्र, श्रीमन्नित्यानंद प्रभु को नील वर्ण के वस्त्र एवं श्री अद्वैत प्रभु को श्वेत वर्ण के पट्ट वस्त्र पहनाये। तब तीनों प्रभु गंगा मिट्टी के द्वारा तिलक रचना करके गंगा पूजन, दंडवत प्रणामादि करके भक्तगण के साथ संकीर्तन करते-करते गृह आगमन करते हैं। दासगण गीले वस्त्र एवं जलपात्रादि लेकर उनका अनुगमन करते हैं। तत्पश्चात् दासगण ने प्रभु तीनों के पाद प्रक्षालन कराकर पृथक-पृथक श्रृँगार मंडप पर बिठाकर तीनों प्रभु का श्रृँगार किया। अगुरु के धुंए से केश पाश सुखाकर तथा सुगन्धित कर स्वर्ण कंघी से संस्कार करके मुक्ता तथा बकुल पुष्पों की माल्य द्वारा केशपाश को बांध कर मनोहर जूड़ा बांधा। ललाट में केसर का ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक, कपोल के दोनों पार्श्वों पर पत्रावली, चिबुक पर कस्तूरी बिन्दु तथा सर्वांग में चतु: सम लेपन करके हार माल्यादि पहनाकर बाहु में अंगद, वलय, अंगुली में रत्नांगुरीयक तथा चरण में नूपुर पहनाकर उत्तरीय वसन प्रदान करके दर्पण दिखलाया। तीनों प्रभु का श्रृँगार एक ही प्रकार होता है भेद केवल इतना ही है कि क्रमपूर्वक पीत, नील तथा श्वेत वसन होते हैं। महाप्रभु तथा अद्वैत प्रभु के दोनों कर्णों में कुंडल तथा श्री नित्यानंद प्रभु के वाम कर्ण में कुंडल तथा दायें कर्ण में कदम्ब पुष्प एवं महाप्रभु की नासिका में मुक्ता है। सभी भक्त वृन्द के परिधेय एवं उत्तरीय वस्त्र श्वेत हैं। तीनों प्रभु का श्रृँगार समाप्त होने पर साधक दास ने श्री गुरुदेव के इशारे पर आरती के लिए सुसज्जित घृत-कर्पूर वत्तिका श्री स्वरूप गोस्वामी के हस्त में प्रदान की। स्वरूप गोस्वामी ने तीनों प्रभु की आरती की। आरती के अन्त में महाप्रभु श्रीगदाधर पण्डित को श्री नारायण की सेवा के लिए आदेश देकर ब्रज भाव में आविष्ट हुए। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर मधुर कंठ से श्री राधा कृष्ण के स्नान, श्रृँगार तथा भोजनादि पद गान करने लगे। गोविन्द घोष, वासुदेव घोषादि करताल, मृदंग बजाने लगे। पद श्रवण कर महाप्रभु अश्रु पुलकादि सात्विक विकाराक्रान्त होकर राधा भाव में निमग्न हुए। भक्त वृन्द भी गान में तन्मय होकर अपने-अपने सिद्ध स्वरूप में ब्रजलीला में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम: श्री राधा का स्नानादि, हिरण्यांगी की कृष्ण कथा :

ब्रज के जावट में श्री राधा सखीगण के साथ पक्षीगणों का क्रीड़ा-कौतुक दर्शन कर आनंदित हैं। इधर दासी गण श्री मती की स्नान वेदी पर स्नान की सामग्री सजाकर श्रीमती की प्रतीक्षा कर रही हैं। श्री राधा के स्नान वेदी पर आकर विराजित होने पर श्री ललिता सखी ने स्वर्ण लता से पुष्प चयन करने की भाँति श्री मती के अंग के सभी अलंकारों को प्रीति पूर्वक उतारा। सखी मंजरी गण ने अलंकार विहीन अंग की अपूर्व अंग कांति का दर्शन कर परमानन्द लाभ किया। तब मंजिष्ठा तथा रंगवती नामक दो रजक (धोबी) कन्या द्वारा श्री

Scanned by CamScanner

राधा के स्नान वस्त्र लाने पर श्रीमती ने चकित नयनों से चारों ओर देखकर स्नान वस्त्र पहने। पूर्ण चन्द्र की स्निग्ध किरण माला ने जैसे विद्युत प्रतिमा को आवृत कर लिया हो। तत्पश्चात् श्रीमती के सुकोमल आसन पर बैठने के बाद रति मंजरी ने उनके घूँघट को हटाकर वेणी बंधन खोलकर सुकुंचित केश कलाप को सुगन्धित तेल से सिक्त करते हुए मृदुमंद मद्रन के साथ मणि कंघी द्वारा संस्कार करके केश बांधे।

श्रीराधा का स्नान एवं श्रृँगार।

साधक दासी ने श्री गुरु मंजरी के इशारे पर सुगन्धित नारायण आदि तेल द्वारा श्रीमती के अंग को मृदुभाव (कोमलता) से मद्रन करते हुए पद्म पराग, कुंकुम, कर्पूरादि मिश्रित चूर्ण, चन्दन द्रव तथा गुलाब जल को मिलाकर उस उबटन द्वारा लावण्यमयी विद्युत प्रतिमा को जैसे शोधन किया हो। तेल मद्रन तथा उबटन क्रिया समाप्त होने पर सखी मंजरी गण स्फटिक मणि के कलश में गुलाबादि पुष्प द्वारा सुगन्धित जल को श्री राधा के मस्तक पर डालते हुए उन्हें स्नान कराने लगीं। एक ही स्फटिक मणि का घड़ा श्री राधा की केश कांति से नील वर्ण, मुख की कांति से हेमवर्ण तथा अधर कांति से पद्मरागमणि वर्ण दृष्टि गोचर होने लगा। स्नान के अंत में किंकरी गणों ने सुकोमल शुभ्र वसन से श्री अंग के जल को पोंछ दिया, जैसे शारदीय शुभ्र हेमखण्ड द्वारा स्थिर विद्युत लता से फले हुए मुक्ता समूह को धीरे-धीरे चयन कर लिया गया हो। किसी किंकरी द्वारा केश पाश के जल को निकालने के लिए शुभ्र वस्त्र खण्ड से केशपाश लपेट करके धीरे-धीरे निचोड़ने पर केश पाश द्वारा जो जल निकलने लगा इससे प्रतीत हुआ जैसे मृणालवत् * शुभ्र चन्द्रिका से ग्रस्त होकर अश्रुधारा निकालते हुए घन-अंधकार राशि रो रही हो। तत्पश्चात् श्रीमती के केश स्थित जलकण समूह को दूर करने के लिए गमछे के दोनों छोर को पकड़ कर केश गुच्छ में पुनः पुनः आघात करते-करते आकाश मंडल को त्रसरेणुमय (धूल का कण या अणु जो सूर्य किरण में हिलता हुआ दिखाई देता है) कर दिया। तब सखीगण ने श्री मती को अरुण वर्ण का अंतर्वास तथा अपूर्व नीलाम्बर पहनाया। जिस नीलाम्बर के परम सौन्दर्य जाल में श्री कृष्ण के नयनरूपी कुरंग (मृग) स्वेच्छा पूर्वक आबद्ध हो जाते हैं।

तत्पश्चात् श्री राधा के श्रृँगार वेदी पर आकर बैठने पर किसी सखी ने अगुरु धूप के धुँए से श्रीमती के केशपाश को शुष्क एवं सुगन्धित किया। सुदेवी ने मणिमय कंघी द्वारा केश समूह को संस्कार करके माधुरी-सुरधनी के समान मांग की रचना करते हुए श्री कृष्ण के चित्त में क्षोभ उत्पादन कारिणी सर्पिणी के समान वेणी बांधी। श्री ललिता ने श्रीमती के मस्तक पर 'शीशफूल' नामक शिरोमणि पहनाई एवं नवमौक्तिकदाम मांग पर विन्यास किया। तत्पश्चात् ललिता ने श्री मती के सिर पर वामहस्त रखते हुए श्री मुखचन्द्र को थोड़ा उठाकर दायें हाथ से तूलिका (लेखनी) लेकर श्री मती के ललाट फलक पर अपूर्व कामयंत्र तिलक की रचना की। अगुरु द्रव के साथ मृगमद मिलाकर पहले एक मंडल की रचना की, इसके मध्य में सिंदूर की रेखा द्वारा कमल की रचना करके मध्य में कर्पूर मिश्रित चन्दन बिन्दु देकर चित्र के समान अपूर्व मनोहर तिलक की रचना

* कमल का डंठल कीचड़ में रहने के कारण दुख अनुभव करता है, यहाँ मृणालवत् शब्द का यही तात्पर्य है।

Scanned by CamScanner

की। तत्पश्चात् हाथ द्वारा कर्पूर बर्त्तिका से निर्मित स्निग्ध अंजन द्वारा श्रीमती के दोनों आयत नयनों में अंजन किया। जैसे कृष्ण कांति जाल में सूर्य सुहागिनी नलिनी (कमल) द्वय को प्रगाढ़ अंधकार ने आवृत कर लिया हो! स्वर्ण धागे से गूँथा हुआ लावण्य लता के बीज के समान एक अपूर्व मुक्ता फल (नोलक) श्री राधा की तिल पुष्प निन्दित नासिका में पहनाया। तत्पश्चात् थोड़ी लज्जा से झुकी हुई हास्य मुखी श्रमती के चिबुक के मध्य में स्वर्ण कमल के मध्य भृंग शिशु के समान एक मृगमद बिन्दु विन्यास किया। चित्रा देवी ने श्री राधा के वक्षोज युगल पर कर्पूर, अगुरु, चन्दन तथा कुंकुम द्रव द्वारा मनोहर पत्रावली रचना की। इस शोभा को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे रस के सरोवर में शैवाल मंडित होकर कंदर्पराज के प्रिय का चक्रवाक मिथुन शोभा पा रहा हो। इन्दु रेखा सखी ने श्रीमती के बाहु में मणिमय अंगद पहनाया- जैसे पूर्ण चन्द्र के दो भाग कर मृणाल लतिका बांध दी हो। इसके बाद चम्पकलता ने श्री राधा की कलाई में इन्द्रनील मणि की चूड़ी पहना दी, भुजमृणाल (बाहु) में नवरत्नमाला बांधी एवं अंगुलियों में रत्न की अंगूठी पहनाई। श्री विशाखा ने श्रीमती के वक्षोज में मुक्ता पंक्ति संग्रथित (गूंथी हुई) अरुण वर्ण की कंचुलिका पहनाई, गले में मणिहार एवं 'चिक' नामक कंठाभरण पहनाया। तुंगविद्या सखी ने श्रीमती के विपुल नितंब में मनोहर कांची पहनाई—जैसे मदन राज ने अपने महोत्सव सम्पादनार्थ भवन द्वार पर मणि तोरण बांधा हो। रंग देवी ने श्रीमती के श्री चरण कमल युगलों में माणिमय नूपुर एवं पदांगुरीयक (बिछुआ) पहनाये, तब श्री चरण युगलों में साधक दासी ने जावक रस (आलता) लगाया। श्री रस मंजरी ने कर्पूर एवं चन्दन मिश्रित अनुलेपन श्रीमती के श्री अंगों पर लगाया तुलसी मंजरी ने श्री मती के गले में एक माधवी पुष्प की माला एवं हस्त में लीलाकमल अर्पित किया। तत्पश्चात् रंगन माला ने श्री मती के सम्मुख एक बड़ा मणि दर्पण स्थापित किया। मणि दर्पण में अपना प्रतिविम्व देखकर अपने मधुर अंग की अनवद्य (निर्दोष) सुषमा राशि का दर्शन कर चमत्कृता होकर श्रीमती चिन्तन करने लगीं—'जो प्राण बल्लभ मेरी असंस्कृत अंगकांति के कणमात्र का अनुभव करके आनंद सागर में तैरते हैं—इस सु अलंकृत, सुसज्जित तथा सुशोभित सौन्दर्य राशि को देखकर उनका कितना आनन्द होगा? यह सौन्दर्य राशि उनके आस्वादन के बिना सब ही व्यर्थ हुई!' इस प्रकार श्रीमती श्री कृष्ण दर्शन की उत्कंठा में अधीर हो पडीं। तब साधक दासी द्वारा आरती की सामग्री ललिता के हस्त में अर्पित करने पर उन्होंने श्री राधा की आरती की।

इस अवसर पर हिरण्यांगी सखी का आगमन होने पर श्री राधा ने प्रीति पूर्वक उनसे प्रश्न किया—सखी! कहो कहाँ से आ रही हो? हिरण्यांगी ने कहा—"नन्दालय से।" यह सुनकर श्री मती ने उत्कंठित चित्त से कहा—"तब नन्दालय की कुशल कहो"। तब हिरण्यांगी बोलने लगी—"हे राधे! श्री कृष्ण के गो-दोहन के लिए गमन करने पर पुत्र स्नेहामृत से आप्लाविता होकर माँ यशोमती श्री कृष्ण की भोज्य वस्तु प्रस्तुत करने के विषय में व्याकुला होकर रंधन की सभी सामग्री दासी गण को रसोई गृह में ले जाने के लिए आदेश करके स्नेह व्याकुल चित्त

हिरण्यांगी द्वारा श्रीकृष्ण का स्नानादि कथन।

Scanned by CamScanner

से रोहिणी से बोलीं—"हे सखी रोहिणी! बहुत संख्या में दासों के रहने पर भी राम कृष्ण नित्य गोचारण के लिए जाते हैं। दुर्गम वन में भ्रमण के कारण हुई थकान से भोजन में उनकी रुचि नहीं रहती, इसीलिए सायंकाल में कुछ भी भोजन नहीं कर पाते। इसी कारण से वे अतिशय दुर्बल एवं क्षीण हो रहे हैं। आज प्रातः काल में मैंने देखा, उनका उदर पृष्ठ से लगा हुआ है। अतः हे सुमुखी! तुम शीघ्र रसाई गृह में जाकर उनका रुचिकर भोजन प्रस्तुत करो।" माता यशोमती ने रोहिणी को इस प्रकार आदेश कर श्री कृष्ण बलदेव के स्नान श्रृँगारादि के लिए पयोद, वारिद आदि दास गणों को कालोपयोगी सुगन्धित स्नानीय जल, सुगन्धित तेल, उबटन, वस्त्रालंकार आदि यथास्थान सजाकर रखने के लिए आदेश किया। यशोदा की आज्ञा से दासगण द्वारा अपने-अपने कार्यों में मनोनिवेश करने पर स्नेहमयी माता बहिर्द्वार पर आकर राम कृष्ण के आगमन पथ की दिशा में देखने लगीं! अंत में विलम्ब देखकर रक्तक नामक भृत्य को कृष्ण को बुला लाने के लिए आदेश दिया। उधर श्री नन्दमहाराज ने श्री कृष्ण को गोष्ठ से आग्रह करके गृह के लिए भेज दिया। श्री कृष्ण को आते देखकर माँ आनंदाश्रु नीर एवं स्तन दुग्ध से वक्ष वसन को सिक्त करते हुए श्री कृष्ण से बोलीं—"हे वत्स! शीघ्र आओ! भूखे रहकर घर आने में इतना विलम्ब क्यों हुआ?" यशोदा माता अपने कर पल्लव से श्री कृष्ण के अंग को मार्जन करते-करते उनके सखागणों से बोलीं—"हे पुत्र गण! तुम सब भूखे हो अतएव अपने-अपने घर जाओ एवं स्नानादि के अंत में भूषण से भूषित होकर भोजन के लिए शीघ्र यहीं आओ। उन सभी को भेजने के बाद माँ ने श्री कृष्ण, बलदेव तथा मधु मंगल के साथ गृह में प्रवेश किया। तत्पश्चात् माँ के आदेश से श्री कृष्ण के स्नान वेदी के निकट आकर विराजित होने पर सारंग नामक भृत्य ने उनके श्री अंग के आभरण खोलकर स्नानोपयोगी वस्त्र पहनाया। उनके स्नान वेदी के उत्कृष्ट आसन पर सुख पूर्वक बैठने पर पत्री नामक भृत्यने स्वर्ण जलपात्र की सुगन्धित जलधारा से उनके पादपद्म युगलों को प्रक्षालन करके सुकोमल वस्त्र से पोंछ दिया। इसके बाद सुबंध नामक नाई पुत्र ने श्रीकृष्ण के अंग प्रत्यंगादि की सुगंधी नारायण तेल द्वारा मधुर मालिश की एवं सुगंध नामक अन्य भृत्य ने नवनीत से भी अधिक स्निग्ध एवं सुशीतल पीत वर्ण उबटन द्वारा श्रीअंग का मार्जन किया। स्निग्ध एवं कर्पूर नामक दोनों भृत्य ने स्निग्ध सुशीतल तथा सुगन्धी आमल की पंक द्वारा केश समूह का संस्कार किया। इसके बाद रक्तक एवं पयोद नामक दोनों भृत्य ने सुशीतल जलधारा से उनके श्रीअंग का प्रक्षालन कर शुष्क वस्त्र खण्ड द्वारा पोंछ दिया। अन्यान्य दासगण ने कुंभ श्रेणी में रखे हुए सुगन्धित जलयुक्त छोटे-छोटे स्वर्ण घड़ों को लेकर स्नान कराया। तत्पश्चात् पत्री नामक भृत्य ने शुष्क एवं सुकोमल वस्त्र से श्री अंग को पोंछकर केश समूह को जलरहित करके उन्हें विद्युत के समान ज्योति युक्त परिधेय एवं उत्तरीय वसन दोनों पहनाये। इसके बाद उनके श्रृँगार वेदी पर बैठने पर कुमुद नामक भृत्य ने अगुरु तथा धूप के धुँए से केश समूह को सुखाकर एवं सुगन्धित कर मणि कंघी द्वारा केश संस्कार करते हुए जूड़ा बांधा। मकरन्द नामक भृत्यने गोरोचना द्वारा ललाट पर तिलक रचना करके कस्तूरी, कर्पूर, अगुरु एवं कुंकुम द्वारा सर्वांग में लेप किया। उसके बाद प्रेमकन्द नामक भृत्य ने कृष्ण की दोनों बाहुओं में स्वर्ण निर्मित कंकण,

Scanned by CamScanner

दोनों कर्ण में मकर कुंडल, श्री चरणों में रत्न नूपुर तथा वक्ष पर उज्ज्वल मणिहार पहनाये।

इसी अवसर पर स्नान, अनुलेपन तथा विविध भूषणों से भूषित होकर श्री बलदेव, मधुमंगल तथा सखागण उपस्थित हुए। उसी समय श्री यशोमती एवं रोहिणी माता ने राम कृष्ण की कर्पूर बत्ती द्वारा आरती की। अंबा, किलिम्बादि यशोगान करने लगीं एवं सखा गण जय-जय कार करने लगे। तब श्री भागुरी मुनि द्वारा आकर राम कृष्ण को आशीर्वाद देने पर माता ने पीत वसन तथा रत्नादि से भूषिता एक सवत्सा गाभि कृष्ण द्वारा मुनि को दान करायी। तत्पश्चात् माँ ने राम कृष्ण तथा सखा गणों को भोजनालय में ले जाकर माखन मिश्री तथा विविध मिष्टान्न पक्वान्नादि का भोजन कराया। सखाओं के साथ राम कृष्ण ने भोजन के अंत में आचमन तथा तांबूल सेवन कर बाहर के प्रांगण में खेलने के लिए गमन किया। तब माँ यशोदा ने स्नेह पूर्वक तुम्हारे लिए मेरे हाथ में कुछ मिष्टान्न भेजी है। धनिष्ठा ने उसके साथ श्री कृष्णाधरामृत मिला दिया है। मैं उसे तुम्हारे भोजनालय में रति मंजरी को दे आयी हूँ, तुम सखियों के साथ भोजन करो।'' तब श्री राधा परमानंदित होकर सखीगण के साथ भोजन गृह में जाकर श्री कृष्णाधरामृत के साथ यशोमती माता द्वारा स्नेह पूर्वक भेजे गये मिष्टान्नादि का सेवन कर आचमन के अंत में बैठक में बैठकर तांबूल सेवन करने लगीं। उसी अवशेष क्रम से मंजरीगण, गुरु मंजरी गण एवं साधक दासी सेवन करके स्थान पात्रादि को स्वच्छ कर श्री राधा के निकट आकर व्यजनादि सेवा में मग्न हुई।

नवद्वीपः महाप्रभु का भागवत श्रवण एवं भावावेशः

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्रृँगार वेदी पर सपरिकर भावाविष्ट हैं। इसी अवसर पर शचीमाता के आदेश से ईशान दास ने आकर कहा—''हे गौरांग! ठाकुर की आरती दर्शन के लिए माता बुला रही हैं।'' यह बात सुनकर महाप्रभु ने हुँकार करके बाह्य दशा लाभ की। परिकरगण भी बाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त किया। महाप्रभु सपरिकर श्री नारायण के जगमोहन (प्रांगण) में खड़े होकर आरती दर्शन करने लगे। श्री गदाधर पंडित ने श्री नारायण की आरती के अंत में तीनों प्रभु को आरती दिखाकर भक्त वृन्द का शंखोदक द्वारा सिंचन किया। उसके बाद महाप्रभु ने सबके साथ श्री मंदिर एवं तुलसी परिक्रमा, तुलसी में जलदान एवं दण्डवतादि किया। तब माता के आदेश से ईशान दास ने आकर सपरिकर महाप्रभु को स्वल्पाहार करने के लिए बुलाया। महाप्रभु सपरिकर यथा क्रम से भोजन गृह में आकार माता द्वारा स्नेह पूर्वक प्रदत्त मिष्टान्न पक्वान्नादि का भोजन कर भागवत पाठ गृह में जाकर बैठ गये। गदाधर पंडित महाप्रभु का अवशेष ग्रहण कर भागवत पाठ गृह में आकर भागवत पाठ के लिए व्यासासन पर बैठ गये। गोस्वामी गण एवं गुरु वर्ग महाप्रभु का अवशेष ग्रहण कर भागवत पाठ गृह में आकर बैठ गये। सामने तीन प्रभु एवं उनके पीछे भक्त वृन्द बैठे। पंडित गोस्वामी ने तुलसी, श्री चंदन, पुष्प तथा माल्यादि द्वारा श्री भागवत अर्चना करके पाठ आरम्भ किया।

सपरिकर श्रीमन् महाप्रभु का आरती दर्शन एवं भोजन।

Scanned by CamScanner

इधर साधक दास तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द के अवशेष अधरामृत को अपने गृह में रखकर तथा स्थान एवं पात्रादि स्वच्छ कर आसन, भोजन पात्र, पान पात्र, जलपात्र आदि को सुसज्जित कर भागवत पाठ गृह में आकर श्री गुरुदेव के बाँये भाग में बैठ गया। श्री भागवत के प्रसादी चंदन माल्य श्री स्वरूप गोस्वामी ने तीन प्रभु एवं यथा क्रम से भक्त वृन्द को प्रदान किये। इधर शची मातादि स्वल्पाहार ग्रहण कर अंत: पुर के रसोई गृह में जाकर नियुक्त हुई। श्री मन्महाप्रभु भागवत श्रवण करते-करते नन्दालय से कुंदलता का आगमन, श्री राधा का नंदालय गमन एवं रंधनादि भाव में आविष्ट हुए। भक्तवृन्द भी ब्रजभाव में मग्न हुए।

भागवत श्रवण से भावावेश।

ब्रजधाम: श्री राधा का नंदीश्वर के लिए गमन तथा रंधनादि :

ब्रज के जावट में श्री राधा हिरण्यांगी द्वारा लाये गये कृष्णाधरामृत का सखी गण के साथ सेवन कर बैठक में बैठकर उत्कंठित चित्त से नन्दालय से होकर कुन्दलता के आगमन के विषय में चिन्ता कर रही हैं, इसी अवसर पर ब्रजेश्वरी श्री यशोदा के आदेश रूपी शीतल वाक्य से प्रफुल्लिता होकर कुन्दलता ने नन्दालय से आगमन करके जटिला के निकट जाकर उन्हें प्रणाम कर ब्रजेश्वरी की प्रार्थना की उन्हें जानकारी दी। कुन्दलता ने कहा–''हे मात:! ब्रजेश्वरी माँ यशोदा ने आपसे प्रणाम कर प्रार्थना की है कि मन्द रुचि के कारण श्री कृष्ण अच्छी प्रकार से भोजन नहीं करता, आपकी वधू दुर्वासा ऋषि के वरदान से अमृत हस्ता है एवं उसके हस्त द्वारा बनाये गये भोजन से आयु, बल, श्री वृद्धि होती है एवं निरोग स्वास्थ्य लाभ होता है। अतएव अपनी वधू को उनके गृह में रसोई करने के लिए भेजिये–यही उनका आपसे सानुनय निवेदन है।'' ब्रजेश्वरी माता का आदेश श्रवण कर जटिला चिन्तिता होकर कृष्ण द्वारा वधू की अनिष्ट आशंका करते हुए कुन्दलता से बोली ''हे वत्से कुन्दलते ! मेरी पुत्र वधू साध्वी, गुण गौरव- मधुपूर्णा है अत: मधुरा है, लोक समूह छिद्रान्वेशी है एवं वह नन्दनंदन भी अतिशय चंचल है, फिर भगवती पौर्णमासी का यह वाक्य भी अलंघनीय है, कि ''ब्रजराज्ञी की आज्ञा का कभी भी अनादर न करो, इसीलिए इस उभय संकट में मेरा मन दोलायमान हो रहा है, इस समय में मैं क्या करूँ कहो तो?'' कुन्दलता ने कहा–''मात:। आपने जो कहा वह सत्य है किन्तु खल व्यक्ति के मुख से आपने जो सुना है, श्री नन्द नन्दन उस प्रकार के चंचल नहीं हैं। वे आभीर पल्ली (गोपों का गाँव) के आनन्द दाता एवं दु:खहारी हैं यह सभी भलीभाँति जानते हैं, अत: सद्धर्म शीला आपकी पुत्र वधू के सम्बन्ध में भी वे आनन्द जनक ही होंगे। देखिये श्री कृष्ण का माधुर्य जगन्नारी को उन्मत्त करता है यह तो उनका स्वाभाविक गुण है। तथापि उनसे आपकी आशंका एवं वधू पालन करना युक्ति संगत ही है, इस विषय में आप कोई चिन्ता न करें। आपकी वधू की छाया भी जिससे श्री कृष्ण के नयन गोचर न हो इस प्रकार से मैं उसे ले जाकर शीघ्र ही आपके पास ले आऊँगी।'' तब जटिला ने कहा–'' हे पुत्री कुन्दलते! इस गोष्ठ में सभी तुम्हें सम्मान पूर्वक साध्वी कहते हैं, अतएव इस सरला वधू को मैं तुम्हारे हाथ में समर्पण करती हूँ, चपल नयन श्री कृष्ण जिससे

कुंदलता जटिला संवाद।

Scanned by CamScanner

इसे न देखने पाये ऐसी व्यवस्था करो।'' जटिला की बात सुनकर आनन्दिता कुन्दलता ने श्री राधा के निकट गमन किया।

कुन्दलता के दर्शन से श्री राधा के उत्कंठित चित्त में जैसे सहसा अमृत रस का स्रोत प्रवाहित हो गया हो। श्रीमती हर्ष सहित उठकर मृदु हास्य वदन से बोलीं—''सखी कुंदलते! मेरे मन में ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रजेश्वरी माता ने आज्ञा के छल से निश्चय ही मेरे प्रति किसी कृपामृत को भेजा है इसीलिए तुम मेरी सास के निकट से अनुनय करके द्रुत पद से मेरे निकट आयी हो।'' सुलोचना श्री मती के युक्ति पूर्ण मधुर वचनामृत पान से कुन्दलता का चित्त उल्लास में भरकर नृत्य कर उठा। उनके प्रफुल्ल अधरों पर मृदु हास्य की ज्योत्सना (चन्द्र प्रभा) रेखा फूट उठी। वे आग्रह सहित बोलीं—''सखी राधे! जब सब बात समझ ही गई हो, तब और विलम्ब न कर सखी के साथ ब्रजेश्वरी-भवन के लिए यात्रा करो। हे वराम्बुज नयने (कमल नयने)! तुम जो रसोई बनाती हो उसकी स्वादुता से स्वर्ग का अमृत भी तुच्छ हो जाता है। तुम्हारे इस रंधन नैपुण्य की बात सारे ब्रज पुर में प्रसिद्ध है। हे सखी! महर्षि दुर्वासा ने तुम्हें यह वर दिया है कि—तुम जो भी रंधन करोगी वह अमृतमय होगा एवं जो व्यक्ति उस भोजन को करेगा वह दीर्घायु, निरोग, बलशाली एवं शत्रुविजयी होगा। तुम्हारे इस वर की बात ब्रजेश्वरी ने जब से सुनी है तब ही से श्री कृष्ण को तुम्हारे हस्त पाचित अन्न भोजन से विच्युत नहीं होने देतीं। सुकुमार श्री कृष्ण जो भयानक दैत्य गणों का वध करते हैं, यह तुम्हारे हस्तपाचित अन्न का ही गुण है, यह उनका दृढ़ विश्वास है। हे शशि मुखी! एक और निगूढ़ बात कहती हूँ सुनो—ब्रजेश्वरी अपने तनय के अदर्शन से जिस प्रकार व्याकुल होती हैं, तुम्हें भी न देखकर उसी प्रकार व्याकुल होती हैं।'' कुन्दलता की कर्ण रसायन वाणी सुनकर श्री राधा का हृदय आनन्द रस से आप्लुत (भीग गया) हो उठा। तब भी श्रीमती उस विपुल हर्ष आवेग को अंदर दबाकर उदास एवं तरल दृष्टि से कुंदलता से बोलीं—''सखी कुंदलते! तुमने जो कहा वह सब युक्ति संगत है। किंतु हे विज्ञे। कुलवती या साध्वी कहकर जिसकी ख्याति है, उसके लिए प्रतिदिन दूसरे के गृह में जाना क्या युक्ति संगत है—यह तुम ही विवेचना करके देखो। विशेषत: तुम्हारा जो देवर है—सुनते हैं कि कुल ललना गण के प्रति वह सतत ही लोलुप है। कुलवती गणों के कुल धर्म की रक्षा का प्रयास सर्वापेक्षा गुरुत्व पूर्ण है, अत: हे सखि! वहाँ जाने की मेरी इच्छा नहीं है।''

कुंदलता तथा श्रीराधा का रसालाप।

श्री राधा के अंतर में उल्लास एवं बाहर असम्मति को जानकर कुन्दलता ने अतिशय प्रीति लाभ की एवं परिहास व्यंजक वाक्य कहने लगीं—''सखी राधे! तुम्हारी कुलधर्म रक्षा की अभिलाषा सहज में ही सुसिद्ध होगी। दुर्वासा मुनि जब तुम्हारे प्रति अनुकूल हैं, तब उनकी कृपा से तुम्हारा कोई अमंगल नहीं होगा। अतएव विलम्ब न कर शीघ्र चलो।'' वृद्धा जटिला अंतराल (ओट) में श्री राधा तथा कुंदलता के सरस श्लेष व्यंजक (अनेक अर्थ युक्त साङ्केतिक बातें) वाक्यालाप सुन रही थी। वे श्री राधा के वाक्य से नंदालय गमन का असम्मति सूचक अर्थ ग्रहण करके हृष्ट चित्त से उनके निकट आकर बोलीं—''हे सखी कुंदलते! तुम मेरे

Scanned by CamScanner

अत्यंत विश्वास की पात्री हो, इसीलिए तुम्हारे हाथ में मैं वधू को समर्पण करती हूँ। वृद्धा स्वभावत: दुर्मुखा होने पर भी श्री राधा के वदन की ओर देखकर गंभीर किन्तु शान्त मधुर वचन से बोली—"वत्से! सती रमणी के लिए पति भवन से अन्यत्र एक पद भी जाना जब अनुचित है तब लंपट शिरोमणि कहकर जिसकी ख्याति है उस श्रीकृष्ण के समीप गमन करना जो तुम्हें किसी प्रकार से भी उचित नहीं है यह ठीक ही हैं! तथापि हे राधे! देवी पौर्णमासी के वाक्य तथा ब्रजेन्द्र गृहिणी की सानुनय प्रार्थना कितनी बार ठुकराई जाय, अत: उनके वाक्यों को लंघन नहीं कर पाने के कारण मैं तुम्हें वहाँ जाने के लिए कह रही हूँ। इसीलिए कोई चिन्ता न करो, सतीकुल के धर्म रक्षक भगवान श्री हरि ही तुम्हारी रक्षा करेंगे। अतएव हे सुमुखी! उनके कर कमलों में तुम्हें समर्पण कर मैं निश्चिन्त हुई।" जटिला द्वारा श्री नारायण के उद्देश्य से 'हरि' शब्द का उल्लेख करने पर भी सुरसिका सखीगण उसका "श्री कृष्ण" अर्थ ग्रहण कर थोड़ा हास्य करने लगीं। श्री मती द्वारा इशारे से सखीगण को रोकने पर वे मौन होकर अवस्थान करने लगीं। तब कुंदलता द्वारा श्रीमती का हाथ खींच कर ले चलने पर पुलकित चित्त होकर श्रीमती सखीगणों के साथ गमन करने लगीं। * श्री राधा के आगे कुंदलता, दाहिने श्री ललिता, बायें श्री विशाखा, पीछे अनंग मंजरी एवं अन्यान्य सखीगण तत्पश्चात श्री रूप मंजर्यादि एवं श्री गुरुमंजरी गण तत्पश्चात् साधक दासी श्री ललिता के आदेश से श्री कृष्ण को प्रिय लड्डुकादि भोज्य सामग्री वहन करके ले चली।

जावट से नंदालय नैऋत्य कोण में है। राई को लेकर सखी गण पुर के दक्षिण द्वार से बाहर हुई। रत्न मंडित पथ है, दोनों ओर बकुल आदि वृक्ष श्रेणी है। जिसकी शाखा प्रशाखा ऊपर के भाग में परस्पर मिलकर एवं विविध पुष्पित लताओं द्वारा आच्छादित होकर घनी छाया युक्त हो रही है। कुसुम सुरभित इस पथ पर कोकिलादि पक्षियों की मधुर श्रवण ध्वनि एवं भ्रमर की गुँजार को श्रवण करते हुए सखियों के साथ श्री मती हंस गमन के समान नंदालय की ओर चलीं। उनकी स्वर्णोज्ज्वल अंग कांति से पथ उज्ज्वलित हो रहा है। होने वाले श्री कृष्ण दर्शनानन्द के आवेश से उनके श्री अंग पुलकित हैं, गति मंथर तथा श्री अंग के वसनादि विगलित हैं। इससे श्रीमती के अंग में रजनी विलास के चिह्न दर्शन कर सरस परिहास करते हुए कुंदलता ने कहा- "हे राधे! तुम्हारे पति अभिमन्यु ने तीन-चार दिन की परदेश यात्रा से पूर्व सायंकाल में आकर गोष्ठ में ही रात्रि बितायी है, तथापि तुम्हारें अंगों में नखाघात के चिह्न तथा अधर में व्रण देखा जा रहा है, इससे तुम्हारे समुचित सतीत्व का ही परिचय परिव्यक्त होता है। कुंदलता के वाक्य से श्रीमती के अंदर उत्फुल्लता तथा बाहर से संकुचित नयना दर्शन कर ललिता कुंदलता से बोलीं—"हे कुंदलते! गतकल वन के मध्य में दाड़िम्ब (अनार) फल के भ्रम में एक धृष्ट शुक पक्षी ने इसके वक्षोज में नखाघात एवं बिम्ब फल के भ्रम में अधर का दंशन किया है। अत: इसमें तुम अन्य प्रकार की शंका क्यों कर रही हो?" कुंदलता तथा ललिता के आलाप

सखियों के साथ श्रीराधा के नन्दालय गमन की शैली।

* श्री राधा के बरसाना अवस्थान काल में कुंदलता कीर्तिदा माता के आज्ञा क्रम से श्रीमती को नन्दालय ले जाती हैं।

Scanned by CamScanner

से रजनी विलास की स्मृति में श्रीमती का अन्तः करण पुलक तथा शरीर आनन्द जड़ित प्रकाश पा रहा है! इस प्रकार से विविध वाक् विलास रंग के सुख स्रोत में तैरते हुए सभी नन्दालय की ओर चल रही हैं। श्री नंदीश्वर के निकटस्थ होने पर होने वाले श्री कृष्ण दर्शन के आनंद की मधुर स्मृति से अंग में जड़ता भाव का उदय होने से श्रीमती की गति मन्द हो गयी है। सखीगणों के निकट भाव गोपन करते हुए श्री राधा ने कहा–"सखी! मैं और अधिक तेजी से नहीं चल पा रही हूँ, पथ में बड़े ही कंकड़ हैं।" कुंदलता परिहास करती हैं–"कंकड़ पैर में लग रहे या मन में?" कोई अन्य बोली–"काला कंकड़ उसके मन में लग गया हैं।"

कुंदलता द्वारा श्रीकृष्ण का माधुर्य वर्णन।

कुदंलता दिखाती हैं–"ये देखो तुम्हारे प्राण वल्लभ श्री कृष्ण अपनी श्यामल कांतिमाला से आलिंगित होकर पुर द्वार पर विराजमान हैं। माधुर्य के भार को वहन न कर पाने के कारण जैसे शरीर त्रिभंग हो गया है। उनकी चंचल वनमाला के सौरभ से भृंगकुल आकुल हो रहे हैं। उनके चंचल नयनों की सुषमा राशि मृदु गंड मंडल (गाल) स्थित कर्ण के दोनों कुंडलों को जैसे अद्भुत नृत्य शिक्षा दे रही हो! मृदुल पवन के हिलोल से आन्दोलित पीत वसन की कांतिमाला से अंग की स्वाभाविक नील कांति लहरी माला के साथ मिलकर जैसे गंगा-जमुना के मिलन क्षेत्र प्रयाग के समान लावण्य धारा से स्नानार्थी तरुणीगणों की सभी अभिलाषायें पूर्ण कर रही हो!! सखी राधे! यह देखो तुम्हारे मोहन नागर प्रिय सखा सुबल के कंधे पर वाम बाहु रख कर दायें हाथ से लीला कमल को घुमाने के छल से कामिनी गणों के मन को जैसे घुमा रहे हों।" कुंदलता के वाक्यामृत कर्ण रूपी प्यालों के द्वारा तथा श्री कृष्ण के रूपामृत को नयन रूपी प्यालों के द्वारा पान करके श्रीमती जैसे मोहदशा को प्राप्त हुई, इसी समय श्री कृष्ण की विस्तारित अपूर्व अंग सौरभ ने उनकी नासिका रन्ध्र में प्रविष्ट होकर बाह्य आवेश उत्पन्न किया! श्रीमती के हृदय की प्रत्येक परत में श्री कृष्णानुराग की प्रगाढ़ तरंग माला उछलने लगी! वे पुलकाश्रु कम्पादि सात्विक विकारों से भूषिता होकर बोलीं–"सखी! क्या ब्रजराज के पुर में प्रवेश करने का कोई अन्य पथ नहीं हैं? सखी! मैं इस पथ से होकर नहीं जा सकती! इसके उत्तर में सुचतुरा ललिता ने कहा–हे प्रिय सखी! लम्पट से सम्मुख होकर जाना होगा यह सोचकर भय से तुम्हारी अंग लतिका कंटकित (कांटे युक्त बेल) एवं तुम्हारे कमलायत नयनों से अश्रुकणा फूटते देख रही हूँ। भय क्यों सखी! गुरुजन ने जब तुम्हारे लिए इस पथ से जाने की आज्ञा दी है तब गुरु परवश से ही तुम्हारे सब दोष दूर हो जायेंगे। चलो सखी! हम सब इस पथ से ही नन्दालय में प्रवेश करें।" श्रीमती मन ही मन ललिता की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए धीरे-धीरे उसी पथ में आगे अग्रसर होने लगीं। घूँघट से सिर को ढ़कने के छल से एक बार मुख मंडल एवं अन्य अंगादि को भलीभाँति श्याम सुन्दर को दिखलाया एवं स्वयं भी श्याम माधुरी का अल्प दर्शन किया। दोनों के ही ध्यान का धन दोनों को ही प्रत्यक्ष है। श्री कृष्ण अपलक-नेत्रों से अतृप्त आकांक्षा से श्रीमती की अतुलनीय रूप माधुरी का आस्वादन करने लगे। श्रीमती भी अपने प्राणकान्त की भुवन मोहन रूप माधुरी का अपलक नयनों से दर्शन

श्रीश्रीराधाकृष्ण का पारस्परिक दर्शनानन्द।

Scanned by CamScanner

करके विभोर हुई। पारस्परिक दर्शनानन्द से दोनों के श्री अंग से महामाधुर्य का अगणित प्रवाह झलकते हुए उछल पाने लगा! उसी माधुर्यामृत प्रवाह के महासुख सागर की तरंग माला में सखी मंजरियों के नयन रूपी मीन गोते लगाने लगे!!

श्री कृष्ण दर्शनानंद में अनुराग की प्रबलता से श्रीमती के अंग में स्तंभ जड़िमादि सात्विक भावों का उदय होने से जैसे उनकी गति अधिकतर मन्द होने लगी। तब श्री तुंगविद्या सखी श्री मती में भावान्तर लाने के लिए उन्हें दिखाते हुए नंदीश्वर गिरी की शोभा का वर्णन करने लगीं—"सखी राधे! यह देखो, शैल रूपी नंदीश्वर सोलह कोस ऊँचा, आठ कोस लम्बा एवं दो कोस चौड़ा सम्पूर्ण स्थान प्राकृतिक क्रम से युक्त है। इसमें रसाल (आम का वृक्ष), पनस (कटहल का वृक्ष), अर्जुन, गुवाक (सुपारी का वृक्ष), नारियल आदि वृक्ष समूह,

तुंगविद्या द्वारा नंदीश्वर की शोभा वर्णन।

माधवी, मालती, नवमल्लिका सुचारु रूप से पुष्पित लतावली द्वारा परिवृत होकर षड्ऋतु वन समूह कैसी शोभा का विस्तार कर रहा है! कोकिलादि पक्षी कुल के कल-कूजन से तथा भृंगों की सुमधुर गुँजार से वन समूह मुखरित (कोलाहल पूर्ण) है। शैल के चारों ओर श्वेत, अरुण, नील एवं पीत चार वर्णों की शैल माला शोभा पा रही है। शैल शिखर से होकर चारों ओर से चतुर्वर्णा शिलानुसार झरना-समूह निकल कर श्वेतवर्णा सरस्वती, अरुण वर्णा अलकनन्दा, नीलवर्णा यमुना तथा पीत वर्णा गंगा के समान रमणीय शोभा का विस्तार करके पावन सरोवर यशोदा कुंड आदि असंख्य रमणीय सरोवरों को परिपूर्ण कर रहा है। श्वेत, नील, पीत तथा रक्त वर्ण कमल कह्लार आदि से सुशोभित हैं। चक्रवाक सारस आदि पक्षी समूह से परिपूरित विचित्र तरंगावली युक्त विमल जल से पूर्ण बड़ा जलाशय सरोवरादि से पर्यावृत नंदीश्वर गिरी का दर्शन करो।"

तुंगविद्या के वाक्य से भावान्तर प्राप्त होकर सखी के साथ श्री राधारानी ने गिरी शोभा दर्शन करते हुए पुर में प्रवेश किया। पुर के चारों ओर नाना मणि जड़ित स्वर्ण दीवार है। चारों ओर चार द्वार-तोरण, बंधन माला, मुक्ता माला तथा ध्वजा, पताकादि से परिशोभित हैं। नाना वर्णों की ध्वजा-पताका मलय पवन से आंदोलित

नन्दीश्वरपुर शोभा।

होकर जैसे पथिक कुल को आनन्दमय नंद भवन में आतिथ्य ग्रहण करने के लिए हाथ से निमन्त्रण दे रही हो। पूर्व दिशा में हीरकमणि के कीलयुक्त स्वर्ण कपाट युक्त विशाल सिंह द्वार हैं। इसके दोनों ओर श्वेत संगमरमर के पत्थर से निर्मित दो विशाल सिंह, श्वेत वर्ण जटा तथा पद्मराग एवं नीलमणि के नीलारुण वर्ण नयन हैं। सिंह द्वार पांच मंजिल है। प्रथम मंजिल में गुणीवृन्द श्री कृष्ण को गुणगान द्वारा प्रबोधित करते हैं। दूसरी मंजिल में नर्तकियों का नृत्यानुष्ठान होता है। तृतीय मंजिल में नगाड़े आदि बाजे बजते हैं। चतुर्थ मंजिल पर श्री कृष्ण की लीलानुसार स्वर्ण घड़ी का निनाद होता है। पंचम मंजिल पर स्वर्ण कलश से परिशोभित विजय पताका फहरा रही है। अति उच्च श्री नंद का पुर महामाधुर्य मण्डित सप्त महलों से सुशोभित है। इसके उत्तर में उर्जन्य राजा का पुर, दक्षिण में पर्जन्य एवं पूर्व में राजन्य का पुर है। ये तीन भाई हैं, इनके मध्य नन्दादि पांच भाई पर्जन्य महाराज के पुत्र हैं। पर्जन्य महाराज के

Scanned by CamScanner

पुर के दक्षिण में सनन्द एवं नंदन का आलय है। श्री उर्जन्य महाराज के उत्तर में उपानंद तथा अभिनंद का आलय है। इसके मध्य में श्री नंदमहाराज की पुरी है। पुरी के दक्षिण अंश में अतुलनीय श्री सम्पन्न राज सभा है। पुर के उत्तर द्वार से होकर दक्षिण द्वार तक एक विस्तृत मार्ग है। पूर्व दिशा के दो खण्ड एवं पश्चिम के दो खण्डों में बयालिस चक एवं इसके मध्य में सात चक मिलाकर पुरी में उनचास चक हैं।

मध्य स्थल में विचित्र कांतिमय श्री नारायण का मंदिर है। मंदिर की पूर्व दिशा में नंद महाराज की बैठक, इसके पूर्व में बंधु बैठक, इसके पूर्व में चंद्रशाला, इसके पूर्व में सिंह द्वार है। श्री नारायण के मंदिर के पश्चिम में श्री कृष्ण का भोजन गृह, इसके पश्चिम में कच्चे अन्न का भण्डार, इसके पश्चिम में सखी गणों का रसोई गृह, इसके पश्चिम में खिड़की द्वार है। ईशान कोण के बारह चकों का एक खण्ड जो श्वेत कांतिमय है। एक खण्ड के नैऋत्य कोण में श्री रोहिणी माता का शयन गृह, इसके पूर्व में कीर्तिदा माता का, इसके पूर्व में वृषभानु बाबा का, इसके पूर्व में श्री दाम का, इसके उत्तर में दासी गणों का, इसके पश्चिम में कुंदलता का, इसके पश्चिम में धनिष्ठा का, इसके पश्चिम में शुभे, शुन्दे, भरणी, पीबरी आदि धात्रीमाता गण का, इसके उत्तर में रंकण, टंकण दास गणों का, इसके पूर्व में दासी गणों का, इसके पूर्व में भद्रा का, इसके पूर्व में चन्द्रावली का गृह है। अग्निकोण के बारह चक में श्री नंद महाराज का एक खण्ड श्वेत मरकत मणिमय है। इस खण्ड के नैऋत्य कोण के चक में श्री कृष्ण की बैठक, इसके पूर्व में रक्तक, पत्रकादि दास गणों का गृह, इसके पूर्व में दासी गणों का, इसके पूर्व में श्री मधुमती का, इसके उत्तर में पाली का, इसके पश्चिम में विमला सखी का गृह है। इसके पश्चिम में श्री नृसिंह देव का मन्दिर है। इसके पश्चिम में अंबा, किलिम्बादि श्री कृष्ण की धात्री माताओं का, इसके उत्तर में श्री यशोमती माता का स्वर्ण मणिमय शयन गृह, इसके पूर्व में नंदबाबा का शयन गृह नाना मणि जड़ित पीत वर्ण है। इसके पूर्व में सृहृद श्यामला सखी का तथा इसके पूर्व में मंगला सखी का गृह है। मध्य में उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत मार्ग है। पश्चिम में नैऋत्य कोण के एक खण्ड में नौ चक हैं। पूर्व-उत्तर कोण में श्रीकृष्ण का शयन गृह पीत मरकत मणिमय तीन मंजिला है, बाह्य द्वार नाना मणि चित्रित बंदनवार से एवं स्वर्ण कलश, चक्र, ध्वजा, पताकाओं से शिखर देश परिशोभित है। नीचे से शिखर देश तक हीरक, मणि, मुक्ता सुचित्रित हैं। द्वार तथा खिड़कियाँ नाना मणियों से जड़ित हैं तथा इन्द्रनीलमणि के कपाट हैं। गृह के मध्य नाना रत्नों का झालर युक्त विचित्र चंदवा, चम्पक कलिका के सदृश मणि प्रदीपावली तथा स्वर्ण पिंजरे में शुक सारी आदि शोभा पा रहे हैं। इसी चक के पूर्व में मधुमंगल तथा उत्तर-दक्षिण में जय-विजय का गृह है। इसी खण्ड के नैऋत्य कोण में मंजरी एवं दासीगणों का हीरक मणि मुक्तादि जड़ित एक चक है। इसके पूर्व में सखीगणों का गृह, इसके पूर्व में रत्न भण्डार, इसके उत्तर में श्री कृष्ण का स्नान, दन्तधावन, श्रृँगार वेदी का एक चक है। इसके पश्चिम में श्री राधा का शयन गृह, इसके पश्चिम में श्री राधा का भोजन गृह, इसके उत्तर में उनका रन्धन गृह, इसके पूर्व में उनकी बैठक है। इसके पूर्व में श्री कृष्ण का अन्य एक शयन मंदिर, इस प्रकार नौ चक हैं। वायु कोण में श्री बलदेव के नौ चक पीत-मरकत मणिमय एक

Scanned by CamScanner

खण्ड में हैं। एक खण्ड में नैऋत्य कोण में दुग्ध भण्डार, इसके पूर्व में अचार भण्डार, इसके पूर्व में श्री बलदेव का शयनमंदिर, इसके उत्तर में उनका दन्त धावन, स्नान एवं श्रृँगार वेदी का एक चक है। इसके पश्चिम में रत्न भण्डार, इसके पश्चिम में दधि भण्डार, इसके उत्तर में घृत भण्डार, इसके पूर्व में अन्न भण्डार, इसके पूर्व में श्री बलराम की बैठक, इस प्रकार से नौ चक हैं। पुर के मध्य में गृह समूह की भित्ति (दीवार) की कांति माला से छोटे-छोटे सभी मार्ग झलमल कर रहे हैं।

श्री राधा ने सखीगणों के साथ ब्रजराज पुर का निरुपम सौन्दर्य दर्शन करते हुए पुर में प्रवेश किया। धनिष्ठा श्री राधा का विलम्ब देखकर बारम्बार घर से बाहर एवं अन्दर व्यग्र भाव से आवागमन कर रही थीं। जैसे ही देखा वैसे ही दौड़कर श्री मती को परमादर के साथ आलिंगन कर बोलीं—"इतना विलम्ब क्यों? तुम्हें न देखकर मैं बहुत कष्ट पाती हूँ।" श्री मती ने कोमल कंठ से कहा—"मैं तो पराधीना हूँ" धनिष्ठा स्नेह पूर्वक श्रीमती के हाथ को थामकर यशोदा माता के निकट ले चलीं। श्रीमती की शोभन अंग कांति से राजभवन प्रकाशित हो उठा। उसी ज्योति का दर्शन कर माता यशोमती के अंतर (हृदय) में एक अपूर्व आनन्द की लहर उछलने लगी। माता ने श्री राधा के आगमन की संभावना से उस ओर दृष्टिपात करते ही उन्हें देखा। श्रीराधा की असामान्य आलोक पूर्ण रूप माधुरी के दर्शन से माता सोचने लगीं कि त्रिभुवन की निखिल शोभा-संपद की अधिष्ठात्री देवी ही मानो मेरे घर में उदित हुई हैं। श्रीमती के अति विनीत भाव से ब्रजेश्वरी माता के चरणों में प्रणाम करने पर माता ने सादर पूर्वक उन्हें अपने हृदय से लगाकर पुनः पुनः चुम्बन एवं मस्तक सूँघते हुए स्नेहाश्रु माला से अभिसिक्त कर दिया। माता स्नेहाप्लुत कंठ से श्री मती को आशीष दान करते हुए बोलीं—"हे शशि मुखी! तुम शतायु होओ एवं नित्य इसी प्रकार से यहाँ आकर मेरे नयन एवं मन का आनन्द विधान करो।" श्री मती भी प्रेम गदगद कंठ से बोलीं—" माँ मैं तो तुम्हारी ही हूँ।" तब श्री मती की सखीगणों द्वारा माता के चरणों में प्रणाम करने पर ब्रजेश्वरी ने उन सबको भी आशीर्वाद एवं आलिंगनादि द्वारा सुखी किया। वात्सल्य की लता रूपा ब्रजरानी की निरूपम वात्सत्य कुसुम माला से परिशोभिता होकर सखी सह श्री मती राधा रानी अतीव मनोहरा हुई।

श्रीराधा के प्रति धनिष्ठा की प्रीति।

यशोदा का श्रीमती के प्रति वात्सल्य।

उसके बाद सखी सह श्रीमती को उत्तम आसन पर बिठाकर किंचित कोमल मधुर मोदकादि लाकर यशोदा माता ने भोजन के लिए अनुरोध किया। इससे लज्जावती श्रीमती के थोड़ा संकुचित होने पर माता धनिष्ठा को उनके भोजन का भार देकर गृह के अन्दर चली गई। धनिष्ठा द्वारा मिष्टान्न के साथ श्री कृष्णाधरामृत मिलाकर देने पर सखीगण सह श्री मती ने उसका भोजन किया। भोजन समाप्त होने पर किंकरी ने श्रीमती के नील पट्ट वस्त्र उतार कर रंधनोपयोगी श्वेत वस्त्र पहनाये। तत्पश्चात् माता यशोदा अति आदर के साथ उन्हें रसोई गृह में ले जाकर बोलीं—"हे कमल मुखी! हे कीर्तिदा-कीर्तिदायिनी! विधाता ने तुम्हारा रंधन

माँ यशोदा का श्रीराधा को रंधन करने का आदेश देना।

Scanned by CamScanner

कार्य में अति सुनिपुणा के रूप में सृजन किया है। अतः सखियों के साथ मिलकर तुम यत्न पूर्वक रंधनादि करो। हे राधे! तुम साक्षात् कमला रूपिणी हो, तुम्हारे ही दृष्टिपात से मेरा घर निरंतर विविध अक्षय सम्पदा से पूर्ण है। कुछ भी अभाव नहीं है। रंधन के लिए उपयोगी समस्त सामग्री निःसंकोच रूप से धनिष्ठा से माँग लेना। हे राधे! इस जगत में सुरसाल रंधन क्रिया में तुम परम अभिज्ञा हो, अतएव रोहिणी के साथ मिलकर तुम श्री कृष्ण के अति लोभनीय 'अमृत केलि' तथा 'कर्पूर केलि' नामक दोनों पीठा प्रस्तुत करो। हे वत्से! पीयूष ग्रंथी के लिए मेरा पुत्र अतिशय लालसान्वित है अतः उस पीयूष ग्रंथी को तैयार कर कर्पूर तथा इलायची युक्त पंचामृत नामक पानक में उसे यत्न पूर्वक डालो। हे पुत्री ललिते! तुम रसाला प्रस्तुत करो। विशाखे! तुम शीघ्र ही पानक प्रस्तुत करो। हे शशिलेखे! तुम शिकंजी, हे पुत्री चम्पकलते! तुम मथित (मठा) तैयार करो। हे पुत्री तुंगविद्ये! तुम आमिक्षा (छेना) प्रस्तुत कर विविध मिष्टान्न तैयार करो। हे चित्रे! तुम मिश्री का पानक तैयार करो। हे रंगदेवी! तुम खण्ड मण्ड (पिष्टक विशेष), हे सुदेवी! तुम क्षीरसा, हे बासन्ती! तुम शुभ्र वर्ग मृदुल फेनिका, हे मंगले! तुम कुंडलिका (जलेबी) प्रस्तुत करो।" इस प्रकार से माता यशोदा द्वारा सखीसह श्री राधा रानी को स्नेह सहित नाना प्रकार के मिष्टान्न, पक्वान्नादि रचना करने का आदेश देने पर अति विनयशीला एवं सुशोभना श्री राधा ने गोष्ठेश्वरी का अभिवादन कर रोहिणी माता के निकट जाकर उन्हें प्रणाम किया। रोहिणी माता तत्क्षणात् श्रीमती को गोद में लेकर कन्या की भाँति लालन करते हुए बोलीं—"हे वत्से! तुम रंधन कार्य में परम सुदक्षा हो, तुम अपने मन के अनुसार द्रव्यादि रसोई करो। तुम आओगी—यह जानकर भी तुम्हारे रंधन कार्य के अधिक भार को कुछ हल्का करने के लिए मैं अब तक रसोई करती रही।" यह कहकर रोहिणी माता ने चूल्हे के निकट शुभ्र वसन से आवृत चौकी के ऊपर श्रीमती को बलपूर्वक बिठा दिया।

सखी गणों के प्रति आदेश।

अगुरु, सरल, देवदारु आदि की सुगंधी काष्ठ के सहयोग से सभी चूल्हे प्रज्वलित हो रहे हैं। उसके सामने तथा बगल में सभी पात्रों के ऊपर नाना प्रकार की रंधन सामग्री सुन्दरता पूर्वक क्रम से सजी हुई है। श्रीमती रंधन के लिए बैठकर कभी चूल्हे में अग्नि जल रही है या नहीं देखती हैं, कभी पाक पात्र धारण करती हैं, कभी उसे उतारती हैं, कभी दर्बी (सब्जी चलाने का पलटा या कूली) से सब्जी चला रही हैं, कभी छौंक दे रही हैं। कभी पाक पूर्ण हो गया है यह जानकर चूल्हे से पात्र उतारकर रख रही हैं। इस कार्य में श्री मती के बाहु, पयोधर, स्कंध पुनः पुनः कंपित हो रहे हैं, एवं वस्त्रादि के हिलने-डुलने से एवं अपूर्व अंग माधुर्य से रंधनागार प्रकाशित हो रहा है। उसी रूप माधुरी के आस्वादन के लोभ को न छिपा पाने के कारण सुचतुर रसिक शेखर श्री कृष्ण रंधनागार के खिड़की छिद्र से छिपकर उस अनिन्द्य सुन्दर रूप माधुरी का दर्शन कर रहे हैं। मस्तक पर घूँघट नहीं, अग्नि के ताप से नवनीत से भी कोमल सुकुमार मुख मंडल रक्तिमाभ हो रहा है! दासी श्री मुख को स्नेहपूर्वक पोंछ रही है। माधुर्य दर्शन से श्री कृष्ण विमुग्ध हैं। चरण आगे नहीं चल पा रहे हैं। सोच रहे हैं— "आहा! मेरे

रंधन शाला में श्रीकृष्ण का राधा दर्शन।

Scanned by CamScanner

लिए सुकुमारी कितने कष्ट करके रंधन कर रही हैं।'' सहसा श्रीमती ने श्री कृष्ण को देख लिया। वे लज्जा से झुक गई। मस्तक पर घूँघट भी नहीं दे पा रही हैं—रंधन कार्य में दोनों हाथ व्यस्त हैं। दासी श्रीमती के इशारे पर घूँघट दे रही है। नयन इंगित द्वारा श्रीमती ने कहा—''छोटी माँ आ रही हैं—अभी जाओ।'' श्री कृष्ण भी इंगित द्वारा ही प्रश्न कर रहे हैं—''क्या मैं और नहीं देख पाऊँगा?'' श्रीमती भी कटाक्ष द्वारा ही उत्तर दे रही हैं।—''हाँ'' मर्मज्ञ किंकरी सब कुछ समझती है। इसीलिए किंकरी रंधन शाला को ''रसवती'' के नाम से भी अन्वय अर्थ अनुभव कर रही हैं। (रंधनशाला का एक नाम ''रसवती'' है)।

रंधन कार्य समाप्त हुआ। माता यशोमती के द्वारा रंधन शाला में जाकर रोहिणी देवी के निकट तैयार किये हुए द्रव्यादि को देखने की इच्छा करने पर रोहिणी माता ने रंधन कार्य में अमृत हस्ता श्री राधा की विविध प्रशंसा करते हुए सम्मार्जित वेदिका के ऊपर यशोदा को सभी पात्रों में सुरक्षित नानाविध प्रकार के अन्न व्यंजन तथा मिष्टान्नादि को दिखाया। वही सब सुवासित, सुन्दर तथा मनोहर अन्न व्यंजन आदि एवं मिष्टान्न, पक्वान्नादि दर्शनकर विस्मिता माँ यशोदा ने प्रश्न किया—''इतने अल्प समय में इतने प्रचुर सुन्दर तथा मनोहर भोज्य द्रव्यादि कैसे प्रस्तुत हुए?'' इसके उत्तर में श्री रोहिणी देवी ने कहा—''यह अमृत हस्ता श्री राधा के हाथ का ही गुण है। वे जो भी स्पर्श करती हैं, वही अमृतमय हो जाता है।'' अन्न संस्कार में तत्परा श्री राधा द्वारा अपने गुण का वर्णन श्रवण कर लज्जा से अवनता एवं रंधन श्रम से पसीना युक्त शरीर देखकर माता यशोदा स्नेहार्द्र चित्ता होकर दासियों को व्यजन करने का आदेश देकर अन्यत्र चली गई, तब साधक दासी श्री मती के रंधन वस्त्र उतारकर सुकोमल आर्द्र वसन से उनके श्री अंग को पोंछकर व्यजन करने लगी। माता ने पके हुए सभी द्रव्यों में से थोड़ा-थोड़ा लेकर श्री नारायण का भोग सजाने के लिए श्री रोहिणी देवी को निर्देश देकर सखा गण सह श्री कृष्ण बलदेव को भोजन के लिए बुलाने के उद्देश्य से कमल नामक दास को भेजा। इधर मधुमंगल ने यशोमती माँ द्वारा आदेश पाकर रोहिणी देवी द्वारा सज्जित नारायण की भोग सामग्री में तुलसी एवं सुगन्धित जल द्वारा निवेदन किया।

श्रीराधा के हस्त पक्व द्रव्यादि दर्शन से यशोदा को विस्मय।

श्रीनारायण का भोग।

नवद्वीप : श्री राधा कृष्ण के भोजन पद श्रवण से महाप्रभु का भावावेश :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर श्री भागवत श्रवण करते हुए ब्रजभाव में आविष्ट हैं। इसी समय शची माता द्वारा भेजे गये ईशान दास ने आकर कहा- '' हे गौर चंद्र! श्री मन्नारायण का भोगराग प्रस्तुत है, माता भोग निवेदन के लिए बुला रही हैं।'' यह श्रवण कर महाप्रभु हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। परिकर गणों ने भी बाह्य दशा लाभ की। तब पंडित गोस्वामी ने भागवत पाठ समाप्त किया। श्री मन्महाप्रभु ने सपरिकर श्री नारायण के जगमोहन (प्रांगण) में भोग-आरती कीर्तन आरम्भ किया। श्री गदाधर पंडित गोस्वामी ने जल तुलसी द्वारा यथा विधि पूर्वक श्री नारायण को भोग निवेदन किया। महाप्रभु का मन जानकर

Scanned by CamScanner

स्वरूप गोस्वामी ने श्री कृष्ण तथा श्री राधा के भोजन पद क्रम से गान किये। उसे श्रवण कर महाप्रभु अश्रु पुलकादि सात्विक विकार से आक्रान्त होकर ब्रजभाव में विभोर हुए। भक्त वृन्द भी अपने-अपने सिद्ध स्वरूप में आविष्ट होकर ब्रज रस में मग्न हुए।

ब्रजधाम: श्री श्री राधा कृष्ण का भोजन तथा विश्राम :

ब्रज में श्री मधुमंगल ने श्री नारायण को भोग लगाकर तांबूल अर्पण कर ठाकुर को शयन कराया। इधर कमलदास सखागणों के साथ श्री राम कृष्ण को भोजन के लिए बुला लाया। उन सभी ने हस्त मुखादि प्रक्षालन कर भोजनालय में प्रवेश किया। उत्कृष्ट अगुरु धुँए से सुगन्धित भोजनालय में वहुमूल्य आसन से परिशोभित स्वर्ण वेदी, स्वर्ण जलपात्र में सुगन्धित जल बीच-बीच में सुसज्जित है, उसी आसन पर सखागण सहित श्री कृष्ण बलदेव भोजन के लिए परम मनोविनोद पूर्वक बैठ गये। श्री कृष्ण के बायें श्री दाम एवं सुवल,

सखाओं के साथ श्रीरामकृष्ण का भोजन कौतुक।

दक्षिण में बलदेव, सामने मधुमंगल एवं अन्य-अन्य सखागण कोई बायें, कोई दक्षिण में एवं कोई सामने बैठ गया। सबसे पहले माँ यशोमती ने सखा सह श्रीरामकृष्ण को चित्रासखी द्वारा लाये गये नारियल पानी तथा गन्ने का रस इत्यादि पेय पदार्थ प्रदान किये। श्री यशोदा द्वारा बुलाये गये श्री कृष्ण के सखागणों की माताएँ परम वात्सल्य पूर्वक श्री कृष्ण के लिए जो मिष्टान्न पक्वान्नादि लेकर आयीं, माता यशोदा उसे स्वर्ण थाल में लेकर परम समादर पूर्वक परोसने लगीं एवं सभी परमानंदित होकर भोजन करने लगे। श्री राधा श्री कृष्ण के लिए घर से जो "गंगाजल" नामक मिष्टान्न लाई थीं, श्री राधा के इंगित पर श्री रंगदेवी द्वारा उसे श्री यशोदा के हाथ में प्रदान करने पर माता ने उसे सबके पात्र में बाँट दिया। सखागणों के संग में हास्य परिहास रस के साथ श्री कृष्ण भोजन करते हुए एक-एक बार श्री राधा के प्रति दृष्टिपात कर रहे हैं, यह देखकर सखीगणों को परमानन्द हुआ। तब माता यशोदा तर्जनी द्वारा भोज्य वस्तुओं को दिखाते हुए कहने लगीं—"हे वत्स! यह द्रव्य वहुत अच्छा है, अति सुमिष्ट है, यह सब अति मनोरम है—इन सबका भोजन करो।" श्री कृष्ण सखागणों के

मधुमंगल का परिहास रस।

मध्य जिसकी जिस वस्तु में प्रीति है, हास्य मुख से उसे उसी वस्तु को अपने पात्र से उठाकर देने लगे। श्री कृष्ण को भोजन क्रिया में शिथिल तथा माता का परोसने में आग्रह देखकर परिहास रस में पटु बटु मधुमंगल माता से बोले—"मात:! कृष्ण तो कुछ भी नहीं खा रहा है, वह सब खाद्य मुझे दो, मेरे खाने से उसका आलिंगन करने पर उसका शरीर पुष्ट हो जायेगा। अग्नि मंद होने के कारण श्री कृष्ण की घृत पक्व द्रव्य को खाने की शक्ति नहीं है, अतएव वह सब मुझे देकर उसे कुछ लघुपाक (सुपाच्य) अन्न व्यंजनादि प्रदान करो।" मधुमंगल के वाक्य श्रवण कर श्री कृष्ण ने हँसते-हँसते अपने पात्र से पांच छः अंजली पकवान ग्रहण करते हुए-" यह लो खाओ" कहकर मधुमंगल के पात्र को भर दिया। इससे बटु ने परमानंद में भरकर बायें कांख को बजाते हुए कहा—"हे सखे! यह देखो मैं सब खा रहा हूँ।" यह कहकर एक ही बार में दो-तीन ग्रास मुँह में भरकर बोला- माँ! मुझे थोड़ा दही तो दो।" माता के

Scanned by CamScanner

दही लाने के लिए जाने पर बटु ने सखाओं से कहा–"यह देखो एक वानर पकवान लेने की आशा से नृत्य कर रहा है।" यह सुनकर सखाओं के ऊपर दृष्टिपात करने मात्र से ही अपने पात्र स्थित सभी भोज्य द्रव्य को सखाओं के पात्र में रखते हुए गर्व सहित बोला- "यह देखो, मैने सभी वस्तुओं का भोजन कर लिया। दधिपात्र को हाथ में लाते हुए माता को प्रवेश करते हुए देखकर कहा–"माँ मैंने बिना दधि के ही सब भोजन कर लिया, तुम इस समय मुझे प्रचुर मात्रा में खीर प्रदान करो।" तब रोहिणी माता श्री राधा द्वारा भण्डार से लाये हुए प्रचुर खीर, अन्न व्यंजन, सुकोमल पूड़ी एवं मिष्टान्नादि क्रम पूर्वक परोसने लगीं। भोज्य वस्तु की स्वादुता तथा आधिक्य दर्शन कर बटुने पुनः परिहास करते हुए कहा- "हाय! स्वयं लक्ष्मी द्वारा पकाये हुए यह अन्न व्यंजन मिष्टान्नादि कहाँ हैं, और भोज्य द्रव्य के रस ज्ञान से हीन ये सब गोपगण कहाँ हैं?" तब श्री दाम ने हँसते हुए कहा–"हे बटु! अभी यह रहस्य रहने दो। अन्न ग्रास द्वारा जल्दी-जल्दी अपने इस उदर को पूर्ण कर लो। इस उदर के लिए ही तो तुम बटुता को प्राप्त हुए हो।" बटु ने कहा–"अरे मूर्ख ग्वाले, गोचारण ही तो तुम्हारा धर्म है, तू इस रसास्वादन का मर्म क्या समझेगा? गोचारण के लिए शीघ्र ही वन को चले जाओ।" तब श्री कृष्ण पूछते हैं,–"हे बटो! क्या तुमने इस रस शास्त्र का अनुशीलन किया है?" मधु मंगल ने कहा–"हे कृष्ण! आलंकारिक गणों के मत में श्रृँगारादि आठ रस होने पर भी मेरे मत में कटु, अम्ल, मधुरादि मात्र छः रस हैं। शाक-सूपादि के मूर्तिमान रस को परित्याग कर जो श्रृँगारादि निराकार रस का आस्वादन करने की चेष्टा करते हैं, उन सबके लिए पिपासित व्यक्ति द्वारा विशुद्ध जल परित्याग करके मरीचिका की भाँति वृथा परिश्रम मात्र ही सार होता है। जो रस निष्पत्ति के विषय में चर्बन को ही कारण समझता है, वह कोटि जन्म में भी 'चर्बन' किसे कहते हैं, यह नहीं जानता। अमूर्त रस का चर्बन नहीं हो सकता, मूर्त रस-स्वरूप अन्न व्यंजन तथा मिष्टान्नादि का चर्वन ही प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध है।" बटु के नवीन रस सिद्धान्त से कौतुहलाक्रान्त होकर श्री बलदेव ने पूछा–"बटु! तुम्हारे मत में रसास्वादन के क्या-क्या सात्विक तथा अनुभाव हैं, संचारी भाव ही क्या-क्या हैं, एवं स्थायी भाव ही क्या है जरा उसे वर्णन करो तो देखें।" बटु ने कहा–"हलधर! आलंकारिकों के मत में रसास्वादन के बाद 'अश्रु' नामक सात्विक होता है, किन्तु मुझे अन्न व्यंजनादि के अभाव में रसास्वादन के पहले ही 'अश्रु' पात होता है। तथा इस प्रकार के अन्न व्यंजनादि के रहने पर 'रोमांच' तथा प्रफुल्लता का उदय होता है। भोजन की तृप्ति वशतः मेरा जो वर्ण स्निग्ध होता है। वही मेरा 'वैवर्ण' है, एवं भोजन के समय जो चीत्कार करता हूँ वही मेरा 'स्वरभंग' है। प्रचुर मिष्टान्नादि विद्यमान रहने पर अधिक भोजन की असमर्थता के दुःख से मेरा 'स्तंभभाव' होता है, 'पसीना' तो देख ही रहे हो तथा अधिक भोजन के अंत में 'प्रलय' या मूर्छा भी देख पाओगे।" आलस्य, चिंता, निद्रा, हर्षादि मेरे रसास्वादन के संचारी एवं आस्वाद्य-निबंधन 'स्थायीभाव' एक प्रकार का होने पर भी शाक, सूप, मिष्टान्न, पक्वान्नादि विविध नाम से ख्यात होता है।" इस प्रकार से श्री कृष्ण तथा बलदेव बटु के सरस परिहास के आनंद में मग्न होकर सखाओं

मधुमंगल का नवीन रस सिद्धान्त।

Scanned by CamScanner

के साथ भोजन करने लगे।

रोहिणी देवी के द्वारा परिवेसन में रत होने से प्राप्त अन्तराल में भोज्यादि प्रदान करते समय प्रियाजी की श्री मुख माधुरी दर्शन कर श्री कृष्ण भाव विकार से ग्रस्त होकर भोजन के प्रति शिथिल रुचि एवं अन्य मनस्क हो गये। यह देखकर माता व्याकुल चित्त से बोलीं—"हे वत्स! क्षुधित होने पर भी यत्न पूर्वक पकाये गये इस अन्नादिका भोजन क्यों नहीं करते? तुम्हें मेरी सौगन्ध-कुछ और भोजन करो।" रोहिणी माँ ने कहा—"वत्स! मल्लिका कुसुम की अपेक्षा भी सुकोमलांगी श्री राधा ने अति यत्नपूर्वक यह सब सुस्वादु अन्न व्यंजनादि रंधन किया है। यदि तुम भोजन नहीं करोगे तो ये सुकुमारी इतना कष्ट करके रंधन के लिए यहाँ और नहीं आयेगी।" तब श्री कृष्ण श्रीमती के दर्शन से होने वाले भाव विकार को संवरण कर धीरे-धीरे भोजन करने मे प्रवृत्त हुए- यह देखकर दोनों माताएँ परमानंदित हुई। तब माता ने सखागण सहित राम कृष्ण को चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेयादि बहु विध मधुर तथा सुरसाल सभी भोज्य पेय यत्नपूर्वक भोजन तथा पान कराये। भोजन के अंत में हस्त मुखादि प्रक्षालन करने पर शुष्क सुकोमल वस्त्र से हस्त मुखादि पोंछकर इलायची, लवंग, कर्पूरादि से सुगन्धित उत्तम पान बीड़ा चबाते हुए सौ कदम के अन्तर में स्थित अपने शयन कक्ष में श्री कृष्ण रत्न पलंग पर विश्राम करने लगे। हस्त पदादि प्रक्षालन कर श्री राधा ने अन्य प्रकोष्ठ में जाकर कान्त के वदन कमल के दर्शन कर परमानन्द लाभ किया। तत्पश्चात् माता द्वारा सखीगण सह श्री राधा के भोजन के लिए रोहिणी माता को निर्देश देने पर अन्न व्यंजनादि सब सुसज्जित कर रोहिणी माता ने धनिष्ठा के हाथ में प्रदान किया। धनिष्ठा ने उसमें गुप्त रूप से श्री कृष्णाधरामृत मिला दिया। भोजन करने के लिए कहने पर लज्जावती श्री राधा को वस्त्रांचल से मुख ढ़ककर अधोमुखी होकर अवस्थान करते देखकर स्नेहाकुल चित्ता माता यशोदा कहने लगीं—" हे पुत्री! क्या मैं तुम्हारी जननी से अलग हूँ? तुम इस प्रकार से लज्जा क्यों करती हो? कृष्ण के दर्शन से मैं जितना आनंद पाती हूँ, तम्हारे दर्शन से भी मैं उतना ही आनंद पाती हूँ। मैं सतत तुम्हारे रूप, गुण, तथा कार्य की बलाई लेकर मरूँ। तुम आज मेरे ही सम्मुख भोजन करो। हे ललिते! हे विशाखे! लज्जा त्यागकर तुम सब मेरे गृह में भोजन करो। अपने मातृ गृह के समान स्वच्छंद भोजन, विश्राम, हास्य तथा खेलादि करो।" माता के अति आग्रह पूर्ण स्नेहमय वाक्य श्रवण से श्रीमती सखी संग में परम सुखपूर्वक श्री कृष्णाधरामृत भोजन करने लगीं। भोजन के अंत में सखीगण सह आचमन करके अपने विश्राम कक्ष में जाकर रत्न पलंग पर बैठने पर मंजरी गणों ने तांबूल आदि अर्पण किया तथा साधक दासी चामर व्यजनादि कालोचित सेवा करने लगी। बाद में यशोमती माता के आदेश से रूप मंजरी आदि किंकरीगण श्री राधा तथा सखीगण के पात्र में ही बैठकर धनिष्ठा द्वारा प्रस्तुत अन्नादि भोजन कर श्री राधा के निकट आयीं। तत्पश्चात् श्री गुरु मंजरी गण के भोजन करने पर साधक दासी

प्रियाजी के दर्शन से श्री कृष्ण का भाव विकार।

भोजनांत में श्रीकृष्ण का विश्राम।

यशोमती माता के आग्रह से ससखी श्रीराधा का भोजन तथा विश्राम।

Scanned by CamScanner

सबका अधरामृत सेवन करके आचमन के अंत में पात्रआदि संस्कार करके श्री राधा के निकट आकर श्री गुरु देवी के चरणमूल में अवस्थान करने लगी। श्रीमती ने कृपा कर अपना चर्वित तांबूल किंकरी गणों को प्रदान किया। श्री राधा के शयन करने पर श्री गुरु मंजरी के आदेश से साधक दासी श्रीमती के श्री चरण-संवाहन करने लगी। तब मंजरी गण भी अपने-अपने निद्रिष्ट स्थान पर जाकर विश्राम करने लगीं।

नवद्वीप : सपरिकर महाप्रभु का भोजन विश्रामादि :

नवद्वीप में सपरिकर महाप्रभु श्री नारायण मंदिर के जगमोहन (प्रांगण) में श्री श्री राधा-कृष्ण के भोजन पद गान में भावाविष्ट हैं। इसी समय शची माता आकर बोलीं—"पुत्र निमाई! समय अधिक हो गया है, कीर्तन समाप्त करके सभी आकर प्रसाद सेवन करो।" यह श्रवणकर श्री मन्महाप्रभु के गर-गर शब्द से हुँकार कर बाह्य दशा को प्राप्त होने पर स्वरूप-रामानन्दादि ने कीर्तन समाप्त किया। श्री गदाधर पंडित गोस्वामी ने श्री नारायण को भोग के बाद आचमनादि कराकर ताम्बूल अर्पण कर आरती करके ठाकुर को शयन कराया। श्री मन्महाप्रभु के दाहिने श्री नित्यानंद प्रभु, बायें श्री अद्वैत प्रभु, सामने द्वादश गोपाल, दोनों तरफ स्वरूपादि महान्त गण, गदाधर, जगदानंद, मुरारी आदि बैठ गये। हरिदास ठाकुर प्रांगण में बैठ गये। शची माता तथा मालिनी देवी परोसने लगीं। श्री जाह्नवा, विष्णु प्रियादि भंडार से अन्न व्यंजनादि लाकर उनके हाथ में प्रदान करने लगीं। माता क्रम पूर्वक यत्न सहित परोसने लगीं। श्री रूपादि गोस्वामी वर्ग तथा श्री गुरु वर्गादि ब्रजभाव में मग्न होकर प्रांगण से प्रभुगणों की भोजन लीला दर्शन करने लगे। एवं दासगण व्यजनादि सेवारस में मग्न हुए। ब्रजभाव में आविष्ट होकर भोजन करते-करते प्रभु को भावावेश में बीच-बीच में भोजन से विरत देखकर शचीमाता व्याकुल अन्तः करण से स्नेह पूर्वक कहने लगीं—"पुत्र निमाई! भोजन में मंद रुचि क्यों? यह सब तुम्हारे अति प्रिय शाक शुकता एवं विविध अन्न व्यंजन हैं, इन सब उपादेय मिष्टान्न पक्वान्नादि का तुम्हारे भोजन करने से ही रंधन सार्थक होगा एवं दर्शन से आनंद लाभ होगा, अतएव हे वत्स! उत्तम रूप से भोजन करो।" स्नेहमयी जननी के स्नेह रसपूर्ण वाक्य सुनकर प्रभु भाव संवरण करके आनंद सहित भोजन करने लगे। माता भी सुखी होकर उत्तम-उत्तम भोज्य द्रव्यादि पुनः पुनः परोसने लगीं। भोजन के अंत में दासगणों ने आचमन के लिए सुगन्धित जल दिया तथा सुकोमल गमछे से हस्त मुखादि पोंछे। आचमन के बाद में अपने-अपने विश्राम कक्ष में जाकर रत्न पलंग पर बैठने पर दासों ने तांबूलादि प्रदान किया। महाप्रभु के शयन करने पर साधक दास श्री गुरुदेव के इंगित पर उनके पाद संवाहन करने लगा।

इधर शचीमाता के आह्वान पर श्री गोस्वामी वर्ग तथा गुरु वर्ग सभी ने भोजन किया एवं आचमन के अंत में अपने-अपने विश्राम कक्ष में जाकर विश्राम करने लगे। महाप्रभु के निद्रित होने पर साधक दास ने श्री मन्नित्यानंद प्रभु से लेकर गुरुवर्ग तक सभी का क्रमपूर्वक पाद संवाहन किया। माँ द्वारा साधक दास से भोजन के लिए बोलने पर साधक दास ने नित्य कृत्यादि के अंत में प्रसाद पाने के लिए कहा, यह सुनकर माता ने संतुष्ट होकर उसके लिए प्रसाद रख दिया। साधक सबके भोजन का अवशेष लेकर अपने कक्ष में रखकर

Scanned by CamScanner

स्थान पात्रादि स्वच्छ करके आकर श्री गुरुदेव के चरण मूल में अवस्थान करने लगा।

महाप्रभुने क्षण काल तक विश्राम के अंत में षड्ऋतु वन के पुष्प सौरभ से तथा भ्रमर कोकिलादि की ध्वनि सुनकर गर-गर शब्द के साथ हुँकार की। इसे श्रवण कर दोनों भाई तथा भक्त वृन्द जागृत होकर शय्या त्याग कर महाप्रभु के निकट आये। महाप्रभु के शय्या से उठकर दोनों प्रभु के साथ बरामदे में आकर बैठने पर साधक दास ने स्वर्ण जल पात्र में सुगन्धित जल तथा कुल्लादानी लाकर तीन प्रभु का मुख प्रक्षालन कराया। दास गण तांबूल अर्पण करके व्यजनादि सेवा करने लगे। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में श्री श्री राधा कृष्ण के नंदीश्वर के पश्चिम में षड्ऋतु वन में गुप्त कुण्ड में मिलनादि पदगान करने लगे। उसके श्रवण से सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : श्री श्री राधा कृष्ण का गुप्त कुंड में गमन :

ब्रज के नंदीश्वर में श्री राधा सखीगण के साथ शयन कर रही हैं। क्षण काल विश्राम के अंत में सबके जागृता होकर शय्या त्याग करने पर श्री गुरु मंजरी के इशारे पर साधक दासी ने स्वर्ण पात्र में सुगन्धित जल तथा कुल्लादानी लाकर श्री राधा का मुख प्रक्षालन आदि कराया। सखीगण भी मुख प्रक्षालन आदि करके श्रीमती को चारों ओर से घेरकर बैठ गईं। इसी समय धनिष्ठा ने आकर निशांत काल में परिवर्तित श्री राधा के नील वसन को विशाखा के हाथ में दिया तथा विशाखा ने श्री कृष्ण का पीत वसन धनिष्ठा के द्वारा सुबल के निकट भेज दिया। तत्काल ही सखीगणों के बीच में श्री श्री राधा श्याम के वस्त्र परिवर्तन के विषय को लेकर हास्य परिहास रस का उद्भव होने से कुछ समय के लिए सभी आनंद रस में निमग्न हुई। इसी समय तुंगविद्या विशाखा के कान में कुछ कहने लगीं एवं विशाखा ने भी मृदु हास्य के साथ अपूर्व ग्रीवा भंगी द्वारा उसका जैसे अनुमोदन किया। श्री राधा उन दोनों के मृदुहास्य को देखकर उनके मन के भाव को समझकर बोलीं—"अरी सखी! तुम सब जब होठ दबाकर मृदुहास्य के साथ एक दूसरे के कान में बातें कर रही हो तब तुम सब की योजना अच्छी नहीं लग रही है। एक तो मैं मुग्धा हूँ, उस पर भी कुल वधू हूँ, अतः अब यहाँ ठहरना उचित नहीं है।" यह कहकर श्री मती द्वारा उठकर अपने भवन गमन के लिए उद्यत होने पर विशाखा उनके गमन में बाधा देते हुए हास्य के साथ कहने लगीं—"हे प्रिय सखि! तुम शंका के छल से क्या ईष्ट स्पृहा सूचित कर रही हो? नहीं तो हमारी काना-फूसी से अचानक तुम्हें आशंका क्यों होगी?" इसी समय सुचतुरा धनिष्ठा ने श्री राधा से कहा—"सखी राधे! ये सभी बड़ी कुटिला हैं—इनका संग त्याग कर खिड़की के द्वार से उद्यान में जाकर तुम्हारी सूर्य पूजा के लिए बंधुक कुसुम चयन कर आयें।" यह कहकर धनिष्ठा श्रीमती को लेकर नंदीश्वर पर्वत की तलहटी के दिव्य उपवन में चली गई।

नंदीश्वर पुर के पश्चिम में पर्वत की उसी तलहटी में षड्ऋतु निषेवित उपवन स्थित है। वहाँ आम्र, पनस, नारियल, सुपारी, खजूर, कदम्ब, पारिजात, आदि वृक्ष माधवी, मालती, यूथी, नवमल्लिका आदि लतावली से परिवृत होकर सब फलों पुष्पों से परिशोभित हैं। कोकिलादि पक्षीगणों के कल कूजन से एवं भृंग समूह की

Scanned by CamScanner

सरस गुँजार से उपवन कोलाहलपूर्ण है। पुर के पश्चिम खिड़की के द्वार से होकर जो पथ उपवन में प्रविष्ट हो रहा है, वह नंदीश्वर की विचित्र मणिमय शिलाओं से सीढ़ियों के समान शोभा पा रहा है। पथ के दोनों ओर वृक्ष श्रेणी से विविध लतावली चढ़कर उनकी घनसन्निविष्ट पत्रावली समूह पथ के ऊपर छत्राकार में घनी छाया का विस्तार कर रही है। इन सब वृक्षों के तल देश में विविध रत्न निर्मित वेदिका समूह शोभा पा रहे हैं। इस उपवन के मध्य में गुप्त कुंड नामक नाना मणि खचित सीढ़ीयुक्त एक मनोहर कुंड है। वह अति सुनिर्मल जलपूर्ण एवं श्वेत, नील, पीत तथा रक्त वर्ण कमल से परिशोभित है एवं हंस, सारसादि पक्षी समूहों के कल कूजन से कोलाहलपूर्ण हैं। रत्न से बंधा हुआ घाट-उसके ऊपर मंडप शोभा पा रहा है, हिन्दोला, मणि कुट्टिमादि (वेदिकादि) कुंड के चारों ओर मनोहर कुँज तथा विचित्र मणि वेदी समूह विराजित हैं। कुंड की पश्चिम दिशा में "अशोकानंदद" नामक निकुँज मंदिर में वीरा नामक वनदेवीने श्री राधा कृष्ण के विलास के लिए मनोहर कुसुम शय्यादि की रचना करके रखी है। इसी निकुँज मंदिर के चारों कोनों में चार कल्प वृक्ष ऊपर से परस्पर मिलित होकर तथा विविध कुसुमों से लतावली द्वारा परिवृत होकर विचित्र पुष्प चंदवा के समान शोभा का विस्तार कर रहे हैं। कुसुम सौरभ से आकृष्ट भृंग कुल के द्वारा प्रत्येक पुष्प गुच्छ पर मधुर विलास चल रहा है। कोकिलों का मनोहर कुहुनाद मदन रस के विचित्र उद्दीपन को जगा रहा है!! कुँज के चारों ओर चार द्वारों में पुष्प निर्मित दरवाजे हैं। कुँज के मध्य में मणिमय पलंग पर निर्वृन्त कुसुम (पंखुड़ी) की शय्या बिछी हुई है। पलंग के चारों ओर चामर, व्यजन, तांबूल पात्र, पीकदानी, सुगन्धित जलपूर्ण स्वर्ण जलपात्र आदि स्वर्ण चौकी पर सुसज्जित हैं।

नन्दीश्वर की तलहटी में गुप्त कुण्ड की शोभा।

श्री राधा धनिष्ठा के साथ खिड़की के द्वार से होकर इस उपवन में प्रविष्ट हुई। सखी मंजरी गण ने भी उनका अनुगमन किया। श्रीमती उपवन की मनोहर शोभा का दर्शन करते-करते गुप्त कुंड के तीर पर उपस्थित हुई। वहाँ वे श्री कृष्ण मिलन की उत्कंठा से उपवन तथा कुंड की मदन रसोद्दीपक मनोहर शोभा का दर्शन कर अतिशय अधीरा हो गयीं। इसी अवसर पर श्रीकृष्ण भी पूर्व संकेतानुसार श्री राधा से मिलन की उत्कंठा में खिड़की के द्वार से होकर वन शोभा दर्शन करते-करते शयनालय से होकर गुप्त रूप से आगमन कर रहे हैं। उस समय श्री कृष्ण के दर्शन तथा उनके श्री अंग सौरभ से मयूर कुल पंखो को उठाकर "के का" ध्वनि करते-करते नृत्य करने लगे तथा पक्षी एवं भृंग समूह भी मधुर स्वर में गान करने लगे। श्री राधा श्री कृष्ण के दर्शन से एवं उनके मधुर नूपुर की ध्वनि श्रवण करके मदन-मद का उदय होने से भ्रांति वशत: कहने लगीं- "हे ललिते! हे विशाखे! सामने क्या यह नवीन मेघ असमय में उदित हुआ है! जिसमें स्थिर-विद्युत-पुँज, इन्द्रधनुष एवं बकमाला (बगुलों की पंक्ति) युग पथ दिखाई दे रहा है एवं हंस सारसादि पक्षीगणों की कलध्वनि सुनाई दे रही है!!" यह सुनकर श्री ललिता ने कहा-"हे सुमुखी! तुम जो कह रही हो वह नहीं है। वही नवमेघ रूपी तुम्हारे प्राणनाथ आ रहे हैं। उनके चूड़ा पर स्थित मयूर चंद्रिका श्रेणी इन्द्र धनुष, पीताम्बर

Scanned by CamScanner

स्थिर विद्युत तथा मुक्ता माला को ही बक पंक्ति समझकर तुम्हें भ्रांति हो रही है। उनके कटि की क्षुद्र घंटिका एवं श्री चरणों की नूपुर ध्वनि को ही हंस, सारसादि की ध्वनि समझकर तुम्हें भ्रम हो रहा है।'' ललिता की बात सुनकर श्रीमती नि:शब्द होकर वीरादेवी द्वारा सज्जित अशोकानन्दद कुँज के बीच में छिप गई।

श्रीकृष्ण आकर सखीगण के बीच में श्री राधा को न देखकर सखीगणों से श्री राधा की बात पूछने लगे। सखियों ने कहा–''श्याम! वे यहाँ नहीं आई।'' श्री कृष्ण–''तब उनका अंग सौरभ कहाँ से आ रहा है?'' सखीगण–''हम सभी सब समय उनके साथ रहती हैं इसीलिए हम सब के अंगों में भी उनकी अंग गंध लग रही है।'' श्री कृष्ण–"श्री राधा के बिना तुम सब का यहाँ आना संभव नहीं हो सकता। चंद्रोदय के बिना क्या चंद्रिका का प्रकाश संभव है?'' सखीगण –''अरे! यह चंद्रोदय (चंद्रावली का उदय) नहीं है, यह वृषभानुजा श्री का अपूर्व उदय है।'' सखीगण इस प्रकार से नाना परिहास करने लगीं! श्री कृष्ण के श्रीमती को न देखकर अतिशय विषादित होने पर वीरादेवी ने नयनों के इशारे से उस कुँज को दिखला दिया। श्री कृष्ण उस कुँज में प्रवेश करके सब कुछ राधामय दर्शन करके श्री राधा के भ्रम में वृक्षलतादि का आलिंगन करने लगे। यह देखकर प्रेममयी के द्वारा रसराज के सम्मुख आकर उपस्थित होने पर उनकी प्रेम भ्रांति दूर हुई। रसराज तथा महाभाव के मिलन से प्रेम रस सिन्धु उछाल पाने लगा। दोनों केलि रस पारावार में निमग्न हुए!! उसी माधुर्य समुद्र की प्रत्येक तरंग में भाग्यवती सखी मंजरीगणों के नयन रूपी मीन सुख पूर्वक तैरने लगे।

नवद्वीप: योगपीठ-मिलन तथा सेवा :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु शयन गृह के बरामदे में सपरिकर भावाविष्ट हैं। पुष्प सौरभ तथा भ्रमर की गुँजार से उनके गर-गर शब्द के साथ हुँकार करने पर भक्त वृन्द ने बाह्य दशा लाभ करने पर गान समाप्त किया। महाप्रभु अर्ध बाह्य दशा में योगपीठ कर्णिका में जाकर खड़े हुए। भक्त वृन्द के भी योग पीठ में यथा स्थान

नवद्वीप योगपीठ वर्णन।

खड़े होने पर साधक दास श्री गुरुदेव के बायें खड़े होकर सपरिकर महाप्रभु की शोभा दर्शन करने लगा। श्री मन्महाप्रभु के पुर के मध्य भाग में योगपीठ मणि मंदिर विराजमान है। उसका शिखर देश विचित्र रत्न कलश द्वारा सुशोभित है। इसके अन्दर का भाग इन्द्रनील मणिमय तथा छत मुक्ता द्वारा जड़ित विचित्र स्वर्णमय है। चारों ओर चार द्वार हैं, उसमें अष्टमणि रचित अष्ट कपाट संलग्न हैं। अन्दर के भाग में पद्मराग तथा चंद्रकान्त मणि झालर युक्त विचित्र चंदवा शोभा पा रहा है। इस मंदिर के मध्य में मणि जड़ित स्वर्ण रचित गौर मंत्र षडाक्षर यंत्रान्वित श्री योग पीठाम्बुज कूर्माकार रूप में परिशोभित हो रहा है। यह योगपीठाम्बुज लाखों सूर्यों की अपेक्षा ज्योतिर्मय होने पर भी लाखों चंद्रमा की अपेक्षा सुशीतल है। योग पीठाम्बुज की कर्णिका में जो रत्न सिंहासन है, उसके दोनों ओर निम्न भाग में पद्मरागमणि द्वारा जड़ित स्तंभ इन्द्रनील मणिमय तथा पृष्ठ देश वैदूर्य मणिमय है। इस सिंहासन पर कोमल तकिया तथा चंद्र तुल्य पृष्ठोपाधान, पार्श्वोपाधान शोभा पा रहे हैं। उसी दिव्यासन पर श्री युगल किशोर के भाव में श्री गौर चंद्र, दक्षिण में श्री अनंग मंजरी के भाव में श्री नित्यानंद प्रभु तथा सम्मुख में श्री विशाखा सखी

Scanned by CamScanner

के भाव में श्री अद्वैत प्रभु, बायें श्री राधा के भाव में तांबूलार्पण भंगी में गदाधर पंडित खड़े हुए। इनके वामाग्रे श्री मंजरी के भाव में श्री वास पंडित खड़े हुए। तत्पश्चात् योगपीठ के अष्ट दल में ललितादि अष्ट सखी के भाव में स्वरूपादि अष्ट महान्त खड़े हुए। उत्तर में श्री स्वरूप दामोदर, ईशान में श्री रामराय, पूर्व में श्री गोविन्दानंद ठाकुर, अग्नि कोण में श्री वसुरामानन्द, दक्षिण में श्री शिवानन्द सेन, नैऋत्य में श्री गोविन्द घोष, पश्चिम में वक्रेश्वर पंडित तथा वायु कोण में वासुदेव घोष खड़े हुए। उपदल के उत्तर में राम चन्द्र कविराज एवं परदे के पीछे श्री जाह्नवा ठाकुरानी, ईशान में श्रीगोविन्द कविराज, पूर्व में कर्णपूर कविराज, अग्नि कोण में नृसिंह कविराज, दक्षिण में भगवान कविराज, नैऋत्य में वल्लवीकान्त कविराज, पश्चिम में गोपीरमण कविराज तथा वायु कोण में गोकुल कविराज सखी भाव में खड़े हुए। केशर में अष्ट गोस्वामी श्री रूप मंजरी आदि अष्ट मंजरी के भाव में खड़े हुए–उत्तर में रूप गोस्वामी, ईशान में लोकनाथ गोस्वामी, पूर्व में रघुनाथ भट्ट गोस्वामी, अग्नि कोण में रघुनाथदास गोस्वामी, दक्षिण में गोपाल भट्ट गोस्वामी, नैऋत्य में श्री जीव गोस्वामी, पश्चिम में सनातन गोस्वामी तथा वायु कोण में कृष्ण दास कविराज गोस्वामी हैं। चार द्वारों पर चार द्वारी खड़े हुए। उत्तर द्वार पर काशीश्वर पंडित, पूर्व द्वार पर मुकुंद ठाकुर, दक्षिण द्वार पर शिवानंद चक्रवर्ती तथा पश्चिम द्वार पर श्री राम पंडित हैं। श्री जाह्नवा के उपदल में उनको घेरकर क्रमपूर्वक गुरुवर्ग खड़े हुए। श्री गुरुदेव के पीछे साधक दास खड़ा हुआ। तब साधक दास द्वारा श्री गुरुदेव के आदेश पर गंध, पुष्प, तुलसी, धूप, दीप, पुष्प माला तथा चन्दनादि दो स्वर्ण पात्रों में सजाकर एक पात्र श्री गुरुदेव को प्रदान करने पर श्री गुरुदेव ने गुरुवर्ग की आज्ञा क्रम से योग पीठ कर्णिका में प्रवेश करके श्री मन्महाप्रभु के दक्षिण चरण में दोनों ओर दो पत्ते तथा मध्य में कोमल मंजरी युक्त चार तुलसी पत्र चारों अंगुली दलों के मध्य में स्थान बनाकर दिये। इसी प्रकार बायें चरण में भी कोमल मंजरी युक्त चार तुलसी दीं। प्रत्येक बार तुलसी देकर गीले वस्त्र से अपने हाथ पोंछ रहे हैं। श्री मन्महाप्रभु के दोनों चरणों में रत्ननूपुर के मध्य स्थल में दो चंदन चर्चित वृहद गुलाब पुष्प दिये (साधक दास ने गुलाब पुष्प के कठोर वृन्त को प्रभु के कोमल चरणों में लगने की आशंका से दो गुलाब पुष्प के वृन्त को एकत्रित करके सूत्र से बांध कर रखा हुआ है।) गुलाब पुष्प के चारों ओर रत्न नूपुर के पास-पास में श्वेत पुष्प देकर दोनों चरणों को सजाया। फिर प्रभु के ललाट में पुष्प द्वारा सुगन्धी चंदन सुन्दर रूप में लेपन किया। तत्पश्चात् पांच प्रकार के पुष्पों से गूँथी हुई बैजयन्ती माला गले में प्रदान की। इसी प्रकार से श्री मन्नित्यानंद प्रभु तथा श्री अद्वैत प्रभु की अर्चना की। तब श्री गौरांग प्रसादी तुलसी तथा पुष्प यथाक्रम से श्री गदाधर पंडित तथा श्रीवास पंडित को हस्त तथा मस्तक में एवं गौर प्रसादी चंदन उनके ललाट पर एवं प्रसादी माला उनके गले में प्रदान की। तब श्री मन्नित्यानंद शक्ति श्री जाह्नवा देवी को भी इसी प्रकार से गौर प्रसादी तुलसी, पुष्प, चंदन तथा माल्यादि द्वारा सेवा करके यथा क्रम से स्वरूपादि अष्ट महान्त, रामचन्द्रादि कविराज, चारद्वारी, श्री रूपादि अष्ट गोस्वामी तथा श्री गुरुवर्ग को प्रदान कर प्रसादी

योगपीठ में सपार्षद श्रीगौरसुन्दर।

योगपीठ सेवा का प्रकार।

Scanned by CamScanner

थाली को साधक दास के हाथ में देने पर साधक दास ने श्री गुरु देव के हाथ में धूप-दीपादि आरती की थाली प्रदान की। श्री गुरुदेव ने हाथ धोकर श्रीमन्महाप्रभु, श्री मन्नित्यानंद प्रभु तथा श्री अद्वैत की आरती करके प्रसादी धूपदीप से पूर्व वर्णित क्रमानुसार सभी परिकर गणों की आरती की। तत्पश्चात् साधक दास ने श्री गुरुदेव की अर्चना की प्रसादी थाली में जो अवशिष्ट तुलसी, पुष्प तथा माल्यादि शेष रह गये थे, उससे गुरुदेव की अर्चना करके आरती की। तब हाथ धोकर अन्य अमानिया थाली लेकर श्री गुरुदेव एवं गुरुवर्ग से आदेश प्राप्त कर योगपीठ कर्णिका में प्रवेश करके श्री गुरुदेव की अर्चना के अनुसार यथाक्रम से सपरिकर श्री मन्महाप्रभु तथा समस्त गुरुवर्ग की अर्चना एवं आरती की। अर्चना तथा आरती के अन्त में साधक दास श्री गुरुदेव के बायें आकर खड़ा हुआ। तत्पश्चात् सपरिकर श्री मन्महाप्रभु नंदीश्वर के गुप्त कुण्ड के भाव में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम: योगपीठ मिलन तथा सेवा :

ब्रज में नंदीश्वर के गुप्त कुण्ड तीर पर 'अशोकानंदद' कुँज में श्री श्री राधा श्याम विलास रस में मग्न हैं। उसी उच्छलित भाव सिंधु तथा रस सिंधु की अनंत तरंगों में सुखपूर्वक कुँज छिद्र में अर्पित नेत्रा सखी मंजरी गणों के नयन रूपी मीन तैर रहे हैं। विलास के पश्चात् श्री युगल कुँज के बाहर आकर योगपीठ की कर्णिका में खड़े हुए। योगपीठ-मंदिर विचित्र मणिमय सर्वसुखद तथा छः ऋतुओं द्वारा सदा निसेवित है। नाना रत्न जड़ित मुक्ता का झालर युक्त चंद्रातप (चंदवा) सुशोभित हो रहा है। कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान होने पर भी कोटि चन्द्रमा की अपेक्षा सुशीतल है। इसके मध्य में अष्टपद्म दलाकार रत्न सिंहासन शोभा पा रहा है। इसमें मणिमय कर्णिका के ऊपर मृदुल गद्दा एवं चादर बिछे हुए हैं तथा उपादान सुसज्जित हैं। इस कर्णिका पर अनंत सौन्दर्य माधुर्य पारावार श्री श्री राधा माधव के भावावेश में विराजमान होने पर अष्ट दल में अष्ट सखी उन्हें घेरकर विराजिता हुई। उत्तर के दल में ललिता, ईशान में विशाखा, पूर्व में चित्रा, अग्नि कोण में इन्दुलेखा, दक्षिण में चम्पकलता, नैऋत्य में रंगदेवी, पश्चिम में तुंगविद्या एवं वायु कोण में सुदेवी विराजिता हुई। उपदल के उत्तर में अनंग मंजरी, ईशान में कलावती, पूर्व में शुभांगदा, अग्नि कोण में हिरण्यांगी, दक्षिण में रत्न लेखा, नैऋत्य में शिखावती, पश्चिम में कंदर्प मंजरी एवं वायु कोण में फुल्लकलिका विराजित हुई। केशर के उत्तर में श्री रूप मंजरी, ईशान में मंजुलाली मंजरी, पूर्व में रस मंजरी, अग्नि कोण में रति मंजरी, दक्षिण में गुण मंजरी, नैऋत्य में विलास मंजरी, पश्चिम में लवंग मंजरी तथा वायुकोण में कस्तूरी मंजरी विराजित हुई। योगपीठ के चारों ओर चार द्वारी-उत्तर में मूरलादेवी, पूर्व में वृंदा दैवी, दक्षिण में वृन्दारिका देवी तथा पश्चिम में मेनकादेवी विराजित हुई। उपदल में श्री अनंग मंजरी को घेरकर श्री गुरु मंजरी वर्ग तथा श्री गुरुदेवी के पीछे साधक मंजरी खड़ी हुई। तत्पश्चात् साधक मंजरी श्री गुरुदेवी के इंगित पर तुलसी, चंदन, केसर, पुष्प एवं पुष्प माला, धूप-दीपादि (नवद्वीप योगपीठ में वर्णन के समान) दो स्वर्ण थालं में मणि कटोरों को सजाकर एक थाली श्री गुरूदेवी के हाथ में

ब्रज में गुप्त कुण्ड का योगपीठ।

Scanned by CamScanner

प्रदान करने पर श्री गुरु-देवी ने यथा क्रम से सखी मंजरी गण सहित युगल किशोर को तुलसी, चंदन, पुष्प एवं पुष्प माल्य अर्पण करके धूप-दीपादि द्वारा आरती की। तत्पश्चात् श्री गुरु मंजरी गणों की क्रम पूर्वक सेवा करने पर प्रसादी पात्र को साधक मंजरी के हाथ में देने पर साधक मंजरी ने उसी प्रसादी द्रव्य से गुरु मंजरी की आरती की।

सर्वप्रथम प्रसादी तुलसी एवं पुष्प श्री गुरुदेवी के हाथ एवं मस्तक में देकर ललाट पर चंदन एवं गले में माला प्रदान कर आरती की। तत्पश्चात् हाथ धोकर अन्य स्वर्ण थाली लेकर भावावेश में श्री गुरु मंजरी एवं श्री गुरु मंजरी वर्ग का आदेश लेकर योगपीठ कर्णिका में प्रवेश किया। सर्वप्रथम श्री कृष्ण के दोनों चरणों में अष्ट तुलसी मंजरी प्रदान कर (प्रत्येक बार अर्पण कर हाथ पोंछा) पुष्प अर्पण किया। ललाट में चंन्दन देकर गले में माला पहनाई। उसी प्रकार श्री राधारानी के श्री चरणों की अर्चना की एवं श्री कृष्ण प्रसादी तुलसी, पुष्पादि श्री राधा के मस्तक एवं हाथ में प्रदान किया। तत्पश्चात् श्री कृष्ण प्रसादी द्रव्य से प्रथमत: उपदल में श्री अनंग मंजरी की अर्चना करके यथाक्रम से दल में ललितादि अष्ट सखी, उपदल में कलावती आदि सखीगण, तत्पश्चात् वृन्दादि चार द्वारी की अर्चना करके मस्तक एवं हाथ में तुलसी, पुष्प, ललाट पर चन्दन एवं गले में माला प्रदान की। तत्पश्चात् श्री युगल प्रसादी द्रव्य से श्री रूपादि अष्ट मंजरी की यथाक्रम से उसी प्रकार सेवा करने के बाद श्रीगुरु मंजरी वर्ग की उसी प्रकार युगल प्रसादी द्रव्य से सेवा की। तत्पश्चात् हाथ धोकर धूप-दीपादि द्वारा श्री युगल की आरती करके उक्त क्रमानुसार सभी की प्रसादी धूप-दीपादि द्वारा आरती करके श्री गुरुदेवी के बायें खड़ी हो गई।

साधक दास इस प्रकार से योग पीठ में मानस सेवा करके अपने ईष्ट मन्त्र तथा गायत्री का स्मरण करे एवं बाह्य दशा में श्री गिरधारी, श्री विग्रह तथा चित्रपटादि की सेवा करे। तीनों योगपीठ—नवद्वीप में प्रात: महाप्रभु के पुर स्थित योगपीठ मिलन, मध्याह्न में श्री वास पुष्पोद्यान के माधवी मंडप में तथा रात्रि में श्री वास आंगन के योगपीठ में सपरिकर महाप्रभु का मिलन होता है। श्री वृन्दावन में प्रात: गुप्त कुण्ड स्थित योगपीठ में, मध्याह्न में श्री राधा कुण्ड में प्रथम मिलन श्रीमदन सुखदा कुँज में तथा रात्रि में श्री वृन्दावन स्थित गोविन्द स्थली मणि मंदिर स्थित महायोगपीठ में मिलन होता है। इस प्रकार से उत्तम, मध्यम तथा कनिष्ठ भेद से योग पीठ तीन प्रकार का है। साधक अपनी-अपनी रुचि तथा साध्यानुसार योगपीठ सेवा स्मरण करते हैं।* योगपीठ मानस सेवा तथा मंत्र स्मरणादि के बिना साधक के लिए जल ग्रहण करना भी निषेध है।

---

* रागानुगा साधन प्रधानत: दो प्रकार के हैं- स्वारसिकी अष्ट कालीन लीला स्मरण (स्रोतवत्) तथा योगपीठ मंत्रोपासनामयी मानस सेवा उसके साथ मंत्र स्मरण (ह्रद वत्) है। जिस प्रकार नदी के प्रवाह के मध्य में ह्रद रहता है उसी प्रकार स्वारसिकी लीला के अन्तर्भुक्त मंत्रमयी योगपीठ है- किन्तु स्वतन्त्र साधना नहीं है। स्वारसिकी लीला का साधन स्वतंत्र तथा नाना स्थान में व्याप्त है। इस स्वारसिकी लीला के अन्तर्भुक्त योगपीठ में ही पूजा, अर्चना तथा मंत्र जपादि होता है।योगपीठ के बिना पूजा, अर्चना तथा मंत्र स्मरणादि नहीं होता। ब्रज की रागानुगा भजन पद्धति में यथा रीति उक्त, उभय लीला की उपासना ही विहित है।

Scanned by CamScanner

सखीगण सह श्री राधा कृष्ण योगपीठ से पुनः खिड़की के द्वार से होकर पुर में प्रवेश करके अपने-अपने निवास विश्राम कक्ष में सानंद चित्त से शयन कर गये। श्री गुरु मंजरी के इशारे पर साधक मंजरी स्वामिनी के श्री चरण संवाहन करने लगी। किंकरी के मधुर पाद मद्रन से श्रीराधारानी सुख पूर्वक निद्रिता हुई।

इति ब्रज-प्रातर्लीला समाप्त।

नवद्वीपः गौर माधुरीः

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर योगपीठ से उतरकर सानंदित चित्त से शयन कक्ष के बरामदे में ब्रजलीला की स्मृति में मग्न होकर बैठ गये। भक्त वृन्द प्रभु को घर कर बैठे। श्रीगुरुदेव की आज्ञा से साधक दास प्रसाद पाकर आचमन करके स्थान पात्रादि को संस्कार करके पुनः आकर गुरुदेव के इशारे पर व्यजनादि सेवा करने लगा। सभी महाप्रभु का माधुर्य दर्शन करके परमानन्द में मग्न हुए।

इति श्री नवद्वीप-प्रातर्लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

श्रीवास का षड़ऋतु सेवित पुष्प उद्यान

(वर्णन पृष्ठ संख्या ७ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

श्री श्री नवद्वीप धाम

(वर्णन पृष्ठ संख्या १९ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

यावट पुर पच्चीस चक

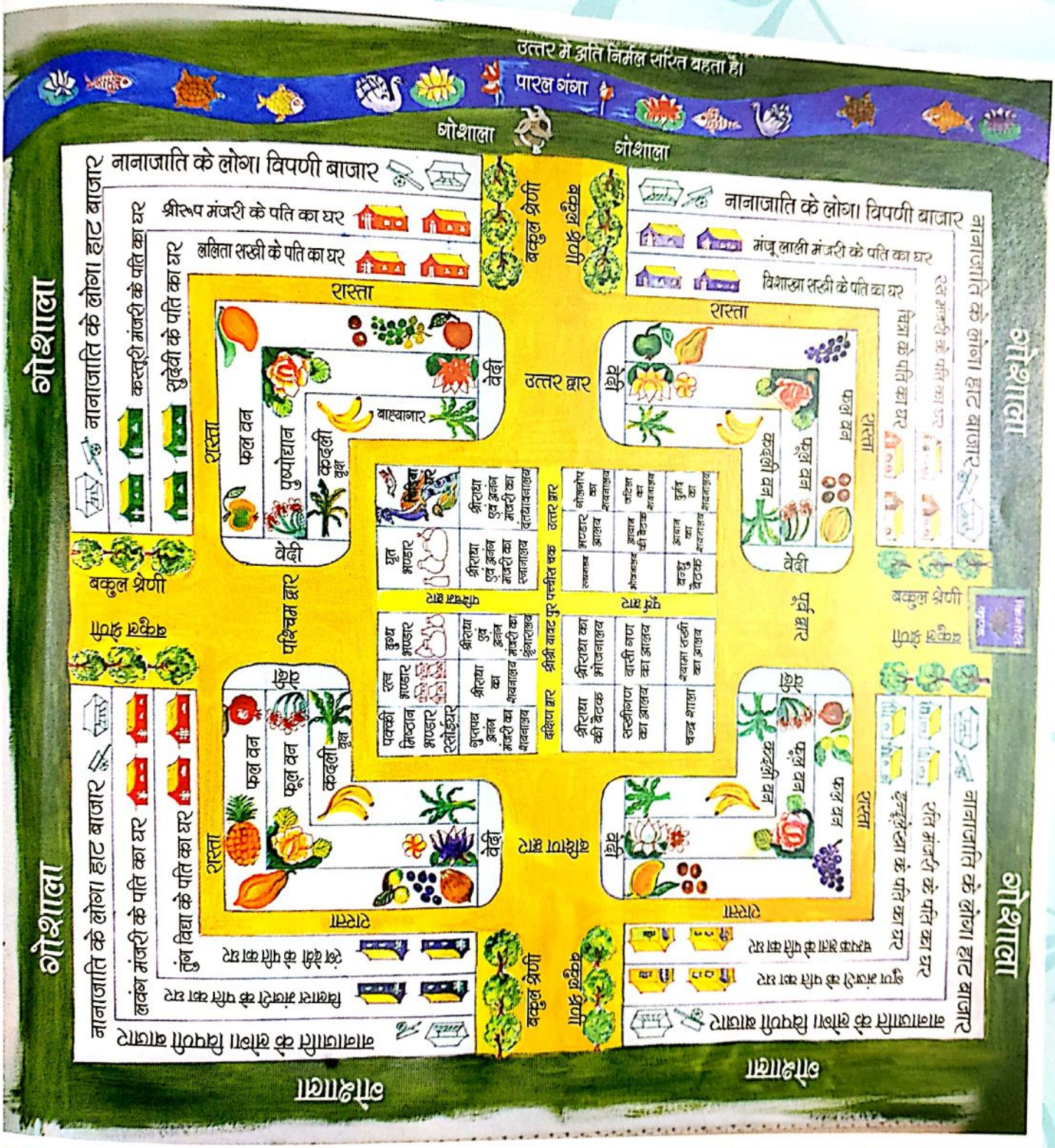

(वर्णन पृष्ठ संख्या २२ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

वृषभानु पुर तीस चक

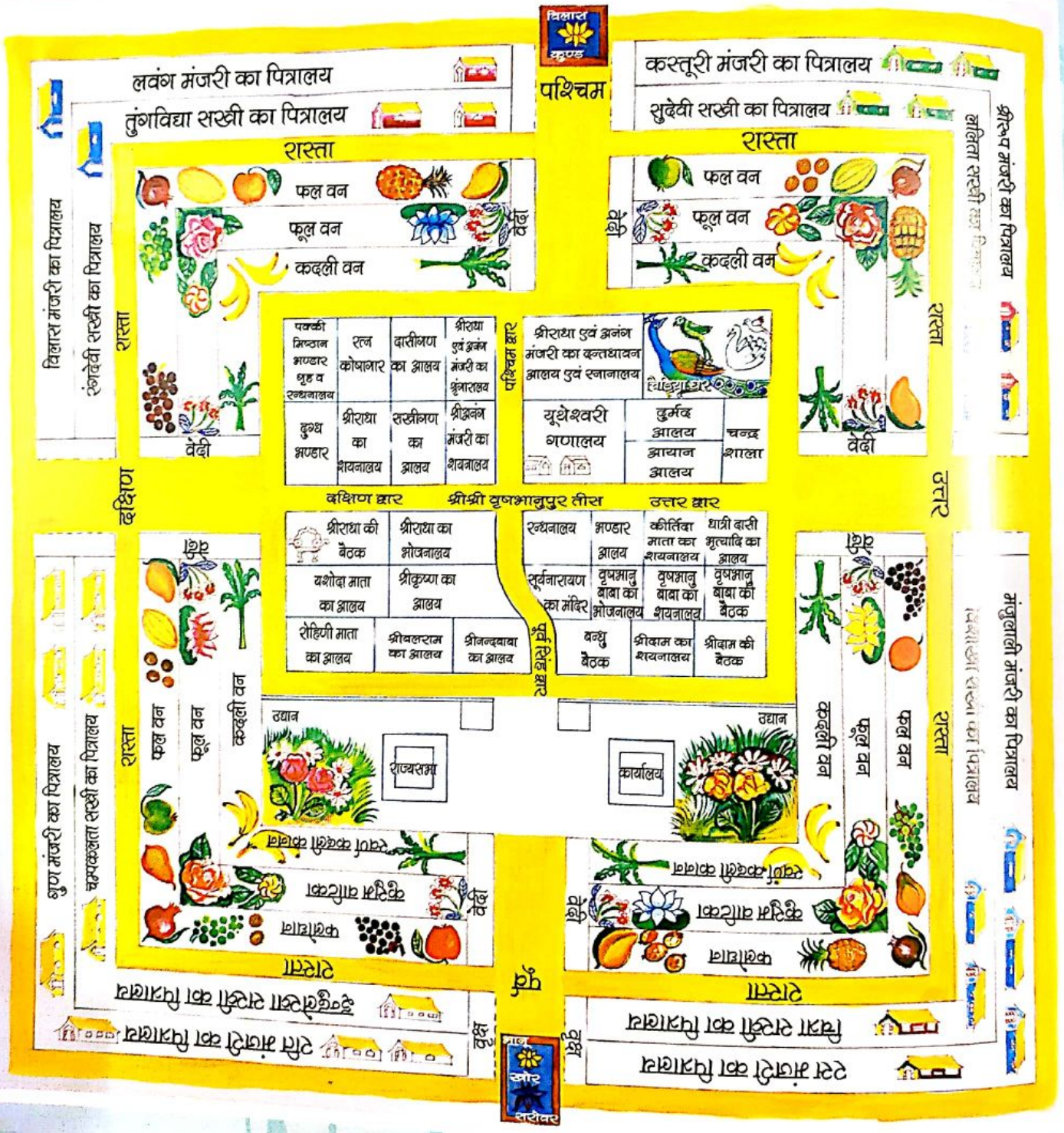

(वर्णन पृष्ठ संख्या २३ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

नन्दीश्वर पुर ४९ चक

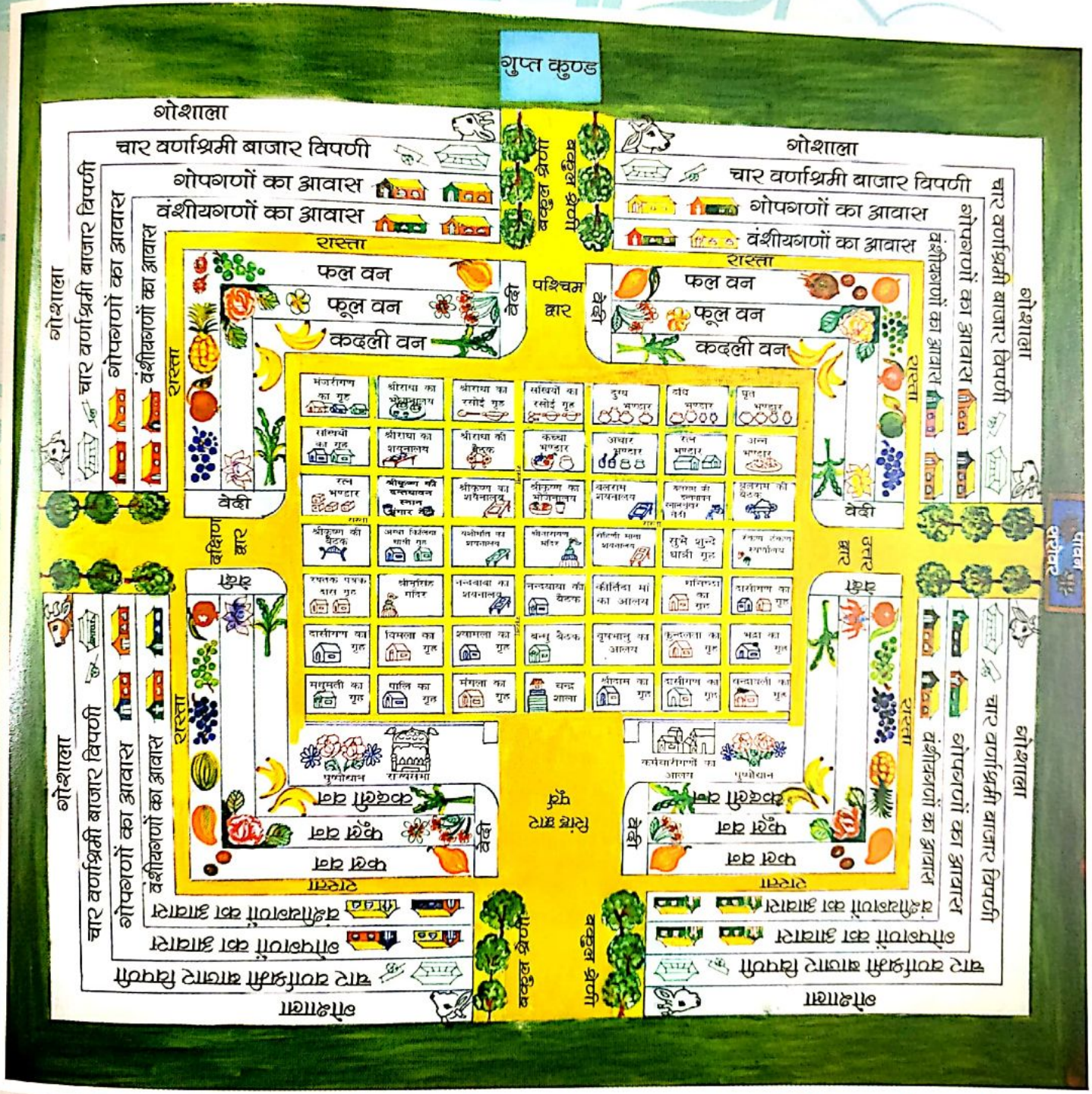

(वर्णन पृष्ठ संख्या ३९ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

श्री श्री नवद्वीप योगपीठ

(वर्णन पृष्ठ संख्या ५० पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

श्री श्री वृन्दावन योगपीठ

(वर्णन पृष्ठ संख्या ५२ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

श्री वृन्दावन श्रीगोविन्द स्थली

(वर्णन पृष्ठ संख्या १७६ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

श्री श्रीराधा-श्याम कुण्ड दर्शन

(वर्णन पृष्ठ संख्या १८ पर द्रष्टव्य)

Scanned by CamScanner

पूर्वाह्न लीला नवद्वीप (६ दंड)

दिवा ८ बजकर २४ मिनट से लेकर १० बजकर ४८ मिनट तक।

श्री श्री नवद्वीपः पूर्वाह्न लीला सूत्रः

हरिवनगतिलीलां व्याकुलीभूतगोष्ठां
स्मृतिविषयगतां यः कारयामास साक्षात्।
तदनुकरणकारी भक्तवृन्दस्य मध्ये
तमहमिह भजामि गौरचन्द्रं हि नित्यम्।।

पूर्वाह्न में सखाओं के साथ श्री कृष्ण के वन गमन के समय ब्रजवासी गणों की व्याकुलता की स्मृति से श्री गौर सुन्दर अश्रु कंपादि सात्विक विकारों से व्याप्त होकर भक्तगणों के बीच उन लीलाओं का अनुकरण करते हैं, भक्त वृन्द के साथ मैं उन्हीं गौर चन्द्र का नित्य ही भजन करता हूँ।

नवद्वीपः महाप्रभु का ब्रजभावोद्दीपनः

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु अपने गृह में शय्यालय के बरामदे में भक्त वृन्द के साथ ब्रज रसावेश में बैठे हुए हैं। प्रभु का मन जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी नंदीश्वर में श्री राम कृष्ण के गोचारण वेश तथा यशोमती द्वारा दिये गये वस्त्रालंकारों से श्री राधा के वेश भूषादि पद गान करते हैं, उसे श्रवण कर सपरिकर महाप्रभु को अपने-अपने ब्रजभाव का उद्दीपन हुआ। सभी ब्रजलीला में आविष्ट होकर बाह्य ज्ञान शून्य हुए। श्री गुरुकृपा से साधक दास भी सिद्ध स्वरूप में मग्न होकर सेवा में आत्म नियोग करता है।

पूर्वाह्न लीला ब्रजधाम (६ दंड)

दिवा ८ बजकर २४ मिनट से लेकर १० बजकर ४८ मिनट तक।

श्री श्री ब्रजधामः पूर्वाह्न लीला सूत्रः

पूर्वाह्ने धेनुमित्रैर्विपिनमनुसृतं गोष्ठलोकानुजातं
कृष्णं राधाप्तिलोलं तदभिसृतिकृते प्राप्ततत्कुंडतीरम्।।
राधांचालोक्य कृष्णं कृतगृहगमनामार्यय्यार्काच्चनायै।
दिष्टां कृष्णप्रवृत्यै प्रहितनिजसखीवर्त्मनेत्रां स्मरामि।।

पूर्वाह्न में धेनु तथा मित्र गणों के साथ वन गमन करते समय श्री नंद यशोदादि ब्रजवासीगण जिनके पीछे गमन करते हैं, जो श्री राधा की प्राप्ति के विषय में सतृष्ण होते हैं एवं जो श्रीराधा के अभिसार के लिए श्री राधाकुंड तीर पर उपस्थित होते हैं- उन्हीं श्री कृष्ण का मैं स्मरण करता हूँ तथा जो श्री राधा नंदालय से अपने गृह गमन करने पर आर्या जटिला द्वारा सूर्यदेव की अर्चनार्थ आदेशित होकर श्री कृष्ण से वार्ता के लिए भेजी गई अपनी सखी के आगमन की प्रतीक्षा में उत्कंठित नेत्रों से पथ की ओर निहारती हैं—उन्हीं श्री राधा रानी का

Scanned by CamScanner

मैं स्मरण करता हूँ।

ब्रजधामः गोचारण-वेशः

ब्रज के नंदालय में श्री श्री राधा कृष्ण अपने-अपने शयन कक्ष में निद्रित हैं। श्री रूप-मंजरी के इशारे पर तथा श्री गुरु मंजरी के आदेश से साधक दासी ने श्रीमती को चरण संवाहन द्वारा जागृत कराया एवं श्री राधा के शय्या त्याग करने पर स्वर्ण की कुल्लादानी में सुगन्धित जल से उनका मुख प्रक्षालनादि कराया। क्रमशः

यशोदा द्वारा प्रदत्त वेश-भूषा से भूषित श्रीराधा।

सखी वृन्द भी शय्या त्याग कर श्री राधा के निकट आ बैठीं। श्री कृष्ण के विवाह की अभिलाषा से माँ यशोमती ने जो सब नववधू योग्य विवाहोपयोगी बहुमूल्य वस्त्राभणादि तैयार कराकर यत्न पूर्वक उत्तम पेटिका में रखे थे। उन सब वस्त्र-भूषणादि तथा तांबूल, चंदन, सिंदूरादि द्वारा श्री राधाजी को भूषिता कराने के लिए माँ ने धनिष्ठा द्वारा श्री राधा की सखियों के पास भेज दिया। सखीगण ने श्री राधा के अंगों से वस्त्रालंकार आदि उतार कर यशोदा द्वारा प्रदत्त वस्त्रालंकार तथा माल्य, चंदन, सिंदूरादि द्वारा श्रीमती को भूषिता करके मुख में तांबूल देकर दर्पण दिखलाया। श्रीमती के प्रसादी वस्त्रालंकारादि किंकरीगण को प्राप्त हुए।

इधर श्री कृष्ण के सखागण अपने-अपने भवन से गोचारणोपयोगी वेश-भूषा से सुसज्जित होकर नंद भवन में आ पहुँचे। सुबलादि श्री कृष्ण के अन्तरंग नर्म सखागण ने श्री कृष्ण के शयनालय में जाकर उन्हें जागृत कराया एवं दासों ने उन्हें समयोपयोगी मुख प्रक्षालनादि सेवा करायी। तब प्रियनर्म सखागण एवं दासों

श्रीश्रीरामकृष्ण का गोचारण वेश।

के साथ श्री कृष्ण के अंतःपुर में जननी के निकट आने पर माता ने श्री राम कृष्ण को गोचारणोपयोगी वेश-भूषा प्रदान की एवं दास गणों ने उनकी मनोहर गोष्ठ वेश रचना की। खिड़की से उस मनोहर वेश-भूषा का दर्शन कर सखियों सहित श्री राधा परमानंद में निमग्ना हुई। सेवा कार्य में विचक्षण दासगण भक्ति रस से आप्लुत होकर प्रथमतः गंध, माल्य, वसन, भूषणादि द्वारा श्री कृष्ण को सुसज्जित करने लगे। चंदन, कुंकुम, गैरिकादि धातु द्वारा अंग राग करके नटवर वेश रचना की। मस्तक पर मयूर पुच्छ का चूड़ा, अंगुलियों में स्वनामांकित रत्नांगुरीयक, कर्णों में कुंडल, वक्ष में गुंजाहार, रत्नमाला, स्थूल मुक्ताहार, वैजयंती माला तथा कौस्तुभ मणि, हस्त में कंकण, केयूर तथा दोनों चरणों में मनोहर रत्न नूपुर पहनाये। तत्पश्चात् उदर के बायें भाग के मध्य तुंदबंध में श्रृंग, दक्षिण कर में रत्न जड़ित मुरली तथा बायें हाथ में सीधी पीत वर्ण लगुड़ी (लाठी) धारण करके एवं दाहिने हाथ में लीला कमल घुमाते हुए श्री कृष्ण अखिल नेत्रधारियों के चरम फल स्वरूप मनोहर नटवर वेश में शोभा पाने लगे। तत्पश्चात् दासगण श्री बलदेव को भी श्वेताद्रित (श्वेत पर्वत) तुल्य शुभ्र अंग में कस्तूरी लेपन, मस्तक पर दायीं ओर झुका हुआ मनोहर चूड़ा, बाहु में मणिकंचन-विरचित केयूरादि अलंकार, दायें कर्ण में कुंडल, बायें कर्ण में उत्पल, हस्त में श्रृंग तथा छड़ी प्रदान कर नील धटी (कंधे से कमर तक सुसज्जित वस्त्र विशेष) को भी सुसज्जित कर दिया। इसी प्रकार से अनुरूप वेश-भूषाधारी सखागणों से घिरकर श्री राम

Scanned by CamScanner

कृष्ण अखिल दर्शक गणों के चित्त हारी रूप में शोभा पाने लगे। तब श्री यशोदा तथा श्री रोहिणी माता ने कर्पूर बर्त्तिका के द्वारा श्री राम कृष्ण की आरती की। दोनों के अंग की झलमल माधुरी दर्शन करके मातृगण, धातृगण तथा सखियों सहित श्री राधा परमानंद में निमग्ना हुई।

नवद्वीपः सपरिकर महाप्रभु का गोष्ठ गमानावेश :

नवद्वीप में श्रीमन्महाप्रभु अपने शयन गृह के बरामदे में भावाविष्ट हैं। श्री स्वरूप गोस्वामी के मुख से श्री श्री राम कृष्ण का अखिल विश्व चित्तहारी मनोहर गोष्ठ वेश का वर्णन सुनकर महाप्रभु ब्रजलीला के आवेश में कृष्ण भाव में त्रिभंग ललित मुद्रा में खड़े होकर मुरली वाद्य का अनुकरण करने लगे। श्री मन्नित्यानंद प्रभु बलदेव भाव में श्रृंग वाद्य का अनुकरण करने लगे। अभिरामादि सख्य भाव में हाथ में छड़ी लेकर गोचारण गमनावेश में ''हइ'' ''हइ'' ध्वनि करने लगे। स्वरूपादि भक्त वृन्द मृदंग करताल लेकर ''धवली'' ''श्यामली'' ''काली'' आदि नामों की ध्वनि करते हुए श्री कृष्ण के गोष्ठ गमन लीला पद गान करने लगे। मध्य में महाप्रभु, दाहिने श्री नित्यानंद प्रभु तथा बायें श्री अद्वैत प्रभु एवं चारों ओर स्वरूपादि भक्त वृन्द से घिर कर सभी ने पूर्व सिंह द्वार से होकर सुरधनी (गंगा) की ओर गमन किया। कीर्तन की ध्वनि सुनकर नागरिक भी दर्शन के लिए आये। श्री मन्महाप्रभु के अपूर्व कीर्तन विनोदिया तथा प्रेमरस के श्री विग्रह को देखकर सभी परमानंद में मग्न हुए। स्वर्ण जड़ित पथ एवं दोनों ओर बकुल वृक्ष की श्रेणी है। उससे विविध लतावली द्वारा घिरे होने से छत्राकार पथ सुशीतल एवं छायावृत हो रहा है। भृंग की गुँजार तथा कोकिलादि पक्षियों के कल-कूजन से मार्ग कोलाहल पूर्ण है। उसी पर गमन करते-करते आगे गायों के समूह का दर्शन कर श्री कृष्ण की गोचारण लीला की स्मृति से श्री गौर सुन्दर भावावेश में मूर्छित हो गये। भक्त वृंद द्वारा जल सिंचन तथा व्यजनादि से प्रभु की सेवा करने पर वे अर्ध बाह्य दशा में इधर-उधर देखने लगे। सभी भक्त गण महाप्रभु को वहाँ स्थित तमाल वेदी पर बिठाकर उन्हें चारों ओर से घेरकर बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु के मनोभाव को जानकर श्री कृष्ण के गोचारण गमन, पिता माता की विरह दशा, प्रियागणों की विदाई, वन प्रवेश, श्री राधा का सखियों सहित गृह आगमन, नर्मदा सखी का आगमन तथा वृन्दावन में श्री कृष्ण का वंशीनाद, स्थावर जंगम से कुशल वार्ता प्रश्न इत्यादि श्रीकृष्ण लीला श्री राधा के निकट वर्णन पद क्रमपूर्वक गान करने लगे। पदगान श्रवण कर महाप्रभु अश्रुधारा से सिक्त होकर ब्रजभाव में आविष्ट हुए। भक्त वृंद भी गान श्रवण करके तन्मय होकर अपने-अपने सिद्ध स्वरूप में ब्रजलीला में मग्न हुए।

ब्रजधामः श्री कृष्ण का गोष्ठ गमन तथा श्री राधा का गृहागमन :

ब्रज के नंदालय में श्री श्री राम कृष्ण के गोष्ठ वेश की अपूर्व माधुरी दर्शन कर सभी परमानंद सिन्धु में मग्न हो रहे हैं। तब माता ब्रजेश्वरी द्वारा श्री कृष्ण के वन्य भोजन के लिए आमोद जनक मिष्टान्न-मोदकादि किंकर गणों के हाथ में समर्पण करने पर उन्होंने यत्नपूर्वक उसे ग्रहण किया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो वात्सल्य-वल्लरी (कल्प वृक्ष) की सभी फल सामग्री को आनंद सहित आग्रह पूर्वक ग्रहण किया हो। माता ने श्री कृष्ण के

Scanned by CamScanner

पानार्थ कर्पूर द्वारा सुगन्धित तथा सुपेय-सलिल (जल) चंद्रकान्त मणि निर्मित पान पात्र में किसी दास को दिया। किसी अन्य दास ने सुगन्धित तांबूल वीटिका पूर्ण स्फटिक मणि निर्मित मनोहर संपुट ग्रहण किया। किसी ने श्रीकृष्ण के परिधेय (पहनने योग्य) बहुविध वसन-भूषण ग्रहण किये। ब्रजेश्वरी माता यशोमती दासगणों को यह सब द्रव्य देकर कहने लगीं—''गोष्ठ क्रीड़ा में मत्त राम कृष्ण को तुम सब समय जानकर यह सब खाद्य एवं पेय द्रव्य सेवन कराना''।

तब श्री कृष्ण द्वारा वंशी, श्रृंग तथा लाठी धारी अपने समान वेश तथा वयसान्वित नर्म रस निपुण सखागणों से घिरकर ''मन्द्र घोष'' नामक शिंगा की मंगलमय ध्वनि से घोषवासी गणों (गोष्ठवासी) के संतोष-साधन तथा गोप सुन्दरी गणों के चित्त को विमोहित करते हुए वन गमन के लिए उद्यत होने पर अंबा-किलिम्बादि के साथ ब्रजेश्वरी माता एवं सखीगणों के संग श्रीमती बाहर आयीं। तब श्री कृष्ण के वन यात्रा घोषणा कारी

श्रीकृष्ण के वन गमन की घोषणा।

व्यक्ति गण द्वारा ''मुकुन्द वन को जा रहे हैं'' इस बात की उच्च स्वर से घोषणा करने पर उस ध्वनि के श्रवण मात्र से सभी—''मुकुन्द वन को जा रहे हैं'' जानकर श्री कृष्ण दर्शन के लिए शीघ्रता पूर्वक आने लगे। यहाँ तक कि गृह में पले शुकादि सब पक्षी भी ''मुकुन्द वन को जा रहे हैं'' इस प्रकार से मधुर ध्वनि करने लगे। क्षण भर में ही यह सब ध्वनि तथा इसकी प्रति ध्वनि से समग्र ब्रजमंडल प्रतिनादित हो उठा। यह ध्वनि समस्त ब्रजवासी गणों के लिए एक संकेत के रूप में प्रतीत हुई। श्री कृष्ण के सखागण सोचने लगे—''श्री कृष्ण के साथ विविध गोष्ठ क्रीड़ा माधुरी आस्वादन के लिए ही मानो यह ध्वनि हमें त्वरान्वित (शीघ्रता पूर्वक आना) कर रही हैं''। ब्राह्मण गण विचार करने लगे—''दर्भपाणि (कुश) होकर स्वस्ति वाक्य द्वारा श्री कृष्ण को आशीष दान के लिए ही जैसे यह ध्वनि इंगित कर रही हो'' गोपसुन्दरी गणों के लिए जैसे इस ध्वनि ने इंगित किया—''शीघ्र ही वृद्धा सासुरी की वंचना करके श्री कृष्ण मिलन के लिए वृन्दावन चलो''। इस प्रकार अपने-अपने भावानुसार सभी ने उस ध्वनि द्वारा भिन्न प्रकार से प्रेरणा प्राप्त की।

इस प्रकार से श्री कृष्ण के अपनी नील कांति से दिग् मंडल को उज्ज्वल करते हुए सखाओं के साथ गोचरण के लिए गमन करने पर विरह तप्त माता-पिता अश्रु नीर बहाते-बहाते श्री कृष्ण का अनुगमन करने लगे। गोष्ठ गमन के समय ब्रज सन्निहित भू-भाग की शोभा दर्शन करते-करते श्री कृष्ण आनंदित मन से चल

ब्रज.सन्निहित भू-भाग की नैसर्गिक शोभा।

रहे हैं। किसी स्थान पर पर्वत श्रृंग के समान अति उच्च गोबर से बने उत्पलिका (कंडा) विराजित हैं। किसी स्थान पर षण्ड (साँड) द्वारा सभी ऋतुमती गायों के लिए तुमुल संग्राम चल रहा है। कहीं पर प्रफुल्ल वदन से परस्पर कृष्ण गुण गान करते-करते गोबर लाने के लिए व्यग्र चित्ता होकर शत-शत गोप दासी गण शोभा पा रही हैं। किसी स्थान पर गोपगण गायों के वन गमन काल में गोवत्स गणों की रक्षा के लिए व्यग्र हो रहे हैं। किसी स्थान पर गोबर द्वारा वृद्धा ब्रज गोपी गण कंडा तैयार कर रही हैं। कहीं असंख्य गोशाला विराजित हैं एवं घन सन्निविष्ट तरु

Scanned by CamScanner

पल्लव की स्निग्ध छाया में वत्स गणों का आवास शोभा पा रहा है। सूखे हुए गोबर से यह भू-भाग समाच्छन्न होने के कारण भूमि अतिशय कोमल हो रही है। इस प्रकार की नैसर्गिक शोभा का दर्शन करते हुए ब्रज के पूर्ण शशी श्री कृष्ण चंद्र प्रशन्न चित्त से असंख्य गायों के पीछे-पीछे सखाओं के साथ वन गमन करने लगे।

सुर तरंगिनी गंगा जैसे अपनी एक तरंग के ऊपर दूसरी तरंगों का विस्तार करते हुए सागराभिमुख होकर गमन करती है, उसी प्रकार से चंचल कटाक्ष रूप तरंग-विशिष्टा सुरतरंगिनी श्री राधा श्री कृष्ण रसार्णव में स्नान करने के उद्देश्य से मन-मन में उनका अनुगमन करने लगीं। चंद्रावली, श्यामला, भद्रा, पाली, मंगला, आदि यूथेश्वरी सखीगण भी अपने-अपने यूथ के साथ नाना दिशाओं से आकर श्री कृष्ण का अनुगमन करने लगीं। तत्पश्चात् माता यशोदा अश्रु नीर से सिक्ता तथा स्तन दुग्ध से अपने वक्ष के वसन को सिंचन करते हुए श्री कृष्ण के चिबुक को धारण करते हुए लालन के साथ कहने लगीं—"हे वत्स! गोपालन कार्य में सुनिपुण मेरे हजारों दास विद्यमान रहते हुए भी तुम गोचारण के लिए स्वयं गमन करते हो- यह तुम्हरा कैसा दुराग्रह है! तुम्हारा यह सुकुमार अंग सुधाधारा द्वारा सिंचित है। हाय! तुम्हारा इस गोपगृह में जन्म क्यों हुआ? इतना सुकोमलांग होते हुए भी तुम्हें तृणचर धेनु गणों के साथ अनुगमन करने का इतना कष्ट भोगना पड़ रहा है। तुम्हारा राज गृह में जन्म लेना ही उचित था। इतने सुकोमल चरणों से तुम कंकड़-कंटकाकीर्ण वन्य प्रदेश में कैसे विचरण कर पाओगे? इस प्रकार सूर्य के ताप से नवनीत की अपेक्षा भी सुकोमल तुम्हारा यह अंग गल जायेगा। तुम्हें गोचारण के लिए वन में भेजकर हम सब कैसे जीवित रहेंगे? वत्स! यदि तुम्हें गोचारण के लिए जाने की इतनी तीव्र इच्छा है, तब यह छत्र तथा पादुका धारण करके जाओ"।

विरहातुरा माँ यशोदा द्वारा श्रीकृष्ण का लालन।

पुत्र स्नेह से व्याकुल माता-पिता को छत्र पादुका धारण करने के लिए अतिशय आग्रह करते हुए देखकर श्रीकृष्ण उनसे कहने लगे—"हे मातः! हे पितः! हम सब गोप जाति के हैं, गो-सेवा ही हमारा जातीय धर्म है। हम सबके सेव्य गो -समूह जिस प्रकार से छत्र तथा पादुका विहीन रहते हैं, उसी प्रकार से गोपगण भी यदि छत्र, पादुका का त्याग करके गोपालन करें-तभी यह गोसेवा धर्म सुनिर्मल होगा। हे माता! धर्म से आयु तथा यश की वृद्धि होती है। जो धर्म की रक्षा करते हैं, धर्म भी उनकी रक्षा करता है। अतएव यह धर्म ही भय से परित्राण पाने का एकमात्र उपाय है। अतः मैं इस धर्म का त्याग कैसे करूँ?" श्री नन्द यशोमती अपनी प्राण-प्रिय सन्तान की इस प्रकार की धर्म बुद्धि तथा सद्गुण देखकर हृदय में अतिशय आनंद अनुभव करने लगे। श्री मन्नारायण की कृपा से ही पुत्र में यह असाधारण सद्गुणावली संजात हुई है, ऐसा जानकर श्री नारायण के चरणों में शरणागत हुए। श्री कृष्ण विनम्र भाव से आगे कहने लगे—"हे मातः! हे पितः! हम सब वृन्दावन में विपुल तृणपूर्ण क्षेत्र में धेनु समूह को छोड़ कर स्निग्ध, सुगन्धित, सुशीतल तथा घन सन्निविष्ट घने पल्लव युक्त वृक्ष समूहों की छाया में विचरण करते हैं। धेनुओं के चरते-चरते दूर वनों में चले जाने पर उन्हें एकत्रित करने के लिए भी परिश्रम की सभावना नहीं हैं। क्योंकि मैंने यह जो नवीन मुरली धारण कर रखी है, इसका सुमधुर

Scanned by CamScanner

नाद ही धेनु समूह को एकत्रित करने में सुनिपुण है। माता! तुमने जो कंकड़ कन्टकाकीर्ण कहकर वृन्दावन के वन पथ की जो निंदा की है—सो वह पथ तो तुमने देखा ही नहीं है माँ, देखने पर उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह पाओगी। वह पथ चमरी मृग समूहों की पुच्छ द्वारा सर्वदा परिमार्जित रहता है, पथ के दोनों ओर कुसुमित लतावृत वृक्ष श्रेणी विराजित होने से सर्वदा ही यह वन पथ घन छाया युक्त तथा वृक्ष लताओं के कुसुम समूहों के मकरन्द सिंचन से सुशीतल रहता है। कस्तूरी मृग समूह के इधर-उधर विचरण करने से यह पथ सर्वदा ही सुगन्धित रहता है। झड़े हुए फूलों के बिछे होने से यह पथ सुकोमल तथा रूई की भाँति मृदुल हो जाता है। माँ! गोवर्धन का तट प्रदेश तो और भी अधिक रमणीय है, उसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती माँ। वहाँ पर नाना वर्णों की कुसुम वल्ली मलय पवन के आन्दोलित होने से अपनी सौरभ द्वारा दिक् दिगन्त को आमोदित करके रखती है। चारों ओर झरनों की कल-कल ध्वनि, भ्रमरों की गुँजार, कोकिलों की कुहू ध्वनि तथा मयूरों के नेत्र-विमोहन नृत्य से उस स्थान की रमणीय शोभा ने तुम्हारे मणि-मंदिर की शोभा को भी मन्दीभूत कर रखा है। इसी समय रहस्य पटु बटु मधुमंगल ने यशोदा से कहा—"माँ! तुम्हें असली तत्व कहता हूँ सुनो-वन के सुख का एक कण भी तुम्हारे पुर में नहीं है। पहले भोजन का ही सुख सुनो माँ। आम, केला, कटहल, दाड़िम्ब (अनार) आदि सुपक्व फल समूह के वृक्ष से गिरने पर हम सब उसका तत्क्षणात भोजन करते हैं। उनकी सुगन्ध तथा मधुर स्वाद से जिस प्रकार की हमें उपलब्धि होती है, तुम्हारे गृह पक्व फलों में क्या उस प्रकार का आस्वादन मिल सकता है माँ? विशेषत: हमारा सखा श्री कृष्ण कल्पलतावली से फल, पल्लव तथा पुष्प संग्रह करने की इच्छा से ही वन को जाता है। सखा की यह अभिलाषा तुम्हारे भवन में पूर्ण होने की कोई संभावना नहीं है माँ।" *

श्रीकृष्ण द्वारा सुखमय वृन्दावन की शोभा वर्णन।

माता यशोमती वन गमन में श्री कृष्ण की आनन्दानुभूती की बात सुनकर भली प्रकार से आश्वस्त हुई, फिर भी असुरादि की उत्पात-संबंधी अनिष्ट आशंका से व्याकुला होकर श्री कृष्ण के सखाओं को बुलाकर कहने लगीं—"हे बलभद्र! सुभद्र! मंडली भद्र! हे वत्स गण! अति सुकुमार चंचल बालक श्री कृष्ण को मैं तुम्हारे हाथों में समर्पण करती हूँ। तुम सब सर्वदा निकट रहकर इसे शिक्षा प्रदान तथा सावधानी पूर्वक रक्षा करना। हे विजयादि वत्सगण! तुम सब धनुर्बाण, तलवार, आदि धारण करके निकट से ही इसकी सुरक्षा में तत्पर रहना।" तत्पश्चात् स्नेहार्द्र चित्ता जननी ने ईश्वर का नाम उच्चारण पूर्वक पुत्र का सर्वांग स्पर्श करते हुए श्री नृसिंह मंत्र द्वारा रक्षा बन्धन किया तथा हाथ में रक्षामणि बांधी। तब श्री कृष्ण के "हे माता! हे पिता! मुझे अनुमति प्रदान करें" ऐसा कहकर नन्द-यशोदा के चरणों में प्रणाम करने पर वे बाहु द्वारा श्री कृष्ण को

श्रीकृष्ण को सखागणों के हाथ समर्पण एवं रक्षा बंधन।

* इस स्थान पर अतिशयोक्ति द्वारा कल्पलता श्रीराधादि एवं फल, पल्लव तथा पुष्प द्वारा यथाक्रम से उनके वद्वोज, अधर तथा हास्य प्रकाशित हुए हैं।

Scanned by CamScanner

अपने हृदय में धारण करके अश्रुनीर तथा स्तन्य धारा से अभिषिक्त करते हुए उनका मुख चुंबन, बार-बार देह मार्जन तथा मस्तकाघ्राण पूर्वक कहने लगे—"हे वत्स! श्री नृसिंह देव तुम्हारी रक्षा करें। पृथ्वी, आकाश, वायु, पथ, अरण्य, दिक्-विदिक् तुम्हारे लिए शुभदायक हों। तुम निर्विघ्न होकर गृह वापस आओ" ऐसा कहकर स्नेह पूर्वक आलिगंन तथा वन गमन की आज्ञा प्रदान करते हुए श्री कृष्ण को आनंदित किया। रोहिणी माँ, अम्बा, किलिम्बादि धात्री गण एवं वात्सल्य मयी गोपीगण द्वारा भी श्री कृष्ण इसी प्रकार लालित हुए। उन सबने बलदेव को भी उसी प्रकार लालन किया।

तब श्री कृष्ण द्वारा अपनी कटाक्ष रूपी अमृत धारा से ब्रजांगनागणों के प्यासे नयन चातकों को अभिषिक्त करते हुए वन गमन की अनुमति माँगने पर रमणीय कटाक्ष द्वारा ही ब्रजांगना गणों ने भी वन गमन का अनुमोदन प्रदान किया। तब श्रीकृष्ण ने श्री राधा को नयन भंगी द्वारा सूचित किया—"हे राधे! तुम शीघ्र ही अपने कुंड तीर पर आगमन करो वहीं हम दोनों का मधुर मिलन सम्पादित होगा।" इस प्रकार श्री राधा से अनुज्ञा प्रार्थना करने पर श्रीमती ने भी सकातर कटाक्ष द्वारा उनके वन गमन का अनुमोदन किया। गोष्ठ गमन के समय श्री कृष्ण श्री राधा के चित्त रूपी मीन को अपने कांतिजाल में साथ बांधकर ले चले। उसी प्रकार श्री राधा ने भी श्री कृष्ण के चित्त रूपी हंस को अपने कटाक्ष रूपी पिंजरे में आबद्ध करके रखा! श्री कृष्ण धेनुपाल को आगे लेकर ब्रजवासियों के चित्त को आकर्षित कर सखागणों से परिवृत होकर वन गमन का उपक्रम करने लगे। दो चार पद अग्रसर होने पर पीछे की ओर स्नेह यंत्रित माता-पिता तथा ब्रजवासी गणों को अपना अनुगमन करते हुए देखकर बोले—"हे माता! और मत आओ! घर जाकर शीघ्र ही मेरे लिए रसाला भेज दो। हे पिता! मेरी गेंद क्षेपनी (एक प्रकार का उपकरण) का अग्र भाग टूट गया है। शीघ्र ही घर जाकर आप पाँच, छः सुदृढ़ कंदुक क्षेपनी तैयार करा दें।" तब यशोदा ने कहा—"हे वत्स! मैं तुम्हारे लिए शीघ्र ही सुमिष्ट भोज्य-पेयादि भेज दूँगी, तुम मध्याह्न भोजन करके अपराह्न में शीघ्र ही घर आ जाओ।" इसके उत्तर में श्री कृष्ण ने कहा—"माता! यदि मैं सुनूँगा कि तुम सब भोजनादि करके स्वस्थ शरीर से रह रही हो तभी मैं तुम्हारे द्वारा भिजवाये द्रव्य का भोजन करके शीघ्र ही घर आ जाऊँगा, नहीं तो नहीं आऊँगा।" नन्द-यशोमती श्री कृष्ण के इस प्रकार प्रीति रसपूर्ण वाक्य श्रवण करके कायमनो वाक्य द्वारा श्री कृष्ण के अंग में रक्षा बन्धन करके अश्रुनीर तथा स्तनक्षीर से उनके शरीर को सिक्त करते हुए बारम्बार उनका मुख चुम्बन तथा आलिंगन करके आकुल नयनों से उनका मुख निरीक्षण करने लगे। श्री राधादि ब्रज सुंदरीगण विरह ताप से तप्त चित्त से कटाक्ष रूपी पान पात्र द्वारा श्री कृष्ण के अंग लावण्य का पान करने लगीं। तत्पश्चात् श्री कृष्ण ने उस सबके परित्याग के कारण वैमनस्य होकर अरण्य गमन के लिए व्यग्र चित्त से वन गमन किया। ब्रजवासी गणों ने श्री कृष्ण विरह के कारण स्वयं निश्चेष्ट होने पर भी कृष्णानुगामी मनोविहीन देह को लेकर शोक-विमोहित श्रीनन्द यशोदा को साथ लेकर अभ्यास वशतः गृहागमन किया। यंत्र-कौशल द्वारा संचालिता दारुमयी प्रतिमा

श्रीकृष्ण का वन गमन तथा ब्रजवासी गणों का गृहागमन।

Scanned by CamScanner

जैसे अन्य प्रतिमा को आकर्षित करके ले जाती है, उसी प्रकार सखी गण भी श्री कृष्ण विरह में मूर्छिता होकर अपनी-अपनी यूथेश्वरियों को साथ ले चलीं। कुंदलता स्वयं विरह से कातर होकर भी संज्ञाविहीन सखीगण सह अचेतना श्री राधा को शीघ्र श्री कृष्ण मिलन का आश्वासन देकर चैतन्य संपादन करते हुए उन्हें यावट ले आयीं।

कुंदलता द्वारा जटिला को संतुष्ट करना।

इधर जटिला गाय के गोबर के उपले निर्माण में उत्कंठिता होकर भी व्याकुल चित्त से वधू श्री राधा के आगमन पथ की ओर पुनः पुनः देख रही हैं। इस समय श्री राधा-कृष्ण के मिलन कार्य में पटु श्री कुंदलता सखियों सहित श्री राधा को साथ लेकर जटिला के निकट उपस्थित होकर बोलीं-"हे आर्ये! तुम्हें नमस्कार करती हूँ। तुम्हारी इस पुत्र वधू को लेकर आई हूँ-इसे ग्रहण करो। इस कल्याणी को मैंने इतनी सावधानी से रखा कि श्री कृष्ण इसकी छाया को भी नयन गोचर नहीं कर पाये। यह देखो, इसके पाक नैपुण्य को देखकर ब्रजेश्वरी यशोदा ने इसे जो मूल्यवान रमणीय वस्त्र तथा महामूल्यवान मणिमय आभूषण प्रदान किये हैं- ससागरा सप्त द्वीपा पृथ्वी का भी इसकी एक मणि के समान मूल्य नहीं हो सकता। यहाँ तक कि इन्द्र पत्नी शची देवी भी इस अपरिमित मणि जड़ित दिव्य आभरण समूह को अति दुर्लभ मानती हैं।"

जटिला श्री कृष्ण के अदर्शन तथा वधू की धर्मरक्षा एवं यशोदा द्वारा प्रचुर अर्थ लाभ से कुंदलता के प्रति परम प्रसन्ना होकर बोली-"हे कुंदलते! आओ-आओ तुम कुशल से तो हो ना? तुम्हारे स्वभाव की बलिहारी जाऊँ। मेरी वधू से तुम्हें बड़ा ही स्नेह है। मैं आशीर्वाद करती हूँ कि तुम सात पुत्रों की माता बनो! हे वत्से! तुम स्वयं साध्वी होकर भी साध्वी गणों की धर्म रक्षा में परम सुदक्षा हो। इसीलिए तुम मेरी आत्मानुरूप विश्वास पात्री हो। अतः मैं तुमसे एक प्रार्थना करती हूँ-कि सर्वज्ञा पौर्णमासी देवी का कहना है कि-" जिसकी पत्नी की धर्म के प्रति निष्ठा रहती है, वह पुरुष गो सम्पद, पुत्र तथा वित्त लाभ करके दीर्घायु होता है।" हे पुत्री! मेरी एक मात्र सन्तान है, वह जिससे कुशल पूर्वक रहे एवं मेरे निष्कलंक कुल में किसी प्रकार का कलंक स्पर्श न करे ऐसा ही धर्मोपदेश प्रदान करके श्री राधा को सूर्य देव की अर्चना में नियुक्त करो।" * तत्पश्चात् वृद्धा श्री राधा से बोली-"हे वत्से! तुम अरुण वर्ण कपिला गाय का दुग्ध, दधि, घृत, घृत पक्व द्रव्य, ईख-गुड़, जवा पुष्प, केशर, लाल चंदन, पद्म माला आदि द्रव्य ग्रहण करते हुए कुंदलता तथा ललितादि सखियों के साथ सूर्य कुण्ड जाकर गर्ग कन्या या सूर्य पूजा में दक्ष किसी ब्राह्मण कुमार के द्वारा सूर्य-पूजा कर आओ।" तब ललिता के प्रति कहा-"तुम साध्वी तथा साहसी हो अतः कभी भी अपनी सखी श्री राधा को अकेली नहीं छोड़ना एवं जिधर से नन्द सुत की गंध आ रही हो, उस दिशा को हाथ जोड़कर दूर से ही प्रणाम कर लेना (अर्थात् उधर

जटिला द्वारा श्रीराधा को सूर्य पूजा में नियोग करना।

* श्री राधा के बरसाना स्थिति काल में कीर्तिदा माता के आदेश से रंधन के लिए सखीगण सह श्री राधा को कुन्दलता नंदालय ले जाती हैं, एवं मुखरा सूर्य मंदिर में सूर्य पूजा के लिए आदेश देती हैं।

Scanned by CamScanner

कभी भी नहीं जाना)।'' वृद्धा ने पुनः कहा–''हे कुंदलते! हे ललिते! यह देखो, समय अधिक हो गया है, अभी भी प्रचुर गोबर विद्यमान है। अब क्या मैं तुम्हारे हाथ में वधू को समर्पण करके कंडा निर्माण में निरता हो सकती हूँ?'' यह सुनकर कुंदलता तथा ललिता प्रशन्न चित्त से बोलीं- ''हे आर्ये। आप निश्चिंत मन से अपने कार्य में मनोनिवेश करें। आपके निर्देशानुसार हम आपका सब कार्य सुसम्पन्न करेंगी एवं जैसे नयनों के पलक चक्षुतारा की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार हम दोनों मिलकर तुम्हारी वधू की रक्षा करेंगी।'' तब श्रीमती की मधुरांगी सखीगण ने जटिला के आज्ञा रूपी मधुपान से प्रमत्ता होकर आनन्द वैवश्य के कारण गृह गमन में अशक्ता होकर भी धैर्य धारण करके श्रीराधा सहित गृह गमन किया।

श्री राधा के गृह गमन करके रत्न पलंग पर बैठने पर किंकरी गणों ने उनके श्री चरणों को प्रक्षालन करके कोमल वस्त्र से पोंछ दिया। कोई पाद संवाहन, कोई बीजन, कोई तांबूल प्रदानादि कालोचित सेवा करने लगी। इसी समय वृन्दा देवी द्वारा भेजी गई नर्मदा नाम की माली कन्या तत्काल प्रस्फुटित मल्लिका, रंगन, कर्णिकार, जाति, यूथी, माधवी, चम्पकादि भृंग द्वारा स्पर्श रहित सौरभ युक्त विभिन्न प्रकार के पुष्प लेकर श्री राधा के निकट आयी। श्री राधा परमानंद में भरकर उससे पूछने लगीं–''हे नर्मदे! तुम कहाँ से आ रही हो?'' नर्मदा ने कहा–''श्री वृन्दावन से। श्री वृन्दादेवी ने यह सब पुष्पादि देकर मुझे आपके पास भेजा है।'' श्रीमती ने पूछा- ''वृन्दावन का कुशल कहो।'' तब नर्मदा श्रीमती के अभिप्राय को समझकर श्रीकृष्ण वार्ता कहने लगीं–"हे राधे! श्री कृष्ण के वन गमन के समय ब्रजवासी गण वापस जा चुके हैं। यह देखकर गोप बालक गण के साथ बन्धन मुक्त हस्ती शावक के समान वन में प्रवेश करके कोई नृत्य, कोई गान, कोई-कोई हास्य, नृत्य, कुद्रन (कूदना) एवं परिहासादि विविध प्रकार के आनंद विलास में प्रमत्त हो गये। श्री कृष्ण मातृ गणों के निकट जिस प्रकार बाल्यभाव में स्थिर दृष्टि से रहते हैं एवं प्रेयसी गणों के निकट मधुर भाव में चंचल कटाक्षपात करते हैं, कोई-कोई सखा उसी का यथावत् अनुकरण करने लगे। कोई लता वन में प्रवेश करके या वृक्ष के अंतराल से ब्रजांगनागणों का अनुकरण करते हुए मस्तक पर घूँघट ओढ़कर हँसते-हँसते श्री कृष्ण के प्रति कटाक्षपात करने लगे। कोई-कोई गोप बालक वाक्-पटुता, कोई-कोई दंड युद्ध, कोई-कोई दंड घुमाने का कौशल प्रदर्शन, कोई मंत्री के समान मंत्रणा द्वारा, कोई विविध दास्य कार्य द्वारा नाना भाव से श्री कृष्ण का आनंद विधान करने लगे।

नर्मदा का श्रीराधा के निकट कृष्ण वार्ता वर्णन।

तत्पश्चात् वृंदा देवी वृन्दावन में श्री कृष्ण के आगमन को देखकर श्री कृष्ण विरह से खिन्ना अटवी तथा वृन्दावनस्थ समस्त स्थावर जंगम को प्रबोधित करने लगीं–''हे अटवी! सपरिकर माधव (अन्य पक्ष में मलयानिलादि के साथ बसन्त ऋतु) का आगमन हुआ हैं, तुम विरह जनित घूर्णा (इधर-उधर चक्कर लगाना) का परित्याग करके शीघ्र ही उल्लास युक्त हो जाओ। अपनी गुणावली प्रकाश करके श्री कृष्ण को श्री राधा का

वृन्दा द्वारा अटवी को प्रबोधित करना।

Scanned by CamScanner

स्मरण कराकर श्री राधा कृष्ण के विलास द्वारा अपनी शोभा की सार्थकता प्रकाश करो। हे लतागण! तुम सब सचेतन हो जाओ, हे तरु समूह! तुम सब विकसित होओ, हे मृग कुल! तुम सब क्रीड़ा करो, हे कोकिल समूह! भृंग गणों के साथ तुम सभी गान करो। हे मयूर गण! सुख पूर्वक नृत्य करो, हे शुकसारी! तुम सब मधुर पदावली पाठ करो। हे स्थावर जंगम गण! तुम सब आनंद से प्रफुल्लित हो जाओ, यह देखो—"तुम सब के प्रियतम श्री ब्रजराज नन्दन तुम सब को सुख देते हुए इधर ही आ रहे हैं।" तब श्री कृष्ण मेघ अपने विरह दावानल से विमूर्छित अटवी को चेतन करने के लिए एवं स्थावर जंगम से अपने वनागमन- संवाद ज्ञापन के लिए मधुर वंशी-निनाद रूप अमृत वर्षा करने लगे।

श्री कृष्ण का वंशी नाद।

वणुनाद होने के साथ ही स्थावर जंगम का धर्म परिवर्तन हुआ। अर्थात जंगम का धर्म स्थावर को एवं स्थावर जंगम के धर्म को प्राप्त हुआ। वृन्दाटवी विरह मूर्छिता नायिका की भाँति वेणुनादामृत से सिक्ता, श्री कृष्ण संग रूपी वायु बीजिता (बीजन की हुई) तथा श्री वृन्दा द्वारा प्रबोधित होने पर सहसा उत्फुल्लित हो उठी। रूप-रसवती नायिका जैसे शब्द स्पर्शादि पंच विषय द्वारा सुनायक की पंचेन्द्रियों की तृप्ति विधान करती है, उसी प्रकार वृन्दाटवी अव्यक्त-मधुर ध्वनि करने वाले भ्रमर तथा पक्षी गणों के स्वर से उल्लास युक्ता आम्र, दाड़िम्बादि फलों के क्षरित रस से सुरसिता, प्रफुल्ल-कमलों के परिमल से सुरभिता तथा सुमन्द मलय पवन के संस्पर्श से मुदिता (हर्षयुक्त) होकर श्री कृष्ण की सर्वेन्द्रियों की तृप्ति विधान करने लगी।

हे राधे! तब वंशीरव से आकृष्ट होकर मृग तथा मृगी कुल के मनोहारी नयन दर्शन से तुम्हारी नयन सुषमा के स्मृति पथ में उदित होने के कारण उनका हृदय व्यथित हुआ। नृत्यशील मयूरों के पंखों के दर्शन से उनके चित्त में तुम्हारे रतियुक्त केश-पाशों की मधुर स्मृति समुदित हुई। हंस, सारस एवं चटकी की ध्वनि के श्रवण से तुम्हारे वलय, नूपुर तथा कांची आदि की ध्वनि एवं भ्रमरावली-आवृत स्वर्ण कमलिनी के दर्शन से उनके मन में कटाक्ष युक्त, चूर्ण कुंतल समूहों से परिशोभित तथा सौरभान्वित तुम्हारे मनोहर वदन-कमल की स्फूर्ति हुई। वहीं उनके चित्त में बीजपुर, दाड़िम्ब, विख तथा नारंगादि सुपक्व फलों ने तुम्हारे वक्षोज की स्मृति ला दी। इसी प्रकार तुम्हारे अंग प्रत्यंगों की स्मृति को वृन्दावन की सुषमा राशि ने उनके मन में जागृत करा दिया।

श्रीकृष्ण को राधा उद्दीपन।

तत्पश्चात् श्री कृष्ण वृन्दावन के स्थावर जंगम से उनकी कुशल वार्ता पूछने लगे—"हे तरुलता गण! तुम सबका कुशल तो है ना? हे मृग-मृगी। तुम कुशल पूर्वक तो हो ना? हे पक्षीकुल! तुम्हारा मंगल तो है ना? हे भृंग-भृंगी कुल! तुम सब सुख से तो हो ना? हे स्थावर-जंगम समूह! तुम सबका कुशल तो है ना?" इस प्रकार सबसे कुशल प्रश्न पूछते हुए अपने निरुपम सौंन्दर्य माधुर्य तथा मुरली नादामृत द्वारा सबके मन को मोहित करते हुए गायों को क्षुधार्त तथा तृषित देखकर गोचारण के लिए गोवर्धन की उपत्यका (पर्वत की तलहटी) पर गमन किया। तब वृन्दा देवी ने ये कुसुम समूह देकर मुझे तुम्हारे निकट भेजा है।"

स्थावर जंगम से कुशल प्रश्न।

Scanned by CamScanner

नर्मदा के निकट श्री कृष्ण चरितामृत का आस्वादन करके श्रीमती ने पुलकित प्राणों से वृन्दा द्वारा प्रेरित कुसुम समूह द्वारा अपूर्व शिल्प कला का प्रकाश करते हुए वैजयन्ती माला रचना कर उसे कर्पूर, अगुरु आदि सुगन्धित द्रव्य द्वारा उत्तम रूप से सुगन्धित करके रखा। स्वर्ण वर्ण सुपरिपक्व पान में इलायची, कर्पूर, जायफल, जावत्री, खदिरादि के सहयोग से श्री कृष्ण को प्रीतिप्रद एवं मुखचंद्र के लिए रागजनक तांबूल वीटिका तैयार करके रखी। श्रीमती के स्वहस्त सौरभ से एवं हृदय के अनुराग से सुगन्धित माल्य तथा तांबूल तुलसी-कस्तूरी के हाथ में समर्पण करते हुए बोलीं—"हे तुलसी! यह माला एवं ताम्बूल ले जाकर मेरे प्राणनाथ को उपहार देकर वृन्दा तथा सुबल से केलि कुँज का अनुसंधान जानकर शीघ्र आओ। श्रीमती द्वारा प्रदत्त तांबूल तथा माल्य लेकर तुलसी-कस्तूरी के श्री कृष्ण के निकट जाने पर श्रीमती ने सहचरियों के साथ श्रीकृष्ण के लिए प्रीतिकर मिष्टान्नादि रचना करने में मनोनिवेश किया। तब गुरुदेवी के आदेशानुसार साधक दासी ने रंधन गृह को संस्कार करके भण्डार गृह से गेंहू का आटा, घृत, दधि, चीनी, मिश्री, गुड़, इलायची, लवंग, किशमिस, बादाम आदि एवं पाक पात्रादि रंधन गृह में लाकर रखे तथा देवदारु, चंदनादि काष्ठ के संयोग से चूल्हों को प्रज्वलित किया। तब श्रीमती ने आकर स्वर्ण चौकी पर बैठकर सखियों के साथ श्रीकृष्ण को पंचेन्द्रिय तृप्ति दायक अमृत केलि, कर्पूर केलि, पीयूष ग्रंथी तथा नाना प्रकार के लड्डूकादि तैयार करके श्रीकृष्ण के लिए अलग रखे तथा सूर्य पूजा के लिए अलग रखे। इस प्रकार रंधन कार्य समापन करके श्रीमती के बैठक गृह में जाकर बैठने पर दासियाँ पाक गृह को स्वच्छ करके श्रीराधा के निकट आकर कालोचित सेवा करने लगीं। हिरण्यांगी सखी ने सूर्य पूजा के द्रव्य-रक्त चंदन, जवा पुष्प, बिल्व पत्र, कुसुम माल्यादि रचना करके एवं अरुण वर्णा गौ दुग्ध, दधि, घृतादि द्रव्य समूह सजाकर रखे। तब सखीगण द्वारा श्री राधा की वेश-भूषा समापन करके उनके सम्मुख मणि दर्पण धारण करने पर श्रीमती ने श्री कृष्ण विलास योग्य अपूर्व रूप माधुरी देखकर श्रीकृष्ण प्राप्ति की उत्कंठा में विवशा होकर तुलसी के आगमन की अपेक्षा में उसी पथ पर दृष्टि लगाकर रखी।

श्रीराधा द्वारा तुलसी-कस्तुरी को माला तथा ताम्बूल देकर भेजना।

श्रीराधा द्वारा मिष्टान्नादि प्रस्तुत।

इति श्री ब्रजधाम की पूर्वाह्न लीला समाप्त।

नवद्वीप : महाप्रभु की रूप माधुरी :

श्री नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु तमाल वेदी पर भावाविष्ट दशा में स्वरूप के गान में श्री राधा के निकट नर्मदा की उक्ति तथा तुलसी को श्री कृष्ण के निकट भेजना आदि पद श्रवण कर प्रेमावेश में हुँकार कर बाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी के गान समाप्त करने पर महाप्रभु ने दोनों प्रभु को आलिंगन किया तथा भक्त वृन्द ने प्रभु के चरणों में प्रणाम किया। दासगण कालोचित सेवादि करने लगे। महाप्रभु की रूप माधुरी का दर्शन कर सभी परमानन्द में निमग्न हुए।

इति श्री नवद्वीप की पूर्वाह्न लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

मध्याह्न लीला: नवद्वीप (१२ दंड)

(दिवा १० बजकर ४८ मिनट से ३ बजकर ३६ मिनट तक)

श्री श्री नवद्वीप : मध्याह्न लीला सूत्र :

सहालि-श्रीराधासहित-हरिलीलां बहुविधां
स्मरण् मध्याह्नीयां पुलकिततनुगदगदवचा:।
क्रुवन् व्यक्तं तांच स्वजनगणमध्येऽनुकुरुते
शचीसूनुर्यस्तं भज मम मनस्त्वं वत सदा॥

जो सखियों सहित श्री राधा कृष्ण की मध्याह्न कालीन बहुत प्रकार की लीलाओं का स्मरण करके पुलकित देह तथा गदगद कंठ से भक्त गणों के मध्य वर्णन तथा अनुकरण करते हैं, हे मन! तुम उन्हीं महाभाव-रसमय-मूर्ति शचीनन्दन श्री गौर सुंदर का सर्वदा भजन करो।

नवद्वीप: श्री राधा का अभिसारानुकरण :

श्री नवद्वीप में गंगातट पर तमाल वेदी पर भक्त वृन्द से घिरे हुए श्री मन्महाप्रभु बैठे हुए हैं। सहसा वे श्री राधा भाव में अरुण वर्ण उत्तरीय द्वारा मस्तक पर घूँघट देकर बायें पैर को आगे कर हंस गमन की भाँति जाने लगे। भक्तवृन्द ने भी मधुर-मधुर संकीर्तन करते-करते उनका अनुगमन किया। प्रभु ने श्री वास पुष्पोद्यान में षड्ऋतु निषेवित वन में प्रवेश किया। वहाँ मृदुमंद मलयानिल पुष्प गंध को वहन करके अपना गंधवह नाम सार्थक कर रही है। आम्र मुकुल (पुष्प) खाकर मधुर कंठ से कोकिल-कोकिला पंचम तान में "कुहु-कुहु" का मधुर आलाप कर रहे हैं। मत्त मयूर गण मनोहर नृत्य कर रहे हैं तथा मृग-मृगी समूह मन के आनन्द से इधर-उधर विचरण कर रहे हैं। मुकुलित (पुष्पित) आम्र वृक्ष पर माधवी लता पुष्पित हो रही है। उसके नीचे सुविस्तृत रत्नवेदी मकरन्द से सिक्त-पुष्प पराग से आच्छन्न है। उसके ऊपर सुकोमल आसन पर महाप्रभु भक्त वृन्द से घिर कर बैठ गये। तब उनका भाव जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी श्रीराधा के निकट तुलसी का आगमन, श्री कृष्ण लीला वर्णन, श्री राधा का पंचेन्द्रिय आकर्षण, धनिष्ठा का आगमन, श्री राधा का अभिसार एवं श्रीकृष्ण मिलनादि पद क्रमपूर्वक गान करने लगे। गान श्रवण कर महाप्रभु राधा भाव में ब्रजरस में मग्न हुए। परिकरगण भी अपने-अपने ब्रजभाव में आविष्ट हुए।

Scanned by CamScanner

मध्याह्न लीलाः ब्रजधाम (१२ दंड)

(दिवा १० बजकर ४८ मिनट से ३ बजकर ३६ मिनट तक)

श्री श्री ब्रजधामः मध्याह्न लीला सूत्रः

मध्याह्ने अन्योन्यसंगोदित-विविधविकारादि-भूषाप्रमुग्धौ।
वाम्योत्कंठातिलोलौ स्मरमख-ललिताद्यालि-नर्माप्तशातौ।
दोलारण्याम्बुवंशीहृति-रति मधुपानार्कपूजादिलीलौ।
राधाकृष्णौ सुतृप्तौ-परिजन-घटया सेव्यमानौ स्मरामि।।

मध्याह्न काल में जो परस्पर संग के कारण विविध विकार रूपी (सात्विक व्यभिचारी आदि) भाव भूषणों के सम्यक उदय होने से अति मनोहर, वाम्य तथा उत्कंठा से अतिशय चपल, कंदर्प यज्ञ में ललितादि सखीगणों के परिहास वाक्य से परम सुखी एवं दोला, वन विहार, जल केलि, वंशी हरण, रतिक्रीड़ा, मधुपान, सूर्य पूजादि विविध लीलाओं में तत्पर होकर जो प्रिय-परिजन गण द्वारा सेवित हो रहे हैं—उन्हीं श्रीराधा-कृष्ण का मैं स्मरण करता हूँ।

ब्रजधामः श्री राधा की उत्कंठा तथा अभिसार :

ब्रज के जावट में प्रेममयी श्री राधा दर्पण में अपनी रूप माधुरी का दर्शन कर इस निरवध्य-माधुरी को किस प्रकार अथवा कब तक अपने प्राण नाथ को आस्वादन कराऊँगी- इसी चिन्ता में उद्विग्ना होकर सखियों के बीच में बैठी हुई हैं। इसी समय तुलसी द्वारा आकर श्रीकृष्ण प्रदत्त गुंजामाला तथा दो चम्पक कलिका ललिता के हाथ में समर्पण करने पर श्री ललिता ने परमानंद में श्री राधा के कंठ में वह गुंजामाला तथा कर्णों में दोनों चम्पक कुसुम पहना दिये। श्री कृष्ण की अंग गंध से सुरभित उन दोनों अपूर्व वस्तुओं का स्पर्श प्राप्त करके श्रीमती द्वारा साक्षात श्रीकृष्ण के स्पर्श का अनुभव लाभ करके उत्कंठा पूर्वक तुलसी के निकट श्रीकृष्ण वार्ता पूछने पर तुलसी कहने लगीं—"हे ईश्वरी! श्रीकृष्ण के अनुसन्धान में हम सब सूर्य कुण्ड, कुंजेरा, कुसुम सरोवर तथा ग्वाल पोखरा से होकर मानस गंगा के समीप जाकर कुछ दूरी पर लतान्तराल से होकर देखने लगीं कि-श्री कृष्ण गायों को तृण चारण में नियुक्त करके सखाओं के साथ विविध रसमय क्रीड़ा कर रहे हैं। तब मल्ल युद्ध में सखागणों को श्रांत तथा क्षुधित जानकर करुणार्द्र चित्त से उनके भोजन की चिन्ता करते ही माता यशोदा द्वारा भेजी गई धनिष्ठा दासीगणों के द्वारा विविध-मिष्टान्न तथा रसालादि वहन कराकर वहाँ उपस्थित हुई। श्री कृष्ण ने धनिष्ठा के दर्शन से आनंदित होकर माता-पिता के कुशल प्रश्न किये तथा धनिष्ठा से उनके स्नान देवार्चनादि एवं अपने ही मंगल के लिए ब्राह्मण-भोजन, अर्थादि दान तथा भोजनादि श्रवण कर श्रीकृष्ण ने परमानंद लाभ किया। तुम्हारे संगरूपी तरु के आश्रय के लिए उनकी चित्त वृत्ति रूपी

श्री राधा के निकट तुलसी द्वारा कृष्णलीला वर्णन।

Scanned by CamScanner

लतिका धनिष्ठा को ही परमाश्रय समझने लगी। इसके बाद उन्होंने इधर-उधर विचरण कारी गायों को वेणुनाद द्वारा एकत्रित करके जलपान कराकर सखाओं के साथ जल विहार तथा स्नानादि समापन करते हुए विविध मिष्टान्न तथा रसालादि का भोजन किया। तब अपने अग्रज के साथ में सखागणों को धेनु चारण में नियोजित कर सुबल तथा मधुमंगल के साथ बासन्ती वन की शोभा दर्शन के छल से अंतराल में गमन किया। धनिष्ठा भी नारायण अर्चना के लिए कुसुम चयन के छल से दासीगणों को भोजन के पात्रादि देकर गृह भेजकर उनके साथ मिल गई।

तब वृंदादेवी द्वारा आकर कर्ण भूषणोपयोगी दो प्रफुल्लित चम्पक पुष्प श्री कृष्ण के हस्त में समर्पण करने पर चम्पक के दर्शन से तुम्हारी अंगकांति की स्मृति के कारण उनके दोनों कर कंपित होने लगे। तब मधुमंगल ने उनके हाथ से दोनों पुष्प ग्रहण कर उनके कर्णों में पहना दिये। इसके बाद श्री कृष्ण, वृन्दा, धनिष्ठा, सुबल तथा मधुमंगल इन चारों उपायविज्ञ श्रेष्ठ मंत्री को प्राप्त होकर अपने मन में ऐसा सोचने लगे—कि शीघ्र ही तुम्हारा अंग संग रूपी उत्तम राज्य मुझे प्राप्त होगा। तब उन सब के साथ कुसुम सरोवर चले जाने पर कुसुम सरोवर की नैसर्गिक शोभा ने श्री कृष्ण को तुम्हारे विरह में अधीर कर दिया। वहाँ सभी बैठकर तुम्हारे विषय में आलाप करने लगे। श्री कृष्ण ने सोचा—"श्री राधा को लाने के लिए यदि वृंदा, सुबल या मधुमंगल में से किसी को भेजूँ, तो जटिला अवश्य ही संदेह करेगी एवं श्रीराधा को गृह में ही अवरुद्ध करके रखेगी। यदि मैं मुरली को नियोजित करूँ, तब सभी ब्रज सुंदरी आ जायेंगी एवं परस्पर की ईर्ष्या, मद, मान तथा वाम्य के कारण लीला रस सुसिद्ध नहीं होगा।" अतएव वे एक अन्य उपाय सोचकर धनिष्ठा से बोले—"हे धनिष्ठे! तुम कुंदलता के पास जाओ, वे मेरे प्रति सर्वदा स्निग्ध रहती हैं, विशेषत: जटिला उन पर खूब विश्वास करती है, अत: वह जटिला को वंचना करके निश्चय ही श्री राधा को ला सकेंगी।" श्री कृष्ण की बात सुनकर वृन्दा ने कहा—"यह सत्य है, किंतु इसके पहले ही यदि श्री राधा की कोई सखी कुसुम चयन के लिए इधर आयी हो, तो उसके द्वारा ही श्री राधा का संवाद जानकर उसी के अनुरूप कार्य करूँगी।" इस अवसर पर मैंने वहाँ जाकर सुबल के हाथ में तुम्हारे द्वारा दिया गया तांबूल तथा बटु के हाथ में माला प्रदान की। मेरे दर्शन से ही श्री कृष्ण आनंदित होकर-तुम भी वन में आयी हो इस प्रकार की धारणा से तुम्हारे दर्शन के लिए उत्कंठित नेत्र से चारों ओर देखने लगे। तब तुम्हारे कर स्पर्श से सुरभित तथा अपूर्व शिल्प नैपुण्य युक्त भ्रमराकर्षि (भ्रमर को आकर्षित करने वाली) तुम्हारे द्वारा रचित माला (जिसके दर्शन से ही श्री कृष्ण उनमना हो गये थे।) मधु मंगल ने हास्य के साथ उसे श्रीकृष्ण के गले में पहना दिया। जिससे वे साक्षात तुम्हारे कर स्पर्श प्राप्ति के समान पुलकित हुए। श्री कृष्ण के मन में—तुम वहाँ जाकर भी उनसे परिहास करने के लिए कहीं नजदीक में ही छिप गई हो, इसीलिए तुम्हारे दर्शनोत्कंठा में अधीर होकर मुझसे प्रश्न करने लगे- "हे तुलसी! तुम्हारी सखी श्री राधा का कुशल तो है ना?" मैंने कहा—"हे सखीश्वर! सभी कुशल है।" श्रीकृष्ण—"वे इस समय कहाँ है?" मैंने कहा- "गुरुजनों ने गृह कार्य में उन्हें अवरुद्ध कर रखा है।" श्री कृष्ण—"वे इस

Scanned by CamScanner

समय क्या कर रही हैं?'' मैने कहा–''दही के भ्रम में जलपूर्ण घड़े का मंथन कर रही हैं।'' श्री कृष्ण–''उससे क्या हुआ?'' मैंने कहा–''यह देखकर जटिला ने भर्त्सना करते हुए गृह में अवरुद्ध कर रखा है।'' श्री कृष्ण- ''वृंदा के साथ युक्ति करके किसी भी प्रकार से वृद्धा को वंचना करके उन्हें यहाँ ले आओ।'' मैने कहा- ''आज उसे वंचना करने का कोई उपाय नहीं है।''

श्रीकृष्ण तब मेरे वाक्य को सत्य मानकर तुम्हें सातिशय दुर्लभ जानकर–''हा विधाता! तुम्हे धिक्कार है।'' ऐसा कहकर अतिशय मलिन हो गये। श्री कृष्ण को मलिन देखकर मेरे अतिशय व्याकुल होने पर वृंदा तथा धनिष्ठा ने नयन द्वारा मेरी भर्त्सना की। तब मैं श्रीकृष्ण को आश्वासन देकर बोली–''हे ब्रजानन्द! दु:ख न करो, मैं तुमसे परिहास कर रही थी, आपकी प्रियतमा का आगमन हो चुका है ऐसा ही समझो।'' यह सुनकर श्रीकृष्ण प्रफुल्लित चित्त से अपने कर्ण से दो चम्पक पुष्प उतार कर मेरे हस्त में देकर बोले–''हे तुलसी! श्री राधा कहाँ हैं? वे गोपन रूप से क्यों अवस्थान कर रही हैं? क्या वे मुझसे रूठी हुई हैं? मेरा तो कोई अपराध नहीं हैं तथा मेरे समान दु:खित चित्त व्यक्ति से परिहास करना उचित नहीं हैं। अत: शीघ्र ही प्रियतमा का दर्शन कराकर मेरे विरह व्याकुलित प्राण को शीतल करो'' तब मैंने तुम्हारे दर्शनार्थ परमोत्कंठित तुम्हारे प्रियतम से कहा–''हे कमल नयन! तुम्हारी कांता भी तुम्हारे लिए सातिशय उत्कंठित चित्त से जटिला के आदेशानुसार सूर्य देव की अर्चना के लिए कुंदलता के साथ आगमन कर रही हैं। उन्होंने आपके मनोगत भाव को जानने के लिए मुझे यहाँ भेजा है। कहो इस समय कौन से क्रीड़ा कुँज में उन्हें ले आऊँ? मेरे वाक्य को सुनकर परमानंदित चित्त से उन्होंने अपना गुंजा हार उतार कर मुझे पारितोषित प्रदान किया। तब मैं तुम्हें कुंड तीरस्थ ''मदन सुखदा'' कुँज में लेकर आऊँ ऐसा वृंदा देवी ने मुझसे कहा है।

इस समय चंद्रावली को संकेत स्थान में रखकर श्रीकृष्ण को वहाँ ले जाने के उद्देश्य से वहाँ चन्द्रावली की सखी शैव्या का आगमन हुआ एवं चन्द्रा द्वारा प्रदत्त गुंजाहार श्री कृष्ण के गले में अर्पण करके वहाँ हम सबको देखकर क्षुब्ध चित्त से अतिशय व्यथिता हुई। फिर भी बाहर से थोड़ा हँसकर मुझसे बोली–''हे तुलसी! आज सखी चंद्रावली दुर्गा व्रत का उद्यापन महोत्सव सम्पन्न करेंगी अत: मुझे श्री राधा जी को निमन्त्रण करने के लिए भेजा है। किंतु गृह तथा वन में सर्वत्र अन्वेषण करने पर भी उन्हें कही भी नहीं देख पाई, क्या तुम जानती हो–तुम्हारी सखी श्री राधा कहाँ हैं? मैं शैव्या के इस छलपूर्ण वाक्य को सुनकर–''शठों के साथ शठता का आचरण करने में कोई दोष नहीं है'' इस नीति का अलम्बन करके बाली–''हे शैव्ये! आज श्यामासखी भी श्री अंबिका का वृत महोत्सव करेंगी इसीलिए श्री राधा को निमंत्रित करके गृह में लाकर उन्हें उत्सव का सभी भार सौंप दिया है। ललिता के आदेश से मैं पुष्प, फल तथा माल्यादि की समृद्धि के लिए वृंदा को लेकर वहाँ जा रही हूँ। इस प्रकार से मिथ्या वाक्य कहकर शैव्या को प्रताड़ित करके माधव के प्रति उदासीन भाव प्रकाश करते हुए वृंदा तथा धनिष्ठा के संग वहाँ से कुछ दूर जाकर शैव्या के साथ श्री कृष्ण का आलाप सुनने के लिए कुँज के अंतराल में छिपकर उन दोनों का कथोपकथन सुनने लगी।

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण बोले–"हे शैव्ये! मेरी प्रिया चंद्रावली कहाँ हैं एवं क्या कर रही हैं? तब शैव्या ने हर्ष के साथ कहा- "हे माधव! चन्द्रवली अपनी सास द्वारा गृह में अवरुद्ध होने पर भी इस समय दुर्गापूजा का छल करके उन्हें सखी स्थली पर लाकर तुम्हारे अन्वेषण के लिए मैं यहाँ आई हूँ।" यह सुनकर श्रीकृष्ण अन्तर से चिन्तित होते हुए भी बाहर से आनन्द प्रकाश करके बोले–"हे सखी! उनके दर्शन के लिए मैं भी अतिशय उत्कंठित था। सौभाग्य क्रम से जब तुम उन्हें यहाँ लाई हो, तब गुरुजनों के उपद्रव शून्य गौरीतीर्थ में उन्हें ले चलो। मैं सखागणों को गोचारण में नियुक्त करके शीघ्र ही वहाँ आ रहा हूँ। तब मधुमंगल ने भंगी पूर्वक श्रीकृष्ण से कहा–"हे सखे! ब्रजराज नन्द ने धनिष्ठा द्वारा जो संवाद भेजा है, सो उनके आदेश का प्रतिपालन करो।" यह सुनकर श्री कृष्ण बोले–"सखे! अच्छा हुआ जो तुमने मुझे याद दिला दिया। हे शैव्ये! आज कंस द्वारा भेजे गये तस्कर गण गोधन का हरण करने के लिए वृन्दावन आयेंगे, मेरे पिता ने धनिष्ठा द्वारा यह संवाद भेजा है। यदि उस उपद्रव को शांत करने में किंचित विलम्ब भी हो जाय तो उद्विग्ना न होना।" इस प्रकार शैव्या को प्रताड़ित करके वे गायों की ओर चले गये। शैव्या भी हृष्ट चित्त से चंद्रावली के पास चली गयी एवं मैं तुम्हारे पास आ गई।

तुलसी के मुख से इस प्रकार कृष्ण वार्ता सुनकर श्रीमती की देह भावी श्रीकृष्ण दर्शन के आनन्द की मधुर स्मृति में पुलकित तथा कंपित होने लगी। उन्होंने तत्क्षणात श्रीकृष्ण के निकट अभिसार करने के लिए उत्कंठिता होकर भी धीरता, वाम्यता आदि सखियों द्वारा प्रबोधिता होकर धैर्यधारण किया एवं अभिसार के लिए शीघ्रता पूर्वक ललितादि सखियों से बोलीं–"हे मृगाक्षिगण! तुम सबको यदि देखने की इच्छा हो तो आगे जाओ, मेरी अपेक्षा करने का कोई प्रयोजन नहीं है। वहाँ जाते ही शैव्या के वाक्य रूपी जाल में आबद्ध कृष्ण सार को देख पाओगी। शैव्या की गज बन्धनी (हाथी को बाँधने के लिये लोहे की श्रृँखला) से कृष्ण पद्मी (हाथी) आबद्ध हो गया है, अतः हे पद्मिनीगण! उनका शीघ्र उद्धार करना तुम सबका कर्तव्य है।" यह सुनकर ललिता बोलीं–"हे सुन्दरी! शैव्या यदि श्रीकृष्ण के निकट ही बैठी हुई हो तब तो वहाँ जाने से हम सब की मान हानि की संभावना है।" ललिता के वाक्य को सुनकर श्रीकृष्ण का संग अति दुर्लभ जानकर श्रीमती विरह-हताशा से खेद करने लगीं। यद्यपि वाम-अंग नृत्यादि रूप शुभ लक्षण समूहों की अनुभूति होने लगी, फिर भी अनिष्ट आशंका से व्याकुलित चित्ता श्री राधा के मन में कृष्ण प्राप्ति का विश्वास नहीं हुआ।

इस प्रकार प्रेममयी श्रीराधा के श्रीकृष्ण मिलन के लिये अतिशय उत्कंठिता होने पर श्रीकृष्ण के रूप रसादि द्वारा उनकी पंचेन्द्रियाँ एक साथ आकर्षित हुईं। वे विशाखा से अपनी दशा वर्णन करने लगीं–"हे सखि! जो अपने सौन्दर्य रूपी अमृत सिन्धु की तरंगों के द्वारा ब्रज सुन्दरियों के चित्त रूपी पर्वत को संप्लावित करते हैं, जिनकी सपरिहास वचन माधुरी कर्णों का आनन्द विधान करती है, जिनके अंग कोटिचन्द्रों से भी अधिक सुशीतल हैं, रमणीय अधर सुधा एवं अंग सुगंधामृत द्वारा विश्व को आप्लावित करते हैं। वे ही माधुर्य वारिधि ब्रजराजनन्दन! बलपूर्वक

श्रीराधा की पंचेन्द्रियों का आकर्षण।

Scanned by CamScanner

मेरी पाँचों इन्द्रियों का आकर्षण कर रहे हैं। तब श्रीमती श्रीकृष्ण की आकर्षणकारी पृथक-पृथक प्रत्येक इन्द्रियों के रूप रसादि की माधुरी का वर्णन करने लगीं। बोलीं–''हे सखि! नवजलधर की अपेक्षा भी जिनकी सुन्दरतर कांति, नव सौदामिनी से भी अधिक मनोहर जिनके वस्त्र, सुविचित्र मुरली द्वारा शोभायमान तथा शरत चन्द्र विनिन्दित समुज्ज्वल जिनका वदन चन्द्र है, जो मयूर पुच्छ के सुन्दर चूड़ा से विभूषित हैं, जिनके गले में सुन्दर नक्षत्र तुल्य तारामणि नामक हार दौदुल्यमान हो रहा है–वे ही मदन-मोहन मेरे दोनों नयन की तृष्णा की वृद्धि कर रहे हैं। जिनकी कंठ ध्वनि मेघ गर्जन के समान सुगंभीर, कर्णाकर्षी जिनके भूषणों का शब्द है, जिनकी सपरिहास सरस वाक्य रचना पद-पदार्थ भंगी युक्त है, जिनकी वंशी ध्वनि रमादि वरांगनाओं का भी चित्त हरण करती है, वे ही मदन मोहन मेरे दोनों कर्णों की स्पृहा को बढ़ा रहे हैं। जिनके श्री अंगों की मृगमद विजयी सौरभ तरंगों से उत्तमा नारीगण भी आकृष्ट होती हैं, जिनके अष्ट अंगों (दो पद, दो कर, दो नेत्र, नाभि एवं वदन) से कर्पूर मिश्रित कमलों की सौरभ विस्तार कर रही है, जो मृगमद, कर्पूर, सुचन्दन, कृष्णागुरु आदि द्रव्यों से निर्मित अंग चर्चा के द्वारा अंग विलेपन करते हैं–वे ही मदन मोहन मेरी नासिका की स्पृहा का विस्तार कर रहे हैं। जिनका वक्षः स्थल इन्द्र नीलमणि के कपाट के समान विस्तीर्ण तथा मनोहर है, जिनके दोनों बाहु रूपी अर्गल (जंजीर) कामार्त तरुणी गणों के मन के ताप को नाश करने वाले हैं एवं जिनके अंग हरि चंदन, चन्द्र उत्पल, कर्पूरादि से भी सुशीतल हैं वे ही मदन मोहन मेरे वक्षः स्थल की स्पृहा का विस्तार कर रहे हैं। जो ब्रज सुन्दरीगणों की निखिल अन्य स्पृहाओं का हरण करते हैं, जिनका सुमधुर अधरामृत-पुंजीभूत सुकृति न होने से बिन्दुमात्र भी लाभ नहीं किया जा सकता, जिनकी चर्बित तांबूल वीटिका अमृत के माधुर्य को भी पराजित करती है, वे ही मदन मोहन मेरी जिह्वा की स्पृहा का विस्तार कर रहे हैं।''

इसी अवसर पर श्री धनिष्ठा श्रीकृष्ण की मधुमयी वार्ता लेकर वहाँ आई। उत्कंठिता श्रीराधा के निकट धनिष्ठा बसन्त ऋतु तथा गिरिराज गोवर्धन की शोभा वर्णन करने के छल से श्री कृष्ण माधुर्य का द्वयर्थ युक्त भाषा में वर्णन करने लगीं। धनिष्ठा के वाक्य भंगी रूपी मधुपान से मत्त श्रीमती अपने प्राण कान्त के वृत्तान्त को स्पष्ट रूप से सुनने की लालसा से प्रश्न करने लगीं- ''सखी! तुम कहाँ जा रही हो?'' धनिष्ठा–''तुम्हारे ही समीप।'' श्री राधा–'' किसलिए ?'' धनिष्ठा- ''वार्ता ज्ञापन के लिए।'' श्रीराधा–''किसकी वार्ता?'' ''धनिष्ठा–''ब्रज चंद्रमा की।'' श्रीराधा–''वह किस प्रकार'' ''धनिष्ठा–'' श्रीकृष्ण अपने शत्रु रूपी कंदर्प राहु के भय से अभिभूत हो गये हैं। कारण वे असहाय तथा निरस्त्र हैं। मदन सहाय-सम्पन्न तथा अस्त्र-शस्त्रों से परिपूर्ण है। इसीलिए वह विपुल समृद्धि शाली होकर श्री कृष्ण को असह्य पीड़ा प्रदान कर रहा है। उसी मदन ने पुष्प बाण, कोयल, भृंग, मलयानिल एवं ऋतुराजादि सामन्त समूह के द्वारा श्री कृष्ण को घेर कर तुम्हारे कुण्डारण्य में आबद्ध कर रखा है। इसीलिए वे प्रबल पराक्रम सम्पन्न सैनिक की भाँति तुम्हारे संग लाभ की अभिलाषा कर रहे हैं। उसी प्रकार तुम्हारा संग लाभ करने से ही मदन के शत्रु-सामन्त गण अपने-अपने स्थान पर अनुकूल भाव से

श्रीराधा के प्रति धनिष्ठा की उक्ति।

Scanned by CamScanner

अवस्थान करने लगेंगे। हे राधे! उन्होंने तुम्हारी अनेक बार आपत्ति विपत्तियों से रक्षा की है। इस बार देव क्रम से वे स्वयं ही विपन्न हो रहे हैं। अतः तुम यदि अपने संग-दान द्वारा अपने प्रियतम का इस संकट से उद्धार नहीं करोगी, तब तुम्हें कृतघ्नता दोष से लिप्त होगा पड़ेगा। श्रीकृष्ण विविध वेश-भूषा धारण करके कुसुम शय्या पर शयन कर रहे हैं, एवं अन्य वार्ता को त्याग कर निरन्तर तुम्हारी ही वार्ता का आलाप कर रहे हैं। हे साध्वी! श्रीकृष्ण के रूप की बात और क्या कहूँ—वे नवजलधर कांति, गलित स्वर्ण सदृश पीत वसन पहने हुए हैं, उनके कर्णो में मकराकृति कुंडल शोभा पा रहे हैं, कुसुमादि सुगन्धित लेपन द्वारा श्री अंग विभूषित हैं, प्रफुल्ल कमल दलायत नयन, गले में स्वर्ण यूथिका की माला तथा मस्तक पर शिखि पुच्छ का चूड़ा शोभा पा रहा है। वे जैसे तारुण्यामृत के महासिन्धु हैं, उनमें सौन्दर्य ही जलराशि है, स्फूर्ति शील लावण्य ही उत्तुंग (ऊंची) तरंग माला है, मदनावेश ही घूर्णि है, वंशी ध्वनि ही वात्या (अनुकूल वायु) है, जिसके द्वारा ललनाओं का चित्त रूपी तृण गुच्छ तारुण्य सिंधु में निपतित होकर निमग्न हो जाता है। हे राधे! उन्हीं नव तरुण-धारी को अपनी तारुण्य शोभा समर्पण करके उसे सफल करो। वे अखिल ब्रज सुन्दरी गणों की कामना की निधि होने पर भी तुम्हारे ही प्रेम में उद्भ्रान्त, आर्द्र चित्त, कन्दर्प बाणों से आक्रान्त, तुम्हारे ही आश्रित, तुम्हारे विरह में मूर्छा-दशा तक को प्राप्त हो रहे हैं। अतएव अविलम्ब ही उनके निकट जाकर उनकी विरह ज्वाला की दूर करो।'' धनिष्ठा के वचनामृत पान कर श्रीमती की देह में औत्सुक्य (उत्साह), जड़ता आदि नाना प्रकार के भाव विकार प्रकाश पाने लगे। तथापि वे सन्देहाकुल चित्त से कहने लगीं—''हे धनिष्ठे! तुम नहीं जानती, पद्माली (चंद्रावली) के विरह में ही उनकी इस प्रकार की दशा का उदय हो रहा है।'' धनिष्ठा बोली—''हे राधे! वे चंद्रा की सखी शैव्या को प्रताड़ित करके तुम्हारे ही कुंड तीर पर आकर तुम्हारे ही विरह में कातर हो रहे हैं। इसके बाद और भी सुनो, वृंदा देवी उनके निकट जाकर दो कर्णिका के पुष्पमय कर्णभूषण उनको उपहार प्रदान कर शिल्प नैपुण्य से समलंकृत कुँज शोभा को दिखाते हुए तुम्हारा ही स्मरण कराकर तुम्हारे प्राण-कान्त को मदन-सुखदा कुँज में ले गयी हैं। श्री कृष्ण इस कुँज की शोभा को देखकर उत्कंठित-चित्त से वृंदा से बोले—''हे वृंदे! मेरे सौभाग्य क्रम से यदि तुम्हारी सखी श्री राधा यहाँ अचानक आयें एवं उनके साथ मेरी विलासावली सुसम्पन्न हो तभी यह कुण्डारण्य, यह मनोहर कुँज एवं शिल्प नैपुण्य की सार्थकता होगी। हे वृंदे! मैं पथ में शैव्या के साथ मिला था, तुलसी के मुख से यह बात सुनकर हो सकता है वे यहाँ न आयें। अतएव तुम सब में से कोई जाकर उन्हें यहाँ मेरी स्थिति की बात बताकर ले आओ।'' इसके बाद वे मुझसे बोले—''हे धनिष्ठे! श्री राधा के निकट जाकर मेरी दशा को उन्हें बताकर उन्हें तृष्णा व्याकुला करके शीघ्र यहाँ लाने के लिए ललिता को त्वरान्विता (शीघ्रतापूर्वक आना) करो।'' वृन्दा से फिर कहा—''हे वृन्दे! तुम गोष्ठ पथ में एक सखी को नियुक्त कर दो, जो मेरे अन्वेषण में किसी सखा के इधर आने पर प्रताड़ना वाक्य द्वारा उसे लौटा दे। गौरी तीर्थ के पथ पर एक अन्य सुचतुरा सखी को नियुक्त करो, जो शैव्यादि किसी सखी के यहाँ आने पर उसे वंचना करने में समर्थ हो।'' मधुमंगल की पके हुए केले फल के प्रति मग्न दृष्टि को देखकर परिहास के छल से वृंदा

Scanned by CamScanner

से बोले–"यह बटु कदली फल के लिए लोलुप हो रहा है, एक वृक्ष के फल से इसकी उदरपूर्ति नहीं होगी, दो वृक्षों के फल द्वारा इसकी उदरपूर्ति करो।" बटु ने कहा– "हे सखे! मैं लोलुप हूँ, यह सत्य है किन्तु वृंदा की प्रतीक्षा से मुझे क्या लाभ? तुम्हारे आदेश से ही मैं अपने मन के अनुसार फल का भोजन करके तृप्त हो सकता हूँ।" इस प्रकार वृन्दा ने श्री कृष्ण की आज्ञानुसार गोष्ठ पथ तथा गौरी तीर्थ पर दो सुचतुरा सखी नियुक्त कीं एवं श्रीकृष्ण भी तुम्हारे आगमन की अपेक्षा में पथ की ओर अपनी दृष्टि लगाये हुए हैं।

श्रीराधा द्वारा धनिष्ठा के मुख से श्री कृष्ण की यह सब वार्ता सुनकर निः संशय चित्त से उनके निकट जाने के लिए उत्सुका होने पर कुंदलता आकर सूर्य पूजा को जाने के लिए सखी सहित श्री राधा को त्वरान्विता (शीघ्रता) करने लगीं। तब श्री राधा श्री कृष्ण मिलन की विपुल तृष्णा से अपने बायें हाथ से कुंदलता का हाथ थामकर दांये हाथ से लीला कमल घुमाते हुए यात्रा करने लगीं। उनके आगे धनिष्ठा के साथ तुलसी दोनों बगल

श्रीराधा का अभिसार।

में ललिता तथा विशाखा एवं चारों ओर से अन्यान्य सखीगण उन्हें घेरकर श्याम अभिसार के लिए चल दीं। प्रिय नर्म सखी श्री रूप मंजरी ने अपने समान सखीगणों के साथ श्री राधा कृष्ण के श्री चरण सेवा के उपकरण तथा सूर्य पूजा के उपकरणादि लेकर श्री राधा के पीछे-पीछे यात्रा की। जावट के बाहर आकर श्री मती ने अपने मुख कमल से घूँघट हटाकर सामने दधिपात्र धारिणी सुमंगला (सधवा) स्त्री, दायीं ओर नीलकंठ पक्षी, ब्राह्मण, नकुल, मृगश्रेणी, सवत्सा धेनु तथा वृषभ आदि शुभ मांगलिक चिह्न समूहों को देखा। तब एक सरोवर में प्रस्फुटित कमल के ऊपर भ्रमर श्रेणी द्वारा घिरे हुए नृत्य शील दो खंजन का दर्शन करके श्री कृष्ण की चंचल अलकावली तथा दो नयन युक्त मुख कमल की भ्राँति से स्तंभित हो गई। यह सब शुभ लक्षण देखकर हर्ष से गर्ववती तथा नानाविध कुटिल हास्योल्लास का विस्तार

वन शोभा से श्रीमती को श्रीकृष्ण स्फूर्ति।

करने वाली प्रिय सहचरी गणों से घिरकर वे गजेन्द्र गमन की भाँति धीरे-धीरे कानन के समीप उपस्थित हुई। श्रीमती वन शोभा का दर्शन करके श्री कृष्ण उद्दीपन में मदनावेश से अधीरा हो गई। श्री कृष्ण का शरीर जैसे श्यामल तथा उज्ज्वल है। वन भी उसी प्रकार श्यामल वर्ण से प्रफुल्ल तथा उज्ज्वल है। वन में तिलक पुष्प की शोभा के समान श्रीकृष्ण के ललाट पर भी तिलक रचित है। वन श्रेणी जिस प्रकार विशाल अर्जुनादि वृक्षों से परिव्याप्त है, श्री कृष्ण भी उसी प्रकार विशाल अर्जुनादि सखाओं से घिरे हुए हैं। वन में नृत्यशील मयूर की जो शोभा है, श्री कृष्ण के मस्तक पर भी मयूर पुच्छ का चूड़ा है। वन जैसे पुन्नाग तथा चम्पक राशि से सुशोभित है, श्री कृष्ण भी पुन्नाग तथा चम्पक माला से समलंकृत हैं। वन में जैसे गुँजापुंज विराजित हैं, श्री कृष्ण भी गुँजामाला से शोभित हैं। वन वेणु शब्द (बाँस शब्द) से मनोहर है, श्री कृष्ण भी वेणु वाद्य से रमणीय हैं। अतः वन दर्शन को श्री राधा अपने प्रियतम का मनोहर अंग समझकर मदनावेश में विवशा हो गयीं।

इसी समय सामने स्वर्ण वेदिका के ऊपर स्वर्ण यूथी से आवृत शाखा के आगे नृत्य परायण मयूर युक्त तमाल वृक्ष को देखकर वे उन्हें अन्य नायिका द्वारा आलिंगित श्रीकृष्ण समझकर एवं प्रेम ईर्ष्या से भरकर सद्

Scanned by CamScanner

असद् विवेचना शक्ति खोकर शिवधनु के समान भ्रू धनु घुमाते हुए धनिष्ठा से बोलीं—"अयि धनिष्ठे! "यह क्या है?" धनिष्ठा बोलीं—"कहाँ क्या है?" श्रीराधा—"सामने देखो।" धनिष्ठा "यह तो वन है।" श्री राधा—"इस वन में यह क्या है?" धनिष्ठा—"यह तो सभी वन्य वस्तु हैं, और कुछ नहीं।"

श्री राधा की प्रेम भ्राँति।

श्रीराधा—"सामने यह जो धूर्त शिरोमणि अपूर्व नृत्य कर रहा है, उसे क्या नहीं देख पा रहीं हो? हे धूर्ते! तुमने क्या आंखें बंद कर रखी हैं? तब ललितादि सखियों से बोलीं—"ओहे सखीगण! शठ राज नट-नटी युगल का एक ही साथ सुखप्रद अद्भुत नृत्य तो देखो! उसी शठ द्वारा प्रेरित यह धनिष्ठा छल दूत्य नामक नृत्य विषम में पांडित्य अर्जन कर उसी शठ नृत्य में तुम सब को सभासद बनाने के लिए ही यहाँ ले आयी है।" यह सुनकर धनिष्ठा हँसती हुई श्रीमती से बोलीं—"हे साध्वी! स्वयं तुम ही अपने आश्चर्यजनक नृत्य में हम सबको सभासद बना रही हो। हे सखीगण! "आओ हम सब श्री राधा के इस अद्भुत नृत्य का विवरण श्री कृष्ण को बता दें।" धनिष्ठा की बात सुनकर सखीगण को हँसते देखकर श्रीमती पुनः सामने निरीक्षण कर स्वर्ण यूथी आवृत तमाल लता का दर्शन कर अपनी प्रेभभ्राँति के कारण लज्जिता हो गयीं।

इसी प्रकार श्री राधा प्रियतम की मदनरणवाटिका नामक केलि कुसुम कुँज में स्थित सूर्य प्रतिमा के निकट उपस्थित होकर भक्ति भाव से प्रणाम करके अपने मनोज्ञ वर की प्रार्थना करने लगीं—"हे देव! आपकी कृपा से निर्विघ्न रूप से श्री गोविन्द पाद पद्म का संग लाभ हो।" तत्पश्चात् श्रीमती प्रतिमा के नयन तथा वदन को प्रफुल्लित देखकर प्रशन्नता का अनुमान कर पुनः प्रणाम कर सखियों के साथ उस कुँज से निकल आई। श्री ललिता के आदेश से दो दासी सूर्य पूजा के उपकरणादि के साथ वन देवियों से परिवृत होकर उसी वाटिका में उपस्थित हुई।

सूर्य से अभीष्ट वर की प्रार्थना।

तब मृगमद मिश्रित इन्दीवर के समान दिग् विदिग् में दूर तक फैली हुई श्री कृष्ण की अति उत्कृष्ट अंग परिमल (सुगंध) धारा को प्राप्त करके श्री राधा अतिशय उन्मत्त हो गयीं एवं भृंगी के समान उधर ही उड़कर जाने की इच्छा करने लगीं। समीपवर्ती वन भूमि को आप्लावनकारी एवं केशर लिप्त पद्म गंधजयी श्री राधा की तनुरूपा सुरधनी की अमृतमय निर्मल तरंग धारा का आघ्राण करके श्री कृष्ण भी पुलकित होकर एवं भृंग के समान उड़कर उनके पास जाने की इच्छा करने लगे। श्री राधा की अंग परिमल (सुगंध) की प्राप्ति से उत्कंठित श्रीकृष्ण ने उन्हें दूर समझकर वृन्दा को उन्हें शीघ्र लाने के लिए भेज दिया। श्री राधा कुँजेरा नामक स्थान में वृन्दा को देखकर उसे मूर्तिमती अभीष्ट सिद्धि के समान समझने लगीं। श्रीकृष्ण के कर्ण भूषण दो नील पद्म जो श्री कृष्ण की अंग गंध से भ्रमर कुल को अंधीभूत कर रहे थे, उन्हें वृंदा देवी द्वारा श्रीमती के हाथ में समर्पण करने पर श्रीकृष्ण की गंध अनुभव से श्री राधा के अंग में विविध भाव विकार प्रकाश पाने लगे। उन्हें यत्न पूर्वक संगोपन कर वृंदा के संग आलाप करने में व्यस्त हुई।

श्रीराधा बोलीं—"हे वृन्दे! तुम कहाँ से आ रही हो?" वृन्दा—"श्रीकृष्ण पाद मूल से।" श्री राधा—"वे

Scanned by CamScanner

कहाँ हैं?'' वृन्दा–''तुम्हारे कुंड के तटवर्ती कानन में।'' श्रीराधा–''वे क्या कर रहे हैं?'' वृन्दा–''नृत्य शिक्षा ले रहे हैं।'' श्रीराधा–''नृत्य शिक्षा का गुरु कौन है।'' वृन्दा–''तुम्हारी ही मूर्ति दिग्-विदिग् की प्रत्येक तरु लता में स्फूर्ति शील होकर उन्हें अपने पीछे-पीछे उत्तमा नट की भाँति नचा रही है।'' श्रीराधा–''वृन्दे! तुम नितांत ही भ्राँता हो रही हो।

श्रीराधा तथा वृन्दा प्रशंग।

यह मूर्ति मेरी नहीं है। पद्माली (चन्द्रावली) की प्राप्ति के लिए उसकी अंग परिमल (सुगंध) धारा युक्त शैव्या रूपी चक्रवात द्वारा भृंग के समान श्रीकृष्ण भ्रमण कर रहे हैं।'' वृन्दा बोलीं–''राधे! चक्रवात रूपधारी तृणावर्त के विनाश में कुशल श्री कृष्ण ने वंचना रूपी वायु द्वारा चंद्रावली के साथ शैव्या को उड़ाकर गौरी तीर्थ के लिए भेज दिया है।'' तब श्री राधा अपना अभिप्राय गोपन करते हुए बोलीं–''वृन्दे! इन बातों से मेरा क्या प्रयोजन है? सासु माता के आदेश से हम सब श्याम कुंड में पाताल गंगा के जल में स्नान करके सूर्यदेव की पूजा समापन करके गृह के लिए गमन करेंगी। जो हो वृन्दे! तुम कहाँ जा रही हो?'' वृन्दा–''तुम्हारे ही श्रीचरण पद्म के समीप में।'' श्री राधा–''किसलिए?'' वृन्दा–"तुम्हारे राज्य के अद्भुत मंगल कथन के लिए।" श्रीराधा–"वह अद्भुत मंगल क्या है?'' वृन्दा–"माधव (बसन्त ऋतु के मिलनार्थ में श्री कृष्ण) के सुंदर वैभव द्वारा श्री वृन्दावन अलंकृत होकर तुम्हारी दृष्टिपात रूपी करुणा की कामना कर रहा है।'' यह सुनकर कुंदलता बोलीं–''वृन्दे!

वृन्दा के साथ सखियों का हास्य-परिहास।

तुम अपना कपट दौत्य त्याग करो, इसकी सास जटिला ने श्री कृष्ण पर महा संदेह करके सूर्य पूजा के लिए इसे मेरे हाथ में समर्पण किया है। मैं श्याम कुंड स्थित पाताल गंगा के जल में इसे स्नान कराकर सूर्य पूजा के लिए सूर्य वेदिका पर संगोपन पूर्वक ले जाऊँगी। श्रीकृष्ण यदि श्याम कुंड पर होंगे, तो हम सब इसे मानस गंगा के जल में स्नान कराकर ले जायेंगी। कारण जटिला के आदेशानुसार जिधर श्री कृष्ण की गंध भी विद्यमान है, उधर इसको नहीं ले जाऊँगी।'' वृन्दा बोलीं–''कुन्दलते! श्रीकृष्ण के भय से मानस गंगा पर क्यों जाओगी? इस समय श्रीकृष्ण मदन व्यथा से उद्घूर्णित चित्त होकर राधाकुंड तीर पर विराज रहे हैं। तुम सब बासन्ती वन के पथ से होकर स्वच्छंद पूर्वक जाकर श्याम कुंड के रसमयी नीर में स्नान करो–वे तुम सबको देख भी नहीं पायेंगे'' यह सुनकर ललिता बोलीं–''कुंदलते! तुम साहसी स्त्री होकर भी अपने देवर के भय से क्यों मुग्धा की भाँति आचरण कर रही हो?'' श्री राधा बोलीं–''सखी! हम सब मेरे कुंड पर जायेंगी, वन में माधवीय (बासन्ती, श्रीकृष्ण संबंधीय पक्ष में भी) शोभा दर्शन कर स्नान करके पुनः आगमन करेंगी, कृष्ण हम सबका क्या कर लेंगे? वृन्दे तुम शीघ्र जाओ हम सब स्त्री जाति हैं, हम सब के यथेष्ट क्रीड़ा स्थान से उसे बाहर कर दो। पुरुषों के लिए यह स्थान दर्शन या वहाँ ठहरने के लिए अति अयोग्य है। वे ग्वालबाल हैं, उन्हें उस स्थान पर रहने का क्या प्रयोजन है?'' वृन्दा बोलीं–''राधे मैं अति मृदुस्वभावा हूँ, श्रीकृष्ण अति प्रचण्ड हैं। मैं उन्हें वहाँ से कैसे निकाल सकती हूँ'' तुम प्रचण्डा हो, अतः तुम्ही उस शिखंडी को वहाँ से निकाल पाओगी।'' तब कुंदलता बोलीं–''वृन्दे! तुम गलत समझ रही हो, चंडी (राधा) क्या पशुपति

Scanned by CamScanner

(कृष्ण) को निकालेगी? चंडी तो पशुपति की अर्धांगिनी है।'' यह सुनकर वृंदा बोलीं—हे सखियो! यह सुभद्र श्री (शोभन रूपी) कुंदलता ही मधुसूदन (भ्रमर के पक्ष में श्री कृष्ण) द्वारा संभोग्या होकर पुन्नाग वृक्ष का (पक्ष में पुरुष श्रेष्ठ श्री कृष्ण का) आश्रय करने की अभिलाषिणी हो रही है।'' यह बात सुनकर सखियों के हास्य करने पर वृंदा श्रीराधा को कृष्ण मिलन के लिए अतिशय उत्कंठिता देखकर सखियों से बोलीं—''हे सखिगण! पिपासित चातक (श्री कृष्ण) द्वारा कादम्बिनी (राधा) के दर्शन रूपी अमृत-पान के लिए अधीर होने पर वायु श्रेणी (सखीगणों) की मेघालय को लाकर चातक की तृष्णा शांति कराना क्या कर्तव्य नहीं है? अतएव तुम सब स्वच्छंद रूप से कृष्ण कुंड पर जाकर मानस पावन घाट पर स्नान करके मित्र (सूर्य, पक्ष में कृष्ण) पूजा करो। मुझे यहाँ कुछ प्रयोजन है, अतः मैं यहीं कुछ क्षण रहूँगी।''

वृंदा की बात सुनकर श्रीराधा सह सखीगण के वहाँ से चले जाने पर सुचतुरा वृंदा ने वेगवती दो सारी को वृत्तान्त जानने के लिए नियुक्त किया। सूक्ष्मधी सारी को जटिला की चेष्टा जानने के लिए जावट में तथा शुभासारी को चंद्रावली का कार्य जानने के लिए गौरी तीर्थ भेजा। इसके बाद वे सेवा संभार-संस्कार गृह में आकर के युगल के सेवोपयोगी द्रव्य समूह को देखकर आनन्दपूर्वक वन देवीगणों की प्रशंसा करने लगीं। उन्होंने परिचारिकाओं के द्वारा युगल की बसन्त केलि, हिन्दोला लीला, मधुपान, वन-विहार, रतिक्रीड़ा, जल केलि के लिए पारस्परिक वेश रचना के द्रव्यादि एवं वन्य भोजन, शयन, शुकसारी का पाठ तथा अक्ष क्रीडादि (चौसर) विविध लीला की सामग्रियों को यथास्थान संरक्षित कर के रखवाया। तत्पश्चात् वृंदा ने श्री राधा कृष्ण की आगमन वार्ता को लीला परिकर स्थावर जंगमादि को बताकर उन्हें आनंदित एवं त्वरान्वित किया। तब युगल किशोर के परस्पर संदर्शन लाभ रूपी पूर्ण चंद्र द्वारा जो भाव विकार रूपी सुधा सिन्धु उच्छलित होगा, उसमें स्नान करने के लिए शीघ्र ही निकटवर्ती किसी कुँज में छिप गई। इसी अवसर पर नान्दी मुखी भी उनकी लीला दर्शन की लालसा से समुत्सुक चित्त से वहाँ आकर वृंदा के साथ अवस्थान करने लगीं।

तत्पश्चात् श्री कृष्ण बकुल वृक्ष की दोनों श्रेणियों के मध्य पथ से होकर सखियों द्वारा आवृता प्राण बल्लभा को साक्षात रूप से आते देखकर श्रीमदनावेश में विश्वास नहीं कर पाये, कारण कि वे इसके पूर्व भी अनेक बार स्फूर्ति शीला कान्ता को साक्षात कान्ता समझकर प्रताड़ित हुए थे। इधर श्री राधा भी कृष्ण दर्शन से चमत्कृता होकर तथा विविध भाव विकारों से विवशा होकर श्री कृष्ण की उपस्थिति निश्चय नहीं कर पायीं। कारण कि इसके पहले भी वे तमाल वृक्ष को भ्राँति से श्री कृष्ण समझकर सखियों के परिहास करने से अतिशय लज्जिता हुई थीं। तब श्री राधा तथा श्री कृष्ण परस्पर की स्वभाव सिद्ध अनन्तगुण राशियों के अनुभव से आक्रान्त चित्त होकर पारस्परिक दर्शनानन्द में मत्त हुए एवं दोनों आपस में वितर्क करने लगे। श्री कृष्ण विचार करने लगे—''क्या ये कांति की कुल देवी हैं, अथवा तारुण्य लक्ष्मी हैं, अथवा देह धारिणी माधुरी सम्पद हैं, अथवा ये लावण्य वन्या हैं किंवा आनंद तरंगिनी हैं, अथवा अमृत धारा का प्रवाह हैं, अथवा मेरी सर्वेन्द्रियों का

श्रीश्रीराधा-कृष्ण का पारस्परिक दर्शन एवं वितर्क।

Scanned by CamScanner

आनंद विधान करते हुए वही मेरी कान्ता ही आगमन कर रही हैं? अहो! मेरा क्या इस प्रकार सौभाग्य होगा जो मैं इस निर्जल स्थान पर प्रियतमा का दर्शन करके धन्य हो पाऊँगा?'' श्रीराधा भी अपने मन में विचार करने लगीं- ''अहो! क्या ये तमाल तरु हैं, अथवा नव जलधर हैं या इन्द्रनील मणि के अंकुर हैं अथवा अंजनमय पर्वत के शिखर हैं या मत्तभृंग कुल, अथवा यमुना प्रवाह, नीलकमल-पुँज अथवा ब्रज सुंदरी गणों की मूर्तिमान अपांग राशि?'' आगे विचार करने लगीं—''अहो क्या ये कंदर्प है? नहीं वह तो शरीर विहीन है। तब क्या ये रसराज है? नहीं वह तो धर्मी नही है, धर्ममात्र है। तब क्या ये अमृत रस सिन्धु है? नहीं वह तो स्थावर है। तब क्या ये मेरे प्रियतम ही विराज रहे हैं? हाय! क्या मैं इतनी सौभाग्य वती हूँ।''

इसके बाद श्रीमती विशाखा से बोलीं—''हे सखी विशाखे! सामने ये जो मेरे नेत्र, भृंग के पद्म स्वरूप विराज रहे हैं—क्या ये मेरे ही कान्त हैं? अथवा यह मेरी भ्राँति है सत्य कहो।'' तब विशाखा पुलकित देहा, गदगद रुद्ध कंठी तथा सखियों के परिहास से चंचल नयना श्री राधा से बोलीं—''हे सुमुखी! तुम जिन्हें सामने देख रही हो, वे ही तुम्हारे ललाट के उत्कृष्ट कस्तूरी तिलक तुम्हारे उरोज युगलों के पत्र भंग, चिबुक की कस्तूरी बिन्दु, दोनों नेत्रों की अंजन शोभा, दोनों कर्णो के इन्दीवर, केश-कलापों के अवतंस (शिरोभूषण), ये ही तुम्हारे सौभाग्य-राशि रूप कान्त विराजमान हैं। हे सखी! तुम उनके निकट गमन करो।'' इस प्रकार श्री राधा कृष्ण परस्पर के दर्शन से विशुद्ध प्रेम द्वारा समुत्पन्न भाव-समूह से विक्षुब्ध तथा उल्लास युक्त हो विवश अंग होकर अवस्थान करने लगे। परस्पर भाव विह्वल दशा में बाह्य-वृत्ति से विरहित होकर भी परस्पर की दर्शन लालसा तथा वाक्यालाप की वासना ने उन दोनों को चंचल तथा विविध भाव भूषाओं से भूषित कर दिया। सामने श्री कृष्ण को देखकर श्री राधा की गति कुटिल तथा स्थगित हुई, वक्र मुखमंडल नील वसन द्वारा किंचित आवृत हुआ एवं चंचल-तारका विशिष्ट दोनों नयन थोड़ा वक्र होने से वे विलासाख्य अलंकार * से अलंकृता होकर श्री कृष्ण का अपार आनन्द वर्धन करने लगीं। श्रीकृष्ण मिलन के लिए अभिलाषवती होने पर भी श्री राधा को औत्सुक्य रूपा सखी आगे से, लज्जा रूपा सखी पीछे से, वामता रूपा सखी बांये से, स्वगृहाभिमुख एवं अवहित्था (एक प्रकार का लज्जा गौरव युक्त व्यभिचारी भाव) रूपा सखी पुष्प चयन के लिए दायें से आकर्षण करने लगीं। एक ही साथ विरुद्ध-भाव समूहों से चंचल-चित्ता होकर भी वे श्रीहरि का अपार आनन्द विधान करने लगीं। लज्जा से उनका ग्रीवा देश वक्र हुआ, चरण एवं कटि की मनोहर भंगी प्रकाशित हुई। भ्रूधनू के चांचल्य से मदन धनू का गर्व भी चूर्ण हुआ। इस प्रकार ललितालंकार (1) से भूषिता

श्रीकृष्ण के दर्शन से भाव भूषाओं से भूषिता श्रीराधा।

---

* गतिस्थानासनादीनां मुखनेत्रादिकर्मनाम्। तत्कालिकस्त वैशिष्ट्यं विलासः प्रियसंगजम॥" उ0 नी0। अर्थात् गतिस्थान आसनादि एवं मुख तथा नेत्रादि के कर्मो से प्रिय संगम के लिए जो तात्कालिक वैशिष्ट्य है उसे विलास कहते हैं।

(1) ''विन्यासभंगिरंगाणां भ्रूविलासमनोहरा। सुकुमारा भवेद्यत्र ललितं तदुदाहृतम्।।'' (उ0 नी0) अर्थात- जिससे अंगों की विन्यास भंगी सौकुमार्य तथा भ्रू विक्षेप का मनोहारित्व प्रकाश पाता है, उसे ''ललित'' कहते हैं।

Scanned by CamScanner

होकर श्रीमती श्रीकृष्ण की परम प्रीति सम्पादन करने लगीं। तब श्री कृष्ण श्री राधा से बोले–"हे प्रिये! अभिसार की शीघ्रता से तुम्हारे अंग के भूषण बिखर रहे हैं- आओ, मैं वेश रचना कर दूँ। यह कहकर उनके श्री राधांग स्पर्श के लिए उत्सुक होने पर श्रीराधा अधोमुख से संकुचिता तथा चंचलाक्षी होकर विभ्रमालंकार (2) से भूषिता होकर प्रियतम की तुष्टि विधान करने लगीं। तब लज्जा, भय, वाक्य तथा अवहित्था द्वारा बलपूर्वक आकृष्टा होकर कुसुम चयन के लिए वक्र भाव से जाने पर उत्कंठित चित्त से श्री हरि ने पथ रोक लिया। तब हृदय में आनन्द तथा बाहर कोप के कारण उनके वाष्पाकुल नयन अरुण वर्ण, चंचल तथा रसपूर्ण उल्लसित हुए। व्यक्त श्रृँगार सूचक भाव विशेष से अधर कंपित हुआ, दोनों भ्रू कुटिल हुए तथा मृदुमंद हास्य-रेखा फूट उठी। इस प्रकार श्री राधा का किल-किंचित भाव (3) युक्त वदन दर्शन कर संभोग से भी कोटि गुणा अधिक आनन्द श्री कृष्ण उपभोग करने लगे जो वाक्य के लिए अगोचर है। तत्पश्चात् श्री राधा द्वारा पुष्प ग्रहण के छल से निकटस्थ पुन्नाग वृक्ष की मुकुलित शाखा पर सम्भ्रम सहित अपनी बाहु लता उठाने पर वह पुन्नाग (उत्कृष्ट कलिका युक्त पुन्नाग वृक्ष तथा उत्कंठा से व्याकुल पुरुष श्रेष्ठ भी श्रीकृष्ण दोनों के ही अर्थ में) प्रफुल्लित हो उठा। (4) तारुण्यावस्था रूपी अध्यापक के पास से श्री श्री राधा कृष्ण कामरूप न्यायादि शास्त्र अध्ययन करने के सहाध्यायी होने पर भी परस्पर विजय की इच्छा से जो विवाद प्रारम्भ हुआ- यह कोई विचित्र नहीं है, क्योंकि नैयायिक छात्र वृन्द अध्यापक के साथ भी विवाद करते हैं। श्री कृष्ण बोले–"यह कौन है जो मेरे वन में पुष्प चयन कर रही है?" "श्री राधा "कोई नहीं, मै हूँ।" श्री कृष्ण-

श्रीराधा का कुसुमचयन एवं श्रीश्रीराधाकृष्ण की परिहासोक्ति।

---

(2) "वल्लभप्राप्तिबेलायां मदनावेश-संभ्रमात्। विभ्रमो हारमाल्यादि भूषास्थानविपर्यय:।।" (उ0 नी0) अर्थात–प्रियतम की प्राप्ति के समय मदनावेश के संभ्रम (हड़बड़ी) के कारण हार माल्यादि स्थान व्यतिक्रम कर लेते हैं उसे विभ्रलांकार कहते हैं।)

(3) गर्वाभिलाषरुदितास्मितासूया भय क्रुधाम्। संकरीकरणं हर्षादुच्यते किलकिंचितम्।। (उ. नी.) अर्थात- गर्व, अभिलाषा, रोदन, हास्य, असूया (ईर्ष्या), भय तथा क्रोध। हर्ष के लिए एक ही समय इन सात प्रकाश को "किल-किंचित" कहते हैं।

(4) इस मध्याह्न लीला में इसके बाद सखियों के साथ चिद् विलासी मिथुन श्री श्री राधा कृष्ण का महारहस्यमय विलास वर्णित होगा। जो मंजरी भावाविष्ट रागानुगीय-साधक महात्मा गणों के लिए ही आस्वाद्य भाव संपत्ति है। श्री राधा माधव अप्राकृत सुदिव्य-नायक-नायिका हैं। इनका विलास प्राकृत जगत के नायक-नायिका के समान वर्णित होने पर भी यह सच्चिदानंद एवं प्रेमरस का महातत्वमय मिलन-माधुरी ही समझना होगा। शक्कर द्वारा तैयार किया निम्बफल का शरबत जैसे कड़वा नहीं लगता मीठा ही लगता हैं क्योंकि मीठी वस्तु ही उसका उपादान कारण है। उसी प्रकार श्री कृष्ण का विग्रह नराकृति होने पर भी सत् चिद् आनंद ही उनका उपादान कारण है एवं श्री राधादि ब्रज सुन्दरी गणों की आकृति नारी के समान होने पर भी प्रेम का परम सार महाभाव ही उनका उपादान कारण है। अत: उनके पारस्परिक मिलन से जड़ीय विश्व की माया द्वारा विखंडित जीव के भावों से कोई सम्पर्क नहीं हो सकता। यह विषय सहज ही अनुमेय (अनुमान के योग्य) है। अतएव यह परम रसमयी लीला प्राकृत-नायक-नायिका के समान दृष्टि गोचर होने पर भी इसके अन्त: स्थल में फल्गुधारा की भाँति महाप्रेम रस का प्रसवन (श्रोत) प्रवाहित हो रहा हे। इसके प्रति लक्ष्य रखकर ही अपने सिद्ध स्वरुप का अभिमान अंत:करण में वहन करते हुए परम भक्ति भाव चित्त से ही इस लीला माधुरी का आस्वादन रागानुगीय साधक गणों को करना होगा। जड़ीय स्त्री पुरुष के भाव की प्रबलता को लेकर इस लीला का आस्वादन करने का प्रयास करना विडंबना मात्र ही है।

Scanned by CamScanner

"तुम कौन हो?" श्री राधा–"क्या तुम मुझे नहीं जानते हो?" श्री कृष्ण–"तुम कौन हो यह तो नहीं जानता।" श्रीराधा–"जब नहीं जानते तो यहाँ से अन्यत्र चलो जाओ।" श्री कृष्ण–मैं पुष्पप (पुष्प रक्षक) हूँ कहाँ जाऊँ?" श्री राधा–"(पुष्पप शब्द का भ्रमर अर्थ ग्रहण करके) भ्रमरी के निकट जाओ।" श्रीकृष्ण–"तुम पुष्प के प्रति लुब्धा हो, अतः तुम ही वह भ्रमरी हो।" यह कहकर श्री राधा के निकट गमन करते हुए बोले–"तुम्हे परम सुन्दरी, सत्कुल वधू तथा साध्वी होकर भी परसम्बन्धीय पुन्नाग तरु के सुमन (पक्ष में उत्तम पर पुरुष का श्रेष्ठ मन) को हरण करने में भी लज्जा नहीं आती–यह आश्चर्य नहीं है। कारण कि स्वेच्छापूर्वक वन भ्रमणकारिणी को लज्जा कहाँ? हे सुन्दरी! इस वन के अधिपति महाराज कंदर्प हैं, यह बात सभी जानते हैं। उन्होंने मुझे इस वन रक्षा का भार दिया है। तुम तारुण्य रूपी दोनों रत्न घट के गर्व से गर्विता होकर वन रक्षक मेरे सामने ही इस वन को लूट रही हो। तुम्हारे इन तारुण्य दोनों रत्न घट का हरण कर लूँगा, तब और अधिक गर्व नहीं रहेगा। यदि कहो कि–"हम सब प्रतिदिन पुष्प चयन करती हैं, कभी भी किसी वन रक्षक को नहीं देखा एवं स्वप्न में भी कंदर्प महाराज का नाम नहीं सुना। तुम क्या प्रलाप वाक्य बोल रहे हो?" इसके उत्तर में कहता हूँ। सुनो–मैं एवं प्रबल प्रतापी महाराज कंदर्प चक्रवर्ती जो वन के राजा हैं, किसका साहस है कि इसमें प्रवेश कर सके। इस प्रकार अभिमान में मत्त होकर ही इतने दिनों तक वन रक्षा की ओर ध्यान न देकर स्वच्छंद रूप से गोचारण करता-फिरता हूँ–इसीलिए तुम इतने दिनों तक पुष्पादि धन का हरण करने में सक्षम हुई। आज भाग्य क्रम से तुम्हें पकड़ पाया हूँ, आज तुम्हारे अपराध के विचार के लिए जब राजा के सामने तुम्हें ले जाऊँगा–तब जिस कंदर्प चक्रवर्ती का नाम तुमने स्वप्न में भी नहीं सुना, उसका साक्षात दर्शन करोगी। यदि कहो–"मैं अज्ञात में ही अपराध कर बैठी हूँ, तुम दयामय हो, अपने कारुण्य गुण से इस बार छोड़ दो" इसके उत्तर में कहता हूँ–"हे सुन्दरी! तुम्हें छोड़ने की शक्ति मुझमें नहीं है। तुमने केवल कुसुम ही चयन किये हैं ऐसी बात नहीं है, वन की प्रजागण का सर्वस्व भी हरण किया है। प्रजागणों ने अपना सर्वस्व हरण होने से राजा के निकट तुम्हारे निखिल कार्य-कलाप को विज्ञापित किया है! यह सुनकर महाराज ने तुम्हारे दंड का भार मुझे समर्पण करते हुए तुम्हें देखना चाहा है। अतः मैं निरुपाय हूँ। हे सुमुखी! तुम्हारी तनुरूपा चौरी ने वन की प्रजागण का जो सर्वस्व हरण किया है उसका विवरण कहता हूँ सुनो–तुम्हारे चरण तल द्वारा नवीन किशलय तथा कमलों की शोभा संपद, नख द्वारा दर्पणों की, गमन द्वारा मत्त हाथी तथा हंस की, जंघा द्वारा करिशावक शुंड तथा स्वर्ण कदली की, जानू द्वारा कनक संपुट की, नितम्ब द्वारा कंदर्प राज का रथ, कटि द्वारा सिंह, नाभि द्वारा अमृत ह्रद, रोमावली द्वारा भुजंगी, उदर से अश्वत्थ पत्र, वक्ष-स्थल से मदन की शय्या, स्तन द्वारा कमल कलिका, बिल्वफल तथा हस्ती कुंभ द्वय की शोभा हरण कर रही हो। हस्त द्वारा मृणाल तथा कंदर्प के पाश की, करतल से अशोक के उत्तम पल्लव की, अंगुलियों के द्वारा चम्पक कलिका समूह, चिबुक कांति द्वारा तड़ित, घुँघराले बालों द्वारा- भृंग समूह, दंत पंक्ति द्वारा मुक्ताहार, एवं सर्वांग कांति द्वारा स्वर्ण गोरोचना

ब्याजस्तुति से श्रीराधा की अंग शोभा वर्णन।

Scanned by CamScanner

तथा हरिताल आदि की, नासिका द्वारा शुक, कंठ स्वर से कोकिल, नृत्य द्वारा मयूर, नेत्र चांचल्य से भृंगी, नेत्र द्वारा मत्स्य, मृग, चकोरी, खंजन तथा नील कमल की कटाक्ष द्वारा मदन के तीक्ष्ण बाण की, भ्रू द्वारा कंदर्प के धनू, कर्ण युगल द्वारा धनू की डोरी, ओष्ठाधर द्वारा बान्धुली पुष्प, पार्श्वस्थ दंतों से पके हुए अनार बीज की, कंठ द्वारा शंख की, केशर के द्वारा चमरी, त्रिवली द्वारा सूक्ष्म यमुना लहरी की। इस प्रकार तुमने अपने अंग प्रत्यंगों के द्वारा प्रजा का सर्वस्व अपहरण किया है।

श्री राधा कृष्ण की इस प्रकार परिहास वाणी तथा ब्याज स्तुति से अपने अंग समूह के सौंदर्य कथन रूपी कर्णामृत का आस्वादन करके कष्ट के साथ सात्विक विकार समूहों को गोपन करते हुए बोलीं—" ओहे! कौन रमणी है जो तुम्हारे समान कामी पुरुषों की यह सब असत्य बात सुनेगी? अतएव मैं यहाँ से जा रही हूँ- यह कहकर श्री राधा प्रियतम श्री कृष्ण के प्रति अवज्ञा प्रकाश करते हुए बिब्बोक * नामक अलंकार से अलंकृता होकर द्रुतगति से पद संचार करती हुई गमन करने लगीं। शीघ्र ही श्री कृष्ण ने—"हे धूर्ते! मेरी अवज्ञा करके कहाँ जा रही हो"—यह कहकर श्री राधा के वस्त्रांचल को धारण करने से श्री मती नाना भावालंकारों से भूषिता होकर प्रियतम को अपार आनंद सिंधु में निमग्न करने लगीं! तत्पश्चात् उन्मदान्धा श्री राधा हास्य वदन श्री कृष्ण के कर-धृत वसनांचल को आकर्षण करके कटाक्ष बाण से बिद्ध करते हुए बोलीं—"हे कृष्ण! प्राकृत तथा अप्राकृत जगत में मधुर, सरस तथा रम्य जितनी भी वस्तुएं हैं, अपनी महती तनुरूपा चौरी द्वारा उन सबकी शोभा का अपहरण करके इस जगत में तुम साधु हुए हो एवं अन्यों पर चौरापवाद लगा रहे हो! वस्त्र हरण के दिन कुमारिका गण ने तुम्हारे द्वारा वस्त्र हरण किये जाने पर नग्न वेश में वस्त्र प्राप्ति के लिए अपने मस्तक पर अंजली बंधन पूर्वक तुम्हारा स्तव किया था। वह स्तव ही तुम्हारे साधुत्व एवं धार्मिकता की साक्षी दे रहा है। तुम निखिल सद्गणों से विभूषित राजपुत्र हो, परम सुन्दर तथा अभिनव तरुण वयस्क भी हो, ब्रज में विवाह के योग्य पात्री भी बहुत हैं, किन्तु तुम्हारे इस परस्त्री लाम्पट्य दोष के कारण कोई भी तुम्हें कन्या दान नहीं करता है एवं कोई कन्या भी तुम्हें वरण करने की इच्छा नहीं करती है। इसी दु:ख से ही तुम तुरङ्गम-ब्रह्मचर्य का अवलम्बन करके स्वार्थ साधक होकर कुमारी तथा साध्वी गणों के धर्मनाश के लिए दीक्षित हुए हो। क्या आश्चर्य है। तुमने कभी भी इस वन में पुष्पादि वृक्षों का एक अंकुर मात्र भी नहीं रोपा है, फिर भी तुम वन के अधिकारी हो एवं असंख्य गोचारणों के द्वारा तरु समूह को निर्मूल करते हुए भी तुम वन के रक्षक हो, यह बात ही सत्य है कि मेरी सखी वृन्दा द्वारा यह वन परिवर्धित होने से इस वन का नाम "वृन्दावन" है एवं विधाता ने रत्न समूहों सहित इस वन को राज्याभिषेक करते हुए मुझे समर्पित किया है— यह बात सर्वत्र-सुप्रसिद्ध होने पर भी इस वन का राजा कंदर्प है तथा तुम रक्षक हो यह भी सत्य है!!" हा कष्ट! दूसरों के स्थान पर अपना स्वत्व स्थापन करके क्या

श्रीराधा का परिहासामृत रस।

* " इष्टेऽपि गर्वमानाभ्यां बिब्बोक: स्यादनादर:।" अर्थात-गर्व तथा मान निमित्त काम्य वस्तु के प्रति अनादर को ही बिब्बोक कहते हैं। (उ:नी:)

Scanned by CamScanner

तुमने लज्जा को तिलांजली दे दी है? हे ब्रह्मचारिन! यहाँ हम सब सूर्य पूजा के लिए कुसुम चयन करती हैं, स्त्रीगणों के स्वच्छंद विहार स्थान इस पुष्प वाटिका में तुम क्यों हो? तुम गायों के रखवाले हो- गोचारण के लिए शीघ्र ही माठ (गोचारण भूमि) में चले जाओ।'' थोड़े हास्य रुचिकर सुशीतल एवं चंचल नयन कुरंग (हरिण) के संयोग से रम्य श्रीराधा का वदन सुधाकर विगलित हुआ, इस प्रकार परिहासामृत रस श्री कृष्ण चकोर को पान करते हुए देखकर सखियों की नयन चकोरी ने परम तृप्ति लाभ की।

तत्पश्चात् श्री राधा श्री कृष्ण स्पर्श से भीता के समान गद्रन को वक्र करते हुए कटाक्ष रूपी नील कमलों द्वारा प्रियतम को भूषित करने लगीं एवं अस्पष्ट भर्त्सना गर्वित वाक्य से अवज्ञा प्रकाश करते हुए प्रियतम के निकट से कुछ दूर चली गयीं श्री कृष्ण ने श्री राधा की तनुरूपा आश्चर्य- नर्तकी के नृत्यावलोकन से अतिशय लालसा से उच्छलित होकर द्रुत पद से जाकर चंचल हस्त द्वारा प्रियतमा के चंचल कंचुकांचल को धारण किया। तब श्रीमती भ्रू धनू वक्र करके आरक्त नयनों से कटाक्ष बाण निक्षेप करते हुए शीघ्र प्रियतम के धैर्य रूपी कवच को चूर्ण कर लीला कमल द्वारा श्रीकृष्ण को बारम्बार ताड़ना करने लगीं। श्री कृष्ण की मूर्ति विश्वाश्रय होने पर भी श्री राधा के क्रीड़ा कमल के प्रहार जनित सुख का स्थान उससे और नहीं रहा। अर्थात् श्रीकृष्ण को विश्वाश्रय होने का जो सुख है, श्री राधा के क्रीड़ा कमल के प्रहार जनित सुख के आगे वह नगण्य हो गया। कम्प, स्वेद, वाष्प तथा पुलक के छल से वह बाहर प्रकाशित हो पड़ा। श्री कृष्ण के स्पर्श सुख से नमित भ्रू श्री राधा की कंचुक बंधन तथा नीवि बंधन रज्जु ने स्खलित होकर केवल स्वेद जलमात्र उनके नितम्ब देश को आवृत कर लिया। श्रीमती की अवस्था देखकर सखीगण के हँसने पर श्रीमती चंचल नयनों से श्रीकृष्ण के हस्त से बसनांचल छुड़ाकर स्खलित नीवी बंधन से व्याकुल हुई। तब श्री कृष्ण भी समुत्सुक होकर कंदर्पोत्सव के आरम्भ में स्वर्ण घट स्थापन के छल से श्री राधा के दीप्तिशाली घर्माम्बू पूर्ण (स्वेद युक्त) उरोज युगल पर हस्त रखने के लिए उनके निकट जाने पर श्रीमती अति कष्ट के साथ नीवी बंधन करते हुए अरुण वर्ण वाम नयन प्रांत से श्रीकृष्ण को तथा दक्षिण नयन प्रान्त से हास्य मुखी सखियों के प्रति अवलोकन करके श्रीकृष्ण के हस्त निवारण में त्वरान्विता हुई। श्रीमती प्रणय सुख जनित वाम्य द्वारा उच्छलिता होकर थोड़े हास्य तथा थोड़े रोदन के साथ वक्र नेत्र से अस्पष्ट अक्षरों से श्री कृष्ण की भर्त्सना करते-करते उनका हाथ अवरोध करने लगीं, जिससे उनकी अभीष्ट सिद्धि में बाधा हुई। शब्द करते हुए भ्रमर श्रेणी परिशोभित तथा पवन वेग से इतस्तत: संचालित कमल-युगल जैसे परस्पर मिलते हैं, उसी प्रकार मनोहर कंकण ध्वनि समन्वित श्री श्री राधा कृष्ण के कर कमल मिलित हुए। तब दोनों के मध्य स्थल में प्रवेश कर श्री ललिता ने श्री कृष्ण का निवारण किया।

पंच देवता की अर्चना।

इसके बाद कुंदलता श्री कृष्ण से बोलीं-''हे कृष्ण तुम पहले पंच देवता की अर्चना करो।'' यह सुनकर श्री कृष्ण बोले-'हे कुंदलते! इस स्मरयज्ञ में तुम आचार्या बनो, इसमें पूजा की क्या-क्या सामग्री की आवश्यकता है एवं कौन से स्थान में पूजा का अनुष्ठान करना होगा यह सब

Scanned by CamScanner

मुझे उपदेश करो।'' कुंदलता बोलीं—''हे कृष्ण! मैं इस पूजा की आचार्या नहीं हूँ। किन्तु तुम मेरे प्रिय देवर हो इसलिए कंदर्प पूजा के विषय में नान्दीमुखी से जो मैने सुना है, उसी गोपनीय विषय को मैं तुम्हें कहती हूँ—पूजा के विघ्न निवारण के लिए प्रथमत: गणेश की पूजा करनी होती है। अत: तुम श्री राधा के वाम कुच पर गणेश के मस्तक कुंभत्व की कल्पना करके ''गणेशाय तुभ्यं नम:'' इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने दाँये हाथ रूपी रक्त कमल को उस पर समर्पण करो। तब दाहिने वक्षोज रूपी शिवलिंग पर ''नम: शिवाय'' मन्त्र से अपना वामहस्त कमल अर्पण करो। इसके बाद भी श्री राधा यदि तुम्हारे दोनों हाथों का निवारण करें तब भी तुम अपने दाहिने हाथ से इसके चिबुक एवं अपने बांये हाथ से वेणीमूल धारण करके ''अस्मै विष्णवे नम: ''इस मन्त्र का पाठ करके श्री राधा के मुख चन्द्र पर अपना मुख कमल अर्पण करो। पुन: यदि ये बलपूर्वक तुम्हें अवरोध भी करें तथापि इसके सूर्यतुल्य अरुण वर्ण अधर पर ''सूर्याय नम: ''इस मंत्र का उच्चारण करके अपने दंत रूपी कुंद तथा अधर रूपी बन्धु जीव कुसुम द्वय को अर्पण करो।'' तब कुंदलता के वाक्यानुसार श्री कृष्ण द्वारा पंचदेव अर्चना कार्य के लिए उद्यम-प्रकाश करने पर श्रीमती कुंदलता की भर्त्सना करते-करते कर्णोत्पल द्वारा श्रीकृष्ण की ताड़ना करने लगीं। तब श्री कृष्ण सखियों से बोले—''हे सखिगण! मैं शुभ कंदर्प यज्ञ के प्रारम्भ में विघ्नशांति के लिए पंचदेव की अर्चना करने जा रहा हूँ, इससे तुम्हारी प्रिय सखी खिन्ना क्यों हो रही है? तब जिन सखियों ने भ्रू देश वक्र करके मिथ्या वाक्य का आडम्बार प्रकाश करते हुए श्रीकृष्ण के प्रति आक्षेप वाक्य का प्रयोग किया था उन सबको निवारण करते हुए श्री विशाखा श्री श्री राधा कृष्ण के परस्पर वस्त्राचंल बांधने के लिए अपनी नयन भंगी द्वारा कुंदलता को भेजकर श्री कृष्ण से बोलीं—''हे नागर! धर्म शास्त्र में कहा गया है—''सस्त्रीको धर्ममाचरेत्'' अर्थात धर्म का आचरण स्त्री के साथ करना चाहिये। इस कंदर्प-यज्ञ में स्त्री पुरुष के परस्पर अंचल बंधन होने से ही समत्व होता है और तुमने अंचल बंधन के बिना ही जब पंच देवता की पूजा करना शुरू की है तब क्यों ना मेरी सखी श्री राधा इसके प्रति ईर्ष्या प्रकाश करेंगी? विशाखा के वाक्य सुनकर स्फुरित अधर से श्री राधा द्वारा भृकुटि

नवग्रह की अर्चना।

कुटिल करते हुए विशाखा के प्रति दृष्टिपात करने पर पीछे स्थित कुंदलता श्रीराधा कृष्ण के वस्त्राचंल में ग्रंथी बंधन करते हुए सामने उपस्थित होकर बोलीं—''हे माधव! इस शुभ कार्य के लिए चर्चा का कोई प्रयोजन नहीं है, तुम सभी प्रकार की सिद्धि लाभ के लिए नवग्रह की अर्चना करो।'' श्री कृष्ण बोले—''हे कुंदलते! किस प्रकार से नवग्रह की पूजा करनी होती है इस विषय में तुम मुझे उपदेश दो'' तब कुंदलता नयन भंगी द्वारा श्री राधा के अंगों को दिखाते हुए बोलीं—''श्री राधा के अधर, नयन युगल, गंडद्वय, उरोजद्वय, ललाट तथा मुख इन नौ अंगों पर अपना अधर रूपी विकसित कुसुम समर्पण करो।'' श्रीराधा बोलीं—''हे आचार्ये कुंदलते! तुम पहले अपने शिष्य श्रीकृष्ण को अपने अंग समूह ग्रहण कराकर नवग्रह की पूजा कराओ'' यह कहकर श्रीकृष्ण के भय से भागने के लिए ज्यों ही उद्यता हुई अंचल बंधन के कारण श्रीकृष्ण के आगे अवरुद्ध हो गई। श्रीमती वक्रगीवा से पीछे दृष्टि करके वस्त्रांचल की

Scanned by CamScanner

ग्रंथी बन्धन को देखकर ''अंतर्मन की वासना पूर्ण हुई'' यह जानकर फुल्लमुखी होने पर भी श्री कृष्ण, ललिता, विशाखा तथा कुंदलता के प्रति ईर्ष्या भाव प्रकाश करते हुए ग्रंथी बंधन मोचन के लिए उद्यता होकर बोलीं—''धृष्ट नट श्री कृष्ण के धार्ष्ट्य नाट्य में विशाखा-श्रेष्ठ नटी, ललिता सभ्येशा (नाट्य की प्रवर्त्तिका) तथा कुंदलता विदूषिका है। क्या आश्चर्य है। इस श्रीकृष्ण ने पत्नी के लिए कंगाल होने से पर-पत्नी को अपनी पत्नी जानकर अपनी वांछा पूर्ण करते हुए स्वाभाविक लज्जा को भी विसर्जन दे दिया है। श्री कृष्ण तब श्रीमती को अंचल बंधन-मोचन में व्यग्र देखकर उनके मुख चुंबनादि में प्रवृत्त होने पर श्रीमती श्री कृष्ण को निवारण करते हुए वस्त्र ग्रंथी मोचन करने की चेष्टा करने लगीं। इस प्रकार अपने-अपने कार्य में उत्कंठाशील श्री राधा-कृष्ण परस्पर संरोध के कारण व्याकुल होने पर गर्विता ललिता मिथ्या ईर्ष्या के साथ श्रीकृष्ण की भर्त्सना करके वस्त्र ग्रंथी मोचन करते हुए बोलीं- ''हे कृष्ण! वृन्दावन में कोई भी कन्या तो तुम्हें वरण नहीं करेगी, तुम्हारी यदि अपनी पत्नी के साथ अंचल बंधन की प्रबल लालसा हो रही हो तो अपनी भ्रातृ जाया कुंदलता के साथ वस्त्रांचल बंधन करके अपनी लालसा पूर्ण करना ही उचित होगा।''

ललिता द्वारा वस्त्र ग्रंथी मोचन।

इसके बाद चंचल भ्रू हास्य मुखी श्री राधा वस्त्रांचल खींचते हुए किंचित दूर जाकर दृष्टि भंगी से श्री कृष्ण को कुंदलता के पास गमन करने के लिए इंगित करके बोलने लगीं—''हे कृष्ण! तुम्हारी आचार्या कुंदलता भ्रान्ता हो रही है। पहले दिग्पालों की पूजा करना कर्तव्य था, उसे न करके अज्ञा तुम्हें भी अज्ञ पाकर ग्रह गणों की पूजा करा रही है, इसलिये कार्य में विघ्न हो रहा है।'' तब श्री कृष्ण कुंदलता से बोले—''हे कुंदलते! तुम मेरे समक्ष दिग्पालों के स्थान, अधिष्ठान तथा नामों का कीर्तन करो।'' यह बात सुनकर कुंदलता अपनी नयन भंगी से ललितादि सखियों को दिखाकर बोलीं—''हे देवर! यह देखो दिग्पालगण तुम्हारे अनुष्ठित यज्ञ का फल प्रदान करने के लिए ललितादि के मध्य में अधिष्ठित होकर अपनी-अपनी दिशा में अवस्थान कर रहे हैं। इसके मध्य के ईशान कोण में विशाखा शंकर की मूर्ति, पूर्व में ललिता इन्द्र की, अग्निकोण में सुदेवी अग्नि की, दक्षिण में तुंगविद्या यम की, नैऋत्य में चित्रा नैशाचरी की, पश्चिम में रंगदेवी वरुण की, वायुकोण में वायु की मूर्ति इन्दुलेखा, उत्तर में कुबेर की मूर्ति चम्पकलता, आगे ब्रह्मा की मूर्ति रूप मंजरी एवं पीछे अनंग मंजरी अनंत देव की मूर्ति के रूप में विराज रही हैं। ये सब दिग्पाल मूर्ति सखीगण सर्वदा अपने कार्य के लिए तथा तुम्हारे हित के लिए तुम्हारी पूजा ग्रहण करके तुम्हारी फल सिद्धि के लिए उन्मुख हो रही हैं। अतएव तुम इनका पूजा कार्य सम्पन्न करो।'' यह सुनकर ललितादि सखीगण शेषान्विता होकर कुंदलता से बोलीं—''हे पामरी। निर्लज्जे! तुम अपने देवर द्वारा अपनी मूर्ति की पूजा कराओ।'' इस प्रकार से सखी गण कुंदलता की भर्त्सना कर रही हैं यह देखकर श्री कृष्ण ने उत्कंठित चित्त से ललितादि की पूजा करने के लिए गमन किया। तब ललितादि सखी गण श्री कृष्ण के अभिप्राय को समझकर चंचल नयन

दिग्पाल गणों का अधिष्ठान।

श्रीकृष्ण की दिग्पाल पूजा।

Scanned by CamScanner

से इतस्तत: भागने में प्रवृत्ता हुई एवं श्रीकृष्ण द्वारा अवरुद्ध तथा अर्ध पूजिता होकर भी अपनी-अपनी सखियों की सहायता वशत: छल या हठ करके भागने से विरता नहीं हुई (अर्थात भागती रहीं) कोई सखी दैन्य के साथ विनय वाक्य प्रयोग करके, कोई प्रखरा सखी गर्व सहित श्री कृष्ण को तर्जन-गर्जन करके, कोई श्री कृष्ण द्वारा पकड़े जाने पर अपना उत्तरीय वसन छोड़कर भी भागने लगी। जैसे स्वर्ण पद्मिनीगणों की रस माधुरी को एक चंचल नील मराल आस्वादन कर रहा है। सखियों के रोदन विमिश्रित थोड़े हास्य, हेलायुक्त प्रफुल्ल वदन एवं कटाक्ष समन्वित लोहित वर्ण नयन देखकर श्रीकृष्ण वांछित-फल प्राप्ति से परमानंद रस में निमग्न हुए।

अंत में राधा रूपी दुर्ग को प्राप्त होकर पलायन तत्परा सखीगण उन्हें घेरकर अवस्थान करने लगीं। उनकी नयन चकोरी श्री कृष्ण के मुख चन्द्र की सुधा माधुरी का पान करने लगी! तब श्री कृष्ण द्वारा राधा रूपी दुर्ग का अतिक्रम करके सखियों के प्रति उत्पतिष्णु (ऊपर जाते हुए) होने पर श्री राधा ने क्रोध में भरकर हुँकार की। इससे वे स्तब्ध होकर भीति विजड़ित नेत्र से कुंदलता के मुख की ओर दृष्टिपात करने लगे। कुंदलता श्रीकृष्ण को कंदर्पयज्ञ की क्रिया में विघ्नवशत: विषादित देखकर बोलीं—"हे कृष्ण! तुम जब पशुपति हो तब लीलावशत: तुम्हारा कंदर्प विनाश को प्राप्त हुआ है। अतएव कंदर्प-यज्ञ में फल लाभ की संभावना नहीं है। जाओ पशुपति का धर्म ही अवलम्बन करो।" श्रीकृष्ण बोले—"कुंदलते! तुमने ठीक ही स्मरण करा दिया, मैं सबका सुख विधान करता हूँ, इसीलिए लोग मुझे "शिव" कहते हैं। अतएव महेश्वर ने जैसे अपनी पत्नी भवानी को अर्धांग दान किया था, मैं भी उसी धर्म का अवलम्बन करने जा रहा हूँ। शिव ने अपनी प्रियतमा को मात्र वाम अंग ही अर्पण किया है, किन्तु मैं प्रेयसी को सर्वांग प्रदान करूंगा, तब श्री मन्महादेव की अपेक्षा भी समधिक रूप से मेरी प्रेमवश्यता, विदग्धता तथा अति दातृत्व गुण एवं विपुल कीर्ति भी प्रकाशित होगी।" यह बात सुनकर श्रीराधा को शंकाकुला तथा सावधान होते देखकर अलक्षित रूप से श्री कृष्ण ने उनके निकट जाकर सहसा भागती हुई श्री राधा को पकड़ लिया। तब श्रीमती उनके हाथों से किसी प्रकार अपने को मुक्त करके थोड़ा हास्य तथा गद्‌गद वचनों से श्री कृष्ण की भर्त्सना करते हुए ईर्ष्या के साथ उनके आगे अवस्थान करने लगीं।

इसी समय श्रीमती के मुख कमल के सौरभ से भृंग कुल द्वारा उन्मादित होकर उनके कर्ण-मूल में गुँजार करने पर भीता श्रीमती चकित तथा चंचल दृष्टि से प्राणनाथ के कंठ से जड़ित हुई। तब श्रीमती सखियों को हास्य करते देखकर लज्जा तथा विनम्र वदन से कांत की गोद से स्वयं को मुक्त करने की चेष्टा करने पर भी उनके द्वारा प्रगाढ़ रूप से आलिंगित होने के कारण अपने को मुक्त करने में सफल न हो सकीं। तब वे नवजलधर के साथ विजड़िता स्थिर सौदामिनी की भाँति शोभा पाने लगीं। श्रीमती शपथ, स्तव, निन्दा, तर्जन, आक्षेप तथा दैन्य के साथ हास्य तथा रोदन विमिश्रित श्लेष वाक्य (अनेकार्थ शब्द) का आलाप करते-करते दोनों हाथों से प्रियतम के दृढ़ बाहु बंधन से मोचन करने की चेष्टा करके सखियों सहित श्री कृष्ण का अत्यंत आनंद विस्तार करने लगीं।

भृंग के भय से श्रीमती का कान्त आलिंगन।

Scanned by CamScanner

श्रीराधा-कृष्ण के दृढ़ालिंगन को देखकर सखियों को अतिशय हर्ष से प्रफुल्लित मुखी तथा कम्पादि सात्विक भाव संपत्ति से व्याप्त देहा देखकर श्री वृंदा-नान्दीमुखी के प्रति बोलीं—"हे नान्दी मुखी! श्री राधा के सुख से ही सखियों को सुखानुभव होता है यह बड़ा ही आश्चर्य है! यह देखो श्री राधा के श्री कृष्ण द्वारा आलिंगिता होने पर सखी गण उनके मिलन बिना ही श्री कृष्ण संग सुख से विपुल पुलकित हो रही हैं।" यह सुनकर नान्दीमुखी बोलीं—"हे वृंदे! श्री राधा के सुख से जो सखियों में सुख उत्पन्न हुआ है—इससे श्री राधा के साथ उनका अभेदत्व ही कारण है। क्योंकि श्री कृष्ण की प्रेम कल्पलता श्री राधा हैं एवं सखीगण उनकी पल्लव, पुष्प तथा पत्रादि के स्थान पर हैं। श्री राधा रूपी लता श्री कृष्ण लीलामृत रस से अभिषिक्ता होने पर पत्र, पुष्पादि स्वरूपा सखीगण अपने सिंचन की अपेक्षा भी शतगुणा उल्लासवती होती हैं—इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। हे वृंदे! ईश्वर सर्व-व्यापक तत्व होने पर भी चिद् शक्ति की सहायता के बिना जैसे रस पुष्टि को प्राप्त नहीं हो सकते, उसी प्रकार अति महान, स्वप्रकाश तथा सुख स्वरूप श्री राधा कृष्ण का जो भाव है। वह सखियों की सहायता के बिना क्षण काल के लिए भी रस पुष्टि को प्राप्त नहीं हो सकता। अतः कौन रसज्ञ भक्त है जो सखी गणों के भावों का आश्रय नहीं लेगा? विशुद्ध प्रेम में आर्द्र चित्त इन ब्रज सुन्दरियों का तात्पर्य कृष्ण सुख से ही है परन्तु अपने सुख के लिए नहीं है। इनकी वाम्यता श्री कृष्ण के प्रचुर सुख सम्पादन का कारण है इसीलिए वाम्य भाव का उदय होता है।"

सखियों द्वारा युगल-माधुरी आस्वादन।

सखियों की सहायता से ही राधाकृष्ण की भाव-पुष्टि।

इसके पश्चात् श्रीराधा वांछित श्रीकृष्ण के दृढ़बाहु एवं वक्ष स्थल के स्पर्श से उत्थित आनन्द से विह्वल होकर भी वाम्य जनित असम्मति आचरण की भाँति ललिता का तिरस्कार करने लगीं—"हे कपटिनी! हे धृष्टे ललिते! तुम शाठ्य-मिश्रिता हरि दूती कुंद वल्ली के साथ मिलकर मुझे यहाँ ले आईं तथा नेत्रभंगी द्वारा शठ कुल-गुरु के हाथ समर्पण करके स्वयं उदासीन भाव अवलम्बन करते हुए खल भर्तार के धार्ष्ट्य रूपी नृत्य रंग को देख रही हो! श्रीकृष्ण तुम्हें आलिंगन करके ही अपनी मृदुलता देकर तुम्हारा प्राखर्य स्वयं ग्रहण कर रहे हैं इसीलिए तुम्हारे स्वभाव में परिवर्तन घटित हुआ।" श्रीराधा के वाक्य सुनकर हृदय में उल्लासिता होने पर भी बाहर से रुष्टा की भाँति हास्य-गर्वित तर्जन वाक्य से श्रीललिता बोलीं—"हे सती व्रत नाशक धृष्ट भूपते! तुम यह क्या करने के लिए उद्यत हुए हो?" श्रीकृष्ण बोले—"अपनी सखी श्रीराधा से पूछो-कि ये क्या करने को उद्यता हुई हैं? ये ही तो बलपूर्वक अपने अंग द्वारा मेरे अंग को आलिंगन करके आत्मसात कर रही हैं।" यह सुनकर ललिता बोलीं—"हे कृष्ण माधवीलता रूपा श्रीराधा जो प्रफुल्लिता होकर अपने अंग द्वारा पुन्नाग तरु स्वरूप पुरुष श्रेष्ठ तुम्हें आलिंगन कर रही हैं—यह तो उचित ही है, क्योंकि लता वृक्ष को आलिंगन करके रहती हैं किन्तु तुम जो तरु स्वरूप होकर माधवी लता रूपा श्रीराधा को आलिंगन कर रहे हो यह उपयुक्त नहीं है-कारण कि तरु कभी लता को आलिंगन नहीं करता है।" श्रीकृष्ण बोले—"हे ललिते! मैं

Scanned by CamScanner

श्री राधा को अपना अंगदान कर रहा हूँ, ये भी मुझे आत्मसात कर रही हैं-इसमें तुम्हारी क्या हानि है? शास्त्र में कहा गया है कि दी गई वस्तु को पुनः ग्रहण नहीं करना चाहिये इसलिए मैं पुनः अपना अंग ग्रहण करने में असमर्थ हूँ।'' तब ललिता अपने वक्ष स्थल पर तर्जनी अंगुली रखकर तर्जन करते हुए बोलीं—''हे कृष्ण! मेरा नाम ललिता है, मैं क्रोधान्विता, क्रूरा तथा शौर्यशालिनी हूँ, मेरे सम्मुख सती श्रीराधा को वायु भी स्पर्श करने में सक्षम नहीं होती। इसे तुम शीघ्र परित्याग करो अथवा मेरा शौर्य सहन करो।'' यह बात कहते -कहते सरोष वदन से सखियों सहित श्रीकृष्ण के सम्मुख आने पर कृष्ण आनंद जनित कम्पाश्रु, रोमांचादि भाव समूह से व्याकुलित हो गये। तत्पश्चात् कांता के अंग संग के सुख से उनके अंग अवश होने पर कंपित हाथ से मुरली स्खलित हो गई, तुरन्त श्रीराधा ने उस मुरली को ग्रहण करके उनकी शिथिल बाहु से निकाल कर अपने वस्त्रांचल में उस मुरली को यत्न सहित छिपा लिया।

इसके पश्चात् विशाखा श्रीराधा के सम्मुख खड़ी होकर श्रीकृष्ण के साथ संलाप करने लगीं। विशाखा बोलीं—''हे कृष्ण! हे राहो! तुम भ्रांत हुए हो, कारण कि जिसे तुमने हठात् ग्रहण किया है वह चन्द्रावली नहीं है ये राधा नामक तारा हैं।'' इनकी सभी सखियाँ भी तारा स्वरूपा हैं। अतः कोई भी तुम्हारे आलिंगन के योग्य नहीं है। मैं विशाखा भी श्रीराधा की अद्वितीया हूँ, मेरा नाम भी तारा है। यह ललिता- अनुराधा है, धनिष्ठा-ज्येष्ठा है, चित्रा-भरणी है। एक मात्र इन्दुलेखा है किन्तु वे भी तुम्हारे ग्रहण के अयोग्या हैं, क्योंकि पूर्ण चन्द्र ही राहू के लिए ग्रहणीय है—इन्दुलेखा (द्वितीया का चन्द्र) नहीं। अतः तुम चन्द्रावली के निकट गमन करो। श्रीकृष्ण बोले—''हे विशाखे! यह राहु रसास्वादन का विशेष लिप्सु है, अतः अनायास लभ्या एवं बहु प्रकार से उपभुक्ता चन्द्रावली का परित्याग करके सुदुर्लभा भानुश्री (सूर्य को, पक्ष में भानु नंदिनी श्रीराधा) की ही कामना कर रहा है। और भी देखो यद्यपि राहू का भोग यथाक्रम से समस्त ताराओं से ही शोभा पाता है, तब भी कौतुक वशतः इन्दुलेखा को ही ग्रहण करने की अभिलाषा करता है।'' यह कहकर उनके इन्दुलेखा के निकट गमन करते ही चकिता होकर भागते हुए वे भ्रू भंगी के साथ हँसते हुए बोलीं—''हे धृष्ट! हे राहो! तुम यहाँ से चले जाओ, इन्दुलेखा-तुम्हारे योग्य नहीं है। तुम पूर्ण चन्द्रावली के निकट जाओ अथवा यथाक्रम से तारागणों का भोग करो।'' श्रीकृष्ण द्वारा इन्दुलेखा के वाक्य सुनकर अलक्षित भाव से ललिता को ग्रहण करने पर ललिता बोलीं—''क्रम पूर्वक विशाखा के भोग के बिना तुम कभी भी अनुराधा का लाभ नहीं कर पाओगे। ललिता के वाक्य सुनकर श्रीकृष्ण ने विशाखा को स्पर्श किया, तब विशाखा बोलीं—''राधा के भोग से विशाखा का भी भोग हो गया है, क्योंकि राधा तथा विशाखा अभेद हैं। हे धृष्ट यहाँ क्रम लभ्य ज्येष्ठा या धनिष्ठा का भोग करो।'' श्रीकृष्ण के अलक्षित रूप से धनिष्ठा को स्पर्श करने पर धनिष्ठा रुष्टा होकर बोलीं—'' हे धृष्ट! चित्रा का भोग किये बिना अन्य के प्रति आक्रमण तुम्हारे लिए केवल क्लेशकर ही होगा।'' तब उनके द्वारा चित्रा को धारण करने पर चित्रा बोलीं—''हे लम्पट! तुम यहाँ से हट जाओ, अभी तुला राशि तुंगविद्या ही तुम्हारी भोग्या हैं।''

राहू लीला कौतुक।

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण द्वारा तुंगविद्या को स्पर्श करने पर वे बोलीं–"हे धृष्ट! पहले पीड़न योग्या तुला राशि रंगदेवी का त्याग करके मुझे ग्रहण करने के अभिलाषी क्यों हो रहे हो?" श्री कृष्ण द्वारा रंगदेवी को स्पर्श करने पर उन्होंने चम्पकलता के निकट, चम्पकलताने सुदेवी के निकट, सुदेवी ने कांचनलता के निकट उन्हें भंगी पूर्वक भेज दिया। कांचनलता बोलीं–"हे कृष्ण चकोर! तुम यहाँ क्यों आये? अपनी तृष्णा शांति के लिए प्रकाश शील चन्द्र मुखी श्रीराधा के निकट गमन करो।" श्रीकृष्ण द्वारा अलक्षित रूप से श्रीराधा के निकट जाकर उनके मुख चुंबन करने की इच्छा करने पर वे विमुखी होकर श्रीकृष्ण से बोलीं–"हे शठ! यदि तुम्हें चुम्बन करने की इच्छा हो तो परस्त्री परित्याग करके अपनी प्रिया वंशी को जाकर चुंबन करो।"

श्रीमती के वाक्य सुनकर श्रीकृष्ण को मुरली का स्मरण होने पर–"हाय! मेरी मुरली मेरे हाथ से गिरकर कहाँ गई?" यह कहकर क्षणकाल के लिए विस्मयापन्न होकर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से कुंदलता की ओर देखने लगे। कुंदलता ने चंचल नयन भंगी द्वारा श्रीराधा को दिखा दिया, श्रीराधा ने कुंदलता के इंगित को समझकर वंशी तुलसी के हाथ में समर्पण कर दी। तुलसी मुरली को यत्न पूर्वक गोपन करके श्रीललिता विशाखा के पीछे जाकर खड़ी हो गईं। श्रीकृष्ण श्रीराधा के निकट उन्हें पकड़ने को इच्छुक होकर बोले–"हे चौरी! मेरे कामादि क्षोभ रहित निर्मल मन को जब तुम अपने काम कटाक्ष रूपी अंकुश द्वारा बिद्ध कर सकती हो, तो मेरी वंशी को हरण करोगी, इसमें क्या आश्चर्य की बात है? मैं तुम्हें बाहु पाश द्वारा बंधन करके वसन-भूषण उतार लूँगा एवं कुँज करागार में ले जाकर कंदर्प के हाथों समर्पण करुँगा यह तुम समझ लेना!" श्रीराधा श्रीकृष्ण की परिहास वाणी से निरतिशय रूप से भाव-विद्धा होकर भी अवज्ञा के साथ श्रीकृष्ण से अवलोकन पूर्वक बोलीं–"मुझे स्पर्श न करो" यह कहकर गमन करने पर वंशी अन्वेषण के छल से उन्हें अवरुद्ध करके श्रीकृष्ण बोले–"हे चौरी! तुम मेरे बाहु बंधन से मुक्त होने की वृथा चेष्टा क्यों कर रही हो, जब तक वंशी नहीं दोगी-तब तक मेरे हाथ से तुम्हारे मुक्त होने का कोई उपाय नहीं है।

वंशी अन्वेषण कौतुक।

तत्पश्चात् ललिता मिथ्या रोष पूर्वक भ्रू लता वक्र करके थोड़ा हास्य तथा गर्वित हो श्रीकृष्ण के सम्मुख जाकर अकड़कर बोलीं–"हे परांगना संगम पूत मूते! हे सतीव्रत ध्वंसक! हट जाओ-सूर्य पूजा के लिए स्नाता तथा पवित्रा श्रीराधा को स्पर्श करके अपवित्र न करो। हे शठ ! तुम जो धृष्टा शैव्या का अधर सुधा पान कर उन्मादित हो रहे हो, उसी शैव्या ने ही कुसुम सरोवर में तुम्हारी वंशी अपहरण कर ली है। यदि विश्वास न हो, तो इस विषय में तुलसी साक्षी है, उससे पूछो। खल की दुर्वृत्तता का फल साधुजनों को भोगना पड़ता है-यह सत्य है। वंशी चोरी की शैव्या ने तथा साधु स्वभावाश्री राधा दूषित हुईं।" यह कहकर ललिता ने "इसके पास वंशी है" इस इंगित से नेत्र संचालन द्वारा तुलसी को दिखा दिया। तब श्रीकृष्ण ने वंशी लाभार्थ ज्यों ही तुलसी के निकट गमन करने की इच्छा की त्यों ही मेघमाला से जैसे सुधाकर (चन्द्रमा) निकलता है उसी प्रकार श्रीराधा श्रीकृष्ण के अवरोध से निकल आईं। तुलसी द्वारा इंगित को समझकर श्रीरूप मंजरी के

Scanned by CamScanner

हाथ में वंशी अर्पण करके भागने को चेष्टा करने पर श्रीकृष्ण द्वारा बलपूर्वक पकड़ी गईं एवं पुलकित अंगी तथा कंपित अंगी हुईं तथा अपनी हस्तांगुली की मुष्टि बंद कर अपने वदन को अर्पण करते हुए अति दीन भाव से बोलीं—"हे कृपालो! हा, हा, मैं अयोग्या हूँ, मुझे छोड़ दो मै तो तुम्हारी दासी हूँ। जिसके लिए इतना आग्रह है, वह वंशी मेरे पास नहीं है, मैने आज ही शैव्या के हाथ में देखी है।" यह कहकर इशारे से रूप मंजरी को इंगित कर दिया। तब तुलसी को परित्याग करके श्रीकृष्ण वेणु रूप मकरन्द के सौरभ से परिचिता रूप मंजरी के निकट ज्यों ही आये, तत्क्षणात् इंगितज्ञा रूप मंजरी ललिता के निकट वंशी रखकर साधु व्यक्ति के समान अवस्थान करने लगीं। श्रीकृष्ण अलक्षित गति से श्रीरूप मंजरी के निकट जाकर उन्हे बाहु पाश में निबद्ध करके उनकी कुच पट्टिका के मध्य वंशी अन्वेषण करते हुए बोले—"हे तस्करी! वंशी कहाँ छिपा रखी है?" तब रूप मंजरी कृष्ण को निवारण करते हुए बोलीं—"मैं चौरी हूँ? तुम्हारा परम सौभाग्य जो मेरे निकट वंशी अन्वेषण करके तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हुआ अब जाओ वंशी द्वारा पर रमणियों का आह्वान करो। आलिंगन द्वारा पर रमणियों के सतीत्व व्रत को दूषित करने के लिए ही तो तुम समुत्सुक हो रहे हो एवं उसी उद्देष्य से ही अपनी वंशी को छिपाकर उसे अन्वेषण के छल से अपनी वासना पूर्ण कर रहे हो।" यह कहकर रूप मंजरी नयन भंगी द्वारा ललिता को दिखाकर उनके भुज बंधन को शिथिल कर बाहर आईं एवं श्रीकृष्ण ने भी ललिता की ओर गमन किया। ललिता गुप्त रूप से कुन्दलंता के निकट वंशी रखकर श्रीकृष्ण को अपनी ओर आते देखकर साटोप वाक्य (अकड़कर बोलना) में बोलीं—"दूर रहो। जिसके लिए मेरे पास आ रहे हो, वह वंशी मेरे पास नहीं है। यदि धृष्टता पूर्वक आओगे, तो इसका समुचित फल पाओगे जान लो। हे शठ! जो श्रीराधा की सखियाँ चिन्ता मणियों को पद द्वारा भी स्पर्श नहीं करतीं-क्या वे सखियाँ तुम्हारी क्षुद्र वंश नलिका का हरण करेंगी? जो छिद्रयुक्त, बहुदोष युक्त, नीरस तथा कठोर है, जिसकी ध्वनि से त्रिभुवन निरन्तर व्याकुल होता है, उसी मुरली के स्वामी हो तुम। तुम्हारे हाथ से जो मुरली विच्युत हुई है, इससे समझना चाहिये कि बहुत लोगों का सुमंगल हुआ है। इसके बाद नीवी तथा कुंतल अपने-अपने स्थान पर बंधन करके रमणीगण स्वच्छंद पूर्वक अपने गृह कार्य को कर पायेंगी। हरिणी गण सुख पर्वक हिरणों के साथ तृणादि भक्षण कर पायेंगी। नदियाँ भी अपने पति समुद्र की ओर स्वच्छंद रूप से गमन कर पायेंगी। हे कृष्ण! तुमने शीतार्त जलमग्ना तथा नग्ना कन्याओं के वसन हरण किये थे, उसी पाप के कारण तुम्हारी वंशी चोरी हुई है, क्योंकि जो दूसरों को दुःख देता है उसे स्वयं दुख भोगना पड़ता है। अहो! कितने दुख का विषय है! हस्त परिमित दीर्घ, शुष्क सच्छिद्र तथा बहुदोष युक्त एक खंड वंश काष्ठ गोकुलेश्वर श्रीकृष्ण की सर्वस्व सम्पदा! हाय! उसे किसने हरण किया?"

ललिता के अवज्ञा युक्त परिहास वचन से स्तब्ध श्रीकृष्ण को देखकर कुंदलता गुप्त रूप से श्रीराधा के निकट वंशी रखकर श्रीकृष्ण के निकट जाकर उन्हें विषन्न (मलिन) देखकर बोलीं—"हे कृष्ण! आधी कौड़ी भी जिसका मूल्य नहीं है, उस सच्छिद्रा, जीर्णा एक छुद्र वंशपर्विका की चोरी हुई है तो जाने दो, इसमें

Scanned by CamScanner

तुम्हारी क्या हानि है? मलिन क्यों हो रहे हो! तुम गोपराज नन्दन हो, ये सब गोपांगनायें हर्ष सहित तुमसे परिहास कर रही हैं, यह सुनकर मैं लज्जा से मरी जा रही हूँ।'' श्रीकृष्ण बोले—''हे कुंदलते। मेरी वंशी के गुण के विषय में तुम नितान्त रूपसे अनभिज्ञा हो, क्योंकि इन सब ब्रज सुन्दरियों के निकट वंशी जिस प्रकार अपने गुण को प्रकाशित करती है, तुम्हारे निकट यह कभी भी नहीं करती। कुन्दलते! मेरे लिए भी असाध्य जो सब वासना मेरे मन में जागती हैं—वह वंशी सहज में ही श्री नारायण की चित्त शक्ति के समान सुसिद्ध कर देती है। श्रीराधिकादि उत्तम रूप से उस सर्व शक्ति सम्पन्ना तथा सर्वार्थ साधिका वंशी की अलौकिक शक्ति की बात जानती हैं।'' यह सुनकर ललिता बोलीं—''हे कृष्ण तुम्हारी वंशी कुटनी गणों (जो स्त्री परस्त्री के साथ पर पुरुष का मिलन कराती है) की रानी है, अत: तुम तो कामी हो, तुम्हारी वल्लभा उस वंशी को हम सब क्यों नहीं जानेंगी? यह मुरली अमृत तुल्य सद्गुणवती गोप युवतियों के हृदय रूपी हस्ती की बंधन कारिणी एवं विश्व रमणी गणों की अमल पुण्य राशि की चोरी करने के विषय में अति सुनिपुणा है। अन्य रमणियों की क्या बात-रमा, गौरी, सूर्य पत्नी संज्ञा प्रमुखा युवती गणों के मन को हरण करने में तत्परा है, अत: तुम्हारी यह सिद्ध मुरली अद्भुत गुण से समृद्धा (विपरीत लक्षण में अशेष दोषों से दुष्टा) है।''

श्रीकृष्ण बोले—''अति प्रखरा तथा कुटिल वाक्य जाल का विस्तार करने में दुर्गमा इस ललिता ने शठता करके मेरी मुरली चोरी की, इसीलिए उस मुरली की तथा मेरी भी निन्दा कर रही है।'' यह कहकर श्रीकृष्ण द्वारा ललिता के उत्तरीय वसन के प्रान्त भाग को पकड़ने की इच्छा से गमन करने पर तत्क्षणात् ललिता कुछ दूर जाकर भ्रू लता वक्र करके हँसते हुए कहने लगीं—''हे कृष्ण! मैं वही ललिता हूँ, तुम मुझसे उत्तम रूप से अवगत हो, मैं सखियों सहित चली-तुम्हारी शठता अब और अधिक फलवती नहीं होगी।'' यह कहकर ललिता द्वारा जाने के लिए उद्यत होने पर श्रीकृष्ण सहसा उनका वसनांचल पकड़ कर बोले—''मेरी वंशी दिये बिना तुम कहाँ जाओगी? ललिते! यदि तुमने वंशी चोरी नहीं की है, तब भय से क्यों भाग रही हो? तुम अपने अंगो को दिखाकर जहाँ चाहो जा सकती हो।'' ललिता श्रीकृष्ण के हाथ से अपने वसन को छुड़ाकर वक्र दृष्टि से उनसे बोलीं—''हे काममत्त! तुम अपनी भातृ जाया कुंदलता के अंगों को जाकर देखो। हम सबने वंशी न ली है, न देखी है। तथापि यदि तुम हठातवशत: हम सबको नहीं छोड़ोगे, तब कुंदलता जो मूल्य देने के लिए कहेंगी हम वही देंगी, और यदि तुम मूल्य न चाहो तब वंशी के समान ही एक अन्य वंशकाष्ठ तुम्हें दे देंगी। गोवर्धन निवासिनी दो पुलिन्द कन्या 'मल्ली तथा भृंगी' मेरी सखियाँ हैं। मेरे कहने पर नवीन तथा छिद्र रहित एक वंश पर्विका तुम्हें दे देंगी।'' श्रीकृष्ण बोले—''हे ललिते! परम धन्या वही पुलिन्द कन्या गण मुझमें अतिशय अनुरक्ता हैं। मेरे चरण कमलों की कुंकुम के तृण पर लगने पर वे उसे मुख तथा कुच मण्डल पर लेपन करके कंदर्प पीड़ा से शांति लाभ करती हैं एवं गोवर्धन की गुंजा तथा गैरिकादि धातु को यत्न सहित लाकर मुझे प्रदान करती हैं। वे तो मेरी ही दासी हैं, तुम्हारी सखी कैसे हुईं? कुछ भी हो ललिते! तुम जब मेरी मुरली चोरी करके मेरी ही अवज्ञा कर रही हो, तब मैं तुम्हें बाँध कर दंड दूँगा कौन तुम्हारी रक्षा करता है करे।

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण की बात सुनकर विशाखा श्रीकृष्ण के निकट आकर मृदु स्वर में उन्हें जैसे उपदेश करती हुई बोलीं—"हे कृष्ण! जिसकी कोई वस्तु खो जाती है उसकी उस वस्तु का अनुसन्धान जो जानता है उसकी सहायता से ही वस्तु का लाभ किया जा सकता है। इस युक्ति के अवलम्बन से नष्ट वस्तु को प्राप्त करने वाले किसी व्यक्ति का अवलम्बन करके खोज करो सफलता मिलेगी, उग्रता से कार्य सिद्धि नहीं होगी। तुम नष्टोद्देशकारी को क्या पुरस्कार दोगे तथा चोर को क्या दंड दोगे, मुझसे कहो तब मैं तुम्हारा हित कर पाऊँगी।" श्रीकृष्ण बोले—"हे विशाखिके! जो मेरी वंशी का पता लगा देगा उसे मैं अपने अंग की पुष्प माला, मणिमाला, करमद्रन (कामरांगा) नामक फल तथा चुम्बकरत्न प्रदान करुँगा। (अन्य अर्थ में आलिंगन, कुचमद्रन तथा चुंबनादि विलास सुख प्रदान करुँगा) एवं जिस व्यक्ति ने मेरी वंशी अपहरण की है, उसके वसन-भूषण एवं घटद्वय (कुचयुगल) अवस्थित यौवन रत्न हरण करुँगा तथा कंदर्प दंड के लिए भुजपाश में बांधकर उसे निकुँज कारागार में प्रवेश कराऊँगा।" यह बात सुनकर विशाखा बोलीं—"ब्रजराज नंदन के लिए यही दंड उपयुक्त है। तुम जब धन दान के विषय में इतने अकृपण हो, तब बोलती हूँ कि वंशी तुम्हारे हाथ में ही है समझो। एक यही कुंदलता वंशी की खोज जानती है इसे ही उपहार देकर पूछो।" तब कुंदलता से बोले—"हे कुंदलते! सौभाग्य क्रम से तुम्हें प्रचुर लाभ हो रहा है, अपने देवर को वंशी का पता बताकर यह सब सुदुर्लभ उत्कोच (उपहार) ग्रहण करो।

इस प्रकार का परिहास करके विशाखा द्वारा कुंदलता के कर्ण के निकट संलग्ना होने पर इंगितज्ञा श्रीराधा ने गोपन भाव से तुलसी के हाथ में वंशी समर्पण कर दी। तब कुंदलता की ओर श्रीकृष्ण द्वारा अभिप्राय पूर्वक दृष्टिपात करने पर कुंदलता विशाखा से बोलीं—"सखी विशाखे! तुम्हारी शपथ करके बोल रही हूँ-चोर कौन है यह मैं नहीं जानती। तुम सब जैसे इसके लिए भिन्न हो, मैं तो उस प्रकार से नहीं हूँ, देवर का धन मेरा ही धन है। अतः यदि मैं वंशी का सन्धान जानती तब बिना उपहार लिए ही कृष्ण को बता देती। सखी! मुरली चोर कौन है यह तुम सब निश्चित रूप से जानती हो। अतएव किसके निकट वंशी है यह बताकर इन सब रत्नों को ग्रहण करो।" यह बात सुनकर श्रीकृष्ण हँसते-हँसते विशाखा से बोले "हे साध्वि! आओ-आओ रत्नों को ग्रहण करो।" यह बात कहते-कहते विशाखा का आलिंगन किया। तब सखियों ने हँसते-हँसते जाकर श्रीकृष्ण को घेर लिया। सखियों के संग श्रीकृष्ण के कलह करने में प्रवृत्त होने से उच्च कोलाहल ध्वनि उठने लगी, तब श्रीराधा निःशब्द होकर कुँज के मध्य में प्रवेश करके छिप गयीं।

श्रीराधा का गुप्तरूप से कुँज में प्रवेश।

इधर तुलसी सशंकिता होकर वंशी ग्रहण करके जिस कुँज में वृंदा देवी अवस्थान कर रही थीं, उसी कुँज में प्रवेश कर गईं। वृंदा देवी तुलसी के हाथ से मुरली लेकर अपने वक्ष स्थल में संगोपन करते हुए वंशी से बोलीं—"हे वंशिके! तुम क्षुद्र वंशोद्भवा होने पर भी वंश श्रेष्ठा हुई हो। क्योंकि तुम श्रीराधामाधव की इस प्रकार की मधुर लीला रस की हेतु हुई हो।

Scanned by CamScanner

तब विशाखा सखियों के हँसने के कारण चंचल नयना होकर गद्‌गद स्वर में श्रीकृष्ण की भर्त्सना करके अति कष्ट पूर्वक उनके भुज बंधन से निकलकर रोष पूर्वक बोलीं—"हे शठ राज! हम सब तुम्हारी अपनी नहीं हैं एवं तुम्हारे कार्य में सहायता भी नहीं कर पायेंगी। अतः तुम्हारा धन हमारे लिए कैसे ग्रहणीय होगा? तुम अर्थ की उद्देश्य कारिणी अपनी भ्रातृ जाया कुंदलता को ही यह आलिंगन रूपी धन दान करो।" तब कुंदलता से बोलीं—"सखी कुंदलते तुम देवर के धन का परित्याग करके मुग्धता वशतः दूसरे को देने की इच्छा क्यों करती हो?" कुन्दलता बोलीं—"विशाखे! दाता कृष्ण तुम सब को धन दान कर रहे हैं, मैं निषेध करके पाप की भागी क्यों बनूंगी?" तब श्रीकृष्ण से बोलीं—"ओहे! क्षुद्र जनों के साथ तुम्हारा यह आदान-प्रदान समुचित् नहीं है एक मात्र श्रीराधा के साथ ही तुम्हारा यह कार्य संगत होगा। तब श्रीकृष्ण नयन भंगी से श्रीराधा को अन्वेषण करके कहीं भी न देखकर ललिता से बोले—"हे ललिते! तुम अत्यंत कुटिला हो, अपनी सखी चौरी श्रीराधा को कहाँ गोपन किया हुआ है? उसे मेरे सम्मुख लाओ अन्यथा तुम ही दण्डनीया होओगी।" यह सुनकर ललिता बोलीं—"मैं किसी की प्रतिभू (जमानत) नहीं हूँ। कौन जाने वे कहाँ गईं? तुम्हारे राज्य करण योग्य श्रीराधा सहित तुम राज्य करो, मैं गृह को चली।" तब कोई सखी बोली—"श्रीराधा गृह को प्रस्थान कर चुकी हैं।" कोई बोली—"सूर्य पूजा करने चली गईं।" कोई बोली-"तुमने उन्हें स्पर्श करके अपवित्र कर दिया था अतः वे मानस गंगा में स्नान करने चली गईं।" इस प्रकार सखियों से उपहासित होकर श्रीकृष्ण द्वारा कुंदलता के प्रति अवलोकन करने पर कुंदलता ने श्रीराधा जिस कुँज में छिपी हुई थीं इंगित द्वारा वह कुँज दिखा दिया। उसी कुँज में श्रीकृष्ण के प्रवेश करने पर कुंदलता सहित सखीगण कुँज के चारों द्वारों के दरवाजों को बंद करके कुँज प्रांगण में अवस्थान करने लगीं। इधर श्रीराधा अपने कांत को अपने निकट आते देखकर भागने के लिए उद्यता होने पर द्वार को प्राप्त न कर सकीं। तब श्रीकृष्ण बल पूर्वक उन्हें कुसुम शय्या पर ले आये। तब श्रीकृष्ण-मतंगज कंदर्प दावानल में प्रतप्त होकर निर्जन में श्रीराधा रूपी सुर तरंगिनी को प्राप्त होकर स्वच्छंद रूप से विलास करने लगे। जिस विलास में श्रीकृष्ण द्वारा नीवी तथा कंचुलिका मोचन करने पर श्रीराधा के अपने हस्त द्वारा उसे अवरोध करने की चेष्टा करने पर कंकनादि की उच्च ध्वनि होने लगी। तब श्रीकृष्ण ने 'वंशीं मे देहि' अर्थात् 'मेरी वंशी दो' यह बात कहते-कहते कंदर्पावेश वशतः स्वरभंग होने से 'द-द-देहि' इस प्रकार दकाराधिक्य जिन सभी वाक्यों का प्रयोग किया। उसके उत्तरमें श्रीराधा ने भी 'वंशीं मयि नास्ति' अर्थात 'मेरेपास वंशी नहीं है, यह बात 'मम-ममा-मा' इस प्रकार मकाराधिक्य उल्लास विशिष्ट उन गद्‌गद वाक्यों का उच्चारण किया। श्रीराधा के तारुण्यादि धन-समूहों के आत्मसात करने के विषय में श्रीकृष्ण की व्यग्रता एवं श्रीराधा द्वारा अपने तत्समुदाय की रक्षा में व्यग्रता उद्गत हुई। अंत में परस्पर के सातिशय पौरुष से शोभायमान प्रगाढ़ प्रयोगों से महान उत्सव का आविर्भाव होने लगा।

श्रीकृष्ण द्वारा श्रीराधा को अन्वेषण करना।

कुन्दलता के ईंगित से श्रीकृष्ण का कुँज मे प्रवेश एवं युगल विलास।

Scanned by CamScanner

जिस विलास में नायक-नायिका की सीत्कार रूपी प्रवाह मान सुधाधारायें विद्यमान थीं एवं जिस केलि में परस्पर आलिंगन के लिए परस्पर को ग्रहण करने से नखाघातादि संभोग चिह्न रूपी भूषण सम्पादित हुए थे, उसी मधुर निकुँज में सर्वोत्कर्ष में विराज करे-श्रीश्रीराधा माधव का वह अप्राकृत चिन्मय एवं मधुर निर्जन प्रेम विलास!!

तत्पश्चात् वृन्दा देवी मुरली को वक्ष स्थल में संगोपन करके नांदी मुखी के साथ मिलकर सखियों की सभा में आकर बोलीं—"सखीगण! ब्रजवनेश्वर श्रीश्रीराधा कृष्ण कहाँ गये हैं? उनके श्री चरणों में मेरा कुछ निवेदन है।" सखियाँ बोलीं-श्रीराधा तथा श्रीकृष्ण आपस में कलह करके विचार के लिए कंदर्प राज की सभा में गये हैं। तुम सब का क्या वक्तव्य है कहो। यदि यह विषय अति गोपनीय हो तो श्रीकृष्ण के वन से समावृत विलास भवन के उस उत्तम कुँजगृह में गमन करो।" वृंदा बोलीं—"सखीगण! तुम सब श्रीराधा की मन प्राण तथा देह के समान एवं परम अंतरंग अमात्य (मंत्री) के समान हो, अतएव मेरा निवेद्य विषय तुम्हारे लिए गोपनीय नहीं हैं। किन्तु तुम सब के अधीश्वर श्रीराधा कृष्ण के पास गमन करने पर ही निवेदन करुँगी जिससे सभी सुन पायें।"

तब सखीगण श्रीराधा कृष्ण के विलासावसान को जानकर तत्कालीन युगल-माधुरी दर्शन की लालसा से कुँज के बंद दरवाजे को खोलकर कुँज छिद्र में नयन अर्पित करके चारों ओर अवस्थान करने लगीं। विलास के अंत में श्रीश्रीराधा कृष्ण दोनों ही एक दूसरे द्वारा विभूषित हुए। श्रीकृष्ण श्वेत कमल के एक निर्मल पत्र पर कुंकुम द्रव्य द्वारा एक पत्रिका लिखकर अपने मुकुट के मध्य में रखकर श्रीराधा से बोले—"प्रिये! शय्या त्याग करो हम बाहर चलें।" यद्यपि श्रीराधा लज्जा वशत: सखियों के पास जाने में कुंठिता हुईं, फिर भी

सखियों सहित श्रीराधा का हास्य-परिहास।

श्रीकृष्ण प्रफुल्ल लोचन से विचार पराजिता चौरी की भाँति श्रीराधा का कर धारण करके निकुँज-गृह से प्राँगण में आकर उपस्थित हुए। सखीगण अंत: करण में हृष्ट होकर दोनों को आवृत कर संभ्रम के साथ श्रीराधा से बोलीं—"हम सब को छोड़कर तुम कहाँ गई थीं? हम सबने तुम्हें अन्वेषण करके कहीं नहीं पाया- इस धृष्ट के साथ तुम्हारा कहाँ मिलन हुआ? जो भी हो, इसके द्वारा तुम्हारा पराभव नहीं हुआ यही हम सब के लिए सौभाग्य का विषय है।" श्रीराधा सखियों की परिहास भंगी को सुनकर एवं सखियों के प्रति रति चिह्न सूचना कारी कान्त को देखकर लज्जा तथा ईर्ष्या से उच्छलिता होने लगीं। कांत को हँसते देखकर भ्रूलता कुटिल करते हुए कंपित अधरों से तथा गद्गद वाक्यों से तर्जनी संचालन पूर्वक उन पर गर्जन करने लगीं! सखी गण को हँसते देखकर भंगीपूर्वक उनसे कहने लगीं—"हे सखीगण। मेरे गृह जाने के लिए उद्यता होने पर तुम सब मेरा वसन खींचती हो, यदि मैं गुप्त रूप से रहूँ तो श्रीकृष्ण को सूचित कर देती हो, तुम सबके साथ रहने पर श्रीकृष्ण द्वारा मुझे खेदान्विता (यन्त्रणा देना) करती हो अत: तुम सब के साथ मैं किस प्रकार से संग विधान करुँगी कहो तो? तुम सब द्वारा प्रेरित सुमत्त, चंचल तथा स्पर्शोत्सुक इस कामुक श्रेष्ठ से मेरे भीता, चकिता, पलायनपरा

Scanned by CamScanner

होने पर कंटकलताओं ने आज सखी की भाँति मेरी रक्षा की है।'' यह सुनकर कुंदलता बोलीं—''राधे! सत्य ही बोल रही हो-कारण श्रीकृष्ण के अंग में वह निरोध जनक चिह्न समूह सुस्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। इन चंचल लता रूपिणी सखीगण ने तुम्हारी रक्षा करने के लिए कंटक रूपी सुतीक्ष्ण नखों द्वारा श्रीकृष्ण के जो अंग छिन्न भिन्न किये हैं यह समुचित है, किन्तु इन लताओं ने तुम्हारी रक्षाकारिणी होने पर भी कृष्णांग की अपेक्षा तुम्हारे शरीर में जो समधिक रूप से क्षत विक्षत किया है इसका क्या कारण है बताओ?'' कुंदलता की बात सुनकर ललिता बोलीं—''साध्वी कुन्दलते! अति चंचल स्पर्शोत्सुक पर पुरुष के भय से पलायन रता सती रमणियों के शरीर तो वन कंटक से क्षत होंगे ही, इसमें आश्चर्य क्या है? अतः इस पर तुम्हें कोई भी शंका करना व्यर्थ है।''

तब श्री कृष्ण श्रीराधा के प्रति अंग का वर्णन श्रवण करके तात्कालिक भाव साबल्य (भाव समूह का संमद्रन) से उनके रमणीय वदन चंद्र के दर्शनार्थ उत्कंठित होने पर सखीगण हँसते हुए श्रीराधा की तत्कालीन रमणीय अंग माधुरी का वर्णन करने के लिए प्रवृत्ता हुईं। वे श्रीराधा की कुटिल दृष्टि से निवारिता होने पर भी श्रीगोविन्द के प्रफुल्ल मुख कमल के सुमधुर हास्य मकरन्द से अभिषिक्ता होकर अपने काव्य रूपी रसाला द्वारा श्रीराधा के माधुर्य रूपी कर्पूर द्वारा सुवासित करके श्रीकृष्ण की परितृप्ति के लिए हँसते हुए चंचलाक्षी

सखियों द्वारा श्रीराधा की रूप माधुरी का वर्णन।

श्रीराधा की अंग माधुरी का वर्णन करने में प्रवृत्ता हुईं। प्रथमतः कुंद वल्ली का वर्णत करते हुए श्रीराधा को सश्लेष (द्वयर्थक) अप्रस्तुत प्रशंसा * का विषय बनाकर श्री ललिता बोलीं-देखो सखीगण! कुंदवल्ली मधुसूदन (पक्ष में भ्रमर) के संभोग चिह्नों को धारण कर रही है। पृथ्वी पर एक कलायुक्त चंद्रका शिव लिंग विराज रहा है, किन्तु इनके कुचरूपी शिवयुगल समूह शिवलिंग को जय करने की इच्छा से प्रचुरतर चंद्रकला को धारण कर रहे हैं।'' तब हास्य मुखी श्रीविशाखा बोलीं—''सखी के स्तन रूपी दोनों शिवलिंग गगन स्थित परिमित कलाशाली क्षयशील तथा सकलंक शशांक का त्याग करके अक्षय तथा अकलंक श्रीकृष्ण के कर नख चंद्र की बहुतर कला द्वारा स्वयं को भूषित कर रहे हैं।'' यह सुनकर चम्पकलता बोलीं—''श्रीकृष्ण को दोनों चरणों के नागरंग (कालीय नाग के मस्तक रूपी रंगालय) पर प्रचुर नृत्य करते हुए देखकर ही क्या उनके कर युगल उनके प्रति स्पर्धा करके सखी के कुचमंडल रूपी नागरंग (नारंगी फल) पर क्या नृत्य द्वारा इतना आघात कर रहे हैं?'' तब चित्रा बोलीं—''हो सकता है यह मनोज्ञा, कनकलता, श्याम तमाल के आश्रिता होकर नवीन तमाल की शाखा प्रशाखा के अत्यधिक संचालन से इसके दोनों फल इतने क्षत-विक्षत हो रहे हैं।'' तुंगविद्या बोलीं—''सखी के इस मनोज्ञ तनु रूपी कानन के मध्य में अतिमत्त काम गजराज विराज कर रहा है, इसीलिए

* श्रीराधा का नामोच्चारण करके वर्णन करने पर श्रीराधा क्रोध पूर्वक तिरस्कार करेंगी अथवा वहाँ से चली जायेंगी, तब श्रीकृष्ण तथा सखियों की वासना पूर्ण नहीं होगी। इसलिए पहले ''कुंदवल्ली'' से कहा। इस प्रासंगिक बात में अप्रासंगिक कथन रूप ''सश्लेष अप्रस्तुत प्रशंसा'' नामक अलंकार है।

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण के हस्त रूपी महावत नखरूपी अंकुश द्वारा इसके वक्षोज रूपी दोनों कुंभों पर शत-शत क्षत कर रहे हैं।'' इन्दुलेखा बोलीं—''इस सुरतरंगिनी में कृष्णरूपी कंदर्प दावानल-पीड़ित मतंगज यथेष्ट रूप से क्रीड़ा कर रहा है, इसलिए इसके स्तन रूपी चक्रवाक् अथवा दोनों पद्म कोरक (कली) उस मतंगज के कर प्रसारण हेतु क्लिष्ट (पीड़ित) हो रहे हैं।'' इसके बाद रंगदेवी बोलीं-"विधाता ने सखी के वक्ष स्थल पर तारुण्य मणि द्वारा पूर्ण एवं मुद्रित करके दो स्वर्ण कुंभों को गोपन करके रखा है। श्रीकृष्ण के नख रूपी खनक चोर (खनन करने वाले चोर) दोनों कुंभों को छिद्र करने के लिए इतस्ततः क्षत-विक्षत कर रहे हैं।'' सुदेवी बोलीं—''हे सखिगण! सखी के वक्षोज रूपी दाड़िम्ब फल (अनार) को पीतांशुक नख द्वारा विदीर्ण कर रहा है, वही चिह्न दृष्टि गोचर हो रहे हैं।'' तब ज्येष्ठा सखी बोलीं—''इसके लोचनांचल में अंजन लिप्त होने के कारण श्रीकृष्ण के अधर पक्व जम्बू फल के समान दृष्टि गोचर होने से सखी के दंत रूपी शुक ने उसे क्षत किया है।'' इसके बाद स्पष्टतः राधा नाम लेकर कांचनलता नाम की सखी बोलीं—''अहो! श्रीराधा का नाभि ह्रद, उस पर रोमावली, उसके ऊपर दोनों स्तन, सर्वोपरि मुख मंडल शोभा पा रहा है, इस शोभा को देखकर मन में भ्रांति होती है-जैसे निबिड़तर सुधा सरोवर में एक मृणाल द्वारा समुद्भूत दो स्वर्ण कमल को चन्द्र पुनः पुनः अपने कर स्पर्श से मुद्रित करके क्रीड़ा कर रहा है।'' तब माधवी नामक सखी बोलीं—''जिनकी नाभि ही होम कुंड, इसके ऊपर त्रिवली ही मेखला, कटि देश वेदी, रोमावली श्रुव, दोनों कुच ही मंगल घट, कंदर्प यज्ञकर्ता, नितम्ब पीठ, कंठ शंख एवं श्रीकृष्ण को आकर्षित करना ही जिसका फल है-इस प्रकार श्रीसधा अद्भुत यज्ञ शाला के रूप में विराज रही हैं।'' तब बासंती नामक सखी बोलीं—''जिनके भ्रू युगल धनू, रोमावली खड़ग, शोभन कटाक्ष ही बाण, दोनों बाहु नागपाश, कंठ देश शंख, मनोहर नितम्ब ही चक्र, गंड युगल स्वर्ण फलक तथा सुन्दर नख श्रेणी अंकुश स्वरुप है, वे ही श्रीराधा कंदर्प के सुविशाल अस्त्रागार की भाँति शोभा पा रही हैं।' तब वृंदा देवी बोलीं—''जिनके भुज युगल मृणाल, दोनों स्तन चक्रवाक, शोभन मुख, नाभि, हस्त तथा चरण ही कमल, कुटिल चूर्ण कुंतल राशि ही भृंग, सुमधुर हास्य ही कुमुद, नयन युगल इन्दीवर, रोमावली ही शैवाल हैं—उन्हीं श्रीराधा की देह रूपी सुधा सुरधनी पर श्रीकृष्ण का चित्तरूपी कुँजराज निरन्तर विहार कर रहा है।'' श्रीकृष्ण इंगितज्ञा ललितादि सखीगण इसी प्रकार से श्रीराधा के प्रत्येक अंग की रूप माधुरी का वर्णन करते हुए अंत में बोलीं—''श्रीराधा की रूप माधुरी तथा गुणावली सरस्वती के लिए भी अगोचर है, अतः इसका वर्णन कभी भी नहीं किया जा सकता। सखियों के वाक्य सुनकर समधिक उल्लास से उल्लसित लज्जा से संकुचित तथा क्रोध से जिनके नयन कुटिल हो रहे हैं, उन्हीं कांता शिरोमणि श्रीराधा के संदर्शन तथा सखियों के वचनामृत श्रवण से श्रीकृष्ण ने अपने नयन तथा मन की अपार तृप्ति लाभ की।

तत्पश्चात् वृन्दा देवी बोलीं—''हे ब्रज काननेश्वर श्रीश्रीराधा कृष्ण! आप दोनों के ही चरण कमलों में ग्रीष्म, वर्षा, शरत्, हेमन्त, शीत तथा बसन्त इन षड् ऋतु रूपी प्रधान शिल्पीगणों का एक निवेदन है, सखियों सहित इसे श्रवण करें। ऋतुगण कह रही हैं—हम सब आपकी किंकरी हैं, आपकी प्रीति के लिए सातिशय यत्न

Scanned by CamScanner

तथा निपुणता रूपी सर्वस्व समर्पण करके वृन्दावन को अति सुन्दर रूप से सजाया है। अतएव हे वृन्दावनेश्वर! वृन्दावनेश्वरी! आप युगल इस वृन्दावन का संदर्शन करके हम सबके कौशल जनित कार्य एवं आप सबके दर्शनाभिलाषी वृन्दावन के स्थावर जंगम के दर्शनोत्कंठा को साफल्य मंडित करें।'' इसी अवसर पर सुबल के साथ मधुमंगल वहाँ आकर श्रीकृष्ण से बोले—''हे कृष्ण! वृन्दावन की शोभा का क्या दर्शन करोगे श्रीराधाकी अंग शोभा द्वारा निखिल वन की शोभा अपहृत हुई है, यहाँ तक कि सखियों सहित श्रीराधा वन के फल पुष्पादि रूपी बाह्य शोभा को भी हरण कर रही हैं।

तब नान्दीमुखी आकर बोलीं—''हे राधा कृष्ण! सखियों सहित तुम दोनों का मंगल हो। पौर्णमासी देवी तुम सब को शत-शत आशीर्वाद प्रदान करते हुए बोल रही हैं-प्रचण्ड दंड शाली कंदर्प चक्रवर्ती ने

पौर्णमासीदेवी की आशीर्वाणी।

श्रीवृन्दावन के राज्य पद के समान सामन्त अर्थात् तुल्य सर्वाधिकारी के रूप में तुम दोनों को अभिषिक्त करके भ्रमर कोकिलादि चर समूह को नियुक्त किया है। अतएव तुम सब परस्पर में कलह न करो। कलह से भोग नाश तथा राज्य भय हुआ करता है। अत: तुम दोनों राज्य के मध्य सामंजस्य करके परस्पर प्रणय सहित सुख भोग करो।'' पौर्णमासी के इस वाक्य को नान्दीमुखी के मुख से श्रवण करके श्रीकृष्ण नान्दीमुखी से बोले—''तुम तो श्रीराधा के निखिल वृत्तान्त से अवगत हो, हम दोनों का मिलन कैसे सम्भव हो सकता है? क्योंकि शठता शालिनी श्रीराधा ने सखियों सहित मिलकर इस वन को निर्धन किया है एवं इसके द्वारा आज मेरी वंशी तक का भी अपहरण हुआ है।'' तत्पश्चात् कुंदलता श्रीकृष्ण से बोलीं—''हे कृष्ण! तुम दोनों अत्यंत गर्वित होकर विवाद करते-करते जो कंदर्प राज के पास गये थे, वहाँ तुम दोनों का क्या हुआ सत्य कहो।'' श्रीकृष्ण बोले—''इस राधा को

कंदर्पराज का विचार।

कंदर्पराज के पास ले जाकर मैने उनसे कहा—'इसने आपके वन की कुसुमादि संपत्ति को लूट लिया है एवं मेरी सर्वस्व वंशी का भी हरण किया है, इसे दंड दान करके अपना धन ग्रहण करें एवं मेरा धन मुझे प्रदान करें, तब कंदर्पराज द्वारा इनसे पूछने पर ये बोलीं—'फल तथा कुसुम लुब्ध गोपगण के साथ ही श्री कृष्ण ने असंख्य गोचारण करके आपके वन को उन्मूलित कर दिया है, हम सब ने कांति संपदा द्वारा आपके इस श्रीहीन वन की पुष्टि करके रखी है।' श्रीराधा के इस मिथ्या वाक्य को सुनकर कंदर्प राज ने उस पर ही विश्वास करते हुए श्रीराधा का पक्षपात करके उनके दोषों का विचार नहीं किया, विचार के लिए तुम लोगों के पास ही भेजा है।'' यह सुनकर कुन्दलता बोलीं—''हे कृष्ण! उस कंदर्प राज ने यदि श्रीराधा का ही पक्षपात किया है तब श्रीराधा के दोनों स्वर्ण घट के तारुण्य रत्न के हरण का दंड विधान क्यों किया?'' श्रीकृष्ण बोले—''राजा के इंगित करने पर पथ के मध्य मैनें ही इससे अपने धन के लिए प्रार्थना की और न देने पर दंड विधान में प्रवृत्त हुआ। किन्तु हाय! इसको दंड देना तो दूर रहा, इसके द्वारा मैं ही दंडित हो गया।'' यह सुनकर गद्‌गद वाक्य से रुद्ध कंठी श्रीराधा भ्रू युगल वक्र करके कटाक्ष बाण से श्रीकृष्ण के हृदय को विद्ध करते हुए हस्त स्थित लीला कमल द्वारा कुंदलता को प्रहार करते-करते अपार

Scanned by CamScanner

आनंद दान करने लगीं।

तब श्रीकृष्ण ने पहले जो पत्र लिखकर अपने मुकुट में रखा हुआ था, निकाल कर नान्दी मुखी के हाथ में प्रदान किया। नान्दी मुखी द्वारा अस्पष्ट वाक्य से उसका पाठ करने पर सभा में स्थित सभी ने उसे श्रवण करने के उद्देश्य से स्पष्ट अक्षरों में पाठ करने को कहा। तब नान्दीमुखी स्पष्टाक्षर में पढ़ने लगीं—"श्रीयुक्त स्मर-सार्वभौम चरण कमलों की जय हो। नान्दीमुखी, वृंदा तथा कुन्दलतादि सभासदों के प्रति कंदर्प राज का विज्ञापन यह है कि श्रीराधा ने काननस्थ प्रजागणों की जो संपत्ति हरण की है, उसे वे प्रजागणों को पुनः वापस करें। तत्पश्चात् मुरली विषयक विचारका भार सभासदों के प्रति अर्पित है।" तब सभासदवृंद द्वारा श्रीराधा से वन के श्री (संपत्ति) हरण के संबंध में पूछने पर विशाखा बोलीं—"श्रीराधा ने जो अपनी संपत्ति द्वारा वन को समृद्ध किया है, वह तो कंदर्पराज के सम्मुख ही उन्होंने कहा है, अतः वे प्रजागणों की संपत्ति कैसे हरण कर रही हैं?" यह सुनकर ललिता बोलीं—"हे मुग्धे! विशाखे! यह बात कहने का क्या प्रयोजन है? ब्रज कानन तो श्रीराधा की ही मूर्ति का प्रतिबिम्ब स्वरूप है। अतः हम सब अपना कानन स्वयं पालन करेंगी एवं फलादि भी हम सब ही ग्रहण करेंगी, इसमें राजा हम लोगों का क्या कर लेगा? और वंशी के संबंध में यह बात है कि सतीगणों के धर्मनाश में दीक्षिता वंशी को हम सबने नहीं देखा है। यदि वह किसी दिन भाग्य-क्रमसे हम सब के हाथ लग जाय, तो हम सब उसे जमुना के जल-प्रवाह द्वारा समुद्र में बहा देंगी।" नान्दीमुखी बोलीं—"कृष्ण! श्रीराधा ने जो अपनी संपत्ति प्रजागण को दान की है, पहले उस पर विचार हो, वंशी का विचार बाद में किया जायेगा।" तब श्रीराधा कृष्ण के वन भ्रमण की अभिलाषिनी श्री ललिता श्रीराधा को आगे करके वन गमन के लिए उद्यता होकर बोलीं—"तुम सब मेरे साथ चलो, श्रीराधा अपनी शोभा द्वारा वन को पुष्ट कर रहीं हैं या नहीं प्रत्यक्ष दर्शन करो।" तब श्रीराधा की स्वर्ण कांति से वृन्दावन स्वर्णालोक से उद्भासित हो उठा। पक्षी मृग, तरु, लता, पत्र तथा पुष्पादि समुदाय स्वर्ण वर्ण का हो गया, केवल आकार भेद से ही पदार्थों का परिचय हुआ। तब नान्दी मुखी सभासदों से बोलीं—"वृषभानु नंदिनी श्रीराधा का वाक्य ही सत्य है, क्योंकि उनकी स्वर्ण कांति द्वारा परिपुष्ट यह वन हम सभी का नयनानंद विधान कर रहा है।" तत्पश्चात् वृंदादेवी कुछ बोलने की इच्छा से हस्त संचालन कर ज्यों ही अग्रसर हुईं त्यों ही गुप्त वंशी के वायुमुखी होने पर उससे ध्वनि उद्गत हुई। उस ध्वनि को सुनकर सखियों के चकित होने पर कुंदलता उस वृंदा के निकट जाकर उनके हाथ से वंशी ग्रहण करके 'यह वृंदा ही चौरी है' ऐसा कहकर श्रीकृष्ण के निकट ले गईं। तब श्रीराधा कुंदलता से बोलीं—"सखि कुंदलते! तुम्हारे देवर ने वृंदा के हाथ में वंशी रखकर हम सबको व्यर्थ ही कष्ट दिया है, अन्यथा वृंदा को वंशी कहाँ से प्राप्त हुई-सत्य कहो।" वृन्दा बोलीं—"शैव्या के हाथ से वंशी छीनकर कक्खटी वानरी ने नान्दी मुखी के सामने मुझे दी है।" तब कुंदलता द्वारा श्रीकृष्ण के हाथ में वंशी प्रदान करने पर बहुत समय के पश्चात् कृष्ण वंशी को प्राप्त करके

ब्रजकानन श्रीराधा का ही प्रतिबिम्ब।

श्रीकृष्ण का वंशीप्राप्ति एवं बादन।

Scanned by CamScanner

आनंदित मन से वंशीवादन करने लगे। वंशी ध्वनि सुनकर स्थावर जंगम का धर्म विपरीत हुआ। स्थावर जंगम के धर्म को एवं जंगम स्थावर के धर्म को प्राप्त हुआ। अबलागणों की मन रूपी वंश श्रेणी मदन रूपी घुन द्वारा जर्जरित हो गयी। वृन्दावन में एक ही साथ षड्ऋतु की मनोहर शोभा का विकास हुआ। इस प्रकार से वंशी ध्वनि त्रिजगत को अमृत धारा से सिंचन करते हुए उल्लसित करने लगी!! तब श्री वृंदा देवी परमोल्लास में भरकर सपरिकर श्रीराधा कृष्ण को परम रमणीय मणिवेदी पर बिठाकर वन देवी गणों द्वारा विविध फल, मूल, मिष्टान्नादि मंगवाकर सेवन कराने लगीं। किंकरी गण ने कालोचित विविध सेवा सम्पादन की। युगल की रूप माधुरी दर्शन कर सभी परमानंद रस में निमग्न हुए। (साधक ने यदि प्रातः काल में नंदीश्वर में योगपीठ सेवा न की हो तो इसी मदन सुखदा कुँज में प्रातर्लीला वत् योगपीठ सेवा कर ले।)

नवद्वीपः षड्ऋतु-वन शोभाः

नवद्वीप में श्रीमन्महाप्रभु सपरिकर श्रीवास के षड्ऋतु-पुष्पोद्यान मंडप में स्वरूप के गान में आविष्ट हैं। कृष्ण की वंशी ध्वनि से सपरिकर श्री राधा गोविन्द के स्थावर जंगम तथा त्रिजगत् के उल्लासानुभव से गर-गर शब्द की हुँकार करके बाह्य दशा लाभ की। तब परिकर गण भी बाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त किया। श्री वास पंडित ने परमोल्लास पूर्वक श्री नृसिंह देव के प्रसादी फल, मूल, मिष्टान्नादि मंगाकर सपरिकर श्री मन्महाप्रभु को सेवन कराये तथा सभी को चंदन माल्यादि द्वारा विभूषित किया। (साधक ने यदि नवद्वीप में प्रातः कालीन योगपीठ सेवा महाप्रभु के गृह में न की हो तो इसी स्थान पर योग पीठ सेवा करे) इसके पश्चात् श्री मन्महाप्रभु ब्रज में श्री राधा कृष्ण के श्री कुण्ड शोभा दर्शन तथा वन भ्रमणभाव में विभावित होकर गंगातीर तथा षड्ऋतु वन की मनोहर शोभा का दर्शन करते हैं। विचित्र लतावली से आवृत तरु समूह किशलय, मुकुल, कुसुम तथा फलादि से परिशोभित हैं। सभी ऋतुओं के कुसुम समकाल में विकसित तथा नाना फल राशियों से फलित हैं। विविध पक्षियों के कल कूजन तथा भृंगों की गुँजार से वन कोलाहलपूर्ण है। श्री मन्महाप्रभु वन शोभा के दर्शन से ब्रज भावाविष्ट होकर गंगा तीर स्थित षड्ऋतु वन के मध्य में मंडप पर परिकर गणों से आवृत होकर बैठ गये। स्वरूप दामोदर ने महाप्रभु के मन को जानकर वृंदादेवी द्वारा श्री राधा कृष्ण के निकट कुंड शोभा वर्णनादि, षड्ऋतु वन शोभा दर्शन तथा षड्ऋतु लक्ष्मी द्वारा षोडशोपचार से श्री राधा कृष्ण की सेवा वर्णनादि पद क्रमपूर्वक गान किये। श्रवण से सपरिकर महाप्रभु ब्रजभाव में आविष्ट हुए। साधक दास व्यजनादि कालोचित सेवा करते-करते अपने मंजरी स्वरूप में ब्रजरस की सेवा में मग्न हुआ।

ब्रजधाम : श्रीराधाकृष्ण द्वारा कुण्डशोभा तथा षड्ऋतु वनशोभा दर्शन :

ब्रज में श्रीश्रीराधाकृष्ण सपरिकर मदन सुखदा कुँज की उत्तर सीमा में वृंदा देवी द्वारा परिसेवित होकर मणिवेदी पर परमानंद पूर्वक उपविष्ट हैं। वृंदादेवी सपरिकर श्रीराधाकृष्ण को कुण्ड शोभा दिखाकर उसका वर्णन करने लगीं। हे ईश्वर-ईश्वरी! देखो-देखो श्री राधाकुण्ड की कैसी परमाश्चर्यमय शोभा है। यह

Scanned by CamScanner

वृंदा द्वारा श्रीराधाकुण्ड एवं श्यामकुण्ड शोभा वर्णन।

मणिमय सोपानावली (सीढ़ी) युक्त मणि निर्मित चार घाटों से सुशोभित है। सभी घाट रत्न मण्डप तथा दोनों ओर से मणिमय अष्ट वेदिकाओं से विभूषित हैं। प्रति मण्डप के चारों ओर अवस्थित दो-दो वृक्षों की शाखा पर नाना जाति के कुसुम तथा विचित्र वसन द्वारा चार मनोहर हिन्दोला (झूला) लंबित रुप से शोभायमान हो रहे हैं। श्री कुण्ड के पूर्व दिक् तथा अग्निकोण के मध्य में श्याम कुण्ड के साथ मिलित दोनों कुण्ड के संगम स्थल पर रत्नमय स्तंभ के ऊपर विचित्र मणिमय सेतु शोभा पा रहा है। सोपानावली (सीढ़ी) पर परिशोभित कुट्टिम समूह (वेदिकायें) ग्रीष्मकाल में शीत तथा शीत काल में ऊष्णता प्रद हैं, वह कण्ठ, हृदय, उदर, नाभि, जानु तथा उरु देश के बराबर ऊँची हैं। कोई चतुष्कोण, षट्कोण, अष्टकोण तथा कोई गोलाकार है। इसके ऊपर अकस्मात् दृष्टि पड़ने से तरंग के जैसा भ्रम होता है। इसीलिए पक्षी कुल तृष्णार्त होकर जलपान की आशा से कुट्टिम के इतस्ततः निपतित होते हैं। जिस पर सखा तथा सखियों के साथ आप दोनों का परिहास रसमय विविध विहार सम्पन्न होता है। कुण्ड के चतुष्कोण में बासन्ती लता निर्मित चतुः शाला वेतस (नीबू), नाग केशर तथा अशोक कुँजों से परिवृत है। इसके बाहर पक्व तथा अपक्व फल-पुष्पादि युक्त शीतल पत्र विशिष्ट कदली वृक्ष चारों ओर से विमंडित हैं। उसके बाहर उपवन तथा पुष्प वाटिकाओं से व्याप्त होकर अपूर्व सौन्दर्य धारण कर रहा है। श्रीकुण्ड के जल के मध्य तैरता हुआ दिव्य रत्न मंदिर तथा मनोहर सेतु शोभा पा रहा है। पुष्प वन तथा फल वन के मध्य में आपकी सेवा-सामग्री से भरपूर अनेको मनोहर कुँज गृह विद्यमान हैं। नाना प्रकार के फल-फूलादि लाने वाली वन देवी गण तथा कुँज दासीगण से कुण्ड तट आवृत है। बसन्तादि ऋतुगण द्वारा कानन परिसेवित है। कुँजदासी गण द्वारा सम्मार्जित एवं सुगन्धित जल द्वारा संसिक्त पथ, आँगन तथा आलय समूह, पुष्प रचित या पुष्प द्वारा सुसज्जित चंदवा, पताका, कुँजमार्ग, चत्वर (चबूतरा), झूला एवं मंडप समूह अपूर्व शोभा धारण कर रहे हैं। कुँज गृह समूह अभिनव कमल दल, पल्लव एवं निर्वृन्त (बिना डंठल) कुसुम रचित शय्या, उत्तम उपादान, मधुपूर्ण पानपात्र, तांबूल पात्र आदि विलासोपकरणों से सुसज्जित हो रहे हैं। कमल, कह्लार, रक्तोत्पल, इन्दीवर, कैरव आदि कुसुमों से टपकते हुए मधु बिन्दु एवं पराग समूहों से कुण्ड जल सुगन्धित है। कलहंस-हंसी, चक्रवाक-चक्रवाकी, सारस-सारसी, डाहूक-हुडाहुकी के कर्णानन्दी कलरव से कुण्डतीर कोलाहल पूर्ण है। शुक सारी परस्पर रंग विस्तार करते हुए परम सुख से आप युगल के लीलारस काव्य का गान कर रहे हैं। मयूर आप दोनों के दर्शन से स्थिर विद्युत जड़ित नव जलधर के भ्रम में के-का ध्वनि करते-करते प्रणयोन्माद पूर्वक कुँजांगन में मनोहर नृत्य कर रहे हैं। हारित, पारावात, चातकादि अन्यान्य विचित्र पक्षीगण भी आप दोनों के दर्शन से उत्पन्न हर्ष में भरकर कर्णामृत-स्वरूप मनोज्ञ ध्वनि कर रहे हैं। कोटि-कोटि शारदीय-पूर्ण शशी निर्मंछित (हार मानकर) आप दोनों के वदनचन्द्र का सुधापान करने के कारण ही घृणा सहित आकाश के चन्द्र मंडल का परित्याग करके सुधापायी चकोर समूह श्री

Scanned by CamScanner

कुण्ड तट का आश्रय कर रहा है। पक्व तथा अपक्व फल भार एवं कुसुम किशलय, मुकुल, मंजरी भी लताभार से अवनत होकर वृक्षों की छाया में श्री कुण्ड का तीर तथा नीर समाच्छन्न है। सरोवर के मध्य में अनेकानेक प्रफुल्लित श्वेत कमल पवन द्वारा आन्दोलित होकर क्षीर सिन्धु की शोभा को भी पराभूत कर रहे हैं। श्रीकुण्डका नीर निजतुल्य शोभा सम्पन्न अपने बगल में स्थित श्याम कुण्ड के नीर को सेतु का निम्न देश रूपी वसनान्तराल देकर हाथ बढ़ाते हुए सलज्ज रूप से स्पर्श करके जैसे पुलकित हो रहा हो। कुण्ड के चारों ओर ललितादि प्रधाना अष्ट सखियों के कुँज हैं, आप दोनों के सुख विहार के लिए वे स्वहस्तों से अपने-अपने कुँज को अपूर्व शिल्प प्रकाश करते हुए सुसज्जित करके रखती हैं। कुँज सीमान्त वर्ती उद्यान एवं उपवन में शिल्प शालायें विराजमान हैं। कुँज सीमा में श्रेणी बद्ध वृक्षराशि है, उनके मध्य में मरकत मणिमय सुन्दर पथ है। मणि कांति से वहाँ नदी तरंग के समान भ्रम होता है। मणि दीवार द्वारा उद्यान एवं उपवन समूह आवृत है। बीच-बीच में द्वार देश भी शोभा पा रहे हैं। साधारण व्यक्तियों को द्वार दीवार के समान एवं दीवार द्वार के समान प्रतीत होते हैं, उसकी ऐसी ही विचित्रता है।

ललिता नंददकुँज वर्णन।

श्री कुण्ड के उत्तर में ''ललिता नंदद'' नामक कुँज है उसमें अनंगाम्बुज नामक एक अति आश्चर्यमय चत्वर (चबूतरा) विराजमान है। अष्टदल पद्माकृति कुँज, हेमरंभावलि उसका केशर, अष्ट दलों से विलक्षण अष्टकुँज विराजित हैं। कर्णिका सहस्रदल पद्माकार है तथा मध्य स्थल में स्वर्ण की वेदिका शोभा पा रही है। आप युगल की लीलानुरूप कुँज विस्तृत तथा संकुचित होता है। श्री ललिता देवी की शिष्या ''कलावती'' द्वारा नित्य ही इस कुँज का संस्कार होता है। जिसमें समस्त ऋतुओं की सुख संपत्ति की अनुभूति होती है, अतः वह केलि-विनोद का समृद्ध स्थान स्वरूप है। यह निखिल शोभा संपद का निदान ललिता नंदद कुँज वयस्य गणों के साथ आप युगल के पट्ट मंदिर के रूप में विराजमान है। पद्माकार रचित कुँज-माणिक्य रचित उसका केशर, स्वर्ण रचित कर्णिका, पत्र समूह एक-एक वर्ण के रत्न द्वारा निर्मित, समान रूप से विशिष्ट पत्र बहु मंडलों में विभक्त हैं। कर्णिका के बाहर केशर तथा केशर के बाहर पत्र के होने से उसके मान (नाप) तथा संख्या क्रमशः वृद्धि पा रहे हैं । वह कमल सदृश ही पंचेन्द्रियों के लिए सुखद, शैत्य (शीतल) तथा सौरभादि गुणों से युक्त है। कर्णिका के बाहर-बाहर यथाक्रम से स्वर्ण, वैदूर्य, इन्द्रनील, स्फटिक तथा पद्मराग इन पाँच मंडप के विराजित होने से यह अति आश्चर्यमय शोभा का विस्तार कर रहा है। मंडप के मध्य देश में विविध रत्न निर्मित मिथुनी भावापन्न मृग, पक्षी, देवता, मनुष्य तथा गंधर्व, किन्नरादि की विचित्र प्रतिमूर्ति शोभा पा रही हैं, जिससे मंडप किसी अभावनीय रस का उद्दीपन जगा रहा है। शुक्ल, रक्त, हरित, पीत एवं श्याम इन पाँच वर्णों के पुष्प तथा पत्र द्वारा शोभित केशरादि वृक्ष शाखा समूह जिनके उत्तम चंद्रातप के रूप में परिशोभित है, उसी मंडप के मध्य भाग में सहस्र दल पद्माकर जानु परिमित वह रत्नमय कुट्टिम (वेदिका) कर्णिका के समान शोभा का विस्तार कर रही है। अनंग रंगाम्बुज चत्वर (चबूतरा) के वायु

Scanned by CamScanner

कोण में ''बसन्त सुखद कुँज'' विराजित है। मूल से अग्रभाग तक कुसुम से भरा हुआ अशोकलता समूह एवं शुक्लादि पंचवर्ण कुसुम समूहों से विभूषित विविधलता जालों से परिकल्पित-प्रशस्त उच्च तथा विस्तीर्ण आमूल पुष्प युक्त अशोक तरु के कुँज समूह जिनकी कर्णिका हैं—इसी प्रकार के पद्म पुष्प दलाकार अष्ट उपकुँजों से आवृत ''बसन्त सुखद'' नामक यह कुँज ललिता नंदद कुँज के वायु कोण में विराजमान है। यह भी अष्ट दल पद्माकृति है, भ्रमर के गुँजन एवं कोकिलादि के मधुर कूजन से कोलाहल पूर्ण है।

ललिता नंदद कुँज के नैऋत्य कोण में चारों ओर चार द्वार एवं खिड़की युक्त ''श्रीपद्ममंदिर'' विराजमान है। श्री ललिता देवी ने नाना मणि समूहों से जड़ित इस मंदिर की दीवार पर आप श्री युगल के पूर्व रागादि की चेष्टा, रास, कुँज विलासादि एवं बाहर पूतना वध से लेकर अरिष्टासुर वध तक की समस्त लीलाओं की मधुर चित्रावली को सुन्दर रूप से चित्रित करके रखा है। रत्नों की कांति ही जिनके किंजल्क (कमल पुष्प) एवं भीतरी भाग में स्थित गृह समूह ही कर्णिका है तथा बाहर पद्म दलाकार के रूप में षोडश प्रकोष्ठ शोभा पा रहे हैं। इन षोडश प्रकोष्ठ के मध्य में उपकोष्ठ भी हैं। मन्दरि के ऊर्ध्व भाग में भी ठीक इसी प्रकार षोडश प्रकोष्ठ एवं उपकोष्ठ में सुसज्जित अट्टालिकायें विराजित हैं। ऊपर ही ऊपर संलग्न दीवार शून्य स्फटिक मणि निर्मित स्तंभ पंक्ति के ऊपर स्थित प्रवाल रचित वलभी समूह (घर का सबसे ऊँचा भाग) भी हैं। उसके ऊपर क्रमागत वक्ररूप से ऊर्ध्वगामी महारत्नों द्वारा निर्मित छत है, उसके शिखर देश में सुशोभित रत्न कलश असीम सुषमा का विस्तार कर रहे हैं। इस मंदिर के तृतीय तल का पार्श्वत्रय (तीनों भाग) अनावृत तथा नाना मणि रत्नों से परिमंडित है। अति उच्च इस अट्टालिका पर अवस्थान करके आप युगल वन की शोभा का दर्शन करते हैं। इसके निम्न भाग में रत्न समूह जड़ित बहुविध मनोहर चित्रों से दैदीप्यमान उप कुट्टिम समूह (वेदियाँ) विराजमान हैं। उन दो-दो के मध्य सोपान श्रेणी शोभित कंठ तक उन्नत है, उस अति विस्तीर्ण कुट्टिम-सोपान के चारों ओर आकंठ विस्तीर्ण प्रान्त देश समुत्पन्न वृक्ष राशि के फल तथा कुसुम आलिंगित होकर परम शोभा का विस्तार कर रहे हैं, यही पद्म मंदिर वयस्कगण के साथ आप युगल के लिए अशेष केलि रत्नाकर है।

ललिता नंदद कुँज के अग्नि कोण में पद्म दलाकार रत्नमय झूला युक्त वेदिका शोभा पा रही है। पूर्व तथा पश्चिम दिक् में समुत्पन्न दो बकुल वृक्ष की सुन्दर शाखा ने परस्पर मिलित होकर ऊर्ध्व देश में वक्रगति से उसे मंडप की भाँति आवृत करके रखा है। इन्हीं दोनों बकुल वृक्षों की दोनों शाखाओं के मूल भाग में दृढ़ पट्ट रज्जू द्वारा चारों कोण आबद्ध हैं। नाभि तक ऊँचा एक मनोहर हिन्दोला (झूला) विराजमान है। इसी हिन्दोला में पद्मराग मणि निर्मित आठ पट्टी एवं प्रवाल जड़ित अष्ट पद्म हैं। एक हाथ ऊँची आवृत पट्टी ही उसका केशर है, षोडश दलाकार पद्म श्रेणी ही इसकी विचित्र कर्णिका है। हिन्दोला दो-दो पायों से युक्त पद्म दलाकार अष्ट दल से परिवृत है। रत्न पट्टी के केशर समूह के मध्य में आठ द्वार

Scanned by CamScanner

हैं। दक्षिण द्वार के बगल में आरोहणार्थ (ऊपर जाने के लिए) दो द्वार संयुक्त हैं। दो छोटे स्तंभ संयुक्त हैं, पृष्ठ देश के अवलम्बन स्वरूप हिन्दोला के मध्य स्थल में बैठने के लिए पट्ट वस्त्र का गद्दा एवं पार्श्वोपाधान (गोल तकिया) तथा पृष्ठोपधान (पीछे का तकिया) भी सुशोभित हो रहा है। उसके ऊपर नाना प्रकार के चित्र-विचित्र एवं स्वर्ण सूत्र जड़ित वस्त्र से आच्छादित कृत्रिम चंद्र श्रेणी, मुक्तामाला तथा गुच्छ मंडित चंदवा शोभा पा रहा है। इसी हिन्दोलाम्बुज के अष्ट दल स्थित अष्ट सखियों के मध्य में समासीन आप श्री युगल के झूला के नीचे स्थित अन्यान्य गायिका सखियों के साथ हम सब झूले को डुलाती रहती हैं। ''मदनान्दोलन'' नामक इस झूले पर आपके आरोहण करने पर चारों ओर से सखियाँ आपको अपने सम्मुख ही दर्शन करती हैं। यहीं आपकी झूलन लीला हुआ करती है।

ललिता नंदद कुँज के ईशान कोण में नाना लीला की उपहार सामग्री से परिपूर्ण अष्ट दल पद्माकृति ''माधवानंदद'' नामक माधवी कुँज अवस्थित है। प्रफुल्ल मल्लिका द्वारा आलिंगित अवनत शाखा रूपी भुजाओं एवं प्रस्फुटित नाग केशर समूह से समाच्छन्न ''सिताम्बुज'' नामक कुँज ललिता नंदद कुँज के उत्तर में विराजमान है। इसका मध्य देश चंद्रकांत मणि जड़ित, कर्णिका समूह स्वर्णमय, किंजल्क (कमल पुष्प) समूह मणिमय है। पद्मदलाकृति कुँजावली इस कुँज को आवृत कर रही है। नील कमल के आकार का एक अन्य कुँज ललिता नंदद कुँज के पूर्व में शोभा पा रहा है। वह नम्र शाखारूपी भुजा द्वारा आलिंगित, प्रफुल्लिता हेमलताओं से आवृत, तमालादि वक्षों से सुसज्जित एवं अति उत्कृष्ट नील रत्न राशियों से जड़ित है, इसका नाम असिताम्बुज कुँज है। वह नील पद्म दलाकार आठ उपकुँजों से आवृत है एवं कर्णिका स्वर्ण-निर्मित है। इसी ललिता नंदद कुँज के दक्षिण में ''अरुणाम्बुज'' नामक कुँज परिशोभित है। इसका मध्य मंडल तथा बाह्य मंडल पद्म रागादि मणि मालाओं से जड़ित एवं प्रफुल्ल लवंग लताओं से आच्छादित है। ललिता नंदद के पश्चिम में 'हेमाम्बुज'' नामक कुँज विराजित है। वह प्रफुल्लित चम्पक वृक्षों तथा हेम चम्पक लताओं से आच्छन्न है एवं उसका मध्य तथा बाह्य देश स्वर्ण मंडित है। इस प्रकार ललिता नंदद कुँज के आठों ओर आप युगल के प्रिय कुँज नाना वर्ण एवं आकार भेद से नयन तथा मन के लिए आनंद प्रद विस्मयकारी के रूप में विराजमान हैं।

श्री राधाकुण्ड के ईशान कोण में सुप्रसिद्ध ''मदन सुखदा'' नामक विशाखा नंदद कुँज विराजमान है। इसके चारों कोने में चार विशाल चम्पक तरु शोभा पा रहे हैं। उनकी अरुण, हरित, पीत एवं श्यामवर्ण कुसुम की सौरभ ने अन्यान्य गंधों को आवृत करके कुँज को चारों ओर से आमोदित कर रखा है। नील, पीत एवं हरित वर्ण सुमधुर संगीतकारी शुक, पिक (कोयल) तथा अलि (भौंरा) समूहों से रमणीय एवं माधवी लताओं से आवृत परस्पर मिलकर वक्र रूप से बाहर जाते हुए एवं ऊपरी भाग में मिलते हुए चंपक शाखाओं की स्निग्ध छाया से आच्छादित होने के कारण विशाखा नंदद कुँज राज भवन के तुल्य प्रतीत हो रहा है। विविध पुष्प

मदन सुखदा नामक विशाखा नंदद कुँज वर्णन।

Scanned by CamScanner

पल्लवादि रचित आभूषण, वसन, शय्या एवं चंदवादि द्वारा पूर्ण एवं मृणाल सहित अरुण, शुक्ल, पीत तथा श्याम वर्ण के पद्म-उत्पलादि कुसुम समूहों द्वारा दिक-विदिक को नाना प्रकार के चित्रों से विचित्र कर रखा है। शर-शलाकाओं (शरकंडादि) से परिग्रथित (गूँथे हुए) पल्लव एवं विचित्र कुसुम समूहों से निर्मित चार कपाट कुँज द्वार चतुष्क (चार से युक्त) के आवरण स्वरूप सुसज्जित हैं। द्वारपाल की भाँति मदमत्त, चंचल भ्रमर इतस्ततः भ्रमण कर रहे हैं। विरोधीजनों के आने पर कुँज के अंदर प्रवेश नहीं करने देंगे। कुँज का मध्य देश मणियों से जड़ित तथा षोडश दल पद्माकार है। कुँज की अध्यक्षा नाना चित्र रचनाओं में निपुणा श्री विशाखा शिष्या मंजुमुखी सतत इस कुँज के संस्कार में निरता है। आप युगल के निरन्तर विहार रस वन्या से आप्लवित यही ''मदन सुखदा'' नामक विशाखा नंदद कुंजराज नयनानंद प्रद रूप में विराज कर रहा है।

चित्रानंदद कुँज वर्णन।

श्रीराधाकुण्ड के पूर्व दिक् में ''चित्रा नंदद'' नामक विचित्र कुँज विराजित है। विचित्र आकार तथा विचित्र वर्ण विशिष्ट, विचित्र वृक्ष तथा लताओं एवं विचित्र मनोहर रत्नों से उसका मध्य भाग परिमंडित है। यह विचित्र वर्णों के पक्षी, भृंग, कुट्टिम (वेदिका) तथा प्रांगण द्वारा परिवृत है। विचित्र मंडप एवं विचित्र झूला युक्त यह कुँज शोभा पा रहा है।

इन्दुलेखा का पूर्णेन्दु कुँज वर्णन।

श्री राधाकुण्ड के अग्नि कोण में ''पूर्णेन्दु'' नामक इन्दुलेखा-सुखप्रद कुँज विराजमान है। इसकी वेदिका तथा प्रांगण स्फटिक तथा चंद्रकांत मणि द्वारा जड़ित है। उसमें श्वेत पद्म, कुमुद तथा मल्लिकादि शुभ्र पुष्प समूह चित्रित हैं। कुँज शुभ्र वर्ण पत्र पुष्पादि युक्त वृक्ष लताओं से परिशोभित है एवं शुभ्र वर्ण भ्रमर, कोकिल एवं शुकादि से परिव्याप्त है। केवल ध्वनि से ही उनकी जाति का ज्ञान होता है वर्णों से नहीं। पूर्णिमा की रात्रि में सखियों सहित आप युगल शुभ्र वेश धारण करके जब इसमें विहार करते हैं तब अकस्मात किसी के आने पर भी कोई आप सबको नहीं देख पाता। इसमें अति शुभ्र केलि शय्या भी विराजमान है।

चम्पकलतानंदद हेम कुँज वर्णन।

श्री राधा कुण्ड के दक्षिण में ''चम्पकलता नंदद'' हेम कुँज विराजित है। यह हेमलता तथा हेम वृक्षों से सभी प्रकार से समाच्छन्न है, हेम कमलों द्वारा उसका प्रांगण चित्रित है, सब वेदिकायें भी हेममय हैं। इसके लता, वृक्ष पुष्प प्रांगण, वेदी, मंडप, झूला, अलिकुल एवं लीला परिच्छद (पोशाक) सभी वस्तुऐं स्वर्ण वर्ण की हैं। हे श्रीराधे! आप जब लीला क्रम से पीत वर्ण के वसन भूषणों से भूषिता होकर प्रवेश करती हैं, तब श्री कृष्ण आपको नहीं देख पाते। हे कृष्ण! जब आप वहाँ गौरांगी वेश में गोपन रूप से सखियों सहित श्री राधा के प्रेमालाप को सुनते हो तब आपको भी कोई नहीं देख पाता। इसी हेम कुँज में आप दोनों के एकासन पर बैठे रहने पर भी पद्मा द्वारा प्रेरिता जटिला श्री कृष्ण को देखती हैं, परन्तु श्री राधा को नहीं देख पाती। अहो! इस कुँज ने वहाँ पर स्थित सभी वस्तुओं को कांचन भूमि पर अवस्थित वस्तुओं के समान हेमवर्ण कर रखा है। उसमें चम्पकलता की प्रसिद्ध

Scanned by CamScanner

पाकशाला एवं तुम्हारे सहित भोजन वेदिका भी विद्यमान है। समयानुसार पाक क्रिया की आचार्या कुंदलता मेरे साथ आनन्द पूर्वक आप सब की कुँज भोजन लीला सम्पादन करती है।

रंगदेवी सुखप्रद श्याम कुँज।

श्री राधा कुण्ड के नैऋत्य कोण में रंगदेवी सुखप्रद सर्वत्र श्याम वर्ण ''श्याम कुँज'' विराज रहा है। इसके अन्दर की भूमि इन्द्र नील मणि द्वारा जड़ित, श्याम लता आवृत, तमाल शाखाओं से समाच्छन्न एवं वेदी, चबूतरादि कुँज स्थित सब पदार्थ ही इन्द्र नीलमणि से चित्रित हैं। कभी-कभी मुखरा आदि वृद्धा गण के वहाँ सहसा आने पर भी युगलित आप दोनों के मध्य केवल श्री राधा को ही देख पाती हैं।

तुंगविद्या का अरुण कुँज

श्री राधाकुण्ड के पश्चिम दिक् में तुंग विद्या नंदद ''अरुण कुँज'' विराजित है। यह रक्त वर्णलता, रक्त वर्ण पुष्प तथा रक्तवर्ण पत्र युक्त वृक्षों से आवृत एवं वेदी, प्रांगण तथा मंडपों का भीतरी भाग रक्त वर्ण रत्नों से परिशोभित है। रक्त वर्ण झूला है तथा वहाँ के पक्षी भृंगादि सभी रक्त वर्ण के हैं।

सुदेवी का हरित कुँज

श्री राधाकुंड के वायु कोण में सुदेवी सुखद ''हरित कुँज'' विद्यमान है। वहाँ हरित वर्ण लता, हरित वर्ण वृक्ष हरित वर्ण पक्षी विराजित हैं तथा हरित वर्णमणि से उसके वेदी, चबूतरादि चित्रित होने से सभी हरित वर्ण से शोभायमान हैं। इसी कुँज में आप दोनों की पाशा क्रीड़ा होती है।

श्रीकुण्ड के मध्य अनंग मंजरी का तैरता हुआ कुँज

श्री राधा कुण्ड के मध्य में मरकत मणि जड़ित, पद्मराग तथा चंद्रकांत मणि द्वारा संघटित होकर दर्शकों को जलवत् भासमान जल के समान कांति प्रतीत होने वाला अनंग मंजरी का सुखद कुँज विराजमान है। इसका आकार षोडश दल पद्म के समान है। उत्तर दिक् में सेतु बन्ध शोभित है एवं मणिनिर्मित कुमुद, पद्म तथा हंसादि की प्रति मूर्ति से सुसज्जित इस मनोहर कुँज के दर्शन से ऐसा प्रतीत होता है—जैसे उसके ऊपर तरंग-माला खेलते हुए भ्रमण कर रही हो। यह जल के मध्य कमल वत् विराजमान होने कारण ''सलिल कमल'' कुँज नाम से भी विख्यात है।

श्री राधाकुण्ड महिमा वर्णन।

हे श्री राधे! आप जैसे श्री कृष्ण की सर्वश्रेष्ठ प्रेयसी हो, आपका कुण्ड भी श्रीकृष्ण के लिए आपके ही समान प्रिय है। ब्रज चंद्रमा माधव आपके कुण्ड के अद्भुत गुणों से वशीभूत होकर सतत प्रेमपूर्वक इसमें क्रीड़ा करते हैं। जो व्यक्ति इसमें मात्र एक बार स्नान करता है, वह आपके समान ही श्री कृष्ण प्रेम (भावसाजात्य) लाभ करके धन्य हो जाता है। इस विश्व में ऐसा कौन है, जो श्री कुण्ड की महिमा तथा माधुर्य का वर्णन करने में सक्षम हो सके? ये ही नागर राज श्री कृष्ण आपके श्री कुण्ड का माधुर्य दर्शन करके आपके अंग प्रत्यंग के समान ही स्फूर्ति को प्राप्त होते हैं। श्री कुण्ड के क्रीड़ाशील चक्रवाक-मिथुन का दर्शन करके तुम्हारे दोनों स्तन, फेनों से मुक्ता माला तथा तरंगों के रसोच्छलन से श्री कुण्ड को आपके वक्ष स्थल के समान ही समझते हैं। आप

Scanned by CamScanner

जिस प्रकार मधुर रस तरंगों से आकुला हो, यह कुण्ड भी उसी प्रकार मधुर जल तरंगों से व्याप्त है। आपके मुख के समान सरसी (सरोवर) में स्वर्ण कमल विकसित एवं आपके चूर्ण कुंतल (घुँघराले केशों) के समान कुण्ड भ्रमरावलि से आवृत है। आपके नयन जिस प्रकार नृत्य परायण हैं, सरसी (सरोवर) भी उसी प्रकार नृत्यशील खंजनों (खंजन पक्षी) से व्यापत है। आप जिस प्रकार हंसक (पाद भूषणों) की ध्वनि से रमणीया हो, सरसी भी उसी प्रकार हंसो के रव से कोलाहलपूर्ण है। श्रीकृष्ण द्वारा आलिंगन के लिए आपकी दोनों बाहुओं को ग्रहण करने पर आप जैसे अपने हस्त द्वारा इनका निषेध करती हो, उसी प्रकार श्री राधाकुण्ड भी तरंग कंपित कोकनद (रक्त कमल) रूप हस्त द्वारा श्याम कुण्ड के तरंग कंपित कोकनद (रक्त कमल) को निषेध करता है। श्री कृष्ण द्वारा बलपूर्वक तुम्हारे मुख कमल का चुम्बन करने पर जैसे आप थोड़े कटाक्ष निक्षेप से अपने मुख को वक्र करती हो, उसी प्रकार श्याम कुण्ड के कमलों के वायु वेग से चंचल होकर श्री राधा कुण्ड स्थित भ्रमर के चुंबित पद्म के ऊपर निपतित होने पर राधा कुण्ड के पद्म भी वक्र होते हैं। श्री कृष्ण द्वारा आपके स्तनाधरादि ग्रहण करने पर आप जैसे अंतर्मन से प्रीति युक्ता होकर भी बाहर से व्यथिता की भाँति क्रोध प्रकाश करते हुए ''कुट्टुमिताख्य'' नामक अलंकार से भूषिता होती हो, उसी प्रकार भ्रमर की गुँजार जनित सीत्कार एवं पक्षियों के कलरव रूपी गद्‌गद स्वर से कोप प्रकाश करते देखकर सरसी (सरोवर) को कृष्ण कुट्टुमित (प्रियतम के प्रेम का दिखावटी तिरस्कार) भाववत् ही समझते हैं। इसी प्रकार से आपके अंग प्रत्यंगों का स्मारक (स्मरण कराने वाला) असीम गुण विशिष्ट श्री राधाकुण्ड के दर्शन से श्री कृष्ण अतुलनीय आनंद का अनुभव करते हैं।

श्री कृष्ण के प्रिय नर्म सखा सुबल मधुमंगलादि द्वारा निर्मित एवं सुसंस्कृत कुँजों से परिवृत श्याम कुण्ड भी आपके सरसी (सरोवर) के समान ही रमणीय है। सुबल, मधु मंगल, उज्ज्वल, अर्जुन, गंधर्व, विदग्ध, भृंग, कोकिल, दक्ष एवं सन्नन्दन आदि प्रिय नर्म सखाओं के मध्य में जिसका कुँज जिस दिशा में स्थित है,

श्याम कुण्ड पर सखागणों के कुँजादि तथा मानस पावन तीर्थ का वर्णन।

उन्होंने उन सभी कुँजों का विभाग करके आपको एवं ललितादि को समर्पित किया है। श्याम कुण्ड के वायु कोण में स्थित ''सुबलानंद कुँज'' को आपने अंगीकार किया है, इसका घाट ही ''मानस पावन'' है। आप सखियों सहित प्रतिदिन इस घाट में स्नान करती हो। उसमें आपका विपुल आग्रह देखा जाता है, क्योंकि उसका जल श्री कृष्ण पाद कमलों के मधु सदृश है, इसीलिए वह आपको श्री कृष्णवत् प्रिय है। कृष्ण कुण्ड के उत्तर में ''मधु मंगल सन्द'' नामक कुँज विराजित है। यह अति विचित्र है एवं श्री ललिता द्वारा अंगीकृत है। ईशान कोण में ''उज्ज्वलानंदद'' कुँज विशाखा द्वारा अंगीकृत है। इसी प्रकार पूर्वादि अन्यान्य दिशाओं में स्थित जो अर्जुनादि सखाओं के कुँज हैं, वह सब ही अति विचित्र एवं चित्रादि सखियों द्वारा अंगीकृत है। श्याम कुण्ड की पूर्व दिशा में तथा राधा कुण्ड की पश्चिम दिशा के घाट में मानवों तथा पशुओं के स्नान-पान आदि के लिए दो विस्तीर्ण पथ हैं। लीला के

Scanned by CamScanner

अनुकूल नित्य सिद्ध तथा साधक भक्तगणों के भावमय चित्त में उत्पन्न यह दोनों कुण्ड अप्राकृत रूप में ही प्रकाश पाते हैं, किंतु इससे भिन्न व्यक्तियों के निकट प्राकृत वत् प्रतीत होते हैं।

वृंदा द्वारा वर्णित अपनी कुण्ड माधुरी को श्रवण कर परमानंदित श्री श्री राधा-माधव ने इसके बाद वृंदा के आवेदन से वन शोभा दर्शन के लिए उल्लास में भरकर षड्ऋतु वनाभिमुख होकर गमन किया। वृंदा देवी अपने नाथ श्रीराधाकृष्ण के अग्रवर्तिनी होकर उन्हें षड्ऋतु शोभा युक्त वन भू-भाग दिखाते हुए बोलीं-"हे श्रीराधाकृष्ण! देखो-देखो, बसन्त ऋतु जात माधवी तथा बकुलादि, ग्रीष्म ऋतु जात मल्लिका, गुलाब तथा शिरीषादि, वर्षा ऋतु जात यूथिका, कदम्ब तथा केतकी शरद् ऋतु जात पद्म तथा वान (नील झिन्टी), हेमन्त ऋतु जात लोध्र (लाल या सफेद फूलों वाला वृक्ष विशेष) तथा अम्लान एवं शिशिर ऋतु जात बन्धुक (बांधुली) आदि सुचारु कुसुम समूहों से वेश रचना द्वारा जिनके अंग विभूषित हो रहे हैं- वही वृंदाटवी किस प्रकार से शोभा पा रही है। यहाँ आपकी सेवा के लिए विकसित माधवी लता के साथ प्रफुल्लित रसाल समूह, मल्लिका गणों के साथ शिरीष, यूथिका गणों के साथ कदम्ब राशि, जाति के साथ सप्तपर्ण (छातिम वृक्ष) विकसित, पाली के साथ लोध्र गण, प्रियंगू लता के साथ कुंदगण अधीर आग्रह के साथ आप दोनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस अटवी में कहीं भ्रमरों के साथ कोकिल गण, कहीं चाष पक्षी अथवा स्वर्ण चातक के साथ धूम्याटक (फिंगिराज) डाहुक के साथ मयूर तथा चातक गण, सारस के साथ शुक श्रेणी एवं भरद्वाज पक्षी के साथ हारित परमानंद में प्रेम विवश होकर जैसे आपकी गुण लीला माधुरी का कीर्तन कर रहे हैं। यह वृंदाटवी आनंद सहित अपनी संपदा द्वारा आप की सखियों की भाँति विविध फल, पुष्प तथा पल्लव रूपी माधुर्य वैभव से शोभितांगी होकर आप दोनों की सेवा सुख की वाँछा कर रही है। देखो-देखो आप दोनों को अपने गृह में समागत देखकर यह वृंदाटवी आनंद सहित ऊर्ध्वगत कुसुम पराग रूपी वस्त्र उड़ाते हुए वायु संचालित वृक्ष तथा लतावली के छल से मधुर नृत्य कर रही है। अति सम्माननीय व्यक्ति के आगमन पर जैसे लोग उत्तम वस्त्र द्वारा पथ आच्छादित करते हुए उन्हें लाते हैं उसी प्रकार यह वृंदाटवी भूमि-पतित नाना वर्णों के झड़े हुए फूलों से वन पथ को आच्छन्न करके आप सब के शुभागमन की कामना कर रही है। अटवी आप की मुखचंद्र कांति द्वारा विगलित चंद्रकांत मणि-वेदिका के जल, वन्य श्यामाक (श्यामा धान), दूर्वा, अपराजिता तथा पद्म पुष्पों द्वारा आप दोनों को पाद्य अर्पण कर रही है। दूर्वा, पुष्प तथा अंकुरादि द्वारा अर्घ्य, नदी तीर स्थित लवंग, जाति फल तथा कोरकान्वित जल (एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य युक्त जल) द्वारा आचमनीय, पुष्प मधु द्वारा मधुपर्क एवं शीतल, सुगंधी तथा जल कण युक्त वायु द्वारा आप दोनों को स्नानीय अर्पण कर रही है। मरकत मणि तथा स्वर्ण कांत मणि मुकुर (दर्पण) के समान आप दोनों के श्री अंग में प्रतिबिंबित नाना वर्णों के कुसुमों की कांतिमाला ही जैसे उसका अर्पित विचित्र वसनालंकार है। अटवी से उत्पन्न चंदन, मधु, अगुरु तथा कुंकुम की मृदु मंद संचरण शील वायु द्वारा

श्री श्री राधा कृष्ण का षड्ऋतु वनशोभा दर्शन।

Scanned by CamScanner

समागत परिमल ही गंध एवं नाना विध कुसुम पराग रूपी सुंगधी चूर्ण आप दोनों के श्री अंग में अर्पण कर रही है। वकुल पुष्पों से आप दोनों को गुच्छार्थ (बत्तीस नरीहार) मल्लिकाओं से एकावली (एक नरीहार), यूथिकाओं से गोस्तन हार, मालती से कर्ण भूषण, अम्लान पुष्प द्वारा गर्भक हार, कुन्द कुसुम से क्षुद्र घंटिका एवं अन्यान्य कुसुमों द्वारा विविध भूषण समूह समर्पण कर रही है। आप दोनों के सेवार्थ यह अटवी उसमें संजात तुलसी मंजरी एवं पुष्प दल तथा तुलसी एवं पुष्पादि रचित अनेक मालायें आप दोनों के गले में अर्पण कर रही है। उर्ध्वगामी सौरभ मालाओं से भरपूर चंचल भृंग श्रेणी ही धूप, चंचल चंपक कलिका दीप तथा विविध सरस सुपक्व फलादि रूपी नैवेद्य प्रदान कर रही है। आप दोनों को पान पात्र, गुवाक (सुपारी) लवंग, इलायची तथा कदली गर्भज कर्पूर द्वारा सुगंधी तांबूल अर्पण कर रही है। स्वयं पतित शैफाली तथा बकुलादि कुसुम समूहों द्वारा पुष्प वर्षण तथा शुक-सारी के गान से आप दोनों की जय ध्वनि कर रही है। वायु चालित चम्पक कलिका रूपी दीप, पक्षीरव रूपी वाद्य तथा भ्रमर गुँजार रूपी गान के साथ हर्ष सहित आप दोनों की नीराजन अथवा आरती कर रही है। वायु चालित पुष्प, फल तथा पल्लवादि के साथ बार-बार उत्थापित (उठकर) तथा निपतित्र (गिरकर) नम्रीभूत शाखाओं द्वारा आप दोनों के श्री चरणों में असंख्य दंडवत प्रणति विधान कर रही है। पक्षी ध्वनि द्वारा स्तव, भ्रमरनाद से वाद्य, कोकिलों की पंचमतानों से गान, शुक-सारी के पाठ द्वारा आप दोनों की कथा एवं मयूर के नृत्य से मधुर नृत्य कर रही है। यह वृन्दाटवी घूर्णिवायु (घुमती हुई वायु) से उठे हुए कुसुम पराग से चंद्रातप, लता रचित चामर एवं कदली पत्र रूपी व्यजनी द्वारा इतस्ततः आप दोनों को व्यजन कर रही है।"

एक प्रकार से श्री वृंदा देवी श्री युगल की सेवा परिपाटीमय वन शोभा वर्णन करके सखियों के साथ उन्हें उसे दिखाकर बोलीं—"हे श्री राधे! हे श्री कृष्ण! आप दोनों कृपा पूर्वक इस षड्ऋतु वन लक्ष्मी की सेवा गृहण करके इसे धन्य करें।" वृंदा की इच्छानुसार श्री राधा कृष्ण के परिकरों से घिरकर रत्न वेदिका पर बैठने पर वृंदा ने वन देवी गणों द्वारा माल्य चंदनादि मंगाकर श्री राधा कृष्ण तथा सखी वृन्द को भूषित किया। साधक मंजरी श्री गुरु देवी के इंगित से वृंदा देवी, रूपादि मंजरी गण तथा गुरु मंजरी गण को चंदन मालाओं से विभूषित करके श्री राधा कृष्ण की व्यजनादि सेवा करने लगी। युगल रूप माधुरी दर्शन करके सभी परमानंदरस सिंधु में निमग्न हुईं।

नवद्वीप : महाप्रभु का बसन्त-ऋतु वन में होली लीलावेशः

नवद्वीप में श्री श्री मन्महाप्रभु सपरिकर षड्ऋतु वन में भावाविष्ट हैं। स्वरूप के गान से सखियों सहित श्री राधा कृष्ण के षड्ऋतु वन दर्शन करके आनंद पूर्वक रत्न वेदिका पर बैठने पर वृन्दा देवी आदि द्वारा सेवा ग्रहण पद श्रवण करके महाप्रभु प्रेमावेश में हुँकार करते हुए बाह्य दशा को प्राप्त हुए। महाप्रभु ने दोनों प्रभु को प्रेमपूर्वक आलिंगन किया तथा भक्त वृन्द ने भक्ति-पूर्वक महाप्रभु के श्री चरणों में प्रणाम किया। श्री वास पंडित ने भ्रताओं द्वारा माल्य चंदनादि मंगाकर तीनों प्रभु तथा भक्त वृंद को उसके द्वारा भूषित

Scanned by CamScanner

किया। साधक दास श्री गुरु देव के इशारे पर गोस्वामी पाद गण तथा गुरु वर्ग को माल्य चंदन से विभूषित करके तीनों प्रभु की व्यजनादि सेवा करने लगा।

इसके बाद श्री मन्महाप्रभु सपरिकर षड्ऋतु वन के अग्र भाग में बसन्त ऋतुवन में आकर वन शोभा दर्शन करने लगे। मुकुलित रसाल वृक्ष पर पुष्पिता माधवी लता तथा प्रफुल्लित पुन्नाग पर प्रफुल्लिता नव मल्लिकादि आवृत होकर अपूर्व श्री का विस्तार कर रहे हैं। भ्रमर के गुंजन एवं कोकिलों के कल-कूजन से वन कोलाहलपूर्ण है। चमरी मृग समूह पुच्छ द्वारा पथ मार्जन कर रहे हैं एवं इतस्ततः भ्रमणरत कस्तूरी मृग समूह मृगनाभी की गंध से वन को सुरभित कर रहे हैं। इस प्रकार से वन शोभा देखते-देखते महाप्रभु भक्त वृन्द से घिरकर बासन्ती मंडप में आकर बैठ गये। वहाँ बसन्त लीलोपयोगी आबीर, गुलाल, रंगजल, पिचकारी आदि को सुसज्जित देखकर ब्रजभावाविष्ट हुए। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु के मन को जानकर ब्रज में श्री राधा कृष्ण की होली खेला तथा होली लीलादि पद गान करने लगे। गान श्रवण करने पर महाप्रभु भावाविष्ट होकर पिचकारी से रंग जल आबीर, गुलालादि लेकर गदाधर प्रभु के अंगों पर फेंकने लगे। भक्त वृन्द भी भावावेश में परस्पर आबीरादि फेंकने लगे। स्वरूप के गान से सभी ब्रजभाव में तन्मय होकर ब्रज में अपने अपने स्वरूपावेश में श्री राधा कृष्ण की बसंत विहार लीला का संदर्शन करने लगे।

ब्रजधाम : बसंत ऋतु वन तथा होली लीला :

ब्रज के श्री राधा कुण्ड में सपरिकर श्री राधा कुष्ण षड्ऋतु वन में बैठे हुए हैं। वृंदा देवी द्वारा आगे बढ़कर बसन्त ऋतु की वन शोभा दर्शन के लिए निवेदन करने पर श्री राधा कृष्ण ने सपरिकर बसन्त ऋतु वन में प्रवेश किया। वृंदा देवी आगे होकर वन शोभा वर्णन करते हुए दर्शन कराने लगीं-"हे ईश्वर-ईश्वरी! अग्रभाग में इस बसंन्त कांताख्य वन भू-भाग का अवलोकर करें। जिसमें ऋतुराज बसन्त आनंदित होकर आप दोनों की सेवा करने के लिए अतुलनीय शोभा संपद से विभूषित होकर उत्कंठित चित्त से प्रतीक्षा कर रहा है।" श्री कृष्ण बासन्ती वन शोभा का दर्शन करके प्राण-प्रिया श्री राधा के निकट युगल माधुरी दर्शन से समुद्गत वन के प्राकृतिक् सौन्दर्य का वर्णन करने लगे-"हे कुन्ददंति! यह देखो, मकरंद लुब्ध मधुपवृंद मधुपान से परितृप्त होकर कुन्द कुसुम के समादर को त्यागकर मुकुलित रसाल की उच्च शाखा पर प्रयाण कर रहा है। हे कलकंठी! आम्र मुकुल के भक्षण करने से कोकिलों की कंठ ध्वनि मधुरतर होती है यह तो प्रसिद्ध ही है, अतः कोकिलाओं के साथ कोकिल समूह कषाय रस द्वारा कंठ शोधन करते हुए पंचम तान में गान के लिए मुकुलित रसाल के शिखर देश पर जा रहा है। प्रफुल्लिता माधवीलता, लवंग लतिका, स्वर्ण यूथिका, नव मल्लिकादि लता श्रेणी, बकुल, तमाल, पुन्नाग, अशोक, चम्पक, रसालादि तरु समूहों को आवृत करके कैसी अपूर्व शोभा धारण कर रही हैं। यह देखो, कानन में भ्रमरी भ्रमर को अपने प्रतिबिम्ब युक्त पुष्प के मध्य में प्रवेश करते देखकर अन्य भ्रमरी के साथ भ्रमर मिलित हो रहा है। यह जानकर तृष्णातुर होने पर भी रोषावेश में वहाँ से विरत हो रही है। यह देखो, यह

Scanned by CamScanner

मधुकर युवा लताओं पर स्थित भृंगी गणों के साथ जैसे चक्राकार में हल्लीशक-नृत्य (घेरा बनाकर नृत्य करना) करते-करते प्रियतमा भृंगी गणों के साथ कमल वन में प्रवेश कर रहा है।''

इस प्रकार से श्री हरि द्वारा बसन्त वन की विविध शोभा का वर्णन करने पर वृंदा देवी बसन्त के लीलोत्सव की रंग वेदिका को दिखाकर बोलीं—''हे ब्रज मंगलाकर राधा कृष्ण। यह देखो, बसन्त वन लक्ष्मी ने आप दोनों के होली खेलने के लिए विविध संभार (उपकरण) सुसज्जित करके रखे हैं। अगुरु, केशर आदि के पृथक एवं मिश्रित पंक के जल द्वारा परिपूर्ण स्वर्ण कलश जिसका विस्तृत मुख विविध मणि निर्मित पिचकारियों से परिशोभित है। पुष्प निर्मित सिंदूर तथा कर्पूर चूर्ण कंदुक, पुष्प निर्मत धनुर्बाण, कर्पूर, कुंकुम, मृगमद, अगुरु एवं चंदन इन पंच द्रव्य के पंक तथा चूर्ण द्वारा परिपूरित, जतू (लाक्षा) निर्मित कुपिका समूह इत्यादि आप सबके होली खेलने की सामग्री एवं तांबूल, माल्य, चंदन तथा कुसुम सुवासित जल आदि आप सब की भोग्य सामग्री पृथक-पृथक स्वर्ण पात्र में सुसज्जित हो रही है।

वृंदा के वाक्य श्रवण कर सखियों सहित श्री राधा एवं श्री कृष्ण ने रत्न वेदिका पर आरोहण करके दोनों ने ही एक-एक तरफ खड़े होकर रंग जल से पूर्ण स्वर्ण कलश, पिचकारी, कर्पूरादि के पंक या चूर्ण-परिपूरित जतू (लाक्षा) निर्मित कुपिका लेकर अपूर्व क्रीड़ा शुरू कर दी। अहो! उस क्रीड़ा का कैसा अपूर्व माधुर्य है, रमणी गण तथा रमण श्री कृष्ण उत्तम वस्त्र धारण करके रमणीय तांबूल पूर्ण मुख से चंचल कटाक्ष रूपी मदनास्त्र वर्षण के साथ एक दूसरे के प्रति यंत्र मुक्त जलधारा की वर्षा करने लगे। ब्रजसुंदरी गणों के पतले एवं आर्द्र वस्त्रों के मध्य से प्रकाशित अंग प्रत्यंग के माधुर्य रूपी अमृत प्रवाह से श्री कृष्ण के मन एवं नयन आप्लावित हुए। उसी प्रकार ब्रज सुंदरी गणों के नयन तथा मन भी अपने प्राण-कांत श्री कृष्ण के देह माधुर्य रूपी अमृत-प्रवाह में निषिक्त होकर अतिशय परितृप्त हुए। चर्बित तांबूल से जिनका एक कपोल कुछ ऊँचा हो रहा है, घुँघराले गीले बालों एवं पसीने से गाल शोभायामान हैं, स्खलित केशपाश से कुसुम माला विगलित है एवं सुकुंचित (घुँघराले) दीर्घ केशपास से दोनों कंधों से स्तनोपरि एवं

सखियों सहित श्री राधा कृष्ण का होली खेल।

देह के मध्य में दोदुल्यमान (डोलते हुए) विविध गंध द्रव्यों के चूर्ण समूह से परिपूर्ण परिधेय वस्त्र के आँचल को जिन्होंने चन्द्रहार के मध्य में सुदृढ़ रूप से बांधा हुआ है, जो मदन रसोद्दीपक मनोज्ञ संगीत गान कर रही हैं एवं श्री कृष्ण के जल सिंचन करने पर वे उससे अपने-अपने अंगों की रक्षा के लिए सावधान हो रही हैं। इसी प्रकार श्रीराधिकादि ब्रज सुंदरी गण गंध चूर्ण समूह, पुष्पादि निर्मित सिंदूर की गेंद समूह, जतू (लाक्षा) निर्मित कुपिका फेंकते हुए जल यंत्र मुक्त सुगंधी जल द्वारा प्रेम सहित प्राण कांत को सिंचन करने लगीं। श्री कृष्ण के कंधे पर आलंबित कुसुम धनू, मनोहर कटिबंधन, वस्त्र के मध्य में कुसुम रचित बाण श्रेणी एवं वंशी, हस्त में मणि पिचकारी एवं अंचल में सुगंधी चूर्ण समूह धारण करके ब्रज सुंदरी गणों को सिंचन (जल से भिगोकर) द्वारा मनोहर क्रीड़ा करने लगे। अंत में श्री राधा की सखियाँ श्री कृष्ण को घेरकर

Scanned by CamScanner

मस्तक पर रंग जल डालकर कुंकुम पंक द्वारा उनका सर्वांग तथा आबीर से मुख मंडल लेपन करने लगीं। करुणामयी श्री राधा रानी अपने प्राण कांत की ऐसी अवस्था देखकर बोलीं—"आहा! मेरे प्राण नाथ की क्या ऐसी दशा करनी चाहिए?" यह कहकर अपने आँचल से उनके मुख तथा अंगों को पोंछकर उनके श्री मुख में तांबूल प्रदान किया। इस प्रकार के होली खेल से श्री राधा कृष्ण तथा सखी वृन्द की वेश-भूषा विगलित (तितर-बितर) एवं गीले वस्त्रादि देखकर श्री वृंदादेवी ने वन देवी गणों द्वारा वस्त्रालंकार, माल्य-चन्दनादि मंगाकर श्री राधा कृष्ण एवं सखी वृंद को भूषित किया। साधक दासी ने गुरु मंजरी के इंगित पर मंजरी एवं गुरु मंजरी गणों की वेश-भूषा रचना की। श्री युगल की रूप माधुरी दर्शन कर सभी परमानंद रस में विभोर हुई।

नवद्वीप : ग्रीष्म ऋतु वन एवं फूल बंगला :

नवद्वीप में श्री मन महाप्रभु सपरिकर बसन्त ऋतु वन में रंग खेल में आविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु के श्रम को जानकर बासन्ती-लीला पद गान समाप्त किये। सपरिकर महाप्रभु के बाह्य दशा लाभ कर मंडप में जाकर बैठने पर श्री वास पंडित ने भ्रातृ गण द्वारा नये वस्त्र तथा माल्य चंदन मँगाकर तीन प्रभु एवं भक्त वृंद को भूषित किया। तत्पश्चात् फल, मूल, पानकादि (शरबत) सेवन कराकर ताम्बूल अर्पण किया। साधक दास ने गोस्वामीगण तथा गुरु वर्ग की वेश रचनादि सेवा की। इसके बाद महाप्रभु सपरिकर ग्रीष्म ऋतु वन में प्रवेश कर वन शोभा दर्शन करने लगे। शुक-सारी, कोकिल-कोकिला के गान तथा भ्रमर के गुंजन, गुलाब, शिरीष आदि पुष्प के सौरभ, सुपक्व आम्र, कदली तथा पनसादी (कटहल) फल के सौन्दर्य तथा रस शीतल सुगन्ध एवं मंद मलयानिल के सुख स्पर्श से वन समूह समस्त इन्द्रियों के लिए तृप्तिकर परम रमणीय शोभा धारण कर रहा है। वृक्षलता के घन छाया युक्त पथ पुष्प मधु के गिरने एवं पुष्प-पराग के बिछे होने से अधिकतर सुशीतल तथा सुकोमल हो रहे हैं। कदली पुष्प (मोचा) प्रकाशित होकर जैसे मनोरम हास्य कर रहा हो एवं पवनांदोलित पत्र समूह जैसे सपरिकर प्रभु की बीजन की सेवा कर रहे हों। इस प्रकार से वन शोभा देखते-देखते महाप्रभु "फूल बंगला" नामक अति सुशोभित कुसुम मंडप का दर्शन करके वहीं बैठ गये। श्री वास पंडित ने फूल बंगला लीला के उपयोगी पतले श्वेत वस्त्र तथा माल्य चंदन से तीन प्रभु एवं भक्त वृंद को भूषित किया। महाप्रभु के दाहिने नित्यानंद प्रभु, बाँये अद्वैत प्रभु, चारों ओर भक्त वृन्द आवृत होकर शोभा पाने लगे। चारों ओर स्थित जलयंत्र फुहारे से सूक्ष्म जल कण निकलते हुए सबके अंगों को भिगोने लगे। जल-कण सिक्त प्रभु के श्री अंगों से अपूर्व सौंदर्य प्रकाशित होने लगा। दासगण बीजन कर रहे हैं। महाप्रभु का भाव जानकर स्वरूप गोस्वामी ब्रज में श्री राधा कृष्ण के ग्रीष्म ऋतुवन भ्रमण एवं फूल बंगला लीलापद गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी अपने-अपने सिद्ध स्वरूप में आविष्ट हुए।

Scanned by CamScanner

ब्रजधाम : ग्रीष्म ऋतु वन शोभा तथा फूल बंगला :

ब्रज में राधा कृष्ण सपरिकर बसन्त ऋतु वन में आविष्ट (प्रेमावेश युक्त) हैं। तब मधुमंगल उन सबके अग्रवर्ती होकर ग्रीष्म ऋतु की शोभा दिखाने लगे। हे ब्रज काननेश्वर राधा कृष्ण! निदाघ कालीन (ग्रीष्म कालीन) इस मनोहर वन भू-भाग का दर्शन करें। आप दोनों के शुभागमन से यह वन आपके सेवार्थ उत्सुक होकर अपने वैभव सहित शोभा पा रहा है। गुलाब पुष्प द्वारा आप दोनों के वस्त्र, शिरीष पुष्प का कर्ण भूषण, मल्लिका पुष्प से अंगाभरण बनाने के लिए ही जैसे ग्रीष्म कालीन वन लक्ष्मी ने उन्हें हर्षपूर्वक धारण कर रखा है। फिर सुपक्व पीलू फल, आँवला, पियाल (चिरौंजी), उत्तमपनस (कटहल), बिल्व, तालबीजादि फलों से आप दोनों की सेवा करने की अभिलाषा सहित मुझे अतिशय आनंदित कर रहा है। सूर्य किरण तप्त सूर्य कान्त मणिमय भूमि की उष्णता से आप दोनों के म्लान होने की आशंका से सर्वत्र प्रसारित शाखा प्रशाखा द्वारा यह अटवी आप दोनों को आच्छादित करके पल्लव रूपी व्यजनी द्वारा प्रणय पूर्वक आप दोनों को व्यजन कर रही है।

श्री राधा कृष्ण ने मधु मंगल के वाक्य श्रवण कर सुमधुर हास्य शोभित वदन से वृंदादेवी द्वारा प्रदत्त शिरीष पुष्प के गुच्छ द्वारा परस्पर एक दूसरे के लिए कर्णोत्तंस की रचना की। श्री राधा की घुँघराली लटों पर लगे पुष्प पराग को देखकर श्री कृष्ण ने उसे अपने हाथ से प्रेमपूर्वक मार्जन किया। श्री राधा ने भी अपने बाहु मूल को उठाते हुए श्री कृष्ण के मयूर-पुच्छ तथा अलकावली पर लगे पुष्प पराग को अपने कर कमल से दूर किया। तत्पश्चात् श्री कृष्ण प्रियतमा के हृदय को स्पर्श करके बोले—"हे प्रिये! शीत ने निदाघ (ग्रीष्म) ताप से तापित होकर ही जैसे भय से इतस्ततः भागकर अंत में तुम्हारे कुच शैल रूपी अभेद्य दुर्ग का आश्रय किया है।" तब वृंदादेवी बोलीं—"हे राधे! हे कृष्ण! आप दोनों की सेवा के लिए ग्रीष्म ऋतु लक्ष्मी ने पुष्प मंदिर (फूल बंगला) की रचना की है। आप दोनों उसकी सेवा ग्रहण करके उसे धन्य करें।" तब सपरिकर श्री राधा कृष्ण वन देवी द्वारा सुसज्जित पुष्प मंदिर में जाकर सिंहासन पर बैठ गये। वृंदा देवी ने वनदेवी गणों द्वारा पतले श्वेत वस्त्र मंगाकर श्रीराधाकृष्ण तथा सखी वृंद को पहनाये तथा माल्य एवं कुसुमालंकार से उन सबको भूषित करते हुए अंग में सुगंधी चतुः सम का लेपन किया। सेवा तत्परा मंजरी गणों ने मल्लिका की माला गूँथकर श्रीराधाकृष्ण तथा सखी वृन्द को पहनाई। श्रीराधाकृष्ण के सिंहासन के चारों ओर सखीगण आवृत होकर बैठ गईं। मंजरीगण चारों ओर बरामदे से व्यजन यंत्र की डोरी को खींचकर व्यजन करने लगीं। चारों ओर जल यंत्र के फुहारे से सूक्ष्म जल कण निकलकर राधा कृष्ण तथा सखीवृंद के ऊपर गिरने से उनके पतले वस्त्र सिक्त होने पर उनकी अपूर्व अंग माधुरी फूट उठी। इस प्रकार से कुछ समय तक सबके सेवा सुख लाभ करने के उपरान्त वृंदादेवी ने सबको नये वसन भूषण से भूषिता करके उन्हें प्रीति पूर्वक विविध फल, मूल तथा फल के रस से बने पानक आदि का सेवन कराया तथा अधरों में सुगंधी तांबूल अर्पण किया। किंकरीगण व्यजनादि सेवा करने लगीं। युगल की रूप माधुरी

Scanned by CamScanner

का दर्शन करके सभी आनंद में विभोर हुई।

नवद्वीपः वर्षा ऋतुवन तथा हिन्दोला लीला :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु भक्तवृंद के साथ ग्रीष्म ऋतु वन में फूल बंगला में स्वरूप के गान से भावाविष्ट हैं। पुष्प-सौरभ तथा भ्रमर की गुँजार से गरगर शब्द करते हुए हुँकार की। हुँकार श्रवण कर सबके बाह्य दशा लाभ करने पर स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त किया। श्री वास पंडित ने भ्रातागण द्वारा वस्त्र, माल्य, चंदनादि मंगवाकर सपरिकर तीन प्रभु को भूषित किया। इसके बाद विविध फल, मूलादि तथा फल के रस से बने पानकादि सेवन कराकर ताम्बूल प्रदान किया। तत्पश्चात् महाप्रभु सपरिकर ग्रीष्म ऋतुवन के अग्रभाग में वर्षा ऋतु वन में आकर वन शोभा दर्शन करने लगे। आकाश में नवमेघ की गोद में सौदामिनी (बिजली) की छटा तथा बक पंक्ति की मनोरम शोभा हो रही है। मेघ दर्शन से आनंद विभोर होकर मयूर कुल पुष्पित कंदब की शाखा पर "के-का" की ध्वनि कर रहे हैं। परिपक्व जामुन फल, जामरुल (एक प्रकार का सफेद फल), पनस, ताल तथा खर्जूरादि फल वृक्षों की रमणीय शोभा का विस्तार कर रहे हैं। यूथी, कदंब, केतकी आदि कुसुमों के सौरभ से प्रमत्त होकर प्रत्येक कुसुम पर भृंग कुल मधुर गुँजन कर रहे हैं। मंद-मंद वृष्टि धारा के गिरने से भूमि के सुकोमल तृण पर इन्द्रगोप (रक्त वर्ण कीट विशेष) विचरण कर रहे हैं। मयूर कुल पंख फैलाकर इतस्ततः मनोहर नृत्य कर रहे हैं। कभी-कभी अति गंभीर गर्जन के साथ मेघ मूसलाधार वृष्टि कर रहा है। डाहुक, चातकादि पक्षी तथा मेंढ़क अविरत ध्वनि कर रहे हैं। इस शोभा दर्शन तथा सामने यूथी लतावृत कदंब वृक्ष पर विचित्र झूला देखकर भावावेश में महाप्रभु यूथी कदंब मंडप में बैठ गये। परिकर गण महाप्रभु को चारों ओर से घेरकर बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु के मन को जानकर ब्रज में राधा कृष्ण के हिन्दोला लीला पद मल्लार राग में गान करने लगे। गान श्रवण कर महाप्रभु गदाधर का हाथ पकड़ कर हिन्दोला पर बैठ गये। दासगण झूला झुलाने लगे। भक्त वृन्द गान में तन्मय होकर ब्रज लीला रस में मग्न हुए।

ब्रजधामः वर्षाहर्षवन तथा हिन्दोला लीला :

ब्रज में श्री राधा कृष्ण ग्रीष्म ऋतु वन में सपरिकर विराज रहे हैं । सुबल उनके आगे आकर वर्षाहर्ष वन का दर्शन कराकर बोले—"हे राधा कृष्ण! सामने वर्षाहर्ष वन का अवलोकर करें। मयूर कुल आप दोनों को नवमेघ तथा स्थिरा सौदामिनी (बिजली) समझकर परम सुख में प्रेमान्ध होकर नृत्य कर रहा है। यह देखो, इस वन में गनिका (यूथिका) गण हास्य करते-करते प्रफुल्लिता होकर मल्लिका रूपी कुलवधू की गोद में स्थित चंचल भ्रमर कुल को अपने सौरभ से आकृष्ट कर रही हैं। आकाश मंडल मेघमाला से आवृत है, धरणी जल धारा से आप्लुत है, अर्जुन एवं कदम्ब वृक्षों से दिग् मंडल परिव्याप्त है। पिक (कोयल) कुलों के मधुर आलाप, डाहुक-डाहुकी के शब्द, बक पंक्ति, जल कुक्कुटी, हंस श्रेणी तथा मेंढ़क कुलों के उच्च स्वर से वन भूमि कोलाहल पूर्ण है। यह वर्षा लक्ष्मी मेघमाला रूपी नील वस्त्र पहनकर बक पंक्ति

Scanned by CamScanner

रूपी मुक्ताहार, इन्द्रधनू रूपी नील, पीत तथा रक्तादि विविध वर्णों के रत्नालंकार धारण करके आप दोनों की सेवा के लिए प्रियसखी के समान आपके सम्मुख उपस्थित है। यह आप दोनों को कदंब पुष्प का हार, गिरि मल्लिका का उत्तम गर्भक (बालों के बीच धारण की हुई पुष्प-माला), केतकी के किरीट (मुकुट) एवं रंगन यूथिकादि कुसुम समूह द्वारा विविध अलंकार समर्पण कर रही है।'' सुबल द्वारा वर्णित वर्षा- हर्ष वन की शोभा दर्शन करते-करते कृष्ण नव जलधर तथा राधा सौदामिनी (बिजली) आलिंगित होकर वर्षा ऋतु वन में शोभा विस्तार करते हुए लीलामृत रस की वर्षा द्वारा सखियों के नेत्र रूपी चातक को परमानंद दान करने लगे।

इस प्रकार से वर्षा ऋतु की वन शोभा दर्शन करके सभी ने हिन्दोला वेदी पर आगमन किया। श्री राधा कृष्ण के हिन्दोला पर बैठने पर सखीगण कोई-कोई अग्रभाग में, कोई-कोई पीछे के भाग में स्थित होकर सानन्द चित्त से उच्च स्वर में गान करते-करते हिन्दोला को संचालित करने लगीं। लीलानिधी श्री कृष्ण के धरणी पर चरणाक्रमण से झूले के वेग में वृद्धि करने पर झूला क्रमशः ऊपर की ओर उठने लगा। इससे श्री राधा भयभीत होकर श्री कृष्ण को पुनः पुनः मना करने लगीं। सखीगण भी श्रीमती को भयभीत देखकर ''हे कृष्ण! और नहीं और अधिक झूले को मत चलाओ'' बार-बार यह कहकर मना करने पर भी श्री कृष्ण उसे अनसुना करके दोला के वेग को क्रमशः बढाने लगे। तब व्यग्रता वशतः श्री राधा का वेणी बंधन खुल गया, मस्तक पर घूँघट भी नहीं रहा, भूषण इधर-उधर हिलने लगे, पवन से अंतर वसन भी ऊपर उठ जायेगा यह जानकर श्री राधा ने अपने पद युगल द्वारा साड़ी को दबाकर रखा, उसे भी नहीं संभाल पायीं। अंत में भीति विजड़ित नयना श्री राधा भय पाकर प्राणनाथ के कंठ से आलिंगिता हो गईं। श्री कृष्ण भी कांता को बाहु द्वारा अपने वक्ष में जकड़ कर पदावलम्बन द्वारा झूला को डुलाने लगे। इसके बाद धीरे- धीरे दोला का वेग मंद होने पर श्री युगल के सेवा की सामग्री लाकर ललितादि अष्ट सखीगण झूले पर चढ़ गई। विशाखा के संग ललिता तांबूल वीटिका, चित्रा सहित चम्पकलता व्यजन, इन्दुरेखा तथा तुंगविद्या जलपूर्ण स्वर्णपात्र, सुदेवी एवं रंगदेवी गन्धानुलेपन ग्रहण करके हृष्ट अंतः करण से दोला के ऊपर चढ़ कर तांबूलादि द्रव्य द्वारा श्री राधा कृष्ण की सेवा करते-करते अष्ट दल पद्माकृति दोला के चारों ओर अवस्थित होकर शोभा पाने लगीं। चारों ओर स्थित सब सखी ही श्री राधा कृष्ण को अपने सम्मुख देखने लगीं। तत्पश्चात् वृंदा तथा कुन्दलतादि सखीगण द्वारा हिन्दोला को आन्दोलित करते रहने पर श्री राधा के इंगित पर श्री कृष्ण ललिता को खींचकर उनके कंधे पर दाहिना बाहु तथा श्री राधा के कंधे पर वाम बाहु रखते हुए दो स्थिरा- सौदामिनी के मध्य में नवमेघ के समान शोभा पाने लगे। इसी प्रकार श्री कृष्ण विशाखादि सखियों के दाहिने कंधे को पकड़कर आन्दोलित करते हुए यथाक्रम से हिन्दोला लीला का सुखानुभव करने लगे। इसके बाद श्री राधा हिन्दोला से उतर कर विशाखा तथा

हिन्दोला पर सखियों की सेवा।

संखियों सहित हिन्दोला सुखास्वादन।

Scanned by CamScanner

ललिता दो सखियों के मध्य में प्रियतम श्री कृष्ण को बिठाकर हिन्दोला आन्दोलित करने लगीं। इसी प्रकार से अष्ट सखियों के संग दोला झूलन समाप्त होने पर श्री राधा के इंगित से ललितादि सखीगण दोला से उतर कर कांचनलतादि सखीगण को क्रमशः श्री कृष्ण के साथ झुलाने लगीं। तदोपरान्त दोला के मध्य में श्री श्री राधा कृष्ण तथा चारों ओर मंडली रचना करके सब सखियों के आरोहरण करने पर दो-दो गोपियों के मध्य श्री कृष्ण ने विराजित होकर रासलीला के समान हिन्दोला लीला का सुखानुभव किया। इसी प्रकार से कृष्ण नव जलधर गोपांगना रूपी सौदामिनी गणों से घिरकर वृंदा, कुंदलता तथा मंजरीगणों के नयन चातकी की तृष्णा हरण करते हुए विश्व को मधुर लीलारस धारा से सिंचन करने लगे। बाद में हिन्दोला लीला समाप्त करके राधा कृष्ण के सखियों से घिरकर रत्न वेदिका पर बेठने पर वृंदा देवी ने चंदन मालाओं से उन को विभूषित किया। गुरु देवी के इशारे पर साधक दासी वृंदा देवी, मंजरीगण तथा गुरु मंजरी गण को चंदन माला से विभूषित कर व्यजनादि सेवा करने लगी। युगल रूप माधुरी दर्शन करके सभी आनंद सागर में मग्न हुई।

नवद्वीप : शरद ऋतु वन शोभा :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु वर्षा ऋतु वन में सपरिकर हिन्दोला लीला में आविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु के श्रम को जानकर हिन्दोला लीला के पदगान समाप्त किये। भाव शान्त होने पर महाप्रभु के हिन्दोला से उतर कर रत्नवेदी पर बैठने पर दासगण व्यजनादि सेवा करने लगे। तब परिकरों सहित श्री वास पंडित ने प्रभु को फल, मूल, पानकादि सेवन कराकर तांबूल अर्पण किया तथा चंदन माल्यादि से विभूषित किया। तदोपरान्त महाप्रभु परिकर सहित वर्षा ऋतु वन के अग्रभाग में स्थित शरद् ऋतु वन में आगमन करके वन भूमि की शोभा का दर्शन करने लगे। आकाश में शुभ्र मेघ मंडल समूह-समुद्र तरंग की भाँति बहते हुए चल रहा है। वनभूमि हंस, सारसादि के रमणीय शब्दों से कोलाहल पूर्ण है। शरद की न अतिशीतोष्ण पवन वृक्ष लतावली को सुहागपूर्ण स्पर्श देते-देते तथा नाचते-नाचते चल रही है। अंगूर, अनार, धात्री, सेवती, पद्म, मालती, तुलसी, जाति इत्यादि फल तथा कुसुम से वन परिशोभित है। अंगूर वृक्ष के ऊपर शुक-सारी का कलह श्रवण करते-करते महाप्रभु सपरिकर अंगूर मंडप में जा बैठे। स्वरूप गोस्वामी प्रभु का मन जानकर मधुस्रावी कंठ से ब्रज में राधा कृष्ण के शरद् ऋतु वन भ्रमण तथा शुक-सारी के कलह पद गान करने लगे। पद श्रवण कर सपरिकर महाप्रभु ब्रजलीला रस में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम : शरद् ऋतु वन शोभा :

ब्रज में श्री राधा कृष्ण के वर्षाहर्ष वन से आगे स्थित शरत् ऋतु वन शोभा दर्शन के लिए वहाँ गमन करने पर कुंदलता उन्हें शारदीय वन शोभा दर्शन कराते हुए बोलीं—"हे ब्रज वनाधीष श्री राधा कृष्ण! यह देखो, आगे परम रमणीय शारदीय वन भू-भाग है। आप दोनों की प्रिय वयस्या शरत् सखी ने आप दोनों के सेवार्थ उत्सुका होकर वन भूमि को अपनी शोभा सम्पद से विभूषित करके रखा है। यह देखो चंचल

Scanned by CamScanner

खंजन ही शरत् सखी के नयन, कमल ही वदन, चंचल अलिकुल अलकावली, क्रीड़ा परायण चक्रवाक स्तन मंडल, धवल वर्ण मेघमाला वस्त्र, रक्त कमल ओष्ठाधर, शब्दायमान सारस श्रेणी ही रमणीय चन्द्रहार एवं नीलोत्पल ही इसके कर्ण भूषण हो रहे हैं। यह शरत् सहचरी रंगन तथा जाति पुष्प से आप दोनों के अलंकार, कुमुद से शिरोभूषण, रक्तोत्पल तथा इन्दीवर से कर्ण भूषण एवं कुँज भवन में गिरे हुए शैफालिका समूहों से आप दोनों की शय्या रचना करके सेवा के लिए आप दोनों के आगमन की प्रतीक्षा कर रही है। कुंदलता वर्णित शारदीय वन शोभा दर्शन करते-करते अमृतोपम सुपक्व फल युक्त अंगूर वृक्ष के ऊपर स्थित शुक तथा सारीगणों की कलह श्रवण करने के लिए सपरिकर श्री राधा कृष्ण उसी के नीचे रत्न वेदी पर बैठ गये।

शुक सारी की कलह।

शुक बोल रहा है–"हे सारिकागण! इस वन से तुम सब अन्यत्र चली जाओ। हम सब वेदान्ताध्यापक आचार्य हैं, तुम सब स्त्री जाति के द्वारा स्पर्श किये गये फल का भक्षण करने से हम सब का पतन सुनिश्चित है। ब्रजवनेश्वर श्री कृष्ण ने संतुष्ट होकर हम सब को यह वन प्रदान किया है। तुम सब दासी होकर इस वन के फल क्यों खाती हो?" यह श्रवण करके सारिका बोली–"हे शुक! देखती हूँ कि तुम सब प्रभु द्वेषी प्रजा हो। वृन्दावनेश्वरी श्री राधा ही इस वन की अधीश्वरी हैं। पुराणों में भी वर्णित है– 'राधा वृंदा वने वने।" शुक बोला–"हे सारिकागण! श्रुति ने इसे 'कृष्ण वनम्।' कहकर वर्णन किया है। इस श्रुति प्रमाण द्वारा तुम सब की स्मृति पुराण बाधित हो रही है। अतः यह कृष्ण का ही वन है यह निश्चय जानो।" सारी–"हे शुक! यह तो निश्चय ही राधा का वन है, कृष्ण का नहीं, इसका प्रमाण देखो- समस्त वन श्री राधा की अंगकांति से या अंग के सदृश विद्यमान हो रहा है। विशेषतः तुम सब के कृष्ण गायों के रखवाले हैं, उनका अंतः करण भी कुटिलता से पूर्ण है। बाह्य दृष्टि से उनका रूप सबके लिए मनोरम होने पर भी अंतः करण पके हुए "माकाल" फल की भाँति मालिन्य से भरपूर है।" शुक–"सारी! तुम सब की सभी गापिकाऐं जैसे नारियल फल वाम्यता तथा मान रूपी अस्थि तथा वल्कल युक्त हैं। यद्यपि अंतः करण में प्रेम रस विद्यमान है, तथापि वे दुर्भेद्य वल्कलास्थि से आच्छादित हैं। किन्तु हम सब के कृष्ण अंगूर के समान अंदर तथा बाहर से निरुपम रस पूर्ण हैं।" सारी–"नहीं, नहीं, कृष्ण अंगूर फल के समान नहीं हैं, गन्ना के समान हैं, धृष्टता तथा कुटिलता रूपी कठिन वल्कल तथा पर्व से आच्छादित हैं। हम सब की गोपांगना गणों के मानरूपी निष्कासन यंत्र के बिना रस निष्कासन नहीं होता, अतः भीतर से सरस होने से भी क्या लाभ है?" शुक–"गोपीगण जवा पुष्प के समान बाहर से केवल देखने में ही सुन्दर हैं, किन्तु गुण रूपी सौरभ उनके अन्दर नहीं है। कृष्ण नीलोत्पल (नील कमल) के समान मधुर, कोमल, सुन्दर तथा सौरभ युक्त हैं।" सारी–"हे शुक! हमारी श्री राधा मंजिष्ठा लता (स्थाई रक्त वर्ण लता) के समान अंदर बाहर से एक ही राग (रक्त वर्ण) हैं, किंतु तुम्हारे कृष्ण में स्फटिक मणि के समान भिन्न-भिन्न लोगों के साथ भिन्न-भिन्न

Scanned by CamScanner

राग (वर्ण) देखा जाता है।'' शुक–''हे सारिका! कृष्ण के समान इस विश्व में और कौन है ? जिनकी शक्ति रूपी अनल से महाबलशाली दैत्यगण कीट के समान दग्ध हो गये हैं एवं जिसने बायें हाथ पर सात दिन सात रात्रि तक शैलराज गोवर्धन को क्रीड़ा पूर्वक धारण किया था।'' सारी– ''हे शुक! ब्रजराज की विष्णु आराधना से प्रशन्न होकर श्री विष्णु ने कृष्ण को अपना बाहुबल प्रदान किया था, उसी बल से दैत्यगण निहत हुए एवं हमारे ब्रजराज की पूजा से सतुष्ट होकर गिरिराज स्वयं ब्रज रक्षा के लिए उठ गये थे, कृष्ण ने प्रतिष्ठा की आशा से उसके तल में अपना हाथ लगा दिया था। जो लोग इसका मर्म नहीं जानते वे सब अज्ञ व्यक्ति ही कृष्ण ने दैत्य वध तथा गिरिधारण किया था, यह बात कहते हैं।'' शुक–''श्रीकृष्ण अपने माधुर्य से तरुणी गणों का धैर्य हरण करते हैं, रमादि को भी स्तंभित करते हैं, कंदुक (खेलने के लिए गेंद) के समान गिरि धारण करते हैं, उनके मधुर चरित्र विश्वजनों के लिए मनोहर हैं।'' सारिका– ''श्री राधा अपने सौन्दर्य माधुर्य, गान नैपुण्य तथा काव्य रचनादि गुणों से जगत-मोहन श्री कृष्ण को भी विमोहित करती हैं, यह सर्व जन विदित बात है।'' शुक– ''श्री कृष्ण मल्लिका के भौंरा के समान केवल राधाधर सुधापान करते हैं एवं श्रीराधा भी रासादि लीला में दासी के समान श्री कृष्ण की सेवा करके धन्य होती हैं।'' सारी–''श्री राधा जैसे श्री कृष्ण की वांछा करती हैं उसी प्रकार मानसूर्य की किरणों से तप्त भी करती हैं। श्रीकृष्ण भी श्री राधा की प्राप्ति के लिए योगी के समान ध्यान करते हैं। फिर कुट्टनी * वंशी के संग दोष से श्री कृष्ण में भी बहुत दोष संक्रमित होते हैं।'' शुक–'' वंशी अनंत गुणों से महिमा युक्त है, सबके इतर राग को दूर करके कृष्ण राग से हृदय पूर्ण करके गोपांगनाओं के हृदय से सुधाधारा की वृष्टि करती है।'' इसके बाद एक शुक दूसरे शुक से प्रश्न करता है– ''हे! हाथ पर गिरिधारण तथा महेन्द्र के गर्व को खर्व (चूर्ण) कौन करता है ? कालीय के फण रूपी रंग मंच पर कौन नृत्य करता है ?'' अन्य शुक ने उत्तर दिया–''यह गुण कृष्ण के अलावा और किसी में नहीं है'' इस प्रकार से सारिका गणों के मध्य भी प्रश्नोत्तर होता है। एक सारी दूसरी से प्रश्न करती है–''गिरिधारी किसके वक्षोज रूपी पर्वत पर नीलाम्बुज के समान धारण किये जाते हैं? भुजंग दमन के चित्त वृत्ति रूपी भुजंगी के मस्तक पर कौन नृत्य करती हैं?'' दूसरी सारी उत्तर देती है–''ये हमारी वृषभानु नंदिनी श्री राधा हैं।'' कृष्ण के दोषोद्गार के छल से एक सारी दूसरी से प्रश्न करती है–''वस्त्र हरण करके नग्नानारी दर्शन तथा साध्वी गण की सुकृति कौन भंजन करता है ? स्त्री वध, वृष तथा वत्स वध आदि गर्हित कार्य करके भी लज्जित नहीं होता, वह कौन है?'' अन्य सारिका बोली–''ये कृष्ण हैं।'' शुक बोला–''मातृका (पूतना) का निधन करके उसे मातृगति किसने प्रदान की? वत्सासुर तथा वृषासुर का वध करके वत्स तथा वृष का पालन कौन करता है? विवाह के पूर्व कुमारियों के हृदय, वाक्य तथा देह की परीक्षा रूपी उत्तम नीति का आचरण कौन करता है? सती के सतीत्व का हरण करके उन्हें महासती कौन करता है?'' अन्य शुक बोला–''ये हमारे श्री

* पर पुरुष के साथ परनारी का संयोग कराने वाली।

Scanned by CamScanner

कृष्ण हैं।''

इस प्रकार सखीगण सह श्री राधा कृष्ण सुनिपुण शुक-सारी की वाक्य विन्यास रूपी अमृत धारा श्रवण चषक (कर्ण प्यालों) से पान करके शुक के वाक्य से सुबल, मधु मंगल सह श्री कृष्ण तथा सारिका के वाक्य से सखीगण सह श्री राधा ने उल्लास सहित विविध भाव भूषणों से भूषित होकर परस्पर एक दूसरे को अपार आनन्द दान किया। तत्पश्चात् श्री राधा माधव द्वारा पक्षियों को अनार तथा बीजादि द्वारा संतुष्ट करने का आदेश देने पर ललिता ने सारिकाओं को अंगूर फल का क्षेत्र तथा सुबल ने शुक गणों को पक्व अनार फल का उद्यान प्रदान किया। तब वृंदा देवी ने वन देवी गणों द्वारा ऋतु योग्य वन पुष्प माला तथा चंदनादि मँगवाकर श्री राधा कृष्ण तथा सखियों को भूषित किया। साधक दासी पूर्ववत् वृंदा देवी तथा मंजरी गणों को भूषिता करके बीजनादि सेवा करने लगी। युगल की रूप माधुरी का दर्शन करके सभी आनंद रस में मग्न हुई।

नवद्वीप : हेमन्त ऋतु वन शोभा :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर भावाविष्ट दशा में शुकसारी कलह पद गान श्रवण कर प्रेमावेश में हुँकार करते हुए बाह्य दशा को प्राप्त हुए। परिकरों के भी बाह्य दशा प्राप्त होने पर स्वरूप गोस्वामी ने पद गान समाप्त किये। दासगणों ने महाप्रभु तथा भक्त वृंद को माल्य चंदन से भूषित किया। तब महाप्रभु अपने परिकरों के साथ शरत् ऋतु वन के अग्रभाग में हेमन्त ऋतु वन में गमन करके वन शोभा दर्शन करने लगे। वहाँ बाँधुली, चंद्र मल्लिका, गोपीलता, कामिनीलता, नील, पीत, रक्तादि विविध वर्णो, के झिन्टी पुष्प से वन भूमि परिशोभित है। तित्तिर, लाभा, कीर, भ्रमरादि की कर्णानन्दी ध्वनि से वन भूमि कोलाहलपूर्ण है। विविध कुसुमों से गंध वहन करके शीतल समीर प्रवाहित होकर अपने ''गन्धवह'' नाम की सार्थकता सम्पादन कर रही है। वहाँ सुपक्त नारंग फल शोभा पा रहे हैं। इस प्रकार से वन शोभा दर्शन करते-करते महाप्रभु के सपरिकर पीत झिन्टी मंडप में जाकर बैठने पर स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में श्री राधा कृष्ण के हेमन्त ऋतु वन विहार पद गान करने लगे। पद गान श्रवण कर सभी ब्रज लीला में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम : हेमन्त ऋतु वन शोभा :

ब्रज में श्रीराधा कृष्ण सपरिकर शरत् ऋतु वन में बैठे हुए हैं। तब नान्दी मुखी उनसे बोलीं-''हे ब्रजवनाधीश्वरी! हे ब्रज वनेश्वर! सामने इस हेमन्त ऋतु सुखद वन भू-भाग का दर्शन करें। यह वन फल-पुष्पादि रूपी अपनी सम्पद द्वारा आप दोनों के श्री चरणों की अर्चना करने का अभिलाषी हो रहा है। वन स्थली में प्रफुल्लित झिन्टी तथा कुरुवकादि कुसुमों के सौरभ से आप दोनों की घ्राणेन्द्रिय, मदमत्त तित्तिर, लाव, भ्रमर, किथी, शुक पक्षी के रव से कर्णेन्द्रिय, सुपक्व नारंग फलों से रसनेन्द्रिय, तुषार युक्त (ओस युक्त) सुशीतल पवन से आप दोनों की स्पर्शेन्द्रिय एवं अपनी मनोरम शोभा द्वारा आप दोनों की

Scanned by CamScanner

दर्शनेन्द्रिय की तृप्ति विधान कर रहा है।'' तत्पश्चात् श्री कृष्ण श्री मती से बोले –''हे प्रिय! देखो, यह हेमंत ऋतु जैसे उत्तमा नटी के समान शोभा पा रही है। मनोहर तथा नानाविध सुपक्त धान्य (धान) ही जिसके अंग के पीत वसन मदमत्त शुक पक्षियों की उच्च ध्वनि ही नान्दी पाठ, सुपक्त नारंग तथा जम्बीर के फल ही जिसके मनोहर कुच युगल हैं। हे साध्वी! हिम ऋतु में तुषार के भय से सूर्य देव ने अपनी उष्णता को कछ गिरि गहवर में, कुछ तुम्हारे कुच युगल में, कुछ कुँए के जल में, कुछ वृक्ष की गोद में छिपा रखा है। हे प्रिय! ऐसा लगता है जैसे रजनी में सोये हुए युवक युवती द्वारा दिन के आगमन के कारण कुचोष्णता के भंग होने के भय से सूर्य देव की आराधना करने पर सूर्य के विलंब से उदित होने से रजनी में वृद्धि हुई है। रास के समय कुंकुम लेपित ब्रज कुमारी गणों की स्तन राशि ने मुझे जिस सुपक्त नारंग फल का स्मरण कराया था, यहाँ के पक्व नारंग आज उसी स्तन समूह का स्मरण करा रहे हैं।'' इस प्रकार से वन शोभा दर्शन करके श्री राधा कृष्ण द्वारा परिकरों से घिरकर पीत झिन्टी मंडप में बैठने पर वृंदा देवी ने माल्य चंदन मंगवाकर सखियों सहित युगल को भूषित किया। साधक मंजरी वृंदा देवी तथा मंजरी गणों को भूषित करके युगल की पाद संवाहनादि सेवा करने लगी। युगल की रूप माधुरी दर्शन करके सभी आनंद में आत्म हारा हुईं।

नवद्वीप : शीत ऋतु वन शोभा :

नवद्वीप में महाप्रभु हेमन्त ऋतु वन में पीत झिन्टी मंडप में सपरिकर भावाविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी द्वारा ब्रज में श्री राधा कृष्ण के हेमंत ऋतु वन विहार पद गान समाप्त करने पर महाप्रभु ने हुँकार करके बाह्य दशा लाभ की। परिकरों के भी बाह्य दशा लाभ करने पर दासगण ने तीनों प्रभु तथा भक्त वृंद को माल्य चंदन से विभूषित किया। तत्पश्चात् महाप्रभु हेमन्त ऋतु वन के अग्रभाग में स्थित शीत ऋतु वन में आकर वन शोभा दर्शन करने लगे। वहाँ जवा, बाँधुली, दमनक, कुंद आदि कुसुम विकसित हैं। हारित, भारूई आदि पक्षियों के मधुर रव से वन कोलाहल पूर्ण है। सूर्य किरण मृदुता को प्राप्त हो रही हैं। शीत में जन्तु शीतार्त तथा कंपित कलेवरों से सूर्य किरणों का अन्वेषण कर रहे हैं। वृक्ष चूड़ा का आश्रय करके पक्षी कुल सुख पूर्वक अवस्थान कर रहे हैं। प्रचण्ड शीत में पद्मवन दग्ध हो रहा है। इस प्रकार से वन शोभा देखते-देखते महाप्रभु कुंद पुष्प मंडप में आगमन करके परिकरों से घिरकर बैठ गये। वहाँ सुकोमल गद्दी, तकिया, अग्नि पात्र तथा शीत वस्त्रादि सुसज्जित हैं। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में श्री राधा कृष्ण के शीत ऋतु वन भ्रमण पद गान करने लगे। पद श्रवण कर सभी अपने-अपने भाव में आविष्ट होकर ब्रज लीला दर्शन करने लगे।

ब्रजधाम : शिशिर ऋतु वन शोभा :

ब्रज में श्री राधा कृष्ण सपरिकर हेमन्त ऋतु वन में बैठे हुए हैं। श्री वृंदा देवी उनके अग्रवर्ती होकर शीत ऋतु वन भू-भाग का दर्शन कराते हुए बोलीं–''हे राधे! हे कृष्ण! देखो-देखो, यह 'शिशिर रुचिर' नामक

Scanned by CamScanner

वन-भूमि कैसी अपूर्व शोभा पा रही है। बंधुक कुसुम की प्रभा से उत्तम अरुण वसन, दमनक की कांति से कंचुलिका तथा कुंद पुष्प की द्युति (प्रभा) से शुभ्र उत्तरीय धारण करते हुए भरद्वाज तथा हारित पक्षियों की ध्वनि द्वारा स्तुति करते-करते आप दोनों के साथ शिशिर लक्ष्मी मिल रही है। यह देखो, रवि की किरण से सूर्यकांत मणिबद्ध निबिड़ (घनीभूत) पल्लव युक्त तरुगण के कुछ उष्ण गोद प्रदेश में हिरण मन्दमन्द रोमन्थन (तृण चबाने से प्रकाशित मुख की भंगिमा) से रमणीय मूर्ति धारण करके पुलक तथा वाष्प जल से पूर्ण होकर आप दोनों के दर्शन के लिए इधर ही आ रहे है।'' वृंदा के वाक्य से आनंदित होकर श्री कृष्ण श्री राधा से बोले—''हे सुन्दरी! यह देखो राहु के सेनापति हिमराशि ने सूर्य को पराभव करने में असमर्थ होने पर सूर्य की प्रिया पद्मिनी को दग्ध करना आरम्भ किया है। इसलिए भृंग कुल पद्म पुष्प के समादर का परित्याग करके कुंद पुष्प में अनुरक्त हो रहा है। वस्त्र हरण के दिन ब्रज कुमारिकाओं के जल से उठने पर उनकी स्तनावली ने जो पक्वोन्मुख बदरी फल का मुझे स्मृति गोचर कराया था, उसी स्तनावली का आज यहाँ का बदरी फल समूह स्मरण करा रहा है।" तब वृंदा देवी द्वारा जवा मंजरी के दो कर्णावतंस प्रदान करने पर श्री कृष्ण ने पुलकित तथा प्रेम कंपित हाथ से वे श्री राधा के कर्णो में पहना दिये एवं श्री राधा ने भी श्री कृष्ण के कर्णों में कुन्द कुसुम के कर्णाभूषण पहना दिये। तब वृंदा देवी द्वारा श्री राधा के हस्त में कुंद पुष्प की एक माल्य समर्पण करने पर श्री राधा के करतल की छटा से उसने रक्तोत्पल के समान प्रभा धारण की। इस माला को श्रीमती के द्वारा श्री कृष्ण के गले में अर्पण करने पर उसने नीलोत्पल माला की कांति एवं पुनः श्री कृष्ण द्वारा उसे श्री राधा के गले में समर्पण करने पर उसने चम्पक माला की कांति धारण कर ली। एक ही श्वेत वर्ण कुंद माल्य संग गुण से संक्रमित होकर तीन वर्णों की हो गयी।

तदोपरान्त श्री कृष्ण श्री मती से परिहास करते हुए बोले—''हे राधे! प्रसिद्ध लक्ष्मी देवी भी जब तुम्हारे गुणों से पराभूत हुई हैं, तब अन्य रमणियों की क्या बात है?'' श्री राधा बोलीं—''वह लक्ष्मी आपकी प्रिया है।'' श्री कृष्ण—''तुम लक्ष्मी स्वरूपिणी हो, इसीलिए वे लक्ष्मी मेरी प्रिया हैं।'' श्रीराधा—''तुम्हारी प्रिया हरिणी गण भी वेणुनाद से आकर्षित होती हैं।'' श्री कृष्ण—''तुम्हारे नयनों के समान उनके भी नयन हैं, इसीलिए वे मेरी प्रिया हैं।'' श्री राधा—''यमुना का नाम कृष्णा है। अतः वे भी तुम्हारी कांता हैं।'' श्री कृष्णा—''वह तुम्हारी सखी विशाखा के समान हैं, इसीलिए वे भी मेरी कांता हैं।'' श्री राधा—''तुम्हारी वन माला में गुँजनरता भ्रमरीगण भी तुम्हारी रमणी हैं।'' श्रीकृष्ण—''ये सब तुम्हारी अल्कावली के समान हैं इसीलिए ये भी मेरी प्रिया हैं।''

तत्पश्चात् श्री कृष्ण ने प्रश्न किया—''हे राधे! वाक्य निपुणा, प्रखरा तथा अतिशय क्रोधिता होने पर कौन रमणी कंदर्प समर में आकर भी भाग जाती है? मदन समर में उत्सुकागणों को भी निषेध करती है, वह रमणी कौन है? शीघ्र बोलो।'' श्रीराधा बोलीं—''ये ही ललिता हैं।'' श्री कृष्ण—''हे राधे? कंदर्प युद्ध में विमुखी एवं कभी अपने अभीष्ट देव को कुच कुंकुम, मृगमद, अगुरु तथा सुगन्धी चूर्ण से अर्चना करती है,

Scanned by CamScanner

वह रमणी कौन हैं?'' श्री राधा–''यह विशाखा है।'' श्री कृष्ण–''कौन वल्ली (लता) समीप में स्थित पति का त्याग कर सुदूर स्थित तमाल को प्राप्त होकर शोभा पाती है?'' श्री राधा–''यह चम्पकलता है।'' श्री कृष्ण ''श्रृँगारादि वेश रचना में तथा नाना प्रकार के चित्र कार्यों में सुनिपुणा, कोमल स्वभावा तथा निरभिमाना होकर हम सब का सुख विधान करती है, वह कौन है? श्री राधा–''यह चित्रा है।'' श्रीकृष्ण–''जो काम शास्त्र विद्या में प्रवीणा हैं तथा मेरे द्वारा उनके निकट कामशास्त्र का अध्ययन करने पर छात्र को (मुझे) जो अपना अंग समर्पण करती हैं वे कौन हैं ?'' श्री राधा–''यह तुंगविद्या हैं।'' श्री कृष्ण–''जो षोडश कला (काम कला) में पूर्णा होने पर भी द्वितीयादि कला में वक्रा, जिसके उदय होने मात्र से ही कंदर्प का उद्‌गम होता है, वह कौन हैं?'' श्री राधा–''ये इन्दुलेखा हैं। श्रीकृष्ण ''जो नृत्य तथा लास्य * में स्वयं शोभा शालिनी होकर हम सब को आनंद दान करती हैं?'' श्रीराधा-''यह रंगदेवी हैं।'' श्रीकृष्ण- ''जो अक्ष क्रीड़ा (पाशाक्रीड़ा) में मुझे पराजित करके भी पनीकृत (बाजी) में चुम्बक रत्न ग्रहण नहीं करती एवं पराजित होकर भी चुम्बक रत्नदान करने की इच्छा नहीं करतीं-वे कौन हैं?'' श्रीराधा–''ये सुदेवी हैं।'' श्रीकृष्ण ''वह कौन हैं जो दूसरों के सुख में सुखी तथा दु:ख में दु:खी होती हैं,'' अपने सुख, दु:ख, हर्ष व्यथादि के अनुभव को भूलकर परम वैष्णव की भाँति अपने ईष्ट देव की आराधना में तत्परा होती हैं? श्री राधा–''ये सभी मेरी रूप मंजरी, रति मंजरी आदि वयस्या गण हैं।'' इस प्रकार से श्री कृष्ण कलावती गण के साथ नाना हास्य परिहास रस में नर्म छल से कुचाधरादि स्पर्श करके आनंद सहित हिम ऋतु वन में सुख पूर्वक विहार करने लगे।

श्री राधा कृष्ण की पहेली।

तदोपरान्त श्री वृंदा देवी बोलीं–''हे राधे! हे कृष्ण! शीत ऋतु लक्ष्मी ने आप सब की सेवा की आकांक्षा से आगे कुंद मंडप में नाना उपकरण सुसज्जित करके रखे हैं। आप सब उसे अंगीकार करके धन्य करें।'' यह श्रवण कर श्री राधा कृष्ण कुंद मंडप में जाकर बैठने के लिए सुकोमल गद्‌दी, तकिया, शीत वस्त्रादि, अग्निपात्र (अंगीठी) आदि सुसज्जित देखकर सखीगण से घिरकर वहीं बैठ गये। वृंदा देवी ने सभी को कुंद कुसुम की माल्यादि द्वारा भूषित किया। साधक मंजरी रूप मंजरी तथा गुरु मंजरी गण को युगल के प्रसादी कुंद माल्य से भूषिता करके युगल की पाद संवाहनादि सेवा में निरता हुई। युगल की रूप माधुरी दर्शन से सभी आनन्द रस में मग्ना हुईं।

नवद्वीप : बसन्त शरत् युग्म ऋतुवन शोभा :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु शीत ऋतु वन के कुंद पुष्प मंडप में सपरिकर भावाविष्ट हैं। स्वरूप के गान से श्री राधा कृष्ण के शीत ऋतु वन भ्रमण एवं वृंदादेवी द्वारा युगल की सेवा परिपाटी की बात श्रवण कर प्रेमावेश में हुँकार कर बाह्य दशा को प्राप्त हुए। परिकर गणों के भी बाह्य दशा को प्राप्त होने पर स्वरूप

* नृत्य-पुरुष नृत्य एवं "लास्य"-स्त्री नृत्य।

Scanned by CamScanner

गोस्वामी ने शीत ऋतु वन विहार पद गान समाप्त किये। दास गण ने कुंद पुष्प की माला गूँथकर तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को भूषित किया। तदोपरान्त महाप्रभु बसन्त शरत् युग्म ऋतु वन में गमन करके युगपत् बसन्त तथा शरत् ऋतु वन में गमन करके युगपत् बसन्त तथा शरत्ऋतु के वृक्षलता, फल, फूल, पशु, पक्षी के सन्निवेश का दर्शन करके परमानंदित मन से परिकरों से घिरकर माधवी-मालती लता मंडप में जाकर बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर श्री राधा के 'प्रेमवैचित्त्य' लीला पद गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी ब्रजभाव में आविष्ट होकर लीला रस में मग्न हुए।

ब्रजधाम : बसन्त शरत् युग्म ऋतु वन शोभा :

ब्रज में श्री श्री राधा कृष्ण शीत ऋतु वन में कुंद मंडप में बैठे हुए हैं। श्री वृंदा देवी बोलीं—"हे राधे! हे कृष्ण! आप सब अग्रवर्ती बसन्त शरत् युग्म ऋतु वन की शोभा दर्शन करें।" यह श्रवण कर सभी वहाँ गमन करके बसन्त तथा शरत् दोनों ऋतुओं के उपयोगी प्राकृतिक सौन्दर्य का दर्शन करके परमानंदित मन से माधवी-मालवी मंडप में जाकर बैठ गये। तब सखियों के मुख पद्म सौरभ से आकृष्ट होकर एक मधुकर उनके वदन पर निपतित हुआ, सखीगण द्वारा उसे निवारण करने पर वह श्री राधा के मुख पद्म को प्राप्त होकर उनके अतुलनीय सौरभ से उन्मत्त होकर मुख के चारों ओर गुँजन करते-करते भ्रमण करने लगा। श्री राधा भय सहित नयन प्रान्त को झुकाकर एवं कंकण की ध्वनि से तथा तर्जन के साथ उस भ्रमर को लीला कमल संचालन द्वारा प्रताड़ित करने लगीं। किन्तु भृंग श्रीमती के वदन कमल स्थित मधुलोभ से समाकृष्ट होकर अन्यत्र नहीं गया। तब श्री मती भागकर श्री कृष्ण के बगल में छिपकर उनके वस्त्रांचल में अपने मुख को छिपाकर अवस्थान करने लगीं। इसके बाद चंचल भृंग के कमल वन में चले जाने पर सखीगण बोलीं—"राधे! अब कोई भय नहीं है हम सबके द्वारा निवारित होकर वह शठ मधुसूदन (भ्रमर) पद्माली (पद्मवन) में चला गया है।" यह श्रवण कर श्री राधा ने समझा कि मधुसूदन श्री कृष्ण पद्माली अर्थात पद्मा की सखी चंद्रावली के निकट चले गये तब विपुल प्रेम सम्पत्ति द्वारा अंधीभूता होकर समीप में स्थित श्री कृष्ण को वे न देख पायीं। श्री राधा की प्रेम चेष्टा देखकर श्री कृष्ण ने नयन के इशारे से ही सखियों को

श्री राधा का प्रेम वैचित्त्य।

बताने से मना कर दिया एवं सखियों ने भी श्री राधा की प्रेम-माधुरी दर्शन की लालसा से उनका पक्ष अवलम्बन किया। तब प्रेम वैचित्त्य भाववती * श्री राधा, श्री कृष्ण चन्द्रावली के निकट चले गये हैं, यह बोध करके क्रोध प्रकाश करते हुए धनिष्ठा के निकट जाकर उनसे बोलीं—"हे धनिष्ठे। कपट नाट्य की नटी! वह धृष्ट कहाँ है?" धनिष्ठा बोलीं—"तुम्हारे लिए पुष्प चयन करने के लिए पद्माली (कमल वन) में चले गये हैं।" श्री राधा—"हे कपटिनी! यदि वे पद्माली (चंद्रावली) को यहाँ लाये तो क्या होगा?" धनिष्ठा—"वह पद्माली (कमल

* प्रियस्य सन्निकर्षेऽपि प्रेमोत्कर्ष स्वभावतः। या विश्लेशधियार्तिस्तत प्रेम वैचित्त्यमुच्यते। (उ.नी.)
प्रियजन के सामने अवस्थान करने पर भी प्रेमोत्कर्ष स्वभाव वशतः जहाँ विरह बुद्धि का उदय होता है, उसे प्रेम वैचित्त्य कहते हैं।

Scanned by CamScanner

समूह, पक्ष में चंद्रावली) तुम्हारी कांति से म्लान हो जायेगी।'' श्री राधा–''धनिष्ठे! तुम्हारा कोई दोष नहीं है। श्री कृष्ण शैव्या के संग निबिड़ कानन में चले गये, यह बात सुनकर भी कूट दूती तुम्हारी बात पर विश्वास करके यहाँ आकर मैने बड़ी भूल की। हाय! मेरे ही प्रिय वन में मेरी विपक्षा के साथ मेरे प्रियतम का विलास–यह भी देखना पड़ा इससे मेरी मृत्यु ही श्रेयस्कर थी।'' यह बात सुनकर ललिता बोलीं–''सखी! मैंने बहुत बार कृष्ण की इस धृष्टता को देखा है। तुम सरला हो, कुछ भी नहीं जानती, चलो हम घर चलें।'' यह बात कहकर ललिता द्वारा श्री राधा का हस्ताकर्षण (हाथ खींचकर) कर गृह गमन के लिए उद्यता होने पर श्री राधा श्री कृष्ण विरह में भीता, दीना, आर्ता तथा उत्कंठिता होकर ललिता से बोलीं–''सखी ललिते! मेरा चित्त अतिशय वाम है। उनके इतने दोष देखने पर भी दोषों की गणना न करके गुणों को ही ग्रहण करता है एवं उस कुटिल चित्त श्री कृष्ण को ही देखने की इच्छा करता हैं–मैं क्या करूँ बोलो?'' ललिता बोलीं–''राधे! साठी धान जैसे गर्भ में ही परिपक्व होता है तथा बाहर से लक्षित नहीं होता, उसी प्रकार रमणी जाति के अंदर कामोद्रेक होने पर भी वे उसे बाहर प्रकाशित नहीं करतीं। इसलिए श्री कृष्ण लालसा की बात और मत कहो।'' श्रीराधा–''ललिते! कर्ण पीड़ा दायी विफल नीति कथा का त्याग करो। कृष्ण विरह में मेरे प्राण बाहर निकल रहे हैं, हृदय विदीर्ण तथा देह विघूर्णित हो रही है। तुम्हारी वंदना करती हूँ–शीघ्र मुझे मेरे प्राण प्रियतम श्री कृष्ण का दर्शन कराओ।'' ललिता– ''सखी राधे! श्री कृष्ण अति धृष्ट हैं, उस पर रमणी लम्पट हैं अतएव तुम्हारे इस चापल्य को देखकर वे तुमसे और अधिक वंचना (चालकी) करेंगे।'' श्री राधा–''सखी! इससे भी अधिक और वंचना इस जगत में क्या हो सकती है, जिससे वे मुझसे अधिक वंचना करेंगे ?''

इसके पश्चात् श्रीमती ने सहसा कांत को सम्मुख देखा एवं उनके अंग में अपना प्रतिबिम्ब देखकर उसे चंद्रावली समझकर लज्जा तथा ईर्ष्या से विमुखी होकर क्रोध में भरकर कँपित होने लगीं। यह देखकर कुंदलता बोलीं–''हे राधे! तुम कांत के दर्शन करने के लिए उत्कंठिता होकर भी उनके दर्शन से क्रोध में विमुखी क्यों हो रही हो? उनके साथ मिलो।'' श्री राधा बोलीं–''हे शठे! जिसे दिखाने के लिए मुझे गृह से इस वन में लाई हो, श्री कृष्ण के वक्ष स्थल में क्या उस चंद्रावली को नहीं देख पा रही हो?'' श्री कृष्ण बोले–''हे राधे! यह चंद्रावली नहीं है, यह तुम्हारी सहचरी वन देवी है। मेरा आलिंगन कर रही है, किसी भी तरह नहीं छोड़ती। तुम इसे मना करो जिससे यह मुझे दुख न दे।'' तब ललिता श्री राधा के कर्ण में संलग्ना होकर बोलीं–''श्रीकृष्णांग में यह तुम्हारा ही प्रतिबिम्ब है और कोई नहीं।'' यह बात सुनकर श्री राधा लज्जा से अधोमुखी हुईं। यह देखकर श्री कृष्ण तथा सखियों के हास्य करते रहने पर कुंदलता श्री राधा से बोलीं–''हे राधे! नयन खोलकर भी सामने स्थित कांत को नहीं देख पा रही हो अपनी छाया को ही चंद्रावली समझ रही हो, तुम्हारा यह प्रणय नाट्य वास्तव में अतीव चमत्कार पूर्ण है।'' इसके बाद श्री कृष्ण

श्री राधा की भाव चेष्टा।

Scanned by CamScanner

ने श्रीमती को प्रेम पूर्वक हृदय में जकड़कर चुम्बन किया। वृंदादेवी ने माल्य चंदन मंगवाकर श्री राधा कृष्ण तथा सखीवृन्द को भूषित किया। साधक दासी गुरु मंजरी के इशारे पर मंजरी तथा गुरु मंजरी गण को भूषिता करके बीजनादि सेवा करने लगी। युगल रूप माधुरी दर्शन कर सभी आनंद में विभोर हुईं।

नवद्वीप : ग्रीष्म-हेमन्त युग्म ऋतु वन शोभा :

नवद्वीप में महाप्रभु सपरिकर बसन्त-शरत् युग्म ऋतु के वन के माधवी-मालती मंडप में भावाविष्ट हैं। स्वरूप के गान से श्री राधा के प्रेम वैचित्त्य तथा मिलन अनुभूति से आनंदावेश में हुँकार करके बाह्य दशा लाभ की। स्वरूप गोस्वामी ने प्रेम वैचित्त्य लीला पद गान समाप्त किये। इसके बाद महाप्रभु इस ग्रीष्म-हेमन्त युग्म ऋतु वन में जाकर दोनों ऋतुओं की प्राकृतिक शोभा सन्निवेश दर्शन करके नव मल्लिका, पीत झिन्टी पुष्प मंडप में परिकरों से घिरकर बैठ गये। महाप्रभु ब्रजलीला की स्मृति से विषाद भाव अवलम्बन करते हुए गाल पर वाम बाहु रखकर अधोमुख होकर बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी प्रभु का मन जानकर ब्रज में श्री राधा के निर्हेतु (अकारण) मान लीला पद गान करने लगे। पद श्रवण कर सभी अपने-अपने भाव में आविष्ट होकर लीला रस में मग्न हुए।

ब्रजधाम : ग्रीष्म-हेमन्त युग्म ऋतु वन शोभा :

ब्रज में श्री राधा कृष्ण बसन्त-शरद युग्म ऋतु वन से आगे ग्रीष्म हेमंत ऋतु वन में आये। वहाँ वृंदा देवी द्वारा प्रदर्शित दोनों ऋतु युक्त वन शोभा दर्शन करते-करते सभी नवमल्लिका, पीत झिन्टी पुष्प मंडप में बैठ गये। कुछ क्षणों के पश्चात् सभी पुष्प चयन में प्रवृत्त हुए। श्री राधा ने सखी वृन्द के साथ एक ओर तथा श्री कृष्ण ने दूसरी ओर पुष्प चयन के लिए गमन किया। श्री कृष्ण सबसे पहले ही कुसुम चयन करके मंडप में बैठे हुए हैं। बाद में श्री राधा पुष्प लाकर श्री कृष्ण के अंग में अपना प्रतिबिम्ब देखकर ईर्ष्यान्विता तथा मानिनी होकर लाये गये सभी पुष्पों को श्री कृष्ण चरणों में फेंककर बैठ गईं। तब वृन्दा देवी एक पद्म पुष्प श्रीकृष्ण के हाथ में देकर श्री राधा से बोलीं–"हे राधे! अकारण मान से लीला की हानि होती है, अतः मान परित्याग करो। श्री कृष्ण कमल सूँघते हुए बोले–"त्रिभुवन में कमल सौरभ में अतुलनीय है, तथापि प्रिया के वदन सौरभ के साथ इसकी तुलना करके देखूँ।" यह बात कहकर श्री मती का मुख चुम्बन करते हुए बोले–"प्रिये! तुम्हारे मुख कमल के सौरभ के निकट इस कमल का सौरभ अति तुच्छ है।" यह कहकर कमल को दूर फेंक दिया एवं पुनः बोले–"प्रिये! मान से तुम्हारे मुख मंडल की शोभा का जिस प्रकार से विकास होता है। कोटि अलंकार से भी वह नहीं होता। अतः विधाता से प्रार्थना करता हूँ कि वे सब समय तुम्हें मानिनी करके ही रखें। यह बात सुनकर श्री राधा की हास्य मंजरी थोड़ी विकसित हुई। मान दूर हुआ। नव माल्लिका तथा पीत झिन्टी पुष्प माल्य से श्री राधा कृष्ण तथा सखी वृंद को भूषित करके किंकरीगण व्यजनादि सेवा करने लगीं। युगल के रूप माधुर्य में सभी मग्न हुईं।

श्री राधा का अकारण मान।

श्री राधा का मान प्रशमन।

Scanned by CamScanner

नवद्वीप : वर्षा-शिशिर युग्म ऋतु वन शोभा :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु ग्रीष्म-हेमन्त ऋतु वन में नवमल्लिका पीत झिन्टी मंडप में भावाविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी ने श्री राधा के निर्हेतु (अकारण) मान प्रशमन पद गान समाप्त किये। महाप्रभु आनंद में हुँकार करके सपरिकर बाह्य दशा को प्राप्त हुए। दास गण ने नवमल्लिका तथा पीत झिन्टी पुष्प माल्य से तीन प्रभु तथा भक्त वृंद को भूषित किया। इसके बाद महाप्रभु अग्रवर्ती वर्षा-शिशिर ऋतु वन में आकर वन शोभा दर्शन करते हुए यूथी मंडप में भावाविष्ट होकर बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी ने प्रभु का मन जानकर ब्रज में श्री राधा-कृष्ण के लुका-लुकी लीला पद गान किये। गान श्रवण कर सभी ब्रज भाव में तन्मय हुए।

ब्रजधाम : वर्षा-शिशिर युग्म ऋतु वन शोभा :

ब्रज में श्री राधा कृष्ण ने ग्रीष्म-हेमन्त युग्म ऋतु वन से होकर अग्रवर्ती वर्षा–शिशिर ऋतु वन में जाकर वन शोभा दर्शन करके आनंद लाभ किया तथा सपरिकर यूथी कुंद मंडप में जाकर बैठ गये। तब श्री

श्री राधा कृष्ण का लुका-लुकी खेल।

कृष्ण श्री राधा के साथ लुका-लुकी खेलने के लिए उत्सुक होकर बोले–"ललिते! तुम मध्यस्था होओ, हम दोनों लुका-लुकी खेल खेलेंगे। तुम श्री राधा के नयन आच्छादन करके रखो, में छिप जाऊँ तब श्री राधा मुझे खोजकर बाहर करेंगी। पुनः श्री राधा छिप जायेंगी तथा मैं उन्हें खोजकर बाहर करूँगा। तत्पश्चात् जो आगे आकर तुम्हें स्पर्श करेगा उसी की जय होगी।" तब ललिता श्री राधा के नेत्र आच्छादन करके बोलीं–"हे कृष्ण! पहले तुम छिप जाओ। श्री कृष्ण तमाल कुँज में जाकर छिप गये। ललिता ने राइ के नेत्र खोल दिये, वे श्री कृष्ण को खोजते हुए जिधर पशु-पक्षी अपनी स्वाभाविक चेष्टा को त्याग कर श्री कृष्ण दर्शन के आनन्द में जड़ होकर अवस्थान कर रहे थे उसी ओर श्रीकृष्ण गमन का अनुमान कर उसी तमाल कुँज में उपस्थित हुईं। वहाँ श्रीकृष्ण को देखकर भी भ्राँति वशतः वे उन्हें पहचान न सकीं। अंत में विशेष सतर्कता से निरीक्षण करके बोलीं–"इस तमाल कुँज में विद्युत पुँज कहाँ से आया? यह क्या श्री कृष्ण का पीताम्बर है?" यह कहकर श्रीकृष्ण को स्पर्श करने पर उन्होंने राइ को चुम्बन आलिंगन किया। तब दोनों ने ही द्रुतगति से दौड़ते हुए आकर एक ही साथ ललिता को स्पर्श किया। ललिता बोलीं–"इस बार दोनों की जीत तथा दोनों की हार हुई।"

तदोपरान्त ललिता द्वारा श्री कृष्ण के नेत्र आच्छादित करने पर श्री राधा स्वर्ण यूथी मंडप में जाकर छिप गई। ललिता द्वारा भी कृष्ण के नेत्र बंधन खोल देने पर श्री कृष्ण श्री राधा को इधर-उधर खोजकर भी कहीं नहीं देख पाये। तब श्री राधा की किसी किंकरी द्वारा नयन इंगित से स्वर्ण यूथी कुँज सूचित कर देने पर भी कृष्ण उस पर विश्वास न करके दूसरी ओर गमन करने लगे यह देखकर किंकरी हाथ से ताली बजाकर हँसने लगी। इसके बाद श्री कृष्ण श्री राधा के पदांकानुसार स्वर्ण यूथी कुँज में प्रविष्ट होकर श्री

Scanned by CamScanner

राधा को देखकर भी पहचान नहीं पाये, मन में सोचने लगे–"यहाँ इतनी नीलिमा कहाँ से आ रही है? क्या यह श्री राधा का नीलाम्बर है?" तब नीलाम्बर को स्पर्श करके श्रीमती को वक्ष में धारण कर कुँज विलास के अंत में दोनों ललिता के निकट आने पर दोनों के अंग में विलास चिह्न देखकर ललिता बोलीं–"इस बार तुम दोनों की जय हुई, तथा हम सब की पराजय।" श्रीकृष्ण बोले–"तुम सब तो खेली नहीं बिना खेले ही तुम सब की कैसे पराजय हुई?" ललिता बोलीं–"तुम दोनों ने खेलने के छल से जो कुँज के मध्य में विलास किया है, उस माधुरी के दर्शन के अभाव में ही हम सबकी हार हई है।" यह सुनकर श्रीमती लज्जिता हुईं। किंकरी गण श्री राधा कृष्ण की वेश-भूषा सम्पादन करके व्यजन, पाद संवाहनादि सेवा करने लगीं। युगल की रूप माधुरी का दर्शन करके सभी परमानंद में निमग्न हुईं।

बिना खेले ही सखियों की पराजय।

नवद्वीप: मधुपान-कुँज विलासादि भावावेश :

नवद्वीप में महाप्रभु वर्षा-शिशिर युग्म ऋतु वन में भावाविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी द्वारा श्री राधा कृष्ण का लुका-लुकी खेल एवं स्वर्ण यूथी कुँज में युगलविलास वर्णन करने पर प्रेमावेश में प्रभु हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। परिकरों के भी बाह्य दशा लाभ करने पर स्वरूप गोस्वामी ने लुका-लुकी पदगान समाप्त किये। श्रीवास ने चंदन माला से तीनों प्रभु तथा भक्त वृंद को भूषित किया। इसी प्रकार से महाप्रभु के भक्त वृंद सहित सुखपूर्वक दशऋतु वन भ्रमण करके श्री वास के पुष्पोद्यान में माधवी मंडप में आकर बैठ जाने पर महाप्रभु के भाव को जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी ने ब्रज में श्री राधा कृष्ण के ललितानंदद कुँज में आगमन, मधुपान तथा कुँज विलासादि पद क्रम पूर्वक गान किये। गान श्रवण कर सभी भाव में विभोर होकर ब्रज लीला का संदर्शन करने लगे।

ब्रजधाम : मधुपान तथा कुँज विलास :

ब्रज में श्री श्री राधा कृष्ण इसी प्रकार से दश ऋतुवन की विविध विहार-माधुरी आस्वादन करके ललिता नंदद कुँज के माधवी मंडप में मधुपान वेदिका में प्रवेश करते हुए सुशीतल वृक्ष की छाया में बैठकर विश्राम सुख का अनुभव करने लगे। स्वर्ण हार के मध्य में विविध रत्नावली जड़ित इन्द्रनील मणि की जिस प्रकार से शोभा का विकास होता है उसी प्रकार विविध अलंकारों से अलंकृत तथा पीताम्बर धारी श्री कृष्ण चारों ओर से मंडलाकार में अवस्थिता, स्वर्ण वर्णा, कमल नयना, ब्रज सुंदरी गणों के मध्य शोभा पाने लगे। किंकरी गण द्वारा व्यजन तथा पाद संवाहनादि द्वारा ससखी श्री राधा के श्रम को दूर करने पर वृंदा देवी श्री राधा कृष्ण के सामने मधुपूर्ण पान पात्र लेकर आयीं। श्री कृष्ण द्वारा अपने हाथ से पान पात्र धारण करते हुए–"हे प्रिये! पान करो" यह कहकर श्री राधा के मुख कमल के निकट ले जाने पर श्री मती ने लज्जा से नतमुखी होकर श्री कृष्ण के हस्त से पान पात्र ग्रहण करते हुए वस्त्रांचल से मुख को आवृत करके मात्र एक बार मधु को सूँघकर तथा अपने अधर से सुगन्धित करके पान पात्र श्री कृष्ण को समर्पित कर दिया।

Scanned by CamScanner

यह मधु प्रियाटवी अर्थात श्री वृन्दावन की वृक्षलता से उत्पन्न के होने कारण प्रिय, प्रिया के अधर स्पर्श से सुरभित, प्रिय सखियों के परिहास से वासित एवं प्रियतमा श्रीराधा द्वारा अर्पित होने से श्री कृष्ण उसे परम आग्रह के साथ पान करने लगे। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण द्वारा अपने अधर से सुगन्धित मधु प्रियतमा के कर कमलों में समर्पण करने पर श्री राधा ने वसन द्वारा आवृत करके प्रियतम के श्री मुख से सुगन्धित मधु का पान किया। तदोपरान्त श्री वृंदा देवी ने आदर सहित कुंदलता एवं सखी गणों के आगे श्री राधा कृष्ण के पानावशिष्ट मधु द्वारा पूर्ण पात्र समर्पण किया। श्री कृष्ण भी अनेक मूर्ति धारण करके प्रत्येक सखी के दाहिने बैठ गये एवं सभी सखियाँ श्री कृष्ण को अपनी बगल में पाकर उन्हें मधु पान कराकर स्वयं भी पान करने लगीं। तब पानोन्मत्त श्रीकृष्ण द्वारा प्रियागणों के मुख कमल का मधुपान करने पर वे सबभी श्री कृष्ण के अधर रस मधु का पान करने लगीं। तत्पश्चात् वृंदादेवी द्वारा श्री राधा कृष्ण तथा सखियों के सामने नाना प्रकार के विदंश (चाट) के साथ नाना प्रकार के मधु समर्पण करने पर श्री कृष्ण तथा गोपीगण परस्पर एक दूसरे को पान कराने लगे एवं स्वयं पान करने लगे। वृंदा तथा मंजरी गणों में भी उस माधुर्य रस मधु के नयन रूपी पात्रों से पान करने पर नयनोन्मत्ता उत्पन्न हुई। गोपांगना गणों के वारुणी पान जनित मत्तता से वसन भूषणादि स्खलित, हास्य का कारण न होने पर भी उच्चहास्य, प्रश्न किये बिना ही उत्तर देना एवं अकारण प्रलाप वाक्य प्रकाश पाने लगे। वचन में गद्गदता, गमन में स्खलित्ता, नयनों में उद्घूर्णता, परिहास वचन में स्पष्टता, दृष्टि निक्षेप में भ्रमित्ता एवं इन सब कार्यों में धृष्टता, ब्रजांगना गणों की त्रिविध (वृक्षज, पुष्पज, तथा गुड़ज) मधु से उत्पन्न इस सब चेष्टाओं ने श्री कृष्ण के मन में अतिशय आनंद दान किया। कोई नवीना किशोरी नव मधुपान में अतिशय प्रमत्त होकर प्रलाप करने लगी—"ल ल ललिते! प प प पश्य स स स सह वि वि विपिनं म म मही ग ग ग गगनं ल ल लम्बते हा कथम्" अर्थात् ललिते! यह देखो, कानन तथा पृथ्वी श्री राधा कृष्ण के साथ आकाश में गमन कर रहे हैं? हाय! ऐसा क्यों हुआ?"

तत्पश्चात् श्री कृष्ण पद्मिनी समूह के सतृष्ण भृंग के समान गोपांगनाओं के साथ विलास करते-करते विवश हो पड़े। मदनोन्मत्त श्री श्री राधा के एक ही साथ रमणेच्छा एवं शयन की इच्छा से युक्त होने पर मर्मज्ञा कुंदलता ने श्री कृष्ण को श्री राधा के कर्ण भूषण के लिए अशोक पुष्प के गुच्छ लाने के लिए भेजा। तब श्री राधा घूर्णित नेत्रों से सेवापरा मंजरी गणों द्वारा परिसेविता होकर कुँजराज ललिता नंदद में जाकर शयन कर गई। सखीगण भी निद्रा के आगमन से घूर्णित नेत्रों तथा स्खलित गति से अन्यान्य कुँज में जाकर शयन कर गईं। श्री कृष्ण ने अशोक पुष्प के कर्ण भूषण तथा कुसुम गुच्छ लेकर वृंदा के इशारे से वहाँ आकर ललिता नंदद कुँज में प्रवेश किया। राधा रूपी सुरधनी पर कृष्ण रूपी मतंगज उपस्थित होने पर हंस श्रेणी की भाँति उड्डीयमाना होकर सेवापरा सखीगण वहाँ से प्रस्थान कर गईं। तब श्री कृष्ण ने नयन रूपी पात्र से श्री राधा के लावण्यामृत का पान करके अधीर चित्त से श्री हस्त द्वारा उनके कंचुक रूपी

Scanned by CamScanner

शैवाल एवं नीवि रूपी नलिनी को निष्कासित किया। इधर तन्द्रा में निमिलिताक्षी श्री राधा स्वप्न में समीप आये हुए श्री कृष्ण को नीवि तथा कंचुलिकाकर्षण के लिए चेष्टित देखकर वाम्य वशतः प्रलाप वचनों से निषेध करने लगीं–"म म मापि कि कि किम् द द देहि क कलित घू घूर्णा" अर्थात् "मुझे स्पर्श न करो। हे कृष्ण! तुम क्या करने की इच्छा कर रहे हो? सोने दो मैंने इसी एक क्षण पहले ही गहरी नींद के कारण चक्षु बंद किये हैं।" बाद में श्री राधा जागृत होकर स्वप्न को सत्य देखकर मधु मदनोन्मत्त होने पर भी इसी प्रकार से वाम्य प्रकाश करने लगीं। तब श्री कृष्ण के अतिशय उन्मत्त होकर बलपूर्वक उन पर आक्रमण करते हुए पराभव करना आरम्भ करने पर मेखला को मूक देखकर उर्ध्वगत होकर श्री राधा के चरण नूपुर जैसे भयभीत होकर फुँकार करने लगे। श्री कृष्ण श्री मती के ग्रीवादेश को धारण करके अधर, नख, दशन, वक्ष स्थल, दोनों हस्त, भुज युगल तथा वदन आदि अपने सैन्य गण को लेकर वाम्य दुर्ग को भेद करते हुए परमा सुन्दरी श्री राधा की तनु रूपी पुरी को लूटने लगे। तब श्री राधा के लज्जा रूपी कवच छिन्न तथा यौवनादि धन लुटने पर उन्होंने भी नख दशनादि अपने सैन्य को लेकर पराक्रम प्रकाश करते हुए श्री कृष्ण के साथ महाकन्दर्प समर आरम्भ किया। कृष्ण कांता श्री राधा के कांत पर आक्रमण करके अपने पौरुष का प्रकाश करने पर कांची ध्वनि रूपी दुन्दुभि तथा उच्च सीत्कार रूपी सिंह नाद उठने लगा। युद्ध में दोनों ही श्रमयुक्त घर्माक्त कलेवर, शिथिलांग, विगलित वेश-भूषा तथा स्पंदन हीन होकर क्षणिक नव जलधर में स्थिरा सौदामिनी के समान शोभा पाने लगे। भ्रमर समूह उन दोनों के श्री अंग के निरुपम परिमल से प्रलुब्ध होकर गुँजार करने लगे। खिड़की के छिद्र से युगल की अंग शोभा दर्शन करके माधुर्य सिंधु में मंजरियों के नयन रूपी मीन यथेष्ठ रूप में तैरने लगे। विलास के अंत में श्रीकृष्ण की राधांग दर्शन तथा स्पर्श की इच्छा होने पर एवं श्री मती द्वारा उसमें बाधा देने में प्रवृत्त होने पर दोनों के अंग की शिथिलता ने दोनों के मध्य संधि स्थापना की।

श्री श्री राधाकृष्ण का अद्‌भुत विलास।

तदोपरान्त श्री कृष्ण शय्या त्याग करके प्रेम सहित अपने हाथ से कांता के श्रम जल को मार्जन करके बिखरे हुए कुंतल समूह को संवारने लगे। राइ द्वारा अपने अंग की वेश रचना के लिए श्री कृष्ण से कहने पर प्रथमतः श्री कृष्ण ने सखियों के निकट श्री मती का परिहास करने के उद्देश्य से वेश रचना की इच्छा प्रकाश नहीं की। बाद में पुनः पुनः बोलने पर श्रीमती की वेश रचना में जब वे प्रवृत्त हुए तब श्री कृष्ण के स्पर्श सुख के कारण श्री मती का विभ्रम भाव उपस्थित होने पर वे पुनः श्री कृष्ण को वेश रचना करने से मना करते हुए बोलीं–"हे प्रिय! तुम्हें कष्ट करके और वेश रचना नहीं करनी होगी क्योंकि मैं अलंकारादि के भार वहन में असमर्थ हूँ, छोड़ दो-मुझे थोड़ा सोने का अवसर दो।" तब मंजरी गण ने सेवा संभारादि के साथ कुँज के मध्य में प्रवेश करके सुशीतल जल, तांबूल, गंध, माल्यादि, श्री चरण संवाहन तथा चामर व्यजनादि द्वारा सेवा करके श्री श्री राधा कृष्ण के प्रणय रस में विभोर होकर युगल के श्रम को दूर किया। तब श्री राधा ने अपनी सहास्य नयन भंगी के अभिप्राय को व्यक्त

सखियों के साथ विलास।

Scanned by CamScanner

करके (सखीगणों के संग मिलन का इंगित करके) श्री कृष्ण से अपने-अपने कुँज में सोई हुई सखियों को जगाकर लाने के लिए अनुरोध किया। तब श्री कृष्ण द्वारा अनेक मूर्ति धारण कर श्री राधा के साथ जैसे स्वप्नावस्था तथा जाग्रतावस्था में इनके मिलन विलासादि की परिपाटी संपादित हुई थी, कुँज के मध्य में वे उसी प्रकार सभी सखियों के साथ लीला करने लगे।

इसके बाद श्री राधा मंजरियों द्वारा परिसेविता होकर क्षण काल कुँज में विश्राम करते हुए उन सब के साथ आकर अपने कुण्ड तीर स्थित रत्नवेदिका पर बैठ गई। इधर सखीगण श्री कृष्ण के साथ विलास के अंत में अपने-अपने अंगों की वेश भूषादि रचना करते हुए विलास सूचक अंगों से शोभायमाना होकर स्खलित पद तथा लज्जावनत मुख से राइ के साथ उनके प्रति प्रणय कोप से भू भंगी का विस्तार करते हुए मिलीं। कृष्ण ने भी कुँज से निकल कर सुबल तथा मधुमंगल के साथ सहास्य मुख से हास्य मुखी श्री राधा के निकट आगमन किया। तब राइ सखियों के अंगों में रति चिह्न देखकर हास्य मधुर मुख से बोलीं–"हे सखीगण तुम सब के अंगों में नख क्षतादि विलास का चिह्न क्यों देख रही हूँ? नायक तो यहीं हैं– नांदीमुखी, वृंदा, कुंदलता तथा धनिष्ठा इसकी साक्षी हैं।" तब सखी गण भ्र-भंगी के साथ बोलीं– "सखी! तुम भुजंग को साथ लेकर रहना पसंद करती हो यह ठीक है परन्तु उसे हम सखियों के पास क्यों भेजती हो?" इस प्रकार श्री राधा कृष्ण तथा सखीवृंद विविध हास्य परिहास रस में निमग्न हुए।

नवद्वीप : जल विहार भावावेश :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु माधवी-मंडप में परिकरों के साथ भावाविष्ट हैं। पुष्प सौरभ, भ्रमर की गुँजार तथा कोकिलादि की ध्वनि से प्रभु के प्रेमावेश में हुँकार करने पर सभी बाह्य दशा को प्राप्त हुए। श्री स्वरूव गोस्वामी ने मधुपान तथा कुँज विलासादि पद गान समाप्त किये। तत्पश्चात् महाप्रभु ब्रज में श्री राधा कृष्ण की श्री कुण्ड में जल क्रीड़ा का भाव उद्दीपन होने से वे अपने भक्तों के साथ गंगातीर पर गमन करते हुए घाट के ऊपर वेदी पर बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का भाव जानकर ब्रज में श्री राधा कृष्ण के जल विहार पद गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी ब्रज भाव में आविष्ट होकर उन सब क्रीड़ाओं का दर्शन करके परमानंद रस में मग्न हुए।

ब्रजधाम: जलविहार :

ब्रज में श्री श्री राधा कृष्ण सखी वृंद सहित रति क्रीड़ा के अंत में श्री कुण्ड तीर-पर परिहास रस में मग्न हैं। इसी अवसर पर वृंदादेवी उन सब को श्रीराधाकुण्ड एवं श्यामकुण्ड के जल की मनोहर शोभा दिखलाने

कुण्ड नीर शोभा। लगीं। कुण्ड के जल में चार वर्णो (श्वेत, पीत, रक्त तथा श्याम) के कमल विकसित हैं तथा मृदुल मलय के हिल्लोल (बहाव) से आन्दोलित होकर शोभा का विस्तार कर रहे हैं। कुमुद, कह्लारादि विकसित हैं। सौरभ से उन्मत्त होकर प्रत्येक कमल पर भ्रमर गुँजार कर रहे हैं। हंस, सारस, डाहुक-डाहुकी, चक्रवाकादि पक्षियों के कल कूजन से कुण्ड का हृदय प्रदेश कोलाहल पूर्ण है।

Scanned by CamScanner

कुण्ड शोभा दर्शन करके सभी के आनंद लाभ करने पर वृंदा देवी ने श्री राधा कृष्ण तथा सखी वृंद को जल क्रीड़ा के उपयोगी कोमल श्वेत वस्त्र परिधान कराये। परिश्रांत (थका हुआ) तथा स्वेच्छा विहारी मदमत्त गजराज जैसे क्रीड़ा से श्रान्ता (थकी हुई) करिनी (हथिनी) गणों के साथ मिलकर श्रान्ति को दूर करने के लिए कमल श्रेणी स्थित महासरोवर में स्नान करता है । उसी प्रकार कंदर्प मदमत्त श्री कृष्ण ने भी प्रियागणों के साथ श्री राधा कुण्ड तीर में प्रवेश किया। भीरू स्वभावा कुछ ब्रज बाला के सरोवर में स्नान न करके तट पर खड़ी होने पर जल में स्थित कुछ ब्रजांगना उन सब ब्रज बालाओं पर जल छिड़कने लगीं। उससे उन सबको भागते देखकर जल में स्थित गोपीगण हँसते हुए उनके वस्त्र खींचकर उन्हें जल में ले आईं।

कोई जानु (घुटने), कोई उरु तक के जल में श्री कृष्ण द्वारा जल से सिक्तांगी होकर सुन्दरी गणों के जल से गीले कोमल वस्त्रों के अंग से संलग्न होने पर जो अंगमाधुर्य प्रकाशित हुई उससे श्री कृष्ण के नयन तथा मन उनमें निमग्न हुए। इसी प्रकार श्री कृष्ण के भी अंग सौन्दर्य सागर में गोपियों के नयन रूपी मीन सुखपूर्वक तैरने लगे। वाम्य वशत: गोपियों को अधिक जल में उतरने को अनिच्छुक देखकर श्री कृष्ण एक ही साथ सबको खींचकर उन्हें नाभि तक के जल में ले जाकर उन सबके मध्य में स्थित होकर विहार करने लगे।

तब वृंदा, नान्दीमुखी, धनिष्ठा तथा मंजरीगण एक कुट्टिम (वेदिका) के ऊपर बैठ कर राइ तथा सखियों के ऊपर कुसुम वर्षा करते हुए 'जय-जय' ध्वनि करने लगीं। सुबल तथा कुंदलता के साथ मधु मंगल अन्य कुट्टिम (वेदिका) पर बैठकर श्री कृष्ण के ऊपर कुसुम वर्षा करके जय ध्वनि करने लगे। तत्पश्चात् ब्रज सुन्दरियों के साथ श्रीकृष्ण का महान जल युद्ध आरम्भ हुआ। पहले श्रीकृष्ण कांतागणों द्वारा धीरे-धीरे जल छिड़कने से स्वयं उत्साहित होकर धीरे से जल छिड़ककर कांतागणों के उत्साह को भी बढ़ाने लगे। इसके बाद प्रियागण द्वारा भी श्रीकृष्ण को जलधारा से निरंतर सिक्त करने पर वे सब भी श्री कृष्ण द्वारा अविरत जल धारा से अभिषिक्ता होकर भय सहित हस्तांगुली दल द्वारा अपने-अपने नेत्र युगल, नासिका, कर्ण तथा मुख आच्छादन करके अधो मुखी हुईं। जलक्रीड़ा में श्री कृष्ण ने सहस्र लोचनों से कांतागणों के सौन्दर्य दर्शन, सहस्र चरणों से उन सब के निकट आगमन एवं उनके आलिंगन के लिए सहस्र बाहुओं से अंगीकार किया। मधुमंगल यह देखकर "सहस्रपात् सहस्राक्ष: सहस्र बाहुरीश्वर:" इस श्रुति का अर्थ पाठ करने लगे एवं नान्दी मुखी भी हँसते-हँसते "सर्वत: पाणिपादान्तत् सर्वतोऽक्ष-शिरोमुखम्" इस स्मृति का पाठ करने लगीं। ब्रजसुन्दरीगण श्रीकृष्ण के कर मिलित जल स्पर्श से आनंदिता होकर भी चारों ओर से सतत निपतित जलधारा से उद्विग्न चित्ता हुई। उनके बाहुलता शिथिल, केश, वसन तथा माल्यादि अस्त-व्यस्त हुए, वे सब जल युद्ध से विमुखी हुई। तब कांत श्रीकृष्ण द्वारा सुनिर्मल जल के मध्य में उन्हें अवरोध करके वसन हरण करने पर सखी पद्मिनीगण ने तरंग रूपी हस्त के द्वारा अपने दल अर्पण किये।

Scanned by CamScanner

इसके पश्चात् श्रीराधाकृष्ण सखियों को निवारण करते हुए परस्पर एक दूसरे को जय करने की इच्छा से स्पर्धा सहित जल निक्षेप रूपी प्रहार द्वारा जल युद्ध में प्रवृत्त हुए। तब सखीगण द्वारा आकर श्री राधा कृष्ण को चारों ओर से घेरकर खड़ी होने पर उन सबके मध्य पहले हस्त द्वारा उसके बाद भुजाओं द्वारा, नखों द्वारा तथा मुख द्वारा अंत मे दंत द्वारा युद्ध आरम्भ हुआ। श्री राधा के अंग स्पर्श के लिए श्री कृष्ण का आनन्द मंथर (शिथिल) एवं भावोदय से श्री राधा को चंचला देखकर श्री ललिता बोलीं—"हे राधे! युद्ध से निवृत्त होओ। यह देखो, श्रीकृष्ण का चूड़ा गिर गया है, कंप के कारण कर्ण के कुंडल चंचल हो रहे हैं, ललाट का तिलक विलीन तथा वन माला छिन्न हो रही है। कौस्तुभ मणि ने भी भीत होकर प्रतिबिम्ब के छल से तुम्हारे गंडदेश (गालों) का आश्रय लिया है। श्री कृष्ण अतिशय कातर हो रहे हैं- इन्हें और अधिक पीड़ा न दो। जल युद्ध में श्रीकृष्ण तथा श्री राधा की जिस-जिस प्रकार से जय-पराजय हुई उसी प्रकार से तट पर सुबलादि की भी हास्य विशेष से जय-पराजय हुई।

श्री राधा कृष्ण का जल युद्ध।

इसके बाद श्री कृष्ण श्री राधा को बल पूर्वक खींचकर कंठ तक के जल में ले गये एवं हाथी जैसे सूँड़ की सहायता से तरंग वेग से चंचला स्वर्ण नलिनी को एक बार जल में मग्न करके पुनः उठाता है उसी प्रकार श्री राधा को भी श्री कृष्ण बार-बार जल में डुबाने तथा ऊपर उठाने लगे। पद्मिनी श्री राधा भी अपनी बाहु मृणाल द्वारा श्री कृष्ण का कंठ देश धारण करके सुख पूर्वक तैरने लगीं। खुले हुए केश-पाश रूपी शैवाल समूह से आवृत होकर उनके मुख कमल का अपूर्व माधुर्य प्रकाशित हुआ। सभी सखियों के कमल वन में छिप जाने पर श्री राधा बोलीं—"हे प्रिय! मेरी सखियाँ कहाँ हैं? उन्हें खोजकर ले आओ।" श्री कृष्ण कमल वन में जाकर चंचल मति भृंग के समान सखियों के मुख कमलों का मधुपान करने लगे। इसके बाद प्रति सखी के स्वर्ण कमलिनी के समान मुख के पास-पास में नील कमल के समान श्री कृष्ण के मुख मंडल ने प्रकाशित होकर अपूर्व शोभा का विकास किया। तब श्री राधा के हेम कमल वन में छिप जाने पर श्री कृष्ण उन्हें न देखकर व्याकुल हुए। उन्हें खोजकर भी कहीं न पा सके क्योंकि उनकी देह रूपी स्वर्ण मृणाल से मुख कमल हेम नलिनी के समान प्रकाशित हुआ। बाद में भ्रमर की गुँजार के अनुसरण से स्वर्ण कमल वन में जाकर श्री राधा को प्राप्त किया। तब सखी गण के द्वारा राधा कृष्ण की खोज करने पर दोनों के मुख कमल को नील कमल तथा स्वर्ण कमल के भ्रम में निकट जाते ही श्री कृष्ण ने अनेक मूर्ति धारण करके सबको चुंबन तथा आलिंगन किया। इसके बाद सभी जल मंडली रचना करके "जय-जय" शब्द करते हुए जल वाद्य करने लगीं। तीर पर कुटि्टम (वेदिका) से होकर वृंदा, नान्दी मुखी आदि श्री राइ के मस्तक पर पुष्प वर्षा करके जय-जय ध्वनि करने लगीं। उधर मधुमंगल, सुबल तथा कुंदलता कृष्ण पर कुसुम वर्षा करके जय-जय शब्द उच्चारण करने लगे। इस प्रकार से श्री श्री राधा कृष्ण सपरिकर रसमय जल क्रीड़ा द्वारा परमानंद में मग्न हुए।

Scanned by CamScanner

नवद्वीप : महाप्रभु की जलक्रीड़ा :

नवद्वीप में महाप्रभु सपरिकर गंगा घाट पर बैठकर ब्रज की सखियों सहित श्री राधा कृष्ण की जल क्रीड़ा के भाव में आविष्ट हैं। लीला के आवेश में परिकर सहित जल विहार करने के लिए महाप्रभु ने गंगा में उतरकर जल क्रीड़ा आरम्भ की। भावावेश में वे गदाधर के अंगों पर धीरे-धीरे जल छिड़कने लगे। नित्यानंद प्रभु तथा अद्वैत प्रभु आपस में एक दूसरे पर जल छिड़कने लगे। इसके बाद सभी महाप्रभु को घेरकर 'कया कया' शब्द के साथ जल वाद्य करते हुए जल क्रीड़ा में प्रमत्त हुए। भक्त वृंद की क्रीड़ा कोलाहल ध्वनि सुनकर हंस, सारसादि पक्षी गण भी मधुर कलरव करने लगे। पक्षी के रव तथा भृंग की गुँजार से महाप्रभु के प्रेमवेश में हुँकार करने पर सबने बाह्य दशा लाभ की।

महाप्रभु के श्रम को जानकर भक्त वृंद उन्हें गंगातट पर ले गये। दासगणने तीन प्रभु के अंगों को पोंछकर सुगंधी नारायण तेल से अभ्यंग (सारे अंगों में मालिश) तथा सुगंधी चूर्ण का उबटन लगाकर पुनः स्नान कराया। सेवकों ने भक्त वृंद को भी इसी प्रकार से स्नान कराया। तत्पश्चात् महाप्रभु सपरिकर श्री वास के पुष्पोद्यान में आकर माधवी मंडप में बैठ गये। दासगण एवं भ्राताओं के साथ श्रीवास पंडित ने तीन प्रभु का श्रृँगार किया। भक्त वृंद भी अपने-अपने सेवकों द्वारा भूषित हुए। दासगण ने तीन प्रभु को दर्पण दिखलाया तथा स्वरूप गोस्वामी ने तीन प्रभु की आरती की। दर्पण में अपने रूप को देखकर सखीगण सहित श्री राधा कृष्ण के स्नान श्रृँगारादि के भाव में महाप्रभु आविष्ट हुए। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर श्री राधा कृष्ण के स्नान, श्रृँगार, भोजन तथा शयनादि लीला पद क्रम पूर्वक गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : वेश-भूषा, भोजन तथा शयनादि :

ब्रज में सखियों सहित श्री राधा कृष्ण के जल क्रीड़ा में आविष्ट होकर गजराज-करिनी (हथिनी) की भाँति स्वच्छन्द अनेक प्रकार से जल विहार करके उनके तट पर आगमन करने पर सेवा परायणा सखियों ने

सखीगण तथा श्री राधा द्वारा श्री कृष्ण की वेशरचना।

प्रियागण के साथ श्री कृष्ण के अंग में सुगन्धित तेल-मद्रन करके उबटनादि द्वारा अंग मार्जन कर पुनः स्नान कराया। स्नान के अंत में सबके परमानंदित मन से तीर पर आने पर मंजरी गण ने कोमल वस्त्र से श्री श्री राधा कृष्ण तथा सखीगण के केश कलाप एवं श्री अंग मार्जन करके परिधेय तथा उत्तरीय वस्त्र पहनाये तत्पश्चात् सबके पद्म मंदिर में आकर उसके दक्षिण भाग में स्थित पद्माकृति कक्ष में शोभनीय वेदी पर बैठ जाने पर प्रणय पूर्वक श्री कृष्ण को पुष्पालंकार से सखीगण सहित श्रीराधा सजाने लगीं। सर्वप्रथम श्रीराधा ने अगुरु धूप द्वारा श्री कृष्ण के केश कलाप को शुष्क तथा सौरभ युक्त करके स्वर्ण कंघी से संस्कार करते हुए मल्लिका कुसुम की गर्भक माला (बालो के नीच में धारण की हुई पुष्प माला) से आवृत किया। जाति, यूथी, रंगन, बकुल तथा स्वर्ण यूथी कृत गुच्छ, उत्कृष्ट पल्लव तथा गुँजा माला द्वारा चूड़ा बंधन

Scanned by CamScanner

करके ऊपर मयूर पुच्छ विन्यास (स्थापित) किया।

जिस चूड़ा के शोभा मकरन्द से ब्रज सुंदरी गणों के नयन रूपी भृंग उन्मत्त हो जाते हैं, यहाँ तक कि जिस चूड़ा की छाया को देखकर कृष्ण स्वयं भी उद्भ्रान्त हो जाते हैं, श्री कृष्ण का वही चूड़ा अपने माधुर्य द्वारा आखिल विश्व को विमोहित तथा वशीभूत कर लेता है। तत्पश्चात् ललिता ने श्री कृष्ण के ललाट फलक पर मृगमद बिन्दु के मध्य में चंद्र तुल्य कुंकुम की तिलक रचना करके उसके बाहर चंदन बिन्दु विन्यास किया। चित्रा सखी ने श्री कृष्ण के अंग में कुंकुम का लेपन किया एवं अन्यान्य ब्रजसुंदरी गण ने नाना वर्णो के कुसुम, मुकुल तथा पल्लव रचित कुंडल, हार, कंकण, नूपुर तथा कांची आदि पहनायें। बाद में सखीगण ने श्री राधा के केश कलाप को अगुरु के धुँए से शुष्क तथा सुगन्धित करके संस्कार करते हुए मुक्ता दाम से वेणी बंधन की। कस्तूरी, चंदन तथा कुंकुमादि से तिलक रचना तथा पुष्पालंकारादि से भूषिता करके श्री कृष्ण के बायें बिठाकर दोनों के सम्मुख मणि दर्पण धारण किया। परस्पर एक दूसरे की रूप माधुरी का दर्शन करके दोनों ही विमोहित हुए। तब मंजरियों ने ललितादि सखियों को भी यथाक्रम से भूषिता किया।

सखियों द्वारा श्री राधा की वेश-भूषा।

इसके बाद श्री वृंदा देवी पद्म मंदिर के उत्तर में स्थित वेदी पर सखियों सहित श्री राधा कृष्ण को ले गयीं एवं वहाँ उन्हें केले के पत्ते पर सुसंस्कृत तथा सुसज्जित विविध फल मूलादि भोज्य-द्रव्य दिखाये। श्री कृष्ण के बायें सुबल तथा दाहिने मधुमंगल को लेकर शुभ्र वर्ण पुष्प के ऊपर शुभ्र वस्त्राच्छन्न आसन पर बैठने पर श्री राधा सखियों के साथ उनके सम्मुख बैठ कर वृंदादेवी द्वारा लाये गये उन सरस फल-मूलादि का उनको परिवेशन (परोसने) करने लगीं। नाना प्रकार के सुस्वादु नारियल, सुपक्व रस पूर्ण आम्र, सुपक्व कटहल, अनेक प्रकार के पीलू, अंगूर, खर्जूर, ताल, बिल्व, जामुन, केला, लवली, ताल बीज, क्षीरिका (दूध से बना भोज्य पदार्थ), अमरूद, नासपाती, नारंगी, कामरंग, सुकोमल कमल बीज का शस्य, मृणाल, पियाल, बादामादि एवं श्री राधा द्वारा अपने भवन से चीनी एवं क्षीर सार आदि द्वारा निर्मित नारंग रूचकादि तथा चन्द्रकांति गंगाजल आदि लड्डू को श्री राधा द्वारा यथाक्रम से परिवेशन करने पर श्री कृष्ण सुबल तथा मधुमंगल के साथ परम सुखपूर्वक उसका भोजन करने लगे। भोजन के समय नाना प्रकार के परिहास वाक्य से मुख भंगी द्वारा हास्य रसिक बटु मधुमंगल सबको हँसाने लगे। भोजन समाप्त होने पर श्री कृष्ण ने सखाओं के साथ कर्पूर से सुंगन्धित सुशीलत जलपान किया एवं सखियों द्वारा दिये गये सुगन्धित जल से आचमन किया। इसके बाद पद्म मंदिर के मध्य जाकर कुसुम रचित शय्या पर शयन करने पर तुलसी सखी वृन्द के साथ तांबूल दान, पाद संवाहन तथा चामर व्यजनादि द्वारा श्री कृष्ण की सेवा करने लगीं। तांबूल सेवन के पश्चात मधु मंगल ने सुबल के साथ पद्म मंदिर के दक्षिण में स्थित वेदी में जाकर शीतल शय्या पर शयन किया। इधर श्री राधा ललितादि सखियों के साथ बैठकर आनंद पूर्वक रूप मंजरी तथा वृदा देवी द्वारा परोसे

सुबल, मधुमंगल सहित श्रीकृष्ण का भोजन।

Scanned by CamScanner

गये अति वांछनीय श्री कृष्णाधरामृत का सेवन करने लगीं। नान्दीमुखी तथा कुंदलता ने जो सरस परिहास वाक्यों का विस्तार किया, उससे भोजन सुख अधिक रूप से वृद्धि को प्राप्त हुआ। भोजन के अंत में श्री राधा द्वारा सखियों सहित आचमन करके पद्म मंदिर के मध्य जाकर शय्या के ऊपर बैठने पर तुलसी ने श्री राधा एवं सखियों को श्री कृष्ण का चर्बित तांबूल एवं नान्दीमुखी, धनिष्ठा तथा कुंदलता को ताबूल व टिका प्रदान की। तत्पश्चात् रूप मंजरी, तुलसी तथा वृंदादेवी ने सेवा परायणा सखियों के साथ अविशष्ट भोज्य द्रव्यादि का भोजन करके आचमन के अंत में नान्दीमुखी तथा सखीवृंद के पद्म मंदिर के पूर्व की वेदी में जाकर शयन किया। तब श्री राधा द्वारा रूप मंजर्यादि को चर्बित तांबूल तथा वृंदा देवी को तांबूल वीटिका प्रदान करने पर वे उन्हें चबाते हुए बहार चली गई। तब श्री कृष्ण ने हँसते हुए लज्जिता श्री राधा को यत्न पूर्वक खींचकर अपने मुख पद्म से चर्बित तांबूल उनके मुख कमल में देकर आनंद सहित अपने बगल में शयन कराया। श्री रूप मंजर्यादि सेविकागण द्वारा चामर व्यजनादि सेवा करने पर श्री युगल ने हास्य परिहास रस में मग्न होकर क्षण काल मे ही निद्रासुख लाभ किया। साधक दासी युगल के चरण संवाहन करते-करते श्री चरण चिह्नादि दर्शन करके विमोहिता हुई।

श्री श्रीराधाकृष्ण का शयन।

नवद्वीप : भोजन, विश्रमादि :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्री वास पुष्पोद्यान के माधवी मंडप में भक्त वृन्द के साथ भावाविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी के गान में सखीगण सहित श्री राधा कृष्ण के स्नान, श्रृँगार, भोजन तथा विश्रामादि पद श्रवण से प्रेमावेश में उन्होंने हुँकार की। उसे श्रवण कर सभी बाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी के गान समाप्त करने पर श्रीवास पंडित ने अपने भाइयों द्वारा श्री नृसिंह देव के प्रसादी विभिन्न फल, मूल एवं मिष्टान्नादि मँगवाकर तीनों प्रभु तथा भक्त वृन्द को भोजन क़राया। आचमन के अंत में तीन प्रभु तथा भक्त वृंद के अपने-अपने शयन मंडप में जाकर शयन करने पर दास गण ने तांबूल प्रदान करके व्यजनादि सेवा की। तत्पश्चात् साधक दास ने गोस्वामी वर्ग तथा गुरु वर्ग को भोजन आचमन कराकर तांबूल प्रदानादि सेवा की। बाद में श्री गुरुदेव के आदेश से प्रसाद सेवन करके महाप्रभु के शयन मंदिर के बरामदे में आकर कालोचित सेवा करने लगा।

इस प्रकार से कुछ समय तक विश्राम करने पर महाप्रभु के प्रेमावेश में हुँकार करने पर उसे सुनकर सभी जगकर अपने-अपने सेवकों द्वारा मुख प्रक्षालनादि करके महाप्रभु के निकट आये। महाप्रभु के शय्या त्याग करके बरामदे में आकर बैठने पर साधक दास ने सुगन्धित जल से स्वर्ण कुल्लादानी में उनका मुख प्रक्षालन कराकर कोमल वस्त्र से पोंछा। श्रीवास पंडित ने भाइयों द्वारा माल्य चंदन मंगवाकर तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को प्रेम पूर्वक भूषित किया।

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात् श्रीवास पंडित के द्वारा सिखाये गये शुक पक्षी को लाने पर शुक ने परम भक्ति पूर्वक तीनों प्रभु तथा भक्त वृन्द की चरण वन्दना की। श्री वास द्वारा शुक को महाप्रभु के गुण वर्णन करने का आदेश देने पर शुक दैन्य सहित बोलने लगा—"मैं अति नगण्य पक्षी जाति हूँ, अल्प वुद्धि तथा अपात्र होकर भला मैं किस प्रकार से अपार गौर गुणामृत सिंधु का वर्णन करने में सक्षम होऊँगा? तो भी आपका आदेश एवं आपकी कृपा जो कुछ बुलवायेगी वही बोलता हूँ, ब्रह्म जिनकी अंगकांति है, परमात्मा जिनका अंश विभव है एवं परव्योमाधिपति श्री नारायण जिनकी विलास मूर्ति हैं एवं स्वयं भगवान ब्रजेन्द्र नन्दन श्री कृष्ण ब्रज रस आस्वादन तथा प्रेम भक्ति प्रचार के लिए श्री राधा की भाव कांति को अंगीकार करके नवद्वीप में शची-जगन्नाथ गृह में प्रतप्त स्वर्ण कांति एवं अखिल सौन्दर्य के आधार श्री गौरांग के रूप में अवतीर्ण हुए हैं। जिनके श्री चरण कमलों का तल देश रक्त पद्म दल की अपेक्षा भी अति सुकोमल एवं मनोरम है। उससे अति अद्भुत तथा विचित्र चिह्न प्रकाश पा रहे हैं। जैसे-दाहिने चरण के अंगुष्ठ मूल में जौ, इसके नीचे छत्र,

शुक पक्षी द्वारा महाप्रभु के गुण वर्णन।

श्रीचरण चिह्न वर्णन।

अंगुष्ठ तथा तर्जनी के मध्य से होकर अर्ध चरण तक ऊर्ध्व रेखा, तर्जनी के तलदेश में दण्ड, मध्यमा के नीचे पद्म, इसके नीचे पर्वत, इसके नीचे रथ, रथ के दाहिने बगल से गदा तथा बाँये शक्ति, कनिष्ठा तल में अंकुश, इसके नीचे वज्र, इसके नीचे वेदी, इसके नीचे कुंडल, इसके नीचे चार स्वस्तिक चिह्न, इसके मध्य में अष्ट कोण, इसके चारों कोने पर चार सुपक्व जम्बूफल यही सोलह चिह्न हैं। बायें चरण के तल के अंगुष्ठ मूल में शंख, इसके नीचे चक्र, मध्यमा के नीचे आकाश, इसके नीचे डोरी रहित धनू, अनामिका के नीचे वलय, इसके नीचे गोष्पद (गाय का खुर), कनिष्ठा के नीचे कमंडल, इसके नीचे ध्वजा सहित पताका, पताका के नीचे पुष्प, इसके नीचे वल्ली, गोष्पद के नीचे त्रिकोण मंडल, इसके नीचे चार कुंभ, इसके मध्य में अर्ध चन्द्र, इसके नीचे कूर्म, इसके

श्री अंग शोभा वर्णन।

नीचे मत्स्य, कूर्म के दाँये माल्य यही सोलह चिह्न हैं। दोनों चरणों में यही बत्तीस चिह्न शोभा पा रहे हैं। जिनके पाद पद्म की नखच्छटा से शारदीय चद्रमा की ज्योति भी म्लान हो जाती है। जंघा जैसे स्वर्ण का अर्गल हो, जानु (घुटना) हेम सम्पुटाकार उरु देश जैसे स्वर्ण कदली,नितम्ब स्वर्ण का आलबाल (वृक्ष के चारों ओर जल भरने का स्थान) है, कटिदेश क्षीण है तथा उस पर रम्य पट्टाम्बर शोभा पा रहा है। नाभि स्वर्ण पद्म के समान, उदर जैसे स्वर्ण का अश्वत्थ पत्र है। वक्ष उन्नत तथा प्रशस्त है, उस पर गंगा धारा के समान मुक्ता माला शोभा पा रही है। आजानुलंबित दो बाहु जैसे स्वर्ण की मृणाल हैं, उस पर मणिमय अंगद की मनोरम शोभा हो रही है।

लाल करतल जवा पुष्प के समान है, जिसके माधुर्य से मदन भी विमोहित होता है। श्री गौरांग प्रभु के

श्रीकर चिह्न वर्णन।

दाहिने कर तल में उन्नीस चिह्न हैं—तर्जनी तथा मध्यमा की संधि से करभ तक परमायु रेखा, तर्जनी तथा अंगुष्ठ के मध्य से करभ तक सौभाग्य रेखा, अंगुष्ठ तथा तर्जनी के

Scanned by CamScanner

मध्य से मणिबन्ध (कलाई) तक भोग रेखा, पाँचों अँगुली के पर्वाग्र में पाँच पद्म, अंगुष्ठ के नीचे जौ, इसके नीचे चक्र, इसके नीचे वज्र, इसके नीचे कमंडल चिह्न है। तर्जनी के नीचे ध्वजा, इसके नीचे चामर है। मध्यमा तल में असि (तलवार), अनामिका के नीचे परिघ, इसके नीचे वृक्ष, इसके नीचे बाण है। कनिष्ठा के नीचे अंकुश, इसके नीचे प्रासाद, इसके नीचे दुन्दुभि है। मणिबंध के ऊपर दो शकट, इसके ऊपर धनू है। बाँये करतल में दाहिने हस्त के समान यथाक्रम से आयु, सौभाग्य तथा भोग रेखा, पाँचों अंगुली के पर्वाग्र में पाँच शंख अंगुष्ठा के नीचे पद्म, इसके नीचे माल्य, तर्जनी के नीचे छत्र, मध्यमा के नीचे हल, अनामिका के नीचे हाथी चिह्न सुशोभित है। कनिष्ठा के नीचे तोमर, इसके नीचे यूपक, इसके नीचे व्यजन इसके नीचे स्वस्तिक है। आयु रेखा के नीचे अश्व, सौभाग्य रेखा के नीचे वृष, मणिबंध के ऊपर मत्स्य, इसके ऊपर अर्ध चंद्र है। यही सत्रह चिह्न हैं। अर्ध चंद्राकृति कर नख की छटा मणि दर्पण के दर्प का नाश कर रही है। कंधा थोड़ा उन्नत है, पृष्ठ देश स्वर्ण पीठोपम है, सिंह ग्रीवा पर त्रिरेखा परिशोभित हो रही हैं। बाँधुली पुष्प के समान अधर, स्वर्ण दर्पण निंदित गण्ड स्थल (गालों) की शोभा,

श्रीमुखमाधुरी वर्णन।

मुक्ता पंक्ति विनिन्दित दंतावली, तिल पुष्प के समान- नासिका, मदन के धनुष के समान भ्रू युगल एवं अलकावली ही मदन के शायक (बाण) के समान हैं। उनके नयन कमल प्रफुल्लित शतदल की शोभा को जय करने वाले हैं, नयन तारका भृंग के समान, सजल नेत्र अनुराग रस से ढ़ल-ढ़ल कर रहे हैं। मनोहर कर्ण युगल में दो रत्न कुंडल परिशोभित हो रहे हैं। स्निग्ध एवं घुँघराले लावण्य धाम केश कलाप नाना पुष्पों से परिशोभित हैं, मुख कमल के निरुपम हास्य माधुर्य से विश्व विमोहित होता है। श्री गौरांग का माधुरी-सुधा सिंधु अतल स्पर्श तथा पारावार शून्य है। मैंने उनके निकट खड़े होकर मात्र एक कण का स्पर्श किया है।'' इस प्रकार कहते-कहते प्रेमावेश में शुक का कंठ अवरुद्ध होने से उसका वर्णन करना बंद हो गया। तब महाप्रभु का भाव जानकर स्वरूप गोस्वामी ब्रज में शुक-सारी द्वारा श्री कृष्ण तथा श्री राधा के अंग वर्णन तथा गुण महिमादि कीर्तन पद क्रम से गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी अश्रु पुलकादि सात्विक भावों से विभूषित होकर ब्रज भाव में मग्न हुए।

ब्रजधाम : शुक-सारी द्वारा श्री राधा कृष्ण का गुण वर्णन :

ब्रज में श्री राधा कृष्ण सपरिकर पद्म मन्दिर में शयन कर रहे हैं। क्षणकाल तक विश्राम करने के बाद वे सब जागृत होकर शय्या पर उठ बैठे। सुबल, मधुमंगल एवं सखीगण भी जागरित होकर वहाँ उपस्थित हुए। तब मंजरियों ने सपरिकर श्री राधा कृष्ण का सुगन्धित जल से मुख प्रक्षालन कराकर कोमल वस्त्र से पोंछ दिया। रूप मंजरी के तांबूल प्रदान करने पर सभी सुख पूर्वक तांबूल चर्बन करने लगे। साधक दासी व्यजनादि सेवा में निरता हुई।

इसी अवसर पर वृंदादेवी ने अपने द्वारा शिक्षित ''कलोक्ति तथा मंजुवाक'' नामक दो शुक-सारी लेकर वहाँ आगमन किया। शुक-सारी विनीत भाव से कहने लगे-''हे वृंदा वनेश्वर! हे वृंदा वनेश्वरी! सखियों

Scanned by CamScanner

सहित आप सभी जय युक्त हों। हमारे प्रति सब मिलकर कृपा दृष्टिपात करें।'' श्री राधा के इशारे पर वृंदा देवी द्वारा शुक को श्री कृष्ण के रूप माधुर्य का वर्णन करने का आदेश देने पर शुक कहने लगा– ''श्रीकृष्ण के चरण कमलों की माधुरी एक बार किसी के द्वारा श्रुति गोचर होने पर अंतः करण श्री कृष्ण चरणों के अलावा अन्य तृष्णा शून्य हो जाता है तथा इन्द्रियाँ परमानंद रस धारा में निरंतर आप्लुत होती हैं। श्री कृष्ण के वही सर्व सुख प्रद श्री चरण युगल मेरी अभिलाषा पूर्ण करें। जिन श्री चरण कमलों के ध्यान मात्र से ही क्या प्राकृत तथा क्या अप्राकृत निखिल सौभाग्य सद्गुण तथा सम्पत्ति लब्ध होती है। लीला निकेतन श्री कृष्ण के वे ही चरण मेरा एक मात्र आश्रय हों, जिनकी उपासना के लेशामात्र सम्पर्क से ही यहाँ की गायें कामधेनु तथा वृक्ष समूह कल्प तरुत्व को प्राप्त होकर प्राणियों की निखिल कामनाएँ पूर्ण करते हैं-ऐसा कौन है जो श्री कृष्ण के उन सर्वाभीष्ट प्रद श्री चरण युगल का आश्रय ग्रहण नहीं करेगा।

श्रीकृष्ण चरण महिमा वर्णन।

जिन श्री कृष्ण के पद कमल का लावण्य ही मकरन्द है, अंगुली श्रेणी ही दल हैं नख की कांति ही केशर है, गोपीगणों के नेत्र ही भृंग हैं एवं जिनके सौरभ से दिगन्त (दिशायें) सुगन्धित हैं, उन्हीं सुशीतल श्री कृष्ण चरण कमलों का स्तव करता हूँ। जिन चरणों की श्वेत नख कांति ही सरस्वती है, श्री चरण के ऊपर स्थित कृष्ण कांति ही यमुना है एवं चरण कमलों की अरुण कांति ही गंगाधारा है, जो ध्यान कारियों का सर्वाभीष्ट पूर्ण करता है–यही त्रिवेणी संगम है। श्री चरण ध्यान इस प्रकार है–दाहिने चरण तल में एकादश चिह्न हैं–यथा अंगुष्ठ पर्व में जौ, उसके नीचे चक्र, उसके नीचे छत्र, अंगुष्ठ तथा तर्जनी के मध्य से अर्ध चरण तक ऊर्ध्व रेखा, मध्यमा अंगुली तल में पद्म, उसके नीचे ध्वजा, कनिष्ठा तल में अंकुश, उसके नीचे वज्र पार्ष्णि (एड़ी) में अष्ट कोण, इसके चारों ओर चार स्वस्तिक चिह्न एवं चारों कोने में चार पक्व जामुन चिह्न सुशोभित हो रहे हैं। बाँये चरण में अष्ट चिह्न हैं यथा–अंगुष्ठ तल में शंख, मध्यमा तल में आकाश, इसके नीचे धनू, इसके नीचे गोष्पद, इसके नीचे त्रिकोण, इस चारों ओर चार कलश, इसके नीचे अर्ध चंद्र, इसके नीचे मत्स्य है। दोनों चरणों में कुल मिलाकर उन्नीस चिह्न हैं।

श्री चरण चिह्न वर्णन।

तत्पश्चात् वृंदा के नयन इंगत द्वारा ''कलोक्ति'' नामक सारिका श्री कृष्ण के श्री चरण कमलों के माधुर्य रस से अपनी रसना को पवित्र करते हुए कहने लगी–''सूर्य देव की प्रचण्ड किरण माला से दग्ध होकर ही अरुण ने जैसे श्री कृष्ण के सुशीतल चरण तल का आश्रय लिया है, इसीलिए श्रीकृष्ण पाद पद्म अरुण वर्ण से व्याप्त हो गये हैं, इस प्रकार से कविगण उत्प्रेक्षा करते हैं। किंतु हमें लगता है कि राधा रानी के अनुरागी चित्त (अनुराग का वर्ण अरुण है) द्वारा 'श्री कृष्ण पाद पद्म मेरे हैं' यह जानकर इन चरणों का आश्रय करने से ही ये पाद पद्म अरुण वर्ण के हो रहे हैं। श्री कृष्ण के यह पाद पद्म चन्द्र, इन्दीवर, चंदन, कर्पूर तथा वेनामूल आदि शीतल वस्तु की अपेक्षा भी अति सुशीतल हैं। श्री राधा के स्तन संग से अतिशय

Scanned by CamScanner

लोलुप एवं श्री राधा के कर युगल द्वारा संलालित (सम्यक रूप से लालित) तथा उनके कुच कुंकुम से चर्चित एवं निखिल सौंदर्य तथा लीला के आस्पद वही सुललित श्री कृष्ण पदाम्बुज मेरे द्वारा निरन्तर सम्वाहनीय हों।''

तत्पश्चात् श्री राधा के इशारे पर सारिका के साथ शुक सभासदों के कर्णो को अमृत रस से पूर्ण तथा आनंदित करके श्री कृष्ण के अन्यान्य अंगों का माधुर्य वर्णन करने से प्रवृत्त हुआ। ''अहो! लावण्य लहरी से उच्छलित सुंदर तथा सुबर्तुल (गोलाकृत) यमुना के सूक्ष्मतम निर्झर से अर्धोत्थित दो कोरक (कली) के समान श्री कृष्ण के गुल्फ (एड़ी) युगल शोभा पा रहे हैं। गोकुल युवतियों के धैर्य रूपी शक्ति शाली सैन्य का विनाश करने के लिए कंदर्प के तमाल सार का परिघ (मूसल) युगल जैसे श्री कृष्ण की जंघा के रूप में विराजित है। श्री कृष्ण के मनोज्ञ दो जानु (घुटने) जैसे माधुर्य लक्ष्मी के सुन्दर पीठासन हों, लावण्यलता का पुष्ट पर्व युगल जैसे शोभा सम्पद का रत्न सम्पुट (पेटिका) हो। उनके सुगठित मनोहर तथा सुचिक्कन (सुन्दर चिकने) दो उरु जैसे इन्द्र नील नीलमणि के स्तंभ अथवा कंदर्प के यज्ञ के दो यूप कोष्ठ हों अथवा ब्रज सुंदरियों के चित्त रूपी हस्ती को बाँधने के लिए दो आलान (हाथी बाँधने का स्तंभ विशेष) हों। श्री कृष्ण का नितंब देश जैसे देहरूपी तमाल तरु का आलबाल (तरुमूल में जल सिंचन के लिए जलाधार) हो, जिनके लावण्य रूपी जल में कांची रूपी हंसी कोलाहल करती है। अथवा श्री कृष्ण के देह रूपी सिंहासन पर श्री राधा के मन रूपी राजा के बैठने के लिए नितंब जैसे चंद्राकार उपाधान (आसन) हो। उमापति श्री शिव के प्रति स्पर्धा करके कामदेव द्वारा विधाता की आराधना करने पर विधाता ने संतुष्ट होकर मानो श्री कृष्ण का कटि देश रूपी डमरू मदन को दान किया हो। सभी सिंह श्री कृष्ण की उदर शोभा देखकर ही मानो अपने क्षीण उदर की कुकीर्ति की आशंका से हिमालय के दुर्गम गह्वर में छिप गये हैं। श्री कृष्ण के देह तमाल की शोभा मकरंद पूर्ण नाभि कोटर में गोप बालाओं की नेत्र रूपी अलि (भृंग) माला प्रविष्ट होकर रस में निमग्न होने के कारण जैसे और बाहर निकलने में असमर्थ है। श्री कृष्ण के नाभि विवर से जो रोमावली रूपी कृष्ण वर्णा सर्पी निकली है, यह अति क्षुद्र होने पर भी दर्शन कारी जनों के चित्त रूपी पवन का सर्वदा पान करती है। श्री राधा के मनो रूपी हंस एवं नयन रूपी मत्स्य का सतत विलास स्थान लावण्यामृत पूर्ण त्रिवली रूपी सूक्ष्म उर्मि (तरंग) द्वारा सुशोभित मनोहर नाभि ही जिनके पद्म हैं, इस प्रकार से श्री कृष्ण का उदर रूपी क्षुद्र सरोवर शोभा पा रहा है। जिनका वाम भाग स्वर्ण रेखा रुपा लक्ष्मी का आश्रय है, दक्षिण भाग में श्रीवत्स चिह्न परिशोभित है, कौस्तुभ मणि की किरण माला से जो दैदीप्यमान है, जिस पर सतत वनमाला विन्यस्त है, ब्रजसुन्दरियों की स्पृहा का आधार तथा श्री राधा के हृदय राज के नीलकांत मणि का सिंहासन रूपी यह सुन्दर तथा विशालतम श्री कृष्ण का वक्ष स्थल विराजमान है। श्री कृष्ण के स्थूल, आयत, लावण्योच्छलित तथा सुगठित भुजयुगल पद्मादि विश्व रमणियों के चित्तहारी कमनीय शोभा सम्पन्न तथा

श्री कृष्णका अंगमाधुर्य।

Scanned by CamScanner

पीन स्तनी ब्रजांगनाओं की हृदयगत वासना का आसन स्वरूप श्रीहरि की वही शोभायमान दो भुजा मेरे चित्त में स्फूर्ति लाभ करें। रक्त कमल यदि कृष्ण वर्ण कमल के मध्य में हो एवं उसका दल समूह यदि कामांकुश के तीक्ष्ण श्रृंग युक्त पूर्ण चंद्र मण्डल पर सुशोभित हो तभी कविगण उसके साथ श्री कृष्ण के कर कमलों का दृष्टांत दे सकते हैं। श्री कृष्ण के दाहिने करतल में त्रयोदश चिह्न हैं—पंचांगुली के पर्वाग्र में दक्षिणावर्त पंच शंख, अंगुष्ठ मूल में जौ, इसके नीचे चक्र, इसके नीचे गदा, तर्जनी के तल में ध्वजा, मध्यमा के तल में खड़ग, अनामिका के तल में परिघ, कनिष्ठा के नीचे अंकुश, तर्जनी तथा मध्यमा के संधि स्थल से करभ तक लम्बायमान परमायु रेखा, तर्जनी तथा अंगुष्ठ के मध्य से करभ तक लम्बायमान सौभाग्य रेखा, यहीं से मणिबंध के ऊपर तक भोग रेखा, सौभाग्य रेखा के नीचे श्री वृक्ष, इसके नीचे बाण है। श्री कृष्ण के बाँये कर में द्वादश चिह्न हैं। पंचांगुली के पर्वाग्र में पंचनन्दावर्त, अनामिका के नीचे छत्र, कनिष्ठा के नीचे हल, इसके नीचे यूप, इसके नीचे स्वस्तिक, इसके नीचे कोदंड (धनुष), इसके नीचे अर्ध चंद्र, इसके नीचे मीन, पूर्ववत आयु रेखा, इसके नीचे सौभाग्य रेखा, इसके नीचे भोग रेखा तथा अंगुष्ठ के नीचे कमल है। दोनों हाथों में पच्चीस चिह्न विराजमान हैं। श्री कृष्ण के कंधे के उत्तुंग की तुलना कोई-कोई वृषभ स्कंध से करते हैं, किन्तु मेरे मत में यह है कि श्री राधा की भुज मृणाली के निरंतर सम्मिलनानंद से संजात प्रफुल्लता ही श्री कृष्ण स्कंध की उत्तुंगता का मुख्य कारण है। ब्रज सुन्दरियों के नयनानंद प्रदाता—श्री कृष्ण के पृष्ठ देश का स्तव करता हूँ—जो इन्द्रनीलमणि के पृष्ठ सदृश लावण्य भार को वहन करने में असमर्थ होने से ही लगता है कि उदर की ओर थोड़ा निम्न होकर परमाश्चर्य रूप धारण कर रहा है। श्री कृष्ण के कंठ रूपी इन्द्रनील मणि निर्मित शंख-मणीन्द्र कौस्तुभ को नव-नव कांति द्वारा भूषित कर रहा है। जिस कंठ का मधुर स्वर कोकिल के रव, वीणा तथा वंशी के सुर एवं भ्रमर गुँजार का निन्दाकारी होकर शोभा पा रहा है। नासिका, हनु, ठोडी, अधरोष्ठ, गण्ड, चिबुक एवं कर्ण आदि जिनके सुन्दर दल तथा दन्त समूह जिनका केशर सुमधुर हास्य रूपी मकरन्द द्वारा जिनका सौरभ उल्लासित हो रहा है, सुन्दर नयन युगल ही जैसे खंजन पक्षी हैं, जिनके भ्रू-रूपी भृंगी गणों के साथ चंचल चूर्ण कुंतल (घुँघराले बाल) रूपी भृंग कुल शोभा पा रहा है तथा रसना ही जिनकी कर्णिका है- इस प्रकार से अभूत पूर्व श्री कृष्ण का सर्वोत्कृष्ट मुख कमल शोभा पा रहा है। जो केश-पाश प्रशंसनीय तथा सुदीर्घ भ्रमर विनिन्दित चिकने तथा आभायुक्त, सूक्ष्म, अतिशय कुंचित, अति निबिड़ (घन), समानाग्र भाग, कस्तूरी लिप्त नील कमल के समान सुगन्धित, कंदर्प ध्वज की कृष्ण वर्ण चामर की अपेक्षा भी शोभा सम्पन्न, जिनका चूड़ा बंधन श्री राधा के हृदय चंद्र में कुरंग (हरिण) की भाँति प्रतीत हो रहा है, श्रीकृष्ण के वही केश-पाश मेरे चित्त में शोभा को प्राप्त हों।

श्री कृष्ण के कर चिह्न वर्णन।

श्रीकृष्ण की मुख माधुरी।

"हे ब्रज जीवन! हे जगन्मोहन! इस प्रकार मैने आपकी स्तुति की है, किन्तु जो अपनी कांति कणा को विकीर्ण करके आपको भी विमोहित कर रही हैं—उन श्री राधा की मैं किस प्रकार से स्तुति करूँ? ये जो

Scanned by CamScanner

नव केलि कल्प लतिका आपके वाम भाग को अलंकृत करके शोभा पा रही हैं, वे विश्व शिल्पी विधाता की एक नवीना सृष्टि हैं। केवल आपके लिए ही विधाता ने उनका निर्माण किया है।

श्रीराधा की माधुरी।

लोहित वर्ण गाढ़ कुंकुम द्रव्य युक्त अधोमुख है, दो कमलों के समान उनके चरण युगल हैं। उनके बाँये चरण तल में एकादश चिह्न हैं—अंगुष्ठ के नीचे जौ, इसके नीचे चक्र, इसके नीचे छत्र, अंगुष्ठ तथा तर्जनी के मध्य भाग से मध्य चरण तक ऊर्ध्व रेखा, मध्यमा के नीचे कमल,

श्रीचरणचिह्न वर्णन।

इसके नीचे ध्वजा, इसके नीचे पुष्प, इसके दक्षिण में वलय, इसके नीचे वल्ली, इसके नीचे अर्ध चंद्र तथा कनिष्ठा के नीचे अंकुश है। दाहिने चरण तल में अष्ट चिह्न विराजित हैं—अंगुष्ठ के नीचे शंख, मध्यमा के नीचे पर्वत, अनामिका तथा कनिष्ठा के नीचे वेदी, इसके नीचे कुंडल, पर्वत के नीचे रथ, इसके दाहिने गदा, रथ के बायें शक्ति, तथा पार्ष्णि (एड़ी) में मत्स्य चिह्न विराजित है। दोनों चरणों में कुल उन्नीस चिह्न सुशोभित हैं। श्रीमती की दोनों जंघायें जैसे कंदर्प का स्वर्ण निर्मित तूण (तूणीर) हो, दोनों जानु के ऊपर दो सौभाग्य वन्दित मणि संपुट हैं, दोनों उरु जैसे स्वर्ण कदली हों, जमुना पुलिन के समान नितम्ब देश, उस पर कांची ही हंस श्रेणी के समान है, नाभि देश अमृत के कूप सदृश,

श्री राधा के कर चिह्न वर्णन।

त्रिवली रेखा जैसे उस कूप की वर्तुलाकार तरंग हो, श्री कृष्ण का मन मृग उस कूप में गिरकर पुनः उठने में समर्थ नहीं होता। क्षीण कटि जैसे सिंह के मध्य देश के साथ सख्य विधान कर रही हो। कमल पत्र के समान उदर की शोभा, पत्र के मध्य देश में विराजित रोमावली ही स्मर (कामदेव) लेखा श्रेणी के समान शोभनीय है। वक्ष स्थल में दो पीन-पयोधर जैसे निकट स्थित दो अनार फल हों, कर किशलय युक्त दो बाहु जैसे दो सुगठित स्वर्ण लतिका हों। श्रीमती के वाम करतल में चौदह चिह्न विराजित हैं—पंचांगुली पर्व के अग्र भाग में पाँच नन्दावर्त, तर्जनी तथा मध्यमा के मध्य देश से करभ तक परमायु रेखा, आयु रेखा के ऊपर हाथी, अंकुश, तथा व्यजन, आयु रेखा के नीचे अश्व तथा श्री वृक्ष, अंगुष्ठ तथा तर्जनी के मध्य भाग से करभ तक सौभाग्य रेखा, इसके नीचे वृष तथा यूप, इसके नीचे बाण, इसके नीचे तोमर, अंगुष्ठ तथा तर्जनी के मध्य भाग से होकर मणिबंध के ऊपर तक

श्री राधा के गुण वर्णन।

भोग रेखा, इसके नीचे पुष्प माल्य है। दाहिने कर तल में तेरह चिह्न हैं—पंचांगुली पर्व के अग्र भाग में पाँच शंख, तर्जनी के नीचे चामर, कनिष्ठा के नीचे अंकुश बायें करतल के समान तीनों-परमायु रेखा, सौभाग्य रेखा तथा भोग रेखा सुशोभित हैं। आयु रेखा के नीचे प्रासाद, सौभाग्य रेखा के नीचे असि (तलवार), धनू, दुन्दुभि तथा वज्ररेखा, अंगुष्ठ के नीचे कमण्डल तथा मणिबन्ध के ऊपर दो शकट हैं। शंख ही श्री राधा के कंठ के स्थान पर है, एवं अकलंक शारदीय पूर्ण चंद्रमा रूपी मुख मंडल सुशोभित है। उनके अधर में प्रफुल्लित बन्धु जीव (गाढ रक्त वर्ण के पुष्प का नाम) की शोभा, दंत में कुंद पुष्प की शोभा, नासिका में तिल पुष्प की शोभा एवं नयन नील-नलिन की माधुरी से विकसित हैं। भ्रमरावली निन्दित अलकावली, पल्लव जयी कर्ण की शोभा एवं केश की शोभा से

Scanned by CamScanner

नव जलधर-का गर्व भी खंडित होता है। जमुना की क्षुद्र पयः प्रणाली की शोभा माधुरी संग्रह करके ही जैसे वेणी रचना की गई हो। निखिल कलाविद किसी अपूर्व विधाता ने समस्त शोभा की सार माधुरी का संग्रह करके इस नव कल्पलतिका श्री राधा की सृष्टि की है। हे राधे! आपके श्री चरणों की जो नख पंक्तियाँ उच्छलित किरणों द्वारा सुधांशु की निन्दा कर रही हैं, उस अपूर्व नख चन्द्र समूह को मैं प्रणाम करता हूँ। आप नागर वर के निकट जब लज्जा तथा संकोच से अवनत मुखी होती हैं, तब श्री कृष्ण आपके मुख कमल का प्रत्येक नख चंद्र दर्पण में प्रतिबिम्ब देखकर उल्लासित होते हैं। योगपीठ में अवस्थान करते समय अष्ट सखी भी यथा योग्य स्थान से आप युगल की परिचर्या करती हैं। आप सब के सम्मुख पूर्वदिशा वाले दल में ललिता सखी आप दोनों के मुख कमल सौरभ से उन्मत्त भ्रमर समूह को प्रताड़ित करने के लिए हाथ में कमल धारण करके सुशोभित हो रही हैं। दाहिने ईशान कोण स्थित दल में तुंगविद्याा एवं ललिता के वाम भाग में अग्निकोण स्थित दल में इन्दुलेखा वीणा वादन करती हैं। हे ब्रज नागरी! नागरेन्द्र! आप युगल के दक्षिण स्थित दल में विशाखा तथा वाम भाग के उत्तर दिशा स्थित दल में चित्रा सुचारु चामर संचालन द्वारा आपके घर्म बिन्दु (पसीना) सुखाते हुए अवस्थान करती हैं। आपके अति निकट वर्ती वायु कोण स्थित दल में रंगदेवी एवं नैऋत्य कोण स्थित दल में सुदेवी अवस्थान करते हुए स्वयं अश्रुधारा विसर्जन करते-करते वस्त्रांचल द्वारा आप दोनों के प्रणयाश्रु पोंछती हैं। आपके पीछे पश्चिम दिशा स्थित दल में चम्पकलता अवस्थान करते हुए अनुराग रसमग्न आपके मुख कमल में स्वर्ण कांति जयी तांबूल वीटिका अर्पण करके आप युगल को प्रमोदित करती हैं। जो प्रणय रूपी गिरि हृदय में धारण कर साहस पूर्वक आपके रूप, गुण तथा लीला सिंधु में निरंतर गोते लगाते हुए सहसा उसमें मग्न होकर काम रूपी घड़ियाल द्वारा ग्रस्त हो रही हैं, कमला-गिरिजा आदि भी जिनके अनुराग मार्ग की खोज किया करती हैं, मेरे जैसे क्षुद्र पक्षी के द्वारा उन सखियों का गुण वर्णन क्या कभी भी संभव हो सकता है?''

इस प्रकार से वर्णन करके शुक सहसा विवर्णता को प्राप्त हुआ एवं उसका कंठ रुद्ध हो गया। श्री राधा के इशारे से वृंदा देवी द्वारा संलालित होकर शुक के स्वास्थ्य लाभ करने पर श्री कृष्ण के गुणानुवर्णन के लिए आदेश प्राप्त करके सभी को आनंदित करते हुए सारिका के साथ कहने लगा—''श्रीकृष्ण का जो

श्री कृष्ण गुण वर्णन।

गुण सिंधु है वह महा-महा कवियों के लिए भी दुरवगाह (डूबना कठिन) है, मैं अति क्षुद्र होकर भी उस गुण सिंधु को जिह्वा द्वारा आस्वादन करने की इच्छा करता हूँ, जिस प्रकार सुपक्व नारियल फल चोंच द्वारा अभेद्य है तथापि लुब्ध शुक पुनः पुनः चोंच द्वारा स्पर्श करता है। मेरी जिह्वा श्री कृष्ण गुण वर्णन से पवित्र हुई है, अतः इसके अलावा किसी विषय वार्ता का स्पर्श नहीं करती है। आम्र मुकुल के आस्वादन से परिपुष्ट होकर क्या कोयल कभी निम्न मुकुल में आसक्त हो सकती है? ब्रजराज नंदके निकट सर्वज्ञ श्री गर्गाचार्य ने कहा था कि—'तुम्हारे शिशु के उन सब गुणों के तुल्य एक मात्र नारायण ही हैं। इसके सभी गुणों का अन्त नहीं है। शुभत्व, महत्व तथा गांभीर्यादि इसके

Scanned by CamScanner

अनेक गुण हैं।' श्री कृष्ण के गुण मैं किस प्रकार से वर्णन करूँ? जिनकी अतुलनीय रूपमाधुरी, लीला माधुरी, वेणु माधुरी तथा प्रेम माधुरी असाधारण है। जिन्होंने गिरिराज गोवर्धन को कंदुक (गेंद) के समान धारण किया था, इस प्रकार जिनकी पराक्रम शीलता तथा जगन्मोहिनी लीला है। जो भक्त गणों को आत्म समर्पण तक कर देते हैं—इस प्रकार की जिनकी उदारता तथा कीर्ति है। जिन्होंने समस्त विश्व को प्लावित तथा परम पवित्र किया है। श्री कृष्ण का गुण गान ब्रजांगना गणों के लिए मनोहारी है, उनकी वंशी ध्वनि ब्रज सुंदरियों का आकर्षण है एवं उसकी परिणति ही सर्व लीला मुकुट मणि श्री श्री रासलीला है। जिससे श्री कृष्ण की मनोवाँछा पूर्ण हुई है एवं उसी वाँछा पूर्ण से ही अखिल विश्व का आनंद तथा कल्याण है। श्री कृष्ण गंभीर, स्थिर मति, क्षमाशील, सुशीतल, सुखमय वपु (देह), सलज्ज एवं निर्विकार होने पर भी श्री राधा के प्रणय में विवश श्री राधा के मुख के संदर्शन से उत्पन्न भावों से चंचल एवं काममद में विकल होकर वृन्दावन में पुनः पुनः भ्रमण करते रहते हैं। सूर्य जैसे स्वभाव से ही ऊष्ण है, चन्द्रमा जैसे स्वभाव से ही सुशीतल है, पृथ्वी जैसे स्वभाव से ही सब कुछ सहने वाली है, समीर जैसे स्वभाव से ही चंचल है, समुद्र जैसे स्वभाव से ही गंभीर होता है, साधुणगण जैसे स्वभाव से ही सुधीर होते हैं। श्री कृष्ण भी उसी प्रकार स्वभाव से ही प्रेम के वशीभूत हैं। इन्हीं श्रीकृष्ण के अनुराग वशतः चंडाल भी द्विज के समान पूज्य हो जाते हैं एवं श्रीकृष्ण की विमुखता के कारण द्विज भी चंडाल के समान अधम हो जाते हैं। जिनका प्रेम विष एवं अमृत के एकत्र मिलन के समान है। जिनकी कीर्ति सबको निर्मल करती है तथा कृष्ण रुचि अथवा मलिन कांति (पक्षान्तर में कृष्ण में आसक्त) कर देती है। जिनके विरह में चंद्रमा अग्नि तुल्य एवं अग्नि भी चंद्रतुल्य हो जाती है। उन्हीं सर्व गुण समलंकृत श्री कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ। श्री कृष्ण ने पूतनादि शत्रुओं का निधन किया है, अतः श्री कृष्ण के कारुण्य गुणों (पूतनादि को धात्री गति दानादि) के साथ पूतनादि शत्रुओं की दुर्जनता श्रेष्ठ कविगण वर्णन किया करते हैं। इस जगत में गुण, रस, लीला तथा ऐश्वर्य रत्न द्वारा विभूषित अनेक धीर हैं। किन्तु मुनीन्द्र गण ने इन समस्त गुणों के आकर (भण्डार) स्वरूप एकमात्र ब्रजराज नंदन को ही निश्चित किया है। श्री कृष्ण की माधुर्य शोभा श्री राधा की उच्चतम प्रणय संपत्ति के साथ सतत वर्धित होती है एवं श्री राधा कृष्ण की विलास श्रेणी सखियों की सुख संपत्ति के लाभ के साथ निरन्तर वर्धित होती है। श्री कृष्ण की कीर्ति सुधा धारा के समान मधुरा, ज्योत्सना के समान सुशीतला एवं गंगा के समान विश्व पावनी है। श्री कृष्ण के गुण अनन्त हैं, लीलाएँ अनंत हैं एवं महिमा भी अनंत है, इसका लेश मात्र स्पर्श करने से जीवन धन्य हो जाता है। इसीलिए कृष्ण गुण वर्णन करने का यह मेरा प्रयास मात्र है। मूलतः अनंत कृष्ण गुणों का वर्णन असंभव है। इस प्रकार से शुक-सारी ने श्री कृष्ण के गुण वर्णन सिंधु में उन्मज्जन (बाहर निकलना) एवं निमज्जन (डूबना) द्वारा प्रफुल्ल चित्त होकर श्री राधा कृष्ण का अष्टक पाठ करते हुए अपनी अभीष्ट प्रार्थना करके मौन धारण किया।

तब वृंदादेवी द्वारा शुक-सारी को हस्त द्वारा लालन करके इंगित करने पर शुक श्री राधा के हस्त पर

Scanned by CamScanner

तथा सारी श्री कृष्ण के हस्त पर बैठ गयी। श्रीमती शुक को लालन करते हुए बोलीं–"हे शुक! जिनका नन्दीश्वर में वास, नवमेघ कांति, विद्युन्निभ वसन, बकपंक्ति निन्दि मुक्ता माला, इन्द्रधनू निन्दित मयूर पुच्छ है, उन्हीं श्री कृष्ण का स्तव करो। कहो–"हे सदगुण मणियों के आकार (भण्डार! हे तरुणी गण मादक मधुराधर! हे सुन्दर शेखर! हे शुचि रस सागर! हे वर नागर! आपकी जय हो।" तब श्री कृष्ण सारिका को लालन करते हुए बोले–"हे सारिके! यावट में वास, ब्रज सुन्दरियों की सीमन्त मणि, नव गोरोचना गौरी, नीलाम्बर धारिणी, चतुः सम द्वारा चर्चितांगी, बिना अलंकार के ही भूषिता श्री राधा का स्तव करो। कहो–"हे नागरी! हे गिरिधारी के हृदय सरोवर की राजमराली। तुम धन्या हो! आपकी कामकला में विश्व तरुणी गण शिष्या की भाँति आचरण कर रही हैं। हे राधिके! हे कृष्ण प्राणाधिके! तुम्हारी जय हो।" तब सारी उड़कर श्री राधा के हस्त पर तथा शुक श्री कृष्ण के हस्त पर बैठकर इसी प्रकार से स्तव करने लगे। इसे श्रवण कर सखी वृंद परमानंद रस में निमग्न हुईं। तब वृंदा देवी द्वारा अंगूर तथा अनार दाना लाने पर श्री कृष्ण ने शुक को अनार दाना तथा श्री राधा ने सारिका को अंगूर फल का भोजन कराया। तत्पश्चात् वृंदा देवी ने श्री राधा कृष्ण तथा सखियों को माल्य चंदन द्वारा भूषित किया। किंकरी गण कालोचित सेवादि करने लगीं। सभी श्री राधा कृष्ण की रूप माधुरी दर्शन से आनंद में विभोर हुई।

श्री राधा कृष्ण का शुक सारी पाठ।

श्री श्री नवद्वीप : पाशा क्रीड़ा सूर्य पूजावेश :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्रीवास के षड्ऋतु पुष्पोद्यान में सपरिकर भावावेश में मंडप में बैठे हुए हैं। स्वरूप दामोदर के मुख से ब्रज के शुक सारी द्वारा श्री राधा कृष्ण के अंग वर्णन एवं दोनों के शुक-सारी पाठ तथा फलादि द्वारा उनके लालनादि पद श्रवण करके प्रेमावेश में हुँकार करते हुए बाह्य दशा को प्राप्त हुए। परिकर गण ने भी बाह्य दशा लाभ की। श्रीवास पंडित ने माल्य चंदन से तीन प्रभु तथा भक्त वृंद को भूषित किया। तब महाप्रभु का मन जानकर स्वरूप गोस्वामी ने ब्रज में राधा कृष्ण के पाशाखेला तथा सूर्य पूजा लीला पद गान किये। श्रीवास पंडित द्वारा सभी पाशे लाकर श्री मन्महाप्रभु के आगे प्रदान करने पर प्रभु भावावेश में गदाधर के साथ पाशा खेलने लगे। स्वरूप गोस्वामी के गान से तन्मय होकर सभी अपने-अपने ब्रजभाव में आविष्ट हुए।

श्रीश्री ब्रजधाम : पाशाक्रीड़ा तथा सूर्य पूजा :

ब्रज में श्री राधा कृष्ण शुक-सारी पाठ के अंत में पाशा खेलने की इच्छा होने पर सुदेवी के हरित कुँज में आये। पाशा क्रीड़ा के लिए जिसका मध्य भाग चित्रित है, ऐसे आसन के समक्ष सुबल तथा मधु मंगल के साथ श्री कृष्ण एवं दूसरी ओर सखियों सहित श्री राधा बैठ गई। श्री राधा के पक्ष में ललिता तथा श्री कृष्ण के पक्ष में मधुमंगल उपदेष्टा हुए। श्री राधा की बगल में सुदेवी तथा श्री कृष्ण की बगल में सुबल पाशा चालक बने। वृंदा तथा नान्दीमुखी मध्यस्था तथा कुंदलता द्यूत प्रवर्त्तिका (चालू करने वाली) हुई। श्री

Scanned by CamScanner

पाशा क्रीड़ा का विचित्र कौतुक।

राधा ने श्याम वर्ण पाशक तथा श्री कृष्ण ने पीत वर्ण पाशक ग्रहण किये। प्रथम खेल में श्रीश्री राधा कृष्ण के सुरंग हिरण तथा रंगिनी हरिणी दाँव पर लगे। उसमें श्री कृष्ण की जय होने पर मधु मंगल रंगिनी हरिणी को बाँध कर श्री कृष्ण के पास ले आये। द्वितीय बाजी में मुरली तथा पाविका दाँव पर रखे गये। जिसमें श्री राधा के विजयी होने पर श्री कृष्ण के वंशी छिपाने पर भी ललिता ने उनसे वंशी छीनकर श्री राधा को प्रदान की। तृतीया बाजी में दाँब पर हार रखकर खेल प्रारम्भ हुआ। पाशा चलाते समय मधुमंगल बोले—"हे कृष्ण! इस सारी * को मारो।" यह बात सुनकर मंजु भाषिणी सारिका अपना मरण जानकर भयभीत हो आर्त स्वर में कंदन करते हुए उड़कर वृक्ष शाखा के अग्र भाग पर चली गई। यह देखकर सभी कौतुक पूर्वक हँसने लगे। हास्य कोलाहल उपस्थित होने पर कपटी कृष्ण सारी मारक दान के बिना ही 'सारी को मारकर मैं जीत गया' इस प्रकार से कहने लगे। इसी बीच अभीष्ट दान पतित होने पर श्री राधा 'मैं जीती हूँ' यह कहने लगीं। तब राधा कृष्ण दोनों ही एक दूसरे का हार ग्रहण करने की चेष्टा करने लगे तथा परस्पर मार-पीट शुरु हो गई। श्री कृष्ण के पक्षपाती बटु मधुमंगल तथा कुंदलता के साथ श्री राधा की पक्षपाती सखियों का वाक् युद्ध चलने लगा। तब सबके मध्यस्था नान्दीमुखी तथा वृंदा से पूछने पर वे कहने लगीं—"हम दोनों ही अन्य मनस्का थीं इसीलिए किसकी विजय एवं किसकी पराजय हुई यह ठीक से निर्णय नहीं कर पा रही हैं। इस बार के खेल की जय पराजय को स्थगित करके पुनः खेल आरम्भ हो।" तब सखा तथा सखियों को दाँव पर रखकर पुनः चतुर्थ क्रीड़ा आरम्भ होने पर श्री राधा की जय हुई यह देखकर बाजी में मुझे ही ग्रहण करेंगी—इस आशंका से बटु ने हमारी ही जीत हुई है, बोलकर सब पाशाओं को मिला दिया। तब सखियों द्वारा मधु मंगल को बाँधने के लिए उद्यत होने पर विपुल कोलाहल की ध्वनि उठने लगी। तब श्री कृष्ण श्री राधा से बोले—"हे प्रिये! परस्पर का अंग प्रत्यंग दाँव पर रखकर फिर से खेल प्रारम्भ हो।" श्री राधा-ठीक है ऐसा ही होगा यह कहकर दंत द्वारा जिह्वा काटने लगीं। बाद में श्री मती के पाशा फेंकने पर उनकी ही जय हुई। तब श्री कृष्ण विमर्ष भाव प्रकाश करते हुए बोले—"हे राधे! मेरी दोनों भुजा, दोनों हाथ व दोनों ओष्ठाधर, दोनों गाल, वक्ष तथा मुख इन दस अंगों को अपने उन्हीं अंगों द्वारा ग्रहण करो।" श्री राधा कुंदलता से बोलीं—"सखी कुंदलते! मेरे पक्ष से (ललिता ने जिस प्रकार वंशीदान ग्रहण किया था उसी प्रकार) तुम अपने अंगों द्वारा श्रीकृष्ण से यह दान ग्रहण करो।" बाद में श्री कृष्ण के पाशा फेंकने पर उनकी ही जय हुई। तब श्री कृष्ण बोले—"प्रिये! मेरा दान दो।" तब ललिता बोलीं—"कुंदलता के पास राधा के दशों अंग रखे हुए हैं इन्हें ग्रहण करो।" कुंदलता बोलीं—"मैने वह ललिता के वाम गंड स्थल पर रख दिये हैं।" तब श्री कृष्ण के द्वारा ललिता का मुख चुंबन करने के लिए उद्यत होने पर सहसा ललिता ने अपना मुख फिरा लिया, जिसके कारण वह चुम्बन राई के मुख पर पड़ा। तब राधा लज्जित होकर हास्य

* यहाँ सारी का अर्थ पाशा क्रीड़ा की गोटी है

Scanned by CamScanner

रोदन मिश्रित भाव में वाम्य में भरकर श्री कृष्ण की भर्त्सना करते हुए उन्हें अपार संतुष्टि विधान करने लगीं।

सूक्ष्मधी द्वारा जटिला की आगमन वार्ता घोषणा।

इसी समय वृंदा द्वारा पहले से ही भेजी गयी सूक्ष्मधी सारिका ने यावट से आकर जटिला के आने की बात कही। तब श्री राधा कृष्ण अत्यंत भयभीत चित्त से सखियों सहित कुँज से निकल कर अति शीघ्र ही कुँजेनरा (कुँजेरा) नामक कुँज में सुबल तथा मधु मंगल के साथ कृष्ण को छोड़कर सखियों सहित श्री राधा सूर्य मंदिर में चली गई। इसी बीच वृद्धा जटिला वहाँ आकर कुंदलता से बोली—"हे कुंदलते! इतना विलम्ब क्यों हुआ?" कुंदलता बोलीं—"आर्ये! सूर्य पूजा के लिए ब्राह्मण नहीं मिला। ब्रज युवतियाँ ब्राह्मणों को निमंत्रण करके पहले ही अपने घर ले गई हैं। गर्ग शिष्य मथुरा का एक ब्राह्मण बालक मधुमंगल के साथ अरिष्ट कुंड में स्नान करने आया है। वह भी सूर्य पूजा कार्य में विशेष पारदर्शी है, किन्तु आपका नाम सुनकर मधु मंगल उसे आने नहीं दे रहा है।" जटिला बोली—"कुदंलते! तुम धनिष्ठा के साथ जाओ एवं उन दोनों को प्रचुर दक्षिणा एवं मिष्टान्न का लोभ दिखाकर यहाँ ले आओ। वृद्धा के दो-तीन बार यह बात कहने पर कुंदलता तथा धनिष्ठा श्री कृष्ण के पास चली गई एवं वहाँ जाकर देखती हैं कि श्री कृष्ण बाह्मण वेश धारण करके साक्षात वेदमूर्ति की भाँति विराज रहे हैं। तब शीघ्र ही उन्हें मधुमंगल के साथ सूर्य मंदिर में ले आई।

ब्राह्मण वेशधारी श्री कृष्ण द्वारा विचित्र सूर्य पूजा।

सौम्य मूर्ति ब्राह्मण के दर्शन से जटिला द्वारा उनका बहुत सम्मान करने पर विप्र ने—"तुम्हारे पुत्र को प्रचुर गोधन लाभ हो तथा तुम्हारी वधू का मंगल हो" यह कहकर आदर सहित आशीर्वाद किया। पूजा के पहले श्री कृष्ण ने वृद्धा से प्रश्न किया—"तुम्हारी पुत्र वधू का क्या नाम है?" वृद्धा बोली—"राधा" यह नाम सुनते ही श्री कृष्ण चमत्कृत होकर बोले—"क्या ये वही गुणवती हैं? मधुपुरी में जिनके सतीत्व की प्रचुर प्रशंसा सुनी जाती है। वे ही राधा आपकी पुत्र वधू हैं? आप धन्या हो।" तत्पश्चात् श्री मती से बोले—"मैं स्त्रियों का स्पर्श नहीं करता, तुम कुश द्वारा स्पर्श करके सूर्य पूजा महायज्ञ में मंत्र पाठ करते हुए मुझे पुरोहित के रूप में वरण करो।" 'जगत्मंगलकृद्गोत्रं शुचिवित्प्रवरं शुचिम्। भवन्तं विश्व शर्मानं पुरोहिततया वृणे।।' अर्थात् "जगत्मंगलकारी श्रीभगवान ही जिनके गोत्र एवं शुचिवित (गोत्र प्रवर्तक मुनि) विशुद्ध ज्ञान शाली हैं उन्हीं विशुद्ध चेता विश्वशर्मा को मैं पुरोहित रूप में वरण करती हूँ। अन्य अर्थ-में जिनका गोत्र अर्थात् नाम विश्व का मंगल प्रद, शुचिवित् अर्थात् श्रृँगार रस वेत्ताओं के मध्य जो अति प्रवर अर्थात् श्रेष्ठ (रसिकचूड़ामणि) हैं। विश्व शर्मा अथवा विश्व के सुख प्रद पुरोहित अर्थात् पुर अर्थात् पहले हितकारी समझकर आपको वरण करती हूँ।" पुरोहित वरण के बाद अर्चना का मंत्र पाठ कराने लगे—"श्री भास्वतेऽतनुतमः संहं रागिने पुरःसतेऽस्मै मित्राय पद्मिनीबन्धने नमः।।" अर्थात् "जो अतनूतमः संहर्ता या समधिक अंधकार के विनाशकारी, जो सायं तथा प्रभात में अनुरागी या अरुण वर्ण एवं

Scanned by CamScanner

पद्मिनीपति के सम्मुख स्थित इन मित्र नाम के भास्वान सूर्य को प्रणाम करता हूँ।" अन्य अर्थ में–"मित्र (प्रिय) श्री कृष्ण के प्रति में प्रदान की जा रही हूँ जो "श्री" अर्थात् वक्षः स्थल स्थित स्वर्ण रेखा की कांति से युक्त अतनु अर्थात कंदर्प जनित दुःख विनाशक, अतिशय अनुराग युक्त पद्मिनी गणों के पति हैं उन्हीं अग्रवर्ती (आगे खड़े हुए) श्री कृष्ण को मैं प्रणाम करती हूँ।"

इस प्रकार से विश्व शर्मा वेशधारी श्री कृष्ण ने दो अर्थों में प्रयुक्त होने वाले मंत्र से श्री राधा को पाद्य, अर्घ्य, पुष्पांजलि आदि दिलवायी। रसमय श्री कृष्ण द्वारा इस प्रकार से श्री राधा को सूर्य पूजा कराने पर वृद्धा ने अतिशय संतुष्ट होकर विप्र वेशधारी श्री कृष्ण के आगे दक्षिणा स्वरूप दो स्वर्णागुरीयक (स्वर्ण अंगूठी) एवं दो नैवेद्य अर्पण किये। तब श्री कृष्ण हास्य मुख होकर उनसे बोले–"हे वृद्धे! हम एकांती वैष्णव हैं, अन्य देवताओं का प्रसाद भक्षण नहीं करते एवं अन्य जाति का अर्थ (धन) भी ग्रहण नहीं करते। विशेषतः मैं गर्गाचार्य का शिष्य हूँ–ज्योतिष, सामुद्रिक आदि शास्त्रों में सुपंडित हूँ अतः सर्वज्ञ हूँ, मेरे प्रति आपकी जो स्वाभाविक प्रीति है यही मेरी प्रचुर दक्षिणा है।"

तब जटिला के द्वारा कुंदलता के कान के निकट संलग्ना होने पर कुंदलता श्री कृष्ण से बोलीं–"बटो! वृद्धा श्री राधा का हस्त देखकर फलाफल बताने का अनुरोध कर रही है।" तब विप्र वेशी श्री कृष्ण बोले–"हम ब्रह्मचारी हैं, स्त्रियों का अंग दर्शन हमारे लिए निषिद्ध है। तब भी आपकी प्रीति के वशीभूत होकर दूर से ही हाथ देखूँगा, आप ही पतिव्रता का हाथ मेरे सामने प्रसारित करें।" यह सुनकर कुंदलता द्वारा

श्रीकृष्ण द्वारा श्री राधा की हस्त रेखा पर विचार।

श्री राधा के हाथ प्रसारित करने पर उनका दर्शन करने से श्री कृष्ण कम्पाश्रु, पुलक युक्त होकर विस्मय रस द्वारा उस भाव को आच्छादन करते हुए बोले–"क्या आश्चर्य है! इस वधू के हाथ में जो सब शुभ चिह्न देख रहा हूँ, इससे निश्चित रूप से ज्ञात होता है कि ये साक्षात लक्ष्मी स्वरूपा हैं। इनका जिस स्थान पर निवास होगा, वहाँ समस्त संपत्ति तथा अखिल मंगल विद्यमान होगा।" तब जटिला से बोले–"वृद्धे! आपके पुत्र का नाम क्या है?" तब जटिला द्वारा अपने पुत्र का नाम उच्चारण करने पर श्री कृष्ण गणना करके बोले–"वृद्धे! तुम्हारे पुत्र की आयु में अनेक विघ्न हैं। किन्तु केवल इस पतिव्रता वधू के प्रभाव से विघ्न कुछ भी उत्पात नहीं कर पा रहे हैं। यह बात सुनकर वृद्धा ने सातिशय आनंदित होकर श्री राधा की रत्न जड़ित बहुमूल्य मुद्रिका श्रीकृष्ण के आगे पारितोषिक रखी।

इसी बीच सुबल आकार बोले–"हे विश्वशर्मन्! दुग्ध तथा फलादि भोजन के लिए श्री कृष्ण तुम्हारी तथा मधुमंगल की प्रतीक्षा कर रहे हैं।" यह सुनकर विश्वशर्मा बोले–"मैं ब्राह्मण के अलावा अन्य किसी जाति के यहाँ अन्नादि भोजन नहीं करता। गार्गी ने आज मुझे निमंत्रित किया है, मैं शीघ्र ही वहाँ जा रहा हूँ। मधुमंगल तुम नैवेद्य ग्रहण करो।" मधुमंगल बोले–"वृद्धे! मेरे स्वस्ति वाचन की दक्षिणा दो।" तब वृद्धा द्वारा अपनी अंगुली से स्वर्ण अंगूठी उतार कर मधुमंगल के हाथ में समर्पण करने पर मधु मंगल बारम्बार

Scanned by CamScanner

कांख बजाते हुए वस्त्रांचल में नैवेद्य ग्रहण करके वधू तथा वृद्धा की प्रशंसा करते हुए नृत्य करने लगे।

मधुमंगल द्वारा नैवेद्य तथा दक्षिणा ग्रहण।

दक्षिणा ग्रहण करने के लिए वृद्धा द्वारा प्रार्थित होने पर मधुमंगल श्री कृष्ण से बोले—"तुम यदि दक्षिणा ग्रहण नहीं करोगे तो व्रत पूर्ण नहीं होगा। अत: कृपा करके दक्षिणा का अर्थ ग्रहण करो। यदि अर्थ से तुम्हारा कोई प्रयोजन न हो तो उसे ब्राह्मण को दान कर देना, इससे व्रत करने वाली वधू का मंगल होगा।" श्री कृष्ण के पुन: पुन: निषेध ा करने पर भी मधुमंगल ने कहा—"तुम्हारा दोष मैने ग्रहण किया" यह कहते हुए हँसते-हँसते दोनों अंगूठियों को अपने वस्त्रांचल में बाँध लिया।

तत्पश्चात् बटु वेशी श्री कृष्ण श्री राधा से बोले—"हे सती कुल शिरोमणि। 'भास्वते नम:' कहकर भूमि पर मस्तक रख कर सूर्य को प्रणाम करो।" श्री राधा के प्रणाम करते समय उनकी वेणी के बीच से कृष्ण की मुरली 'ठनत' शब्द के साथ धरती पर गिर पड़ी। वृद्धा ने उस शब्द को सुनकर 'क्या गिर पड़ा' यह कहकर शीघ्र ही उस मुरली को उठा लिया एवं यह मुरली श्री कृष्ण की ही है यह जानकर क्रोध से मस्तक हिलाते हुए सर्पी की भाँति गर्जन करते हुए श्री राधा की तीव्र भर्त्सना करने लगी। वृद्धा का यह रोषोद्दीप्त भाव देखकर श्री राधा नम्रता पूर्व बोलीं—"आर्ये! यह वंशी मुझे गोवर्धन के सानुदेश (पहाड़ी का ऊपरी भाग) पर पड़ी मिली, वंशी मुझे बहुत दुख देती है इसीलिए इसे जमुना के जल में डुबाने के लिए रखा है।" यह बात सुनकर वृद्धा दुगुने क्रोध से तर्जन करती हुई बोली "हा कलंकिनी! हा असद् वंश जाते! इस प्रकार से तुम मेरी नित्य ही प्रताड़ना (वंचना) करती हो, आज में वृद्धा गोपियों की सभा में इस विषय में बोलकर तुम्हे एवं उस कामुक को समुचित दंड प्रदान करूँगी।"

वधू के प्रति वृद्धा को इस प्रकार से तर्जन करे देखकर श्रीकृष्ण बोले—"वृद्धे अपनी वधू के प्रति इतना क्यों गरजती हो? मैं तुम सबका हितकारी हूँ, यदि मुझसे बोलने में कोई आपत्ति न हो तो खुलकर बोलो।" जटिला बोली—"हे आर्य! क्या तुम ब्रजराज को जानते हो?" बटु वेशधारी श्री कृष्ण बोले—"जानता क्यों नहीं, हमारे मधुपुर में वे महायशस्वी हैं।" वृद्धा बोली—"उनके यहाँ एक पुत्र ने जन्म लिया है, जानते हो?" श्री कृष्ण बोले—"हाँ जिन्होंने अघासुर, बकासुरादि को मारा है, उनकी ख्याति भी मैने मधुपुर में सुनी है।" वृद्धा बोली—"विप्र! उसके एक अन्य गुण की बात कहती हूँ, सुनो। उसके गुण के कारण ब्रज में साध्वी कहकर परिचय देने योग्य कोई रमणी नहीं है। केवल मेरी यह वधू ही है, यह भी कब तक ठीक रहेगी मैं नहीं जानती।" तत्पश्चात् वह मुरली दिखाते हुए बोली—यही है उसकी मुरली! इसके मोहन गान से वह कुलवतियों को वन में बुलाकर विष्णु-विष्णु, विप्र! और नहीं बोल पा रही हूँ।" यह कहकर लज्जा पूर्वक मौन होकर अवस्थान करने लगी। वृद्धा का यह भाव देखकर श्री कृष्ण मृदुमन्द हास्य करने लगे एवं बोले—"वृद्धे! मुरली क्या होती है। यह तो मैने कभी नहीं देखी, मझे दो ना मैं देखूँ! जटिला द्वारा मुरली धारी के हाथ में मुरली प्रदान करने पर उन्होंने जैसे कभी मुरली देखी ही ना हो इस प्रकार से देखने लगे।"

Scanned by CamScanner

वृद्धा बोली–"हे आर्य! यदि तुम्हारी मुरली लेने की इच्छा है तो इसे ले सकते हो। यह कुल नाशी वंशी ब्रज वन से मधुपुर चली जाय और यहाँ सतियों का कुल धर्म बचा रहे। हे विप्रवर! आज्ञा करो–मै वधू को घर ले जाऊँ। हे गुण सागर तुम प्रतिदिन ही मेरी वधू को सूर्य पूजा कराना एवं मेरी वधू के प्रति अनुग्रह करना।" यह कहकर वृद्धा ने सूर्य देव तथा दोनों बटु (विप्रों) को प्रणाम करके श्री राधा सहित अपने गृह को प्रस्थान किया। (श्री राधा के वर्षाना में अवस्थान काल में मुखरा इसी प्रकार से सूर्य पूजा कराती है।)

श्री राधा गृह गमन करते समय पीछे से आ रही ललितादि के साथ आलाप करने के छल से पुनः पुनः ग्रीवा देश वक्र करके नेत्र के कोने से तरंग भंगी द्वारा अतृप्त प्राण से कांत वदनाब्ज मधु पान करने लगीं।

श्री राधा की विरह ज्वाला।

शुभ्र श्री राधा की जिस तनु रूपा स्वर्ण घटी ने श्रीकृष्ण के लीलामृत रूपी स्निग्ध दुग्ध द्वारा पूर्ण होकर सखियों का नयनानंद विधान किया था, अब वही विरह विष से विवर्ण होकर सखियों के नेत्रों में संताप उत्पन्न करने लगी। श्री कृष्ण भी दोनों सखाओं के साथ विमना होकर शीघ्र ही सखा मंडली के मध्य उपस्थित हुए। इधर श्री राधा के सखियों सहित अपने मन्दिर में आकर विरह विषादित चित्त से बैठने पर श्री गुरुदेवी के इशारे पर साधक दासी ने श्री राधा के श्री चरणों को धोकर अपने उत्तरीय आँचल से पोंछ दिया एवं पथ के श्रम से क्लांता श्री राधा के रत्न पलंग पर शयन करने पर पाद संवाहन करने लगी। अन्यान्य सेविका गण भी बीजनादि कालोचित विविध सेवा करने लगीं। इस प्रकार से श्री राधाने श्री कृष्ण विरह विधुर चित्त से क्षणकाल विश्राम किया।

(इति ब्रज की मध्याह्न लीला समाप्त)।

नवद्वीप : भाव शांति :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर स्वरूप के गान से ब्रजरस में आविष्ट हैं। श्री मती की सूर्य पूजा समापन होने के बाद सखियों सहित गृह गमन तथा श्री कृष्ण की सखाओं के साथ मिलन वार्ता श्रवण करके महाप्रभु ने प्रेमावेश में हुँकार करके बाह्य दशा लाभ की। भक्तवृंद के बाह्य दशा प्राप्त होने पर स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त किया। श्री मन्महाप्रभु ने श्री मन्नित्यानंद प्रभु एवं अद्वैत प्रभु को प्रेम में भरकर आलिंगन किया। भक्त वृंद द्वारा महाप्रभु के श्री चरणों में प्रणाम करने पर प्रभु ने सबको आलिंगन किया। दासगण कालोचित व्यजनादि विविध सेवा में मग्न हुए। महाप्रभु का माधुर्य दर्शन करके सभी परमानंद सरोवर में निमग्न हुए।

(इति नवद्वीप में मध्याह्न लीला समाप्त)।

Scanned by CamScanner

अपराह्न लीला नवद्वीप (६ दंड)

(अपराह्न ३ बजकर ३६ मिनट से संध्या ६ बजे तक)

अपराह्न लीला सूत्र नवद्वीप :

परावृत्तिं गोष्ठे ब्रजनृपतिसूनोर्विपिनतो
महानन्दाम्बोधेः सपदि जनयित्रीं स्वहृदये।
स्मरण् श्रीगौरांगो नटति वलते निः श्वसिति च
क्षणं मुह्यन् सर्व्वान् विवशयति यस्तं भज मनः।।

श्रीकृष्ण प्रिय सखाओं तथा धेनुगण के साथ वन से ब्रज में सानन्द चित्त से आ रहे हैं। मनोहर नटवर वेश, मस्तक पर मयूर पुच्छ का चूड़ा, गले में वनमाला, कर्णों में अशोक के गुच्छ के अवतंस (अलंकार) शोभा पा रहे हैं। पराग से धूसरित नीलाम्बुज के समान मुख कमल गोरज से धूसरित है। सर्वाचित्ताकर्षी मुरली अधरकिसलय (कोमल पल्लव) पर निनादित हो रही है। सखागण वेणु-श्रृँगादि नाना प्रकार के वाद्य बजा रहे हैं। गायों का समुदाय मेघगर्जन सुनकर पूँछ ऊपर उठाकर "हाम्बा" ध्वनि करता हुआ इधर दौड़ रहा है। श्री राधादि ब्रजसुन्दरियों को इस मनोहर शोभा का दर्शन करते देखकर भावावेश में महाप्रभु स्तम्भ, कंपादि सात्विक विकारों से विभूषित होकर भक्त वृंद को भाव सरोवर में निमग्न कर रहे हैं। हे मन! तुम उन्हीं दिव्य लीलानिधि श्री गौर सुंदर का भजन करो।

श्रीश्री नवद्वीप : नगर भ्रमण तथा गृहागमन :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्री वास पुष्पोद्यान में श्री कृष्ण की उत्तर गोष्ठ लीला के उद्दीपन से भावाविष्ट हैं। प्रभु का मन जानकर स्वरूप गोस्वामी श्री कृष्ण के सखाओं सहित गोधन लेकर ब्रज में आगमन पद गान करने लगे। गान श्रवण कर भावाविष्ट दशा में भक्त वृंद के साथ महाप्रभु नगर-भ्रमण के लिए बाहर निकले। भक्त वृंद द्वारा भी प्रभु को घेरकर कीर्तन करते हुए श्री वास के गृह गमन करने पर पुजारी ने नृसिंह देव की आरती की। आरती के अंत में शंखोदक सिंचन तथा चंदन मालाओं से सबको विभूषित किया। इस प्रकार से सपरिकर महाप्रभु ने चंद्र शेखर, धनंजय पंडित, वनमाली आदि भक्तों के घर-घर में जाकर श्री विग्रह की आरती दर्शन के अंत में कीर्तन करते-करते श्री अद्वैताचार्य के गृह में गमन किया एवं श्री मन्मदनगोपाल की आरती दर्शन करके माल्य चंदन द्वारा भूषित हुए। तत्पश्चात् सभी ने श्री मन्नित्यानंद प्रभु के घर जाकर श्री बंकु बिहारी जीऊ (श्रीबाँके बिहारी जीऊ) की आरती दर्शन की। इस प्रकार कीर्तन के साथ नगर भ्रमण करते-करते रामराय, स्वरूप दामोदर, विद्यानिधि, नरहरि सरकार ठाकुर, दास गदाधर, गदाधर पंडित, रूप गोस्वामी, अभिराम, गौरीदास, हरिदास आदि सभी भक्तों के गृह जाकर श्री विग्रह की आरती दर्शन करके पूर्व सिंह द्वार पर आये। संकीर्तन ध्वनि सुनकर श्री शची माता ने आकर

Scanned by CamScanner

यशोमति माता के भाव से विभावित होकर तीनों प्रभु का लालन किया। माता के चरणों में तीन प्रभु तथा भक्त वृंद द्वारा प्रणाम करने पर माता ने सबको आशीर्वाद देकर स्नेह पूर्वक तीनों प्रभु को द्वार के बगल वाले चौक प्रांगण में रत्न वेदी पर बिठाकर आरती की। आरती के बाद महाप्रभु द्वारा भक्त वृंद के साथ नैऋत्य कोण के बैठक गृह में जाकर बैठने पर माता दासगण को तीनों प्रभु के स्नान तथा वेश भूषा के लिए एवं गदाधर पंडित को स्नान के अंत में ठाकुर जी को जगाकर फल-मूलादि भोग निवेदन के लिए आदेश देकर अंत: पुर में चली गई। दास गण ने व्यजनादि सेवा द्वारा तीनों प्रभु तथा भक्त वृंद का श्रम दूर किया। महाप्रभु का भाव जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी ने ब्रज के यावट में श्री राधा का श्री कृष्ण विरह, चंदन कला का संवाद-कथन, श्री राधा द्वारा लड्डू आदि प्रस्तुतीकरण तथा स्नान, श्रृँगारादि लीला पद क्रमपूर्वक गान किये। उन्हें श्रवण कर महाप्रभु अश्रु, कंपादि भाव विकारों से विभूषित होकर ब्रज लीला में आविष्ट हुए। भक्त वृंद भी अपने-अपने भाव में ब्रजरस में निमग्न हुए।

अपराह्न लीला ब्रजधाम (६ दंड)

(अपराह्न ३ बजकर ३६ मिनट से संध्या ६ बजे तक)

अपराह्न लीला सूत्र ब्रजधाम :

श्रीराधां प्राप्तगेहाम् निजरमणकृतेक्लृप्तनानोपहाराम्
सुस्नातां रम्यवेशां प्रियमुखकमलालोक-पूर्ण-प्रमोदाम्।
कृष्णं चैवापराह्ने ब्रजमनुचलितं धेनुवृन्दैर्वयस्यै:
श्रीराधालोकतृप्तं पितृमुखमिलितं मातृमृष्टं स्मरामि।।

अपराह्न काल में श्री राधाने अपने गृह में आकर स्नान तथा वेश-भूषा धारण करके अपने रमण श्री कृष्ण के लिए श्री यशोमतीमाता के आदेश से कर्पूर केलि, अमृत केलि आदि नानाविध उपहार प्रस्तुत किये एवं वन से गोष्ठ वापस आगमन के समय अपने प्रियतम के मुख कमल का दर्शन करके आनंद में विभोर हुई। इधर श्री कृष्ण भी धेनुवृंद तथा सखाओं के साथ ब्रजागमन पथ पर श्री राधा का दर्शन करके परितृप्त हुए तथा नन्दादि पितृगणों के साथ मिलकर एवं मातृगणों द्वारा स्नानादि से मार्जित हुए, इस प्रकार से श्री राधा कृष्ण का मैं स्मरण करता हूँ।

ब्रजधाम : श्री राधा का विरह ताप तथा चंदन कला की कृष्ण कथा :

ब्रज के यावट में श्री राधा सखियों द्वारा परिवृता होकर (घिरकर) शयनालय में पलंग पर श्री कृष्ण-विरह में प्राय: संज्ञाहीन अवस्था में लेटी हुई हैं। उनकी हृदय नगरी में विषादादि ताप समूह द्वारा बलपूर्वक अधिकार करने के कारण वे अतिशय संतप्त हैं। प्रिय सखी की मधुर आस्वादन वचन रूपी

Scanned by CamScanner

श्री राधा का विशाल विरह एवं चंदन कला संवाद।

औषधि भी व्यर्थ हो रही है। वे क्षणार्ध काल को भी सैकड़ों कल्पों के समान, गुरु गृह को जलहीन कुँए की भाँति एवं लज्जा को वज्र जाल के समान कठिन तथा दुर्विसह समझ रही हैं। प्रिय सखी गण उनकी ताप शांति के लिए श्री अंग में सुशीतल मलयज पंक लेपन करने पर भी प्रिय के विरह ताप से तत्क्षणात शुष्क होता देखकर कर्पूर, जलाद्र-मृणाल युक्त कमल पत्र द्वारा विरह खिन्न तनु को आच्छादित कर रही हैं। इसी अवसर पर चंदन कला नामक सखी के आगमन करने पर सखियाँ उनसे पूछतीं हैं–"हे चंदन कले! तुम कहाँ से आ रही हो?" चंदन कला बोलीं–"वृन्दावन से कृष्ण वार्ता लेकर यशोमती माता के पास आकर उनको निवेदन करने पर श्री कृष्ण के आगमन श्रवण से उल्लासिता होकर माता ने श्री कृष्ण के लिए श्री राधा द्वारा मिष्टान्नादि तैयार करा लाने के लिए मुझे यहाँ भेजा है।" यह सुनकर सखियाँ बोलीं– "वृन्दावन में श्री कृष्ण क्या कर रहे हैं?" तब चन्दन कला कहने लगीं–"श्री कृष्ण के सूर्य पूजा के अंत में गोचारण के समीप जाकर सखाओं के निकट उपस्थित होने पर सखागण 'यह मेरा सखा श्री कृष्ण आ रहा है, पहले मैं उसे स्पर्श करूँगा' इस प्रकार से कहते-कहते आनंदित मन से धावित होकर श्री कृष्ण का आलिंगन करके उनसे कहने लगे–"भाई कन्हाई! हम सब क्षण काल के लिए भी तुम्हारा विरह सहन नहीं कर पाते हैं। तुम्हारे हमें छोड़कर चले जाने पर हम सबने तुम्हें कठिन चित्त वाला जानकर दीन भाव से व्याकुल अन्तः करण से तुम्हारी खोज करने के लिए तुम्हारे निकट जाने की ज्यों ही इच्छा की, त्यों ही क्षणार्ध काल में तुम हम सबके निकट आ गये। हे प्रिय सखे! इससे हम सब तुम्हारी प्रेम कोमलता जान पाये हैं।" तत्पश्चात् श्री कृष्ण के दल के श्रृँग धारी वेणु वाद्य में प्रवीण तथा नाना लीलाओं में लालसा युक्त सखाओं ने उनके संग के लिए उत्पन्न विविध मनोज्ञ भाव द्वारा निसेवित होकर परमानंद लाभ किया। सखाओं के मध्य कोई-कोई प्रिय तथा सत्य वाक्य, कोई मिथ्या वाक्य, कोई तिरस्कार वाक्य, कोई स्तुति गर्भ निन्दा वाक्य, कोई परिहास युक्त गूढ वाक्य, कोई पहेली वाक्य द्वारा विविध भाव में मनोसुख के साथ श्री कृष्ण के साथ सरस एवं मधुर आलाप करने लगे। कोई-कोई सखा चित्र काव्य, समस्या दान तथा समस्या पूर्ण इत्यादि नाना प्रकार की परिहास रसमय वाणी द्वारा स्वयं हँसते-हँसते श्री कृष्ण तथा बलदेव को हँसाने लगे।

सखागण के साथ श्रीकृष्ण का मिलन तथा हास्य-परिहास।

तदोपरान्त मधु मंगल को सखाओं के मध्य चोरों की भाँति उत्तरीय वस्त्र में बाँधकर नैवेद्य को गोपन करते हुए देखकर श्री बलदेव उनसे पूछने लगे-"हे बटो! तुम्हारे उत्तरीय वस्त्र में यह क्या है?" बटु ने कहा–"सूर्य देव का नैवेद्य।" राम–"उसे कहाँ पाया?" बटु–"यजमान के यहाँ से।" राम– "तुम्हारा यजमान कौन है?" बटु–"सभी व्रजजन, जिनके लिए आज सूर्य पूजा का दिन है।" राम–"वह क्या है? एक बार खोलकर दिखाओ ना।" बटु–"यह नहीं हो सकता, क्योंकि तुम तथा तुम्हारे सखागण सभी लोभी हैं।" राम– "सखाओं को

मधुमंगल का हास्य रस।

Scanned by CamScanner

बाँटकर दो और तुम भी उसे खाओ।'' बटु– ''मेरी किसी को देने की इच्छा नहीं हैं एवं स्वयं की भी भोजन करने की इच्छा नहीं है। जब भूख लगेगी अकेला भोजन करूँगा।'' राम–''ये सब बालक बलपूर्वक नैवेद्य ग्रहण करना चाहते हैं।'' बटु–''मैं इन सबको तृण के समान भी नहीं समझता। मैं ब्राह्मण हूँ उस पर भी ब्रह्मचारी हूँ, अत: अपनी शक्ति द्वारा तुम्हें भी तृण तुल्य नहीं समझता हूँ। '' तब बलदेव के इशारे पर गोप बालकों द्वारा विनय पूर्वक मधु मंगल से नैवेद्य के लिए निवेदन करने पर नैवेद्य को इधर-उधर छिपाते हुए मौनावलम्बन किया। इसी समय किसी गोप बालक द्वारा मधु मंगल के पीछे आकर उसकी आखें आच्छादित करने पर अन्यान्य गोप बालकों ने नैवेध के साथ उसके पास से वस्त्र भी छीन लिया एवं सब बालक मिलकर उस नैवेद्य को लूटकर खाने लगे। किसी ने पीछे से जाकर बटु की लंगोटी खोल दी एवं सुबल ने जटिला द्वारा दी गयी अंगूठी ले ली। किसी गोप बालक द्वारा बटु के आगे जाकर उसका कपड़ा खींचने पर बटु उसे लक्ष्य करके उसके पीछे दौड़ने लगा। किसी गोप बालक ने उसके बगल में जाकर उसकी पगड़ी शिथिल कर दी एवं केश पाश खोल दिये। कोई उसकी वेणु, कोई उसकी छड़ी लेकर भाग गये। तब बटु रोदन, उच्च हास्य, तर्जन, गर्जन, उन सबका तिरस्कार तथा अभिशाप प्रदान करते-करते श्रीकृष्ण की छड़ी लेकर उन सबको भगाने लगा। किसी-किसी गोप बालक के साथ क्षण काल के लिए दंड युद्ध भी होने लगा। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण ने बटु का आलिंगन करते हुए गोप बालकों से उसके वस्त्र, वेणु, छड़ी तथा पगड़ी आदि दिलवाये। बटु वस्त्र की गाँठ में अंगूठी न देखकर अभिशाप देने लगा–''अरे चंचल बालको, तुम सबने मेरा नैवेद्य छीनकर खाया है, सोने की अंगूठी भी चुरा ली है, ब्राह्मण का सब कुछ हरण करके तुम सब महापापी तथा अपवित्र हो गये हो, प्रायश्चित न करने तक तुम सब मेरा स्पर्श न करना। तुम सबके अन्याय कार्य को बताने के लिए मैं ब्रज में जा रहा हूँ।'' यह कहकर उसे फोपाते-फोपाते (सिसकते हुए) तेजी से ब्रज की ओर गमन करते देखकर बलदेव ने उसका निवारण किया। तब बटु ने बलदेव से कहा–''इस ब्रह्मस्व हरण पाप के तुम्ही प्रयोजक कर्ता हो–अत: प्रायश्चित न करने तक मैं तुम्हारे साथ भी वाक्यालाप नहीं करूँगा।"

श्री कृष्ण द्वारा वंशीवादन से गायों का आह्वान करना।

श्री कृष्ण सखाओं के साथ इस प्रकार से परिहास रसमय विविध खेल द्वारा वृन्दावन के पशु, पक्षी, स्थावर, जंगम को परमानंदित कर कृष्ण दर्शनार्थ उत्कंठित ब्रजवासीगण को सुखी करने के लिए अपनी वंशी वादन द्वारा दूर वन में विचरण शील गायों को ''हे श्यामली! धवली! पद्मे! हरिणी! रंगिनी! त्रिवेणी! यमुने! नर्मदे! शर्मदे! कहकर आह्वान करने लगे। आह्वान श्रवण करके धवलादि गायों ने स्तनभार तथा प्रणय पूर्वक मन्थर होने पर भी पूँछ उठाकर मुख ऊँचा करके दाँत के अग्रभाग में तृण धारण करके अपने-अपने गणों सहित श्री कृष्ण के निकट स्तन दुग्ध तथा नयन नीर से स्नात होकर शीघ्र गति से आगमन किया। नयन द्वारा श्रीकृष्ण का सौन्दर्य दर्शन, नासिका द्वारा उनका अंग सौरभ ग्रहण, जिह्वा द्वारा उनका अंग लेहन करते-करते वात्सल्य में

Scanned by CamScanner

भरकर सब गायें हुँकार करते हुए उनके चारों ओर खड़ी हो गयीं। श्री कृष्ण भी धेनुगण के स्नेह के वशीभूत होकर अपने कर कमलों द्वारा सुधामय स्पर्श से उनका अंग मार्जन तथा अंग खुजलाते हुए बोले–"हे मातृगण! तृण द्वारा तुम सब परितृप्त हो गयी हो, दिन का भी अवसान हो चुका है, तुम्हारे बछड़े क्षुधित हो रहे हैं। अतएव तुम सब शीघ्र ही ब्रज की ओर गमन करो।"

श्रीकृष्ण की यह बात श्रवण कर उनके स्नेह विह्वल चित्त सखागण धेनु वृन्द को ब्रजपथ की ओर चलाने लगे। गमन करते समय धेनु तथा महिषगण श्रीकृष्ण के बाँये तथा दाहिने श्रेणी बद्ध होकर गंगा जमुना के प्रवाह की भाँति स्वर्ग वासी देवगणों के लिए भी भ्राँति उत्पन्न करने लगीं। गोरज द्वारा जिनकी अल्कावली धूसरित हो रही है , वन्य पुष्पों के विविध अलंकारों से जो सुशोभित हैं। मृदुमन्द हास्य विभूषित मुख, कमल नयन श्री कृष्ण वेणु की अपूर्व स्वर लहरी का विस्तार करते-करते धेनुगण के पीछे-पीछे मृदुमन्द गति से गमन करते हुए अखिल प्राणियों का आनंद विधान करने लगे। उसी समय मुनीन्द्र तथा उपदेवता गण के साथ ब्रह्म रूद्रादि देवगण स्तुति, गीत वाद्य, नमस्कार तथा पुष्प वृष्टि करते-करते श्रीकृष्ण का विविध ऐश्वर्यमय स्तव करने लगे। स्तुति के अंत में देवगणों के चले जाने पर श्रीकृष्ण के माधुर्यावगाही सखागण * देवगणों के आकार, चेष्टा तथा स्तव का अनुकरण करते-करते स्वयं हँसते-हँसते श्रीकृष्ण को भी हँसाने लगे।"

देवगणों द्वारा श्रीकृष्ण का स्तव।

चंदनकला बोलीं–"मेरे द्वारा सखागण के साथ इस प्रकार से श्री कृष्ण के ब्रज में आगमन का संवाद यशोमती माता के निकट कहने पर उन्होंने आनंदित होकर श्रीकृष्ण के भोजन के लिए लड्डू आदि प्रस्तुत करने के लिए श्री राधारानी को बोलने के लिए मुझे भेजा है।" चंदन कला के मुख से श्रीकृष्ण-लीलामृत माधुरी आस्वादन करके श्री राधा का श्रीकृष्ण विरह जनित ताप प्रशमित हुआ। श्री यशोमती माता का आदेश श्रवण कर उल्लासिता होकर वे श्रीकृष्ण के भोजन के लिए लड्डू आदि निर्माण के लिए सखियों के साथ शुक्ल वस्त्र पहनकर रंधनशाला में प्रविष्ट हुईं। चंदनादि काष्ठ के संयोग से चूल्हों को प्रज्वलित करके उन पर पात्रादि रख कर श्रीमती को स्वर्ण चौकी पर बिठाकर किंकरीगण ने भण्डर गृह से सामग्री लाकर श्री राधा के सम्मुख रखी। श्रीमती के अमृतकेलि, कर्पूरकेलि, सर पूरी, चंद्रकांति, मनोहरा, गंगाजल, पीयूष ग्रंथी, अमृती, पद्म चीनी, सीता खंड, मोदक इत्यादि नाना प्रकार की मिष्टान्न, पक्वान्न की रचना करने पर किंकरी गण ने श्री राधा द्वारा प्रस्तुत मिष्टान्नादि को स्वर्ण जाल से आवृत वेदी पर स्वर्ण पात्रों से सुसज्जित करके श्रीकृष्ण के सायंकाल भोजन के लिए एवं रात्रि लीला में कुँज भोजन के लिए पृथक-पृथक रखा।

श्री राधा द्वारा मिष्टान्न प्रस्तुत।

* श्री नन्द महाराज द्वारा आराधित होकर श्री नारायण ने श्रीकृष्ण को अपना सामर्थ्य प्रदान किया था।इसी कारण से श्री कृष्ण असुरादि का संहार करते हैं। इस मर्म को न जानकर ही अज्ञ देवगण "भगवान" कहकर श्रीकृष्ण का स्तव करते हैं, यही ऐश्वर्य ज्ञान गंध शून्य सखाओं की चेष्टा का उद्देश्य है।

Scanned by CamScanner

तदोपरान्त राइ के रसोई घर से आकर बरामदे में स्वर्ण चौकी पर बैठने के पश्चात् दासी गण उनके श्रम को दूर करने के लिए उनकी व्यजनादि सेवा करने लगीं। रसोई घर को धोकर तथा रंधन पात्रादि का मार्जन करके उन्होंने यत्न सहित भण्डार गृह में रखे। श्री राधा के अंग से अलंकार मोचन करके केश बंधन मुक्त करते हुए सुगंधित तेल से केश सिक्त करके एवं हल्के-हल्के मर्दन के साथ मणि-कंघी द्वारा केश संस्कार किये। श्री अंग में तेल मर्दन करके सुगंधी उबटन द्वारा तैलापसारण (तेल हटाना) किया। इस प्रकार से राइ के सखियों सहित किशोरी कुण्ड (किसी दिन पारल गंगा) में स्नान के लिए गमन करने पर मंजरीगण तथा गुरु मंजरी गण ने क्रम पूर्वक उनका अनुगमन किया। साधक दासी स्नान वस्त्रादि वहन करके सबके पीछे अनुगमन करने लगी। कुण्ड के निकट आकर श्री राधा कुण्ड के समान कुण्ड शोभा दर्शन करके सबने अपार आनंद लाभ किया। सखियों सहित राइ जल में अवगाहन करते हुए स्नान करके तट पर आई। दासियों ने उनके अंग केश आदि मार्जन करके सबको उत्तम कोमल वस्त्र पहनाये। तत्पश्चात् मंजरीगण तथा साधक दासी ने स्नान करके वस्त्र पहनकर राइ सहित घर आकर उनके श्री चरण धोकर श्रृँगार वेदी पर उन्हें बिठाकर षोडश श्रृँगार तथा द्वादश आभरण * द्वारा उन्हें भूषित किया। बाद में सभी सखी मंजरी गण अलंकारादि से भूषिता होकर श्री राधा के श्री अंग की झलमल रूप माधुरी दर्शन करके आनंद में मग्न हुई।

श्री राधा का वैकालिक स्नान श्रृँगार।

नवद्वीप : सपरिकर महाप्रभु का स्नान श्रृँगारादि :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु ने सपरिकर बैठक गृह में भावाविष्ट दशा में स्वरूप गोस्वामी के गान से श्री राधा के रंधन, स्नान तथा श्रृँगारादि पद श्रवण करके प्रेमावेश में हुँकार कर बाह्य दशा प्राप्त की एवं भक्त वृंद ने भी बाह्य दशा लाभ की। इसी अवसर पर शची माता के आदेश से ईशान दास ने आकर कहा- "प्रभो! हे विश्वम्भर! दिन समाप्त होने वाला है, माता का आदेश है कि शीघ्र की स्नानादि सम्पन्न करें।" तब दासगण द्वारा तीन प्रभु तथा भक्त वृंद के स्नान के लिए तेल, उबटन, केश संस्कार सामग्री लेकर आने पर सपरिकर महाप्रभु ने स्नान के लिए गंगा को प्रस्थान किया दासगण ने सभी को यथा विधान पूर्वक स्नान कराकर शुष्क वस्त्र पहनाये। महाप्रभु द्वारा सबके साथ गृह आने पर दास गण ने तीन प्रभु का पाद प्रक्षालन

---

* सोलह श्रृँगार यथा- सुस्नाता (अच्छी प्रकार से स्नान की हुई), नासाग्रे मुक्ता, नीलाम्बरा, पट्ट वस्त्र से नीवी बद्धा, वेणी समृद्ध केश, दोनों कर्णों में अवतंस (कर्णाभूषण) युक्ता, चन्दनादि चर्चिता, कुसुम शोभित केश, गले में माल्य विलंबिता (लटकती हुई), लीला कमल हस्ता, तांबूल रंजिताधरा, चिबुक पर कस्तूरी बिन्दु राजिता, कज्जलोज्वल नेत्रा, कपोल में पत्रावली युक्ता, चरणों में जावक (आलता) रंजिता, सिंदूर, तथा तिलकादि युक्ता।

द्वादश आभरण यथा :- मस्तक पर स्वर्ण चूड़ा, कान में कुंडल, कटि में कांची युक्त क्षुद्र घंटिका, कंठ में पदक, कर्ण में चक्र शलाका, हाथ में चूड़ी, गले में ग्रैवेयक (चिक्) नामक हार, अंगुली में अंगुरीयक (अंगूठी), वक्ष में धुकधुकी (ताराहार), बाहु में कटक (कड़ा), चरणों में नूपुर, पदांगुली में पादांगुरीयक (बिछुआ)।

Scanned by CamScanner

करके श्रृँगार मंडप पर बिठाकर उन सबका श्रृँगार किया। तब स्वरूप गोस्वामी ने तीनों प्रभु की आरती की। इधर दासगण ने फल, मिष्टान्नादि भोग की सामग्री नारायण मंदिर में सजाकर रखी। कोई पुष्प वाटिका जाकर पुष्प चयन करके माला गूँथने लगा। गदाधर पंडित ने श्री नारायण मंदिर में जाकर नारायण को जगाकर पूजनादि किया। महाप्रभु श्रीकृष्ण की उत्तर गोष्ठ लीला की स्मृति में सपरिकर अट्टालिका के ऊपर जाकर पूर्व-दक्षिण की ओर दृष्टि करके श्री राधा भाव में बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी प्रभु का भाव जानकर ब्रज में श्री राधा की श्री कृष्ण-दर्शनोत्कंठा, अट्टालिका पर आरोहण तथा श्रीकृष्ण दर्शनादि पद क्रमपूर्वक गान करने लगे। पद श्रवण कर महाप्रभु अश्रु, कंपादि सात्विक विकारों से भूषित होकर ब्रज भावाविष्ट हुए। भक्त वृंद भी अपने-अपने स्वरूप की स्मृति में ब्रजरस में मग्न हुए।

ब्रजधाम : श्री कृष्ण का उत्तर गोष्ठ :

ब्रज में सखियों सहित श्रृँगार वेदी पर बैठी हुई श्री राधा श्री कृष्ण दर्शनोत्कंठा में अधीर होकर बोलीं—"हे सखी! दिन का यह शेष याम कालान्तक यम के समान दुर्विषह (असहनीय) प्रतीत हो रहा है। कितने सहस्र युग बीत गये फिर भी दिन समाप्त नहीं हुआ। मैं नहीं जानती सखी! कि निष्ठुर विधाता का यह क्या निर्मम विधान है।" यह बात कहते-कहते विषाद में भरकर उनका शरीर अतिशय मलिन हो गया। वे श्रीकृष्ण विरह में अधीरा होकर रोदन करने लगीं। तब ललिता ने उन्हें लेकर अट्टालिका पर आरोहण करके पूर्व दिशा की गोधूली का दर्शन कराया। गोधूली दर्शन से विरह ज्वाला प्रशमित होने पर श्रीमती बोलीं—"हे ललिते! यह गोधूली नहीं हैं, निश्चय ही यह कर्पूर धूली है। जो दूर से ही मेरे नयन द्वार से होकर हृदय में प्रवेश करके मेरे तापित प्राण को सुशीतल कर रही है।" पुनः पूर्व दिग् वाही स्निग्ध समीर के कोमल स्पर्श से श्रीमती बोलीं—"सखी! तुम्हारे प्रियतम के मुख सरोज (कमल) के परिमल तथा स्वेद कण की शीतल वाही इसी पवन ने मेरी मृत देह में प्राण संचार किया। हे सखी! "पवन केवल नाम से ही 'जगत प्राण' नहीं है, परन्तु गुण से भी जो "जगत प्राण" है, यह बात सत्य ही प्रतीत होती है।"

श्रीराधा का गोधूली दर्शन से आनंद।

दूसरे ही क्षण श्रीमती श्रीकृष्ण की मंथर गति दर्शन करके बोलीं—"सखी! गोधूली मेरे लिए मृत संजीवनी के समान हुई थी किंतु प्रियतम के आगमन के विलंब दर्शन से अकिंचित (तुच्छ) कर हो गयी है। ऐसा लगता है कि—"अब इस देह में प्राण नहीं रहेंगे।" श्रीमती की व्याकुलता देखकर ललिता बोलीं—"हे प्रिय सखी! इतना अधीर न होओ। यह देखो तुम्हारे प्रियतम के चंचल अलकावली मंडित मुख कमल पर विमल-तिलक परिशोभित हो रहा है, मयूर पुच्छ शोभित मुकुट की सुषमा से शिरोदेश विभूषित है, अलि कुल (भृंग कुल) गुंजित तुलसी माला के परिमल से दिगन्त प्रमोदित करते हुए वे अभी तुम्हारा नयनानंद विधान करने के लिए यहीं आकर उपस्थित होंगे।"

श्रीकृष्ण की मंथर गति से विषाद।

Scanned by CamScanner

इसी समय नन्दालय से हिरण्यांगी सखी के आगमन करने पर श्री ललिता बोलीं–"सखी! कहाँ से आ रही हो?" हिरण्यांगी बोलीं–"नन्दालय से।" ललिता बोलीं–"तब यशोमती माता का कुशलादि सुनाओ।" तब हिरण्यांगी कहने लगीं–"अपराह्न काल समुपस्थित होने पर माता यशोदा ने अपने पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा में समुत्सुक होकर श्री कृष्ण के भोज्य द्रव्य के लिए रोहिणी तथा नन्द भ्राता नन्दन की वनिता (भार्या) अतुला को रसोई कार्य के लिए नियुक्त किया। इसी समय माली गण द्वारा षड्ऋतु वन की

हिरण्यांगी की कृष्ण कथा।

प्रत्येक ऋतु में उत्पन्न शाक, मूल, फलादि माता यशोदा के निकट अर्पण करने पर उन्होंने दासियों द्वारा विभाग कराकर आधा सायं कालीन पाक के लिए तथा आधा प्रातः कालीन पाक के लिए सुसंस्कृत कराकर रखवा दिया। इसके बाद माता नयन नीर तथा स्तन क्षीर से पुत्र दर्शन की उत्कंठा में पुरद्वार पर जाकर ऊर्ध्वमुखी होकर कृष्ण के आगमन पथ को निर्निमेष नेत्र से देखने लगीं। महाराज नन्द भी गोप गणों के साथ दिवावसान देखकर कृष्ण दर्शन की परमोत्कंठा से गोधूली की ओर नयन एवं वंशी रव की ओर कर्णार्पण करके उच्च स्थान पर स्थित होकर राम-कृष्ण के आगमन पथ की ओर निरीक्षण करने लगे।"

इस प्रकार से हिरण्यांगी के नन्दालय की वार्ता वर्णन करते-करते ही गाभी गण तथा सखाओं सहित श्री कृष्ण दृष्टि गोचर हुए। वे कानन मध्य में अति विस्तृत सरोवर के तीर पर मुरली नाद से गो समूह को स्थिर करके जलपान कराकर भिन्न-भिन्न यूथ रचना करते हुए धेनु यूथों की मणि-माला से गणना करने लगे। श्रीकृष्ण के हृदय पर जो नाना वर्णों की मणि-माला विन्यस्त है, उससे धेनुगण की गणना करके संख्या कम होने पर वेणु गान से आकर्षण करके अपने यूथ में उन्हें मिलाने लगे। इस प्रकार संख्यापूर्ण होने पर सानंद चित्त से उनको ब्रजाभिमुख चलाने लगे। गोधूली धूसरित अलकावलि से परिशोभित मुख मंडल मस्तक पर मनोज्ञ शिखिपुच्छ चूड़ा, गुंजा माला तथा वन्य पुष्पों के भूषण से भूषित अंग, गोदोहन रज्जु, मुरली, यष्टि (छड़ी), श्रृँग इत्यादि धारण करने से विलक्षण मनोहर गोपवेश हो रहा है। आयत अरुण नयनों के पलक चंचल, वन भ्रमण श्रम जनित अति निरुपम कांति रूपी अमृत धारा के सिंचन से ब्रजवासी जन के नेत्र रूपी चकोर समूह को परितृप्त करते-करते श्रीकृष्ण अति मधुर चेष्टा परायण सखाओं के साथ ब्रज में आगमन कर रहे है। जैसे श्रीकृष्ण नवजलधर वंशीनाद रूपी यथेष्ट अमृत धारा के सिंचन से ब्रज युवतियों के विरह दावानल को निर्वापित (बुझाकर) करके तथा ब्रजवासी रूपी चातकों की पिपासा की शांति विधान करते-करते ब्रजजनों के भाग्याकाश पर उदित हो रहे हैं। वंशीनाद श्रवण से मदनोदबोधिता चंद्रावली, श्यामला, मंगला, भद्रा, पाली आदि चंद्रानना ब्रजसुंदरी गण मदनावेश में विगलित नीवी बंध तथा कुंतल भार पुनः पुनः संयत करते-करते गद्‌गद भाव से सखियों के साथ श्रीकृष्ण दर्शन के लिए धाविता हुई।

इधर सखियों सहित श्री राधा ने पुष्प चयन के छल से वृद्धा जटिला को प्रताड़ित (वंचना) करके स्वच्छन्द रूप से श्रीकृष्ण दर्शन के लिए जावट के निकट वाले उद्यान में प्रवेश किया। श्री श्यामला भी श्री

Scanned by CamScanner

कृष्ण दर्शन की लालसा से श्रीराधा के साथ आ मिलीं। उस समय प्रेयसियों के साथ श्रीकृष्ण के मिलन

श्रीकृष्ण दर्शन के लिए श्रीराधा का उद्यान में गमन।

काल को जानकर बलदेव तथा श्री दामादि बछड़ों की 'हाम्बा' ध्वनि सुनकर द्रुतगति से दौड़ती हुई धेनुगण के पीछे-पीछे उन्हें संभालने के छल से धावित हुए एवं प्रथमत: विरहातुर माताओं को सांत्वना प्रदान की।

इधर श्रीकृष्ण सुनील कांति माला से ब्रज के पथ को उद्भाषित करते हुए प्रमद (मतवाले) कटाक्ष से गोपियों का नयनोत्सव विधान करते हुए मृदुमन्द गति के साथ जावट ग्राम में उपस्थित हुए। ब्रज सुंदरी गण श्री कृष्ण के मुख कमल दर्शन, उनकी अंग संगी पवन के सुखमय स्पर्श, उनके अंग परिमल का आघ्राण एवं उनकी वंशी नाद माधुरी का आस्वादन करके एक ही साथ अपनी पंचेन्द्रियों की तृप्ति विधान करने लगीं। श्री राधा के कटाक्ष बाण द्वारा मर्म स्थल बिद्ध होने से श्रीकृष्ण जिस प्रकार व्याकुल हुए-समस्त ब्रजसुन्दरियों के कटाक्ष समूहों से सर्वांग बिद्ध होने पर भी वे उस प्रकार व्याकुल नहीं हुए। पुन: श्री राधा की मृदु हास्यामृत के लेशमात्र से उन्होंने स्वस्थता लाभ की-ब्रज सुंदरी गण के समुदित हास्यामृत के प्रवाह में अवगाहन करके भी वे उस प्रकार से स्वस्थता का लाभ नहीं कर पाये।

तत्पश्चात् श्यामला सखी लज्जा से नमिता (नत) श्री राधा से बोलीं—"राधे! और अधिक लज्जा का आडम्बर प्रकाश करने का कोई प्रयोजन नहीं है-ये देखो, वरद-पशुपति देव तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हैं, नयन कमलों से उनकी अर्चना करो। वे प्रसन्न होकर तुम्हारी कंदर्प पीड़ा की शांति विधान करेंगे। सखि! ऐसी शुभ घड़ी सहसा नहीं आती।" श्री राधा मृदुहास्य के साथ बोलीं—"सखी श्यामले! तुम ही अपने दोनों हृदय कमल कोरक (अविकसित पुष्प अन्य अर्थ में अपने वक्षोज युगल) द्वारा पशु पति देव की पूजा करो-उनके संतुष्ट होकर तुम्हारी वासना पूर्ण करने पर मैं भी अमृत जलधि में निमग्न होऊँगी। तब

श्रीराधा तथा श्यामला का रसालाप।

परिहास-रसिका श्यामला ललिता से बोलीं—"हे ललिते! सत्य कहो, निखिल ब्रजसुंदरी रूप प्रफुल्लित गुलाब पुष्प को त्याग करके यह मधुकर युवा तुम्हारी सखी को देखते ही इतना घूर्णित क्यों हो रहा है?" ललिता मृदु हास्य के साथ बोलीं—"सखी श्यामले! यह मधुकर युवा मालती की अनुपम-परिमल सरित (नदी) के आवर्त के मध्य पतित हो रहा है इसीलिए चलने में असमर्थ है।" श्री राधा तथा श्यामला के प्रणय युक्त संलाप सुनकर श्रीकृष्ण के पिपासित कर्ण युगल आनन्द रस से निषिक्त हुए। इसी समय श्री राधा का मुख कमल चकित की भाँति दृष्टि गोचर होते ही वे कुसुमित लता वन के मध्य सहसा छिप गयीं। तब श्रीकृष्ण विषाद-खिन्न चित्त से कहने लगे—"हाय! मेरे पिपासार्त नयन चकोर अमृत पान के लिए उद्यत होते ही सहसा श्रीराधावदन चंद्र अस्तमित हो गया। हा निष्ठुर विधाता! तुम्हें धिक्कार है।" इधर प्रेममयी श्री राधा मन ही मन कहने लगीं—"हे लज्जे! तुम क्षणकाल के लिए मेरे नयन कोण का परित्याग करो—मैं अपने नयन प्रांत से एक बार श्री कृष्ण मुख चंद्र की शोभामृत माधुरी का लेहन करूँ। हे आनन्द मेघ! तुम मुझ पर प्रशन्न होओ

Scanned by CamScanner

श्रीराधा के अदर्शन से श्रीकृष्ण का विषाद।

तथा आनंदाश्रुपात से मेरे नयन कोण को रुद्ध न करो। हे अतनु! तुम्हें नमस्कार करती हूँ, तुम मेरी तनु लतिका को इतना कंपित न करो। यहाँ से मुख उठाकर श्रीकृष्ण दर्शन करना अतीव धृष्टता का कार्य है—यह किस प्रकार संभव होगा?'' श्री राधा के इस प्रकार चिंतन करते रहने पर मर्मज्ञा सुचतुरासखी गण श्री राधा के अंतर्मन की बात समझ कर बोलीं—''राधे! इस निर्जन स्थान में कुलांगनाओं का रहना संगत नहीं है--आओ, हम सब घर चलें।'' यह कहकर लतान्तराल से श्री राधा को आकर्षण करके श्री कृष्ण के नयन पथ वर्तिनी (गतिशील) कर दिया। तब श्रीमती चकित दृष्टि से प्रियतम माधुरी दर्शन करने लगीं। रसिक-रसिका युगल परस्पर के दर्शनानंद से निस्पंद देह में पाषाण प्रतिमा की भाँति निश्चल भाव से अवस्थान करने लगे। उनकी इस जड़िमा दशा के दर्शन से सुबल तथा ललितादि प्रिय सुहृद गण बहिरंग जनों की आशंका से

श्री राधा कृष्ण का परस्पर दर्शनानंद।

अतिशय व्याकुल हो गये। ललितादि सखीगण श्री राधा को तथा सुबलादि सखागण श्रीकृष्ण को बलपूर्वक आकर्षण करके अपने-अपने पुर प्रवेश पथ पर ले गये एवं शीघ्र ही आप युगल का मिलन होगा, यह कहकर सबने मिलकर दोनों को आश्वासन दिलाया।

श्री कृष्ण के गृह गमन करने पर श्री राधा उनके विरह में उन्मादिनी होकर विह्वल भाव से प्रलाप करने लगीं—''हे सखी विशाखे! यह रमणी लम्पट पथ के मध्य मेरी नीवी पर बलपूर्वक हस्तार्पण करने की इच्छा कर रहा है। अहो? तुम सब क्या तमाशा देश रही हो! मैं इतने उच्च स्वर में रो रही हूँ तब भी यह धृष्ट सती कुल-शिरोमणि मुझे परित्याग नहीं कर रहा है। तुम घर जाकर यह बात आर्या से निवेदन करो।'' इस प्रकार विलाप करते हुए पसीने से युक्त देहा होकर काँपते-काँपते श्री राधा ने अपने कमल नयनों को थोड़ा विकसित किया एवं विरह ताप प्रशमन के लिए सखियों द्वारा रचित कुसुम शय्या पर अपनी

प्रिय विरह में श्री राधा का प्रलाप।

तनुलतिका को स्थित देखकर विस्मय विमुग्धा होते हुए सखियों से बोलीं—''बोलो सखी! मेरे प्रियतम कहाँ हैं? इस पथ के बीच में मैं क्या कर रही हूँ'' यह घर क्या मेरे प्रियतम के पुष्पोद्यान में स्थित है? या मेरे गुरुजनों के पुर में स्थित है? अभी संध्या है या प्रातः काल अथवा रात्रि का समय? मैं निद्रिता हूँ या जागृता?'' श्री राधा की इस प्रेमोन्माद दशा को देखकर सखियाँ बोलीं—''हे कमल मुखी! तुम अभी उद्यान से गृह में आई हो। तुम्हारे प्रियतम निभृत निकुँज मे तुम्हारे साथ विविध केलि विलास करके इसी समय अपने घर गये हैं। जनक-जननी के अपने अदर्शन जनित ताप को शांत करके वे ब्रज कुल चंद्रमा तुम्हारे नयनोत्पल युगल को प्रफुल्लित करने के लिए यहाँ इसी समय आयेंगे।'' सखियों के इस प्रकार प्रबोधन वाक्य से श्री राधा कुछ आश्वस्त हुई। किंकरी गण कालोचित सेवा करने लगीं।

इति ब्रज की अपराह्न लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

नवद्वीप : भाव शांति :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर अट्टालिका पर भावाविष्ट हैं। स्वरूप दामोदर के गान से श्रीकृष्ण का नन्दालय गमन तथा श्री राधा का उद्यान से गृह आगमन एवं सखियों द्वारा प्रेमोन्मादिनी श्री मती के आश्वासन श्रवण से प्रेमावेश में हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। हुँकार श्रवण कर भक्तवृंद ने भी बाह्यावेश लाभ किया। दासगण कालोचित विविध सेवादि करने लगे।

इति नवद्वीप की अपराह्न लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

सायाह्न लीलाः नवद्वीप (६ दंड)

(संध्या ६ बजे से ८ बजकर २४ मिनट तक)

नवद्वीपः सायाह्न लीला सूत्रः

सायन्तनीं कृष्ण-मनोज्ञलीलां
स्नानाशनाद्यां हि मुहुर्विचिन्त्य।
स्वभक्तमध्येऽनुकरोति नित्यं
तां यो मनस्तं भज गौरचन्द्रं।।

सायंकाल में जो श्री गौरसुन्दर श्रीकृष्ण के स्नान, भोजनादि मनोज्ञ लीलावली का पुनः पुनः स्मरण करते हुए अश्रु पुलकादि भाव भूषणों से विभूषित होकर भक्तगणों के बीच में भावावेश में उनका अनुकरण करते हैं—हे मन! तुम उन्हीं श्री गौर सुन्दर का भजन करो।

नवद्वीपः श्री मन्महाप्रभु का भावावेश :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर अट्टालिका के ऊपर बैठे हुए हैं। ब्रज की कालोचित सायाह्न लीला की स्मृति से उन्हें भावावेश हुआ। महाप्रभु का भाव जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी ब्रज में श्री राधा के निकट धनिष्ठा का आगमन, उनके द्वारा श्री राम कृष्ण का स्नान, श्रृँगार, भोजन तथा सखियों सहित श्री राधा का श्री कृष्णाधरामृत आस्वादनादि पद क्रम-पूर्वक गान करने लगे। गान श्रवण कर श्रीमन्महाप्रभु उसी भाव में आविष्ट हुए। भक्त वृंद भी अपने-अपने स्वरूप में ब्रज भावाविष्ट हुए। साधक दास कालोचित मन्द-मन्द चामर व्यजनादि सेवानंद में निमग्न हुआ।

सायाह्न लीलाः ब्रजधाम (६ दंड)

(संध्या ६ बजे से ८ बजकर २४ मिनट तक)

ब्रजधाम : सायाह्न लीला सूत्र :

सायं राधां स्वसख्या निजरमणकृते प्रेषितानेक-भोज्यां
सख्यानीतेश-शेषासन-मुदितहृदं तां च तं च ब्रजेन्दुम्।
सुस्नातं रम्यवेशं गृहमनु जननी-लालितं प्राप्तगोष्ठं
निर्वूढ़ोस्मालिदोहं स्वगृहमनु पुनर्भुक्तवन्तं स्मरामि।।

जो सायंकाल में अपनी सखियों द्वारा अपने रमण श्री कृष्ण के लिए नानाविध भोज्य वस्तु भेजती हैं एव सखियों द्वारा पुनः लाये गये श्री कृष्ण के भुक्तावशेष का भोजन करके जो आनंदित होती हैं उन्हीं श्री

Scanned by CamScanner

राधा को एवं सुस्नात, रम्यवेशधारी, गृह के मध्य जननी द्वारा संलालित, गोष्ठ गमन करके गोदोहन क्रिया समाप्त होने के बाद उस स्थान से गृह में आकर पुनः भोजन करते हैं—उन्हीं श्रीकृष्ण का मैं स्मरण करता हूँ।

ब्रजधाम : धनिष्ठा तथा गुण माला प्रसंग :

ब्रज में श्रीराधा जावट में अपने गृह में शयन मंदिर के पलंग पर सखियों के साथ बैठी हुई हैं। चित्त श्री कृष्ण विरह से व्याकुल है। इसी समय नन्दालय से धनिष्ठा का आगमन हुआ। सखियों द्वारा उनसे नन्दालय की कुशल वार्ता पूछने पर वे साग्रह करने लगीं—"हे राधे! हे सखीगण! श्रीकृष्ण को गृह आगमन करते हुए देखकर भाइयों के साथ ब्रजराज श्री नन्द तथा मातृगण सहित माँ यशोदा ने वात्सल्य प्रेम भरालस चित्त से श्री राम कृष्ण को परम स्नेह पूर्वक दोनों बाहु फैलाकर अपने वक्ष में धारण किया। रोहिणी माता ने दासियों को पाकशाला में छोड़कर अतुला के साथ शीघ्र ही आकर स्नेह पूर्वक परमानंद में विवश होकर श्री राम कृष्ण का आलिंगन किया। श्री कृष्ण रूपी आश्चर्यमय सूर्य के उदित होने से ब्रजवासी गणों के नयन रूपी कमल प्रफुल्लित हो उठे। उनके मन्द हास्य रूपी कुमुद विकसित हुए एवं अंग रूपी चंद्रकांत मणि विगलित होकर पसीना के रूप में प्रवाहित होने लगी तथा विरह ताप से प्रतप्त जीवन * सुशीतल हुआ। श्री कृष्ण के मंगल पूर्वक वन से गृह वापस आने से प्राणों के भी प्राण जैसे दूर देश जाकर सहसा वापस आकर निष्प्राण देह को जैसे संजीवित कर देते हैं, अथवा खोयी हुई निधी पुनः मिल गयी हो, उसी प्रकार से श्री नन्द यशोदा ने अपने पुत्र को हृदय में धारण करके चुंबन, दर्शन तथा मस्तकाघ्राण करके मानोवांछा को प्राप्त कर लिया हो। स्नेह-सहित वस्त्रांचल से पुत्र के गोधूलि धूसरित मयूर पुच्छ चूड़ा, घुँघराले बाल तथा अलंकारादि को झाड़ पोंछ कर आनंदाश्रु से श्रीनन्द महाराज तथा यशोदा माता नयन नीर तथा स्तनक्षीर से श्रीकृष्ण का अभिषेक करके आनंद सायर (सागर) में तैरने लगे। प्रातः काल विदाई के समय माता-पिता ने उन्हें इसी प्रकार से नयननीर तथा स्तर क्षीर से सिक्त किया था, किन्तु वह विदाई विरह वेदना से भरपूर थी, मिलन रस के कारण यह परमानंद मय हो गयी है।

श्रीराम-कृष्ण के साथ नन्द यशोदादि का मिलन।

इसके बाद श्री राम-कृष्ण के मंगल के लिए माँ यशोमती ने घृत कर्पूर बत्ती द्वारा परम स्नेह पूर्वक आरती की। शंख जल से सर्वांग का अमृत सिंचन करके वस्त्र द्वारा अलाई-बलाई (समस्त अमंगल) पोंछ दिया।

अंबा—किलिंबादि श्री कृष्ण का यशोगान करने लगीं। तत्पश्चात् सूर्य जैसे गो जाल (किरण समूह) के

* चंद्रमा के उदित होने पर ही कुमुद का विकास होता है, चंद्रकांत मणि द्रवित होती है एवं सूर्य ताप से प्रतप्त प्राण शीतल होते हैं, सूर्य के उदय से नहीं, किन्तु श्रीकृष्ण रूपी विचित्र (आश्चर्यमय) सूर्य के उदय से यह संभव हो सका।

Scanned by CamScanner

श्रीरामकृष्ण की आरती एवं गाभी रक्षण।

साथ अस्तांचल की ओर गमन करता है, उसी प्रकार श्री कृष्ण ने भी गो जाल (गाभीसमूह) को लेकर गोशाला में प्रवेश किया। उन्होंने नव प्रसूतिका, चिर प्रसूतिका, गर्भ स्रावा, ऋतुमती, बाल गर्भिणी, बहु प्रसूति आदि अनेक प्रकार की गायों तथा शकट, सांड इत्यादि गोसमूह तथा बछड़े एवं महिषादि को भिन्न-भिन्न निर्दिष्ट स्थान में यत्न सहित रखा, तुरन्त जन्में बछड़ों को अपनी-अपनी मातृ स्तनों का पान कराया। इधर माता पिता द्वारा समुत्सुक चित्त (अत्यंत उत्सुक चित्त) से भोजन, लालनादि के लिए बार-बार श्रीकृष्ण को घर जाने के लिए आह्वान करने पर भी श्री कृष्ण गोदोहन कार्य में उत्सुक होने के कारण सहसा घर नहीं जाना चाह रहें है। तब नन्द महाराज स्नेह सहित बोले-"वत्स। धनुेगण थोड़ा विश्राम करें तथा बछड़े दुग्धपान करें, गोदोहन के लिए उत्सुक गोपगण के साथ मैं यहाँ बैठा हुआ हूँ, तुम वन भ्रमण के कारण श्रान्त हो गये हो, घर जाओ मातायें लालन करना चाहती है। स्नान भोजन के अन्त में गोदोहन के लिए आ जाना।" यह बात सुनकर बटु मधु मंगल श्रीकृष्ण का हस्ताकर्षण करके बोले-"भाई कृष्ण! क्षुधा-तृष्णा के कारण मैं बड़ा कातर हो रहा हूँ, पहले घर चलकर भोजन पानादि द्वारा हम सब की प्राण रक्षा कर आयें चलो।" रोहिणी माँ, ब्रजराज तथा यशोदा आग्रह सहित श्री कृष्ण को पुनः पुनः घर जाने के लिए कहने लगे। अंत में यशोमती माता श्री राम कृष्ण का हस्ताकर्षण करके सखाओं के साथ ले जाने लगीं। रास्ते में सखाओं की मातागण (सखाओं की श्रीराम कृष्ण को छोड़कर घर जाने की इच्छा न होने पर भी) माता यशोदा के अनुरोध करने पर अपने-अपने घर सखाओं को लेकर चली गईं तथा माता यशोदा मधु मंगल के साथ राम-कृष्ण को लेकर घर चली गई। रोहिणी माँ ने अतुला के साथ पाद-प्रक्षालन करके रसोई-गृह में प्रवेश किया। गोकुल चंद्रमा के गोकुल नगरी में उदित होने पर गोपियों का विरह संताप दूर हुआ। उनमें से कोई-कोई यंत्रों की भाँति श्री कृष्ण का अनुगमन करके आई थी, अब वे विच्छेद के भय से उद्विग्न चित्त होकर अपने-अपने घर चली गयीं। अपुत्रक को पुत्र लाभ से, दरिद्र के घर में स्वर्ण वृष्टि से, दावानल दग्ध प्राणियों पर सुधा वर्षण से उन्हें जिस प्रकार का आनन्द होता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण को गोकुल में पाकर समस्त ब्रजवासी गण परमानन्द सागर में निमग्न हुए।

इसके बाद यशोमती माता ने श्री राम कृष्ण को घर लाकर स्नान वेदी पर बिठाकर दासगण को उनके स्नानादि सेवा कार्य में नियुक्त किया। तत्पश्चात् मुझे स्नेह पूर्वक बुलाकर मधुर वचनों से तुम्हारे निकट श्री कृष्ण के लिए मंगलप्रद तुम्हारे श्री हाथ से बने लड्डू आदि लाने के लिए भेज दिया।" इसी समय वहाँ श्री

श्री राधा द्वारा नन्दालय के लिए मिष्टान्न भेजना।

वृन्दा द्वारा भेजी गई 'मालती' नामक उनकी एक सखी माला लेकर आई तथा बोली-"हे श्री राधिके। श्री वृंदा देवी ने आप सबका निशि-विलास का कुँज "श्री गोविन्द स्थली" निरूपण करके वह संवाद देने के लिए मुझे यहाँ भेजा है।" इसके बाद श्री राधा ने अपने द्वारा बनाये गये अमृतोपम खंड, लड्डू आदि नये मिट्टी के पात्र में

Scanned by CamScanner

पृथक-पृथक सुसज्जित करके वस्त्र द्वारा पात्र मुख आवृत करते हुए उस मृन्मय पात्र समूह को एक काष्ठ सपुट (बक्सा) में सजाकर सफेद वस्त्र द्वारा उसे आवृत करके माल्य तथा तांबूल-वीटिकादि के साथ तुलसी, कस्तूरी को देकर संकेतज्ञा धनिष्ठा के साथ नंदालय भेजा दिया। इस प्रकार से श्री राधा तुलसी-कस्तूरी के द्वारा श्री कृष्ण के लिए भोज्य द्रव्य भेजकर अपने शयनालय के रत्न पलंग पर बैठ गई। तब श्री गुरु मंजरी के इशारे पर साधक दासी ने गृह प्रांगण मार्जन करके प्रदीप जलाकर, आरती का संभार सुसज्जित करके श्री रूप मंजरी के हाथ में अर्पण किया। श्री रूप मंजरी द्वारा घृत-कर्पूर वर्तिका जलाकर श्री ललिता के हाथ में देने पर उन्होंने प्रेम पूर्वक श्री राधा की आरती की। सखीगण श्रीमती को घेरकर नृत्य गीतादि के साथ पुष्प वर्षा करने लगीं। आरती के अंत में किंकरी गण सखियों सहित श्री राधा की व्यजनादि कालोचित सेवा करने लगीं।

श्री राधा की आरती।

इसी समय नन्दालय से श्री कृष्णाधरामृत लेकर वहाँ "गुणमाला" नामक सखी आई। उसे देखकर श्री राधा द्वारा उत्कंठा सहित नन्दालय की वार्ता पूछने पर वह आग्रह सहित बोलीं—"हे राधे! माता यशोमती द्वारा दासगणों को श्रीराम-कृष्ण के स्नान, श्रृँगारादि के लिए आदेश करने पर रक्तक, पत्रकादि दासगण ने श्री राम-कृष्ण को पृथक-पृथक स्नान वेदी पर बिठाकर उनके श्री अंग से अलंकारादि खोलकर सुकोमल वस्त्र से उनके अंगों की गोधूली अपसारित की। तब नारायणादि सुंगधी तेल से अंग-मर्दन करते हुए सुगंधी चूर्ण के उद्वर्तन (उबटन) द्वारा तेल अपसारित किया। बाद में सुगन्धित जल से श्री राम कृष्ण का स्नान समापन करके कोमल वस्त्र से श्री अंग पोंछकर श्री कृष्ण को पीताम्बर तथा श्री बलदेव को नीलाम्बर पहनाकर श्रृँगार वेदी पर बिठाकर श्रृँगार किया। पहले अगुरु-धूप के धुंए से केश सुखाकर मणि कंघी द्वारा संस्कार करते हुए मुक्तादाम से जूड़ा बाँधा तथा उन्होंने ललाट पर तिलक रचना एवं चतु: समादि द्वारा सुगंधी द्रव्य से श्री अंग चर्चित किया। तत्पश्चात् मस्तक में चूड़ा विन्यास (मुकुट) करके मणि-मुक्ता के अलंकार से भूषित करते हुए श्री कृष्ण के अंग पर अरुण वर्ण तथा श्री बलदेव के अंग पर नील वर्ण का उत्तरीय प्रदान किया। तब दिव्य मालाओं द्वारा भूषित करके सामने मणि दर्पण धारण किया। इधर अन्यान्य दासगण द्वारा सुसंस्कृत नाना प्रकार के फलादि तथा विविध लड्डू, मिष्टान्नादि नारायण मंदिर में रखने पर श्री मधुमंगल स्नानादि के अंत में मंदिर में जाकर श्री नारायण को जगाकर भोग लगाकर आरती करके श्री राम कृष्ण के निकट आये। माता यशोदा द्वारा उन्हें भोजनालय में बिठाकर नाना प्रकार के फल, रसाला, पानक, अमृत केलि, कर्पूर केलि, लड्डू, मिष्टान्नादि प्रदान करने पर श्री राम कृष्ण मधु मंगल के नाना परिहास रसमय वाक्य श्रवण करते-करते परम सुखपूर्वक भोजन करने लगे। उन्होंने भोजन के अंत में आचमन करके शयनालय में विश्राम किया। तदोपरान्त स्नेहपूर्वक माता यशोदा ने मेरे हाथसे तुम्हारे लिए मिष्टान्न पक्वान्नादि भेज दिया। धनिष्ठा ने गोपन रूप से उसमें श्रीकृष्णाधरामृत

श्रीरामकृष्ण का स्नान एवं श्रृँगार।

श्रीराम कृष्ण का भोजन।

Scanned by CamScanner

मिला दिया। गुणमाला के यह बात कहकर श्री राधा रानी के निकट श्री कृष्णाधरामृत अर्पण करने पर श्री मती ने सखियों सहित परमानन्द पूर्वक कान्त का अधरामृत सेवन किया।" मंजरीगण ने उनका अवशेष गृहण करके स्थान, पात्रादि संस्कार करके रखे। इसके बाद श्रीमती ने थोड़ा विश्राम करके गुरु पुर से निकल कर श्रीकृष्ण के गोदोहनदर्शन की लालसा से अपने उद्यान सरोवर की सुरम्य अट्टालिका * पर आरोहण किया। वहाँ उनके चन्द्रशाला पर सखियों सहित श्री कृष्ण दर्शनोत्कंठा में बैठने पर दासियाँ व्यजनादि सेवा करने लगीं।

नवद्वीप: भोजन तथा गोदोहन दर्शनावेश :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु अट्टालिका पर भावाविष्ट हैं। इसी समय शचीमाता के आदेश से ईशान दास ने आकर कहा–"हे गौर चंद्र! स्वल्पाहार के लिए माता ने सबको बुलाया है।" यह श्रवण कर महाप्रभु हुँकार कर बाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी ने गान समापन किया, भक्तवृंद ने भी बाह्य दशा लाभ की। तब महाप्रभु दोनों प्रभु तथा भक्त वृंद के साथ भोजनालय में जाकर दिव्य आसन पर बैठ गये। दाहिने श्री नित्यानंद, बाँये श्री अद्वैत प्रभु तथा गदाधर एवं सामने तथा दोनों बगल में भक्तवृंद बैठ गये। शची माता स्नेह पूर्वक विविध प्रकार के फल-मूल, मिष्टान्न तथा पक्वान्नादि परिवेशन करने लगीं। जो शची माता ने पहले ही श्री गदाधर के द्वारा भोग लगवाकर रखा था एवं भक्त वृंद अपने-अपने घर से जो मिष्टान्नादि प्रसाद लाये थे महाप्रभु श्री राधा रानी के कृष्णाधरामृत आस्वादन के भाव में आविष्ट होकर भक्त गणों के साथ उस प्रसाद का भोजन करने लगे। महाप्रभु द्वारा गणों सहित भोजन के अंत में आचमन करके बैठक गृह में जाकर बैठने पर दासगण ने सभी को सुवासित तांबूल प्रदान किये। तब शचीमाता के बुलाने पर श्री गोस्वामी वर्ग तथा श्री गुरु वर्ग अवशेष ग्रहण करके भोजन के अंत में आचमन करके महाप्रभु के निकट आ बैठे। साधक दास ने शेषामृत भोजन के अंत में स्थान पात्रादि संस्कार करके वहाँ आकर कालोचित सेवा में आत्म-नियोग किया। तब श्री मन्महाप्रभु राधा भाव में विभावित होकर श्री कृष्ण के गोदोहन दर्शनावेश में चन्द्रशाला पर जाकर परिकरों से घिर कर बैठ गये। प्रभु का मन जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी ब्रज में श्री राधा एवं श्रीकृष्ण के गोदोहनादि दर्शन पद गान करने लगे। पद श्रवण कर सभी ब्रज रस में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम : श्री राधा का गोदोहन दर्शन :

ब्रज में श्री राधा चन्द्रशाला पर सखियों से घिरकर श्री कृष्ण के गोदोहन दर्शन के लिए परमोत्कंठा पूर्वक बैठी हुई हैं। उधर श्री कृष्ण क्षण काल विश्राम करके गोदोहन के लिए गोशाला में गमन कर रहे हैं- सुराही, ताम्बूल पात्र, व्यजन, गोदोहन रज्जु एवं बेत्रादि लेकर दासगण उनका अनुगमन कर रहे हैं। श्रीकृष्ण

* जावट में किशोरी-कुण्ड तीर पर स्थित तथा बर्षाना में भानुखोर तीर पर स्थित उद्यान में अट्टालिका विराजित है।

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण का गोशाला शोभा दर्शन।

ने देखा कि गोशाला में श्री नन्द महाराज खट्टार (खटिया) पर बैठ हुए हैं, उनके सामने गोदोहन घट (कलश) रखे हुए हैं। वे भृत्य तथा गोपगणों को अपना-अपना कार्य करने का आदेश प्रदान कर रहे हैं। उनकी दृष्टि श्री कृष्ण के आगमन पथ की ओर निबद्ध है। तृषित एवं मृदु रव कारी वत्सगण को गायें 'हाम्बा' रव से आह्वान कर रही हैं। वे विपुल स्तन भर से आक्रान्ता हैं, स्तन से दुग्ध धारा अपने आप स्रावित हो रही है। श्रीकृष्ण के पथ की ओर कान खड़े करके देख रही हैं। किसी का दोहन होगा, किसी का दोहन हो रहा है तथा किसी का दोहन हो चुका है। गोपगण दुग्ध दोहन करके कलशों को भर रहे हैं। कोई-कोई उस दुग्ध भार को वहन कर दुग्ध भण्डार गृह में ले जा रहा है। सभी कृष्ण दर्शन के लिए उत्कंठित हैं। सांड़ो के मध्य ऋतुमती गायों के लिए प्रबल युद्ध हो रहा है। श्रृँग के अग्रभाग तथा क्षुर (खुर) से भूमि को विदीर्ण करके गम्भीर ध्वनि करते-करते गायों की ओर धावित हो रहे है। बछड़े मस्तक से मुस्तक सटाकर युद्ध क्रीड़ा कर रहे हैं। गोशाला की इस प्रकार से शोभा दर्शन करके श्री कृष्ण ने आनंदित मन से वहाँ प्रवेश किया।

इधर श्री राधा की नयन चकोरी विभोर होकर श्री कृष्ण मुख सुधाकर की ज्योत्स्नामृत धारा का पान करने लगीं। वे भाव विह्वला होकर सखियों के निकट श्री कृष्ण रूपामृत माधुरी का वर्णन करने लगीं—

श्री राधा का श्री कृष्ण माधुर्य वर्णन।

"यह देखो सखी! प्रियतम के मुख कमल के ऊपर भृंग के समान निपतित होकर कुंचित अलकावली को आच्छादन करके उनका मनोहर मुकुट कैसी शोभा पा रहा है। उसके ऊपर मुक्ता जड़ित स्वर्ण सूत्र गुच्छ किस प्रकार से धीरे-धीरे स्पंदित हो रहा है। सखी! देखो-देखो, प्राण नाथ के दोनों गालों पर प्रदीप्त चंचल दोनों कुंडल अपनी प्रभा से ब्रज बालाओं के धर्म अंधकार का नाश करके दोनों कर्णो में किस प्रकार से रस में भरकर आन्दोलित हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे मदन ने इस नागर वर के कटाक्ष रूपी तीक्ष्ण बाण से हम सब के हृदयों को बिद्ध करने के लिए ही उनके कर्णों पर कुंडल के रूप में अपने वाहन दो मकरों को संलग्न करके रखा हुआ है। सखी! उनके विशाल नयन युगल के स्वभाव से चंचल दोनों तारक अन्तः पुर चारिणी ब्रज बालाओं के धैर्य धन को जैसे सुनिपुण तस्कर की भाँति हरण कर रहे हैं प्राण बल्लभ के अरुण अधरोष्ठ मृदु-हास्य प्रभा से किस प्रकार से उद्भासित हो रहे हैं देखो-जैसे सुविकसित दो कुंद कुसुम से ताजा मकरन्द रस क्षरित हो रहा हो। किन्तु सखी! यह देखकर मेरा मन क्या कहता है जानती हो-जैसे विद्रुम * निर्मित कंदर्प यंत्र से निकलकर कर्पूर रस मेरे नयन युगल में प्रविष्ट हो रहा है।" इस प्रकार से श्री कृष्ण माधुरी वर्णन करते-करते श्रीमती जैसे मोहदशा को प्राप्त हो रही थीं, तब श्री विशाखा ने उन्हें समझाकर श्रीकृष्ण के गोदोहन दर्शन में प्रवृत्त किया।

---

* लाल रंग के मूल्यवान मूँगों (मणियों) को पैदा करने वाला मूँगे का वृक्ष।

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण द्वारा पिता की आज्ञा लेकर गोदोहन के लिए गमन करने पर वात्सल्य भाव में हुँकार करते-करते धेनुगण चारों ओर से उन्हें घेरकर खड़ी हो गयीं। अंग मार्जन तथा अंग कंडूयन (खुजलाना) द्वारा श्री कृष्ण ने भी उन सबका परमानंद विधान किया। गोदोहन कारी गोपगण द्वारा बछड़ों को स्तनपान कराकर पहले दुग्ध धारा पृथ्वी पर देकर 'सन् सन् घम् घम्' ध्वनि द्वारा श्री कृष्ण गोदोहन करने लगे। गोदोहन के समय दुग्ध कणिका से उनके श्यामल अंगों (उरु, जंघादि) की जो अपूर्व शोभा का विकास हुआ उसे देखकर सखियों सहित श्री राधा परमानन्द सागर में भासमाना (तैरना) हुईं।

श्रीमती द्वारा श्रीकृष्ण का गोदोहन दर्शन।

श्री कृष्ण ने स्वयं कुछ गायों का दोहन करके गोपगण द्वारा अन्यान्य गायों का दोहन कराया। गोदोहन के बाद भी पहले की तरह गायों का स्तन भार पुष्ट ही रहा है। वात्सल्य में भरकर श्री कृष्ण के मुख पद्म पर दृष्टिपात करते ही उनके स्तनाग्र से वृष्टि धारा के समान दुग्धधारा स्रावित होने लगी। गोपगण द्वारा स्तन के नीचे घट स्थापन करते ही वह दुग्ध से भरने लगा। इस प्रकार अपूर्व कौतुक के साथ गोदोहन समापन करके दुग्ध भार को दुग्ध भण्डार में रखकर गायों तथा बछड़ों को अपने-अपने आलय में स्थापन करके श्री कृष्ण-बलदेव ने पिता के निकट आगमन किया। श्री नन्द महाराज ने गोशाला के द्वार-देश पर रक्षकों को रखकर परमानंदित मन से श्री राम एवं पात्र-मित्र (परिकरों) के साथ गृह गमन किया।

श्रीकृष्ण क्रीड़ा के छल से चन्द्र शाला पर आकर श्री राधा से मिले। सखियों सहित क्रीड़ा रस विनोदी श्रीयुगल प्रचुर हास्य-परिहास रस में निमग्न हुए। सखियों ने उत्कंठित श्री युगल का यत्न सहित मिलन सम्पादन कराया एवं वे भी खिड़की रन्ध्र में नयन अर्पण करके युगल विलास-माधुरी आस्वादन कर धन्य हुई। विलास के अंत में श्री युगल के रत्न पलंग पर बैठने पर सखियों ने उनकी आरती की। तदोपरान्त श्री कृष्ण के पूर्ण मनोरथ होकर गृह चले जाने पर सखियों के साथ श्रीमती वहाँ से उतकर अपने गृह में आईं।

चन्द्र शालिका पर युगल मिलन।

तब किंकरी गण श्री राधा की कालोचित विविध परिचर्या करने लगीं। ललिता के आदेश पर दासीगण ने श्री राधा के गृह प्रांगणादि को सुगन्धित जल तथा स्वर्ण मार्जनी से संस्कार करके सुगंधी धूप-धूम्र द्वारा सुरभित एवं दीपमाला से उज्ज्वलित किया। तब श्रीमती के रत्न पलंग पर विश्राम करने पर साधक दासी उनके पाद संवाहन करने लगी। उसी समय श्री अनंग मंजरी किंकरियों को श्री श्री राधा माधव के चित्त विनोदन कारी विचित्र नृत्य, संगीत, वाद्यादि की शिक्षा दान करने लगीं। सभी परमानन्द रस सरोवर में निमग्न हुई।

नवद्वीपः आरती दर्शन तथा संकीर्तन रसास्वादन :

नवद्वीप में श्री मन्हाप्रभु चन्द्रशाला पर भावाविष्ट हैं। शचीमाता के आदेश से ईशान दास ने आकर कहा—"हे गौर सुन्दर! माता ठाकुर की संध्या आरती के लिए बुला रही हैं।" यह सुनकर महाप्रभु हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। भक्तवृन्द ने भी बाह्य दशा लाभ की। स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त

Scanned by CamScanner

किया। महाप्रभु परिकरों सहित चन्द्रशाला से उतरकर मन्दिर के जगमोहन में आकर बैठ गये। दासगण ने गृह तथा प्राँगणादि को सुगंधित जल तथा स्वर्ण मार्जनी से संस्कार करके धूप-धूम्र से सुरभित कर दीपावली प्रज्वलित की। श्री गदाधर पंडित ने श्री नारायण की आरती की। आरती के समय सपरिकर महाप्रभु नृत्य-कीर्तन में प्रमत्त हुए। श्री गदाधर ने ठाकुर की आरती के अंत में दीप तथा शंखोदकादि से तीनों प्रभु की आरती करके भक्त वृन्द पर शंखोदक सिंचन किया। सभी ने श्री मन्नारायण के चरणों में दंडवत प्रणामादि किया। गदाधर पंडित ने तीन प्रभु एवं भक्त वृंद को माल्य चंदनादि से विभूषित किया। इसी समय माल्य चंदनादि लेकर मृदंग करतालादि के योग से संकीर्तन करते-करते पुरवासीजन वहाँ उपस्थित हुए। संकीर्तन श्रवण कर महाप्रभु ने परमानन्द में मग्न होकर सबके साथ कुछ समय तक संकीर्तन रसास्वादन करते हुए अपने गले की माला सबको देकर घर आकर कृष्ण भजन करने का आदेश देकर पुरवासियों को विदा किया। तत्पश्चात् महाप्रभु द्वारा निज गणों के साथ बैठक में जाकर बैठने पर स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर ब्रज के जावट में श्री राधा के निकट नन्दालय से तुलसी-कस्तूरी का आगमन, श्रीकृष्ण तथा सखियों सहित श्री राधा के भोजनादि पद यथाक्रम से गान करने लगे। पद श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : श्रीश्री राधा कृष्ण का सायाह्न भोजन :

श्रीब्रज में श्री राधा जावट में अपने गृह में रत्न पलंग पर शयन कर रही हैं। इसी समय नन्दालय से तुलसी-कस्तूरी वापस आईं। श्री राधा द्वारा नन्दालय की कुशल वार्ता पूछने पर तुलसी कहने लगीं—"हे ईश्वरी! तुम्हारे द्वारा भेजी गयी मिष्टान्नादि लेकर मेरे द्वारा ब्रजराज्ञी के निकट अर्पण करके उन्हें प्रणाम करने पर वे स्नेह पूर्वक मेरे ललाट पर ललाट रखकर अत्यधिक प्रीति के साथ तुम्हारा कुशल प्रश्न करने लगीं। तत्पश्चात् थोड़ा तुम्हारे द्वारा दी गयी सामग्री में से तथा थोड़ा उनके गृह निर्मित मिष्टान्नादि में से स्वर्ण थाल में लेकर श्री नारायण के भोग के लिए बटु मधु मंगल के हाथ में अर्पण किया। तत्पश्चात् बटु ने श्री नारायण की आरती की। श्री राम-कृष्ण को आगे लेकर भ्रातृगण, भतीजों तथा भृत्य गण के साथ श्री नन्द महाराज ने आरती का दर्शन किया। आरती के अंत में बटु ने सबके ऊपर शंखोदक सिंचन किया। सभी श्री नारायण के चरणों में दंडवत प्रणाम करके बैठक में जाकर श्री नन्दबाबा के साथ यथा योग्य आसन पर बैठ गये। इधर बटु मधु मंगल ने विचित्र मिष्टान्न आदि भोग लगाकर आचमन के अंत में ताम्बूल अर्पण करके ठाकुर जी को शयन कराकर ब्रजेश्वरी माता के निकट नैवेद्य समर्पण किया। वही मिष्टान्न, पक्वान्न, विविध खंड विकार एवं गंध, माल्य, ताम्बूल विटिकादि विष्णु नैवेद्य ब्रजेश्वरी माता ने ब्रजराज के निकट भेज दिये। ब्रजराज ने वह प्रसाद सबको बाँट दिया। सुहृदगण कुछ समय तक परस्पर ईष्ट-गोष्ठी करके श्री कृष्ण दर्शन त्याग करने में असमर्थ होकर भी प्राण इन्द्रियादि श्री कृष्ण को अर्पण करके अपने-अपने घर चले गये।

तुलसी कस्तूरी द्वारा कृष्ण लीला-कथन।

Scanned by CamScanner

ब्रजराज श्री नन्द सुभद्रादि भ्रातस पुत्र (भतीजों) को प्रतिदिन श्री कृष्ण के साथ संध्या भोजन के लिए एवं किसी-किसी दिन उपनंदादि सहोदरगण को भी निमंत्रित करते हैं। आज ब्रजराज ने सबको निमंत्रण करके बटु द्वारा वह संवाद ब्रजेश्वरी के निकट भेज दिया। तुंगी, पीबरी, कुबला आदि मातृगण एवं उनकी पुत्र वधू, कन्यागण को भी ब्रजेश्वरी ने निमंत्रण किया। तदोपरान्त बृजेश्वरी के बटु द्वारा सबको भोजन के लिए आह्वान करने पर सभी पाद प्रक्षालन करके भोजन के लिए उत्तम आसन पर बैठ गये। ब्रजराज के दाहिने उनके दोनों अग्रज भ्राता, बायें दोनों अनुज, सामने श्री राम-कृष्ण श्रीकृष्ण के बाँये सुभद्रादि भातृगण तथा बलदेव के दाहिने ब्राह्मण बालक बैठ गये। ब्रजेश्वरी के आग्रह एवं अनुरोध करने पर परिवेशन कार्य में परम-अभिज्ञा तुंगी नाम की सुभद्र की माता तथा रोहिणी माता परिवेशन करने लगीं। वे पहले ब्राह्मण बालकों को, बाद में पति को, देवरगण को तथा पुत्रगण को यथाक्रम से परिवेशन करने लगीं। स्वर्ण पात्र में सुरभित कनक वर्ण गव्यघृत सिक्त शुभ्र वर्ण के अन्न के चारों ओर नाना विध स्वादिष्ट तथा उपादेय व्यंजनादि सजाकर सबके सामने अर्पण किये। तत्पश्चात् सबके भोजन करते रहने पर क्रमशः नाना प्रकार के कटु, तिक्त, अम्लादि व्यंजन समूह, सुकोमल पूड़ी, खीर, पिष्टक (पीठा), हलुआ, बटकादि परोसने लगीं। जिन्हें जो वस्तु प्रिय है, ब्रजेश्वरी के इशारे पर उन्हें वही वस्तु प्रीतिपूर्वक प्रदान करने लगीं। तत्पश्चात माता ब्रजराज्ञी स्वयं गाढ़ा दुग्ध, शिखरिणी (लस्सी), रसाला, नाना प्रकार के अचार, पके हुए आम का उत्तम रसादि परोसने लगीं। ब्रजराज्ञी यशोदा के नेत्र के इशारे से तथा नंदादि के आग्रह वाक्य से उत्तम द्रव्यादि श्री राम-कृष्ण को बार-बार भोजन कराने लगीं। प्रगाढ़ वात्सल्य प्रेम में यशोदादि का चित्त द्रवित स्नेह जैसे विगलित होकर नयनाश्रु के रूप में झर रहा है। प्रातः कालीन भोजन की अपेक्षा सायाह्न भोजन में यही अंतर है, कि प्रातः कालीन भोजन में मधु मंगल का स्वच्छंद परिहास था, अब वही गाम्भीर्य पूर्ण है। अब जननी यशोदा के आग्रह की भी गूढ़ता तथा लालनादि की भी अस्वच्छन्दता है। अभी श्री कृष्णादि की स्वेच्छाचारिता की भी लघुता है, तब भी पितृगणों के साथ सम्पन्न होने से प्रातः भोजन की अपेक्षा भी सबका संध्या भोजन में अधिक आनन्द था। श्री कृष्ण के मुख चंद्र के मनोहर हास्य दर्शन से श्री नन्दादि के नयन, उनके वचनामृत रस से उनके कर्ण, कृष्णांग सौरभ से उनकी नासिका, श्री कृष्णांग गंध युक्त व्यजनी की हवा से उनकी त्वचा एवं उनके संग में भोज्य वस्तु के अस्वादन से उनकी जिह्वा, एक साथ पंचेन्द्रियाँ परमानन्द रस सरोवर में मग्न हुईं। भोजन के अंत में जल पान करके आचमन तथा हस्त मुख मार्जनादि करके तांबूल सेवन के अंत में नन्दादि सहित उपनन्द आदि गोपगण रत्न पलंग पर विश्राम करने लगे। दास गण कालोचित व्यजनादि सेवा करने लगे। श्रीकृष्ण के आचमन के अंत में अट्टालिका के ऊपर रत्न पलंग पर विश्राम करने पर दासगण सुवासित तांबूल प्रदान करके व्यजनादि सेवा करने लगे।

श्रीरामकृष्ण तथा नन्दादि का सायाह्न भोजन।

भोजन के अंत में विश्राम।

Scanned by CamScanner

तदोपरान्त ब्रजेश्वरी माता के द्वारा हम सब को भोजन के लिए आग्रह करने पर धनिष्ठा बोलीं—"श्रीराधा के भोजन किये बिना ये सब जल भी ग्रहण नहीं करती।" यह सुनकर माता ने अतिशय आनन्द पाकर स्नेह पूर्वक सखियों सहित आपके भोजन के लिए मेरे हाथों अन्न व्यंजनादि भेजने के लिए रोहिणी माता से कहा। तब धनिष्ठा ने रोहिणी माता द्वारा दिये गये अन्न व्यंजनादि लाकर उसमें गुप्त रूप से श्री कृष्णाधरामृत मिला दिया। मैं वही ले आई हूँ, यह कहकर तुलसी द्वारा वह सब अन्न व्यंजनादि खोलकर सखियों सहित श्री राधा को दर्शन कराने पर उस अन्नादि के दर्शन से ही उनके नयन तथा घ्राण से नासिका परितृप्त हुई। श्री रूप मंजरी ने इस अन्न व्यंजनादि को भोजनालय में ले जाकर श्री राधा रानी तथा सखियों के लिए भिन्न-भिन्न पात्रों में रखा। इधर जटिला विशाखा को बुलाकर बोली—"विशाखिके! पुत्र भोजन करके गौशाला चला गया है, वधू को भोजन के लिए यहाँ बुला लाओ।" विशाखा बोलीं—"आर्ये! वे वन भ्रमण से बड़ी ही क्लान्त होकर शयन कर रही हैं, मुझे अन्न व्यंजन दीजिये वे बाद में भोजन करेंगी।" वृद्धा द्वारा विशाखा की बात सुनकर अन्न व्यंजनादि उसे देने पर उन्होने उसे लेकर भोजनालय के एक कोने में रखकर श्री राधा के निकट जाकर हँसते हुए सब बात कह दी।

तत्पश्चात् श्रीमती सखियों सहित भोजनालय में आकर स्वर्ण भृँगार के जल तथा रत्नपीठ आदि सुसज्जित देखकर दाहिने ललिता, बायें विशाखा, बगल में तथा सामने अन्यान्य सखियों को लेकर रत्नपीठ के ऊपर भोजन के लिए बैठ गईं। श्री रूप तथा तुलसी यत्न सहित उन्हें श्री कृष्णाधरामृत परिवेशन करने लगीं। श्री भगवान ने जैसे मोहिनी रूप में देवताओं में अमृत बाँटा था, उसी प्रकार वे सब भी परम आदर के साथ श्री कृष्णाधरामृत सखियों सहित श्री राधा जी को परिवेशन करने लगीं। श्री राधा के अमृतावलोकन से बाँटते समय वह अन्न व्यंजनादि अक्षय-अव्यय हो गया। हंसी जिस प्रकार परम आदर सहित अपने कान्त द्वारा उपभुक्त मृणाल का भोजन करती है, हरिणी गण जैसे परमानन्द पूर्वक किशलय (कोपल) का भक्षण करती हैं, भ्रमरी जैसे सुखपूर्वक पुष्पमधु का पान करती है, चकोरी जैसे महासुख में विभोर होकर सुधाकर की अमृत-किरणों का आस्वादन करती है—उसी प्रकार परमानंद पूर्वक श्रीमती राधा श्री कृष्णाधरामृत का आस्वादन करने लगीं। भोजन के अंत में आचमन करके सखियों सहित श्रीमती के श्रीकृष्ण का चर्बित तांबूल सेवन करते-करते रत्न पलंग पर बैठने पर सखीगण व्यजनादि कालोचित सेवा करने लगीं। तत्पश्चात् श्री रूप तथा तुलसी ने श्री राधा कृष्ण के अवशेषान्न व्यंजनादि मालती के हाथ में देकर प्रीति पूर्वक वृंदा देवी को भेज दिये। तदोपरान्त प्रीति की मूर्ति की भाँति सभी मंजरी गण परस्पर एक दूसरे को परोस कर प्रेम कलह के साथ बार-बार एक दूसरे को देकर ईश्वरी के शेषामृत का भोजन करने लगीं। भोजन तथा आचमन के अंत में ईश्वरी के चर्बित तांबूल का सेवन करते-करते वे सभी श्रीमती के श्री चरणों के समीप आईं। इस प्रकार मंजरी तथा श्री गुरु मंजरी गणों के भोजन के अंत में साधक दासी द्वारा उनका

सखियों सहित श्रीराधा द्वारा श्रीकृष्णाधरामृत आस्वादन।

Scanned by CamScanner

अधरामृत सेवन करके स्थान पात्रादि संस्कार करके यथास्थान रखकर श्री राधा रानी के निकट आने पर श्री गुरु देवी ने उसे चर्बित तांबूल प्रदान किया। श्रीराधारानी के शयन करने पर साधक दासी उनके पाद संवाहन करने लगी। श्री राधा के निद्रिता होने पर सखी मंजरी गण अपने-अपने स्थान में जाकर सो गयीं। साधक दासी श्री गुरु देवी के श्री चरण संवाहन करते-करते उनके पाद मूल में सोगई।

इति ब्रज में सायाह्न लीला समाप्त।

नवद्वीप : महाप्रभु का संध्या भोजन तथा विश्राम :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर बैठक गृह में स्वरूप गोस्वामी के मधुस्रावी कंठ से बृजलीला रस के अस्वादन में भावाविष्ट होकर बैठे हुए हैं। इसी समय ईशान दास ने आकर कहा—"हे विश्वम्भर! श्री मन्नारायण का भोग प्रस्तुत है, माता भोग निवेदन के लिए बुला रही हैं।" यह सुनकर महाप्रभु ने हुँकार कर बाह्य दशा लाभ की। भक्त वृंद के भी बाह्य दशा प्राप्त होने पर श्री स्वरूप गोस्वामी ने लीला गान समाप्त किया। श्री मन्महाप्रभु द्वारा श्री गदाधर पंडित को भोगनिवेदन करने का आदेश देने पर उन्होंने श्री नारायण मंदिर में जाकर मिष्टान्न, पक्वान्न, अन्न-व्यंजन, दुग्ध, फलादि भोग निवेदन किया। भोग हटाकर आचमन देकर तांबूल निवेदन किया एवं आरती के अंत में तीनों प्रभु तथा भक्त वृंद को आरती की बत्ती दिखाकर शंखोदक सिंचन किया एवं सबको उन्होने प्रसादी चंदन माला प्रदान की।

तब शची माता द्वारा सभी को भोजन के लिए आह्वान करने पर सभी भोजनालय में जाकर उत्तम आसन पर बैठ गये। महाप्रभु के दाहिने निताई, बाँये अद्वैत, सामने तथा बगल में भक्तगण एवं प्रांगण में हरिदास ठाकुर बैठ गये। स्नेह पूर्वक शची माता सबको यथाक्रम से फल, मिष्टान्न,पक्वान्न तथा अन्न, व्यंजनादि परोसने लगीं। श्री राधा के श्री कृष्णाधरामृत आस्वादन के भाव में प्रभु विवश होकर स्तंभ भाव को प्राप्त हुए। यह दर्शन कर भक्त वृन्द भी अपने-अपने ब्रज भाव में मग्न होकर स्तंभ भाव के उदय से भोजन से विरत हुए। तब शची माता व्याकुल होकर बोलीं—"हे बाप विश्वम्भर! भोजन में मन्द रुचि क्यों है? सभी स्तब्ध क्यों हो रहे हो? स्वस्थ होकर सभी अपनी-अपनी रुचि के अनुसार द्रव्यादि का भोजन करो।" माता के वाक्य से सभी सचेतन होकर भोजन करने लगे एवं माता भी स्नेहपूर्वक सबके पात्र में बार-बार उत्तम द्रव्यादि परिवेशन करके आग्रह सहित उन्हें भोजन कराने लगीं। भोजन तथा आचमन के अंत में सबके बैठक गृह में आकर बैठने पर दासगण तांबूल देकर व्यजनादि सेवा करने लगे। तत्पश्चात् माता द्वारा गोस्वामी वर्ग तथा गुरु वर्ग को भोजन के लिए बुलाने पर उन सबके द्वारा तीन प्रभु का अवशेषामृत थोड़ा-थोड़ा लेकर भोजन करने के लिए बैठने पर माता ने स्नेह पूर्वक उन्हें परिवेशन करके परितृप्त किया उन सबके भोजन के अंत में आचमन करके महाप्रभु के निकट आने पर साधक दास सबका अधरामृत तथा माता द्वारा दिया गया विविध प्रसाद भोजन करके आचमन के अंत में स्थान पात्रादि संस्कार करके श्री

Scanned by CamScanner

गुरुदेव के निकट आया।श्री मन्महाप्रभु द्वारा दोनों भाई तथा भक्त वृंद को विश्राम की अनुमति प्रदान करने पर सभी ने अपने-अपने शयनालय में विश्राम किया। साधक दास महाप्रभु के श्री चरण संवाहन करने लगा। उनके निद्रित होने पर श्री गुरुदेव के श्री चरण संवाहन करके उनके पाद मूल में ही साधक दास ने शयन किया।

इति नवद्वीप की सायाह्न लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

प्रदोषलीलाः नवद्वीपः ६ दंड

(रात्रि ८ बजकर २४ मिनट से लेकर १० बजकर ४८ मिनट तक)

नवद्वीप : प्रदोष लीला सूत्र :

समूत्कंठासन्नाकलितहरिवार्ता वत यथा-
भिसृत्यासौ राधा हरिमपि निकुंजे गतवती।
तथात्मानं मत्वा कटिनिहित पाणिर्विशति च
स्खलन् गच्छन् गौरो नटति धृतकंपाश्रु-पुलकः।।

प्रदोष काल में श्री गौर सुन्दर परमोत्कंठा पूर्वक अभिसारिका श्री राधा के भाव में व्याकुल चित्त से अश्रु ,कंप, पुलकादि सात्विक भाव व्याप्त देह से स्खलित गति में कटि देश पर हाथ रखकर भक्तों के साथ श्री वास आँगन के माधवी मंडप में गमन करते हैं—हे मन! तुम उन्हीं भाव निधि श्री गौरांग का स्मरण करो।

नवद्वीपः महाप्रभु का जागरण तथा भावावेश :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु अपने गृह के शयन मन्दिर में रत्न पलंग पर सुखपूर्वक शयन कर रहे हैं। शयन मन्दिर के समीप वाले उद्यान में मल्लिकादि कुसुम विकसित हो रहे हैं, फूल-फूल पर भ्रमर गुँजार कर रहे हैं, कोकिल वृंद 'कुहू कुहू' पंचम तान में मधुर रव कर रहे हैं। पुष्पों की मधु गंध से वायु चारों दिशाओं को सुरभित कर रही है। कुसुम की गंध तथा भृंग कोकिल आदि के रव से ब्रजभाव में महाप्रभु ने जागृत होकर हुँकार की। हुँकार श्रवण कर भक्त वृन्द जागकर हस्तमुखादि प्रक्षालन करके महाप्रभु के शयन मंदिर में आये। महाप्रभु के शयन कक्ष में आकर सभी उन्हें घेरकर बैठ गये। साधक दास ने स्वर्ण कुल्लादानी लाकर स्वर्ण पात्र के सुगन्धित जल से श्री मन्महाप्रभु का मुख प्रक्षालन कराया तथा पतले एवं सुकोमल वस्त्र से मुख पोंछकर व्यजनादि कालोचित सेवा करने लगा। महाप्रभु का भाव जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी ब्रज में श्रीराधा के निकट नन्दालय से इन्दु प्रभा सखी का आगमन तथा नन्दालय की वार्ता कथन प्रसंग गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

प्रदोष लीलाः ब्रजधामः ६ दंड

(रात्रि ८ बजकर २४ मिनट से लेकर १० बजकर ४८ मिनट तक)

ब्रजधाम : प्रदोषलीला सूत्र :

राधां सालीगणान्तामसितसितनिशायोग्यवेशां प्रदोषे
दूत्या वृन्दोपदेशादभिसृत-यमुनातीरकल्पागकुंजाम् ।

Scanned by CamScanner

कृष्णं गोपैः सभायां विहितगुणिकलालोकनं स्निग्धमात्रा
यत्नादानीय संशायितमथ निभृतं प्राप्तकुंजं स्मरामि।।

प्रदोष काल में जो कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष की रात्रि के उपयोगी कृष्ण वर्ण तथा शुभ्र वर्ण की वेश-भूषा धारण करके सखियों सहित मिलकर वृंदादेवी के निर्देशानुसार दूती सहित यमुनातीर के निकट कल्पतरु सुशोभित कुँज में अभिसार करती हैं उन्हीं श्री राधा का एवं जो गोप वृंद के साथ राज सभा के मध्य कलाविद गणों के विविध कौशल दर्शन पूर्वक स्नेहमयी जननी द्वारा बुलाये जाने पर सभा से आकर शैय्या पर शयन करते हैं तथा गुप्त रूप से संकेत कुँज में अभिसार करते हैं—उन्हीं श्री कृष्ण का मैं स्मरण करता हूँ।

ब्रजधाम : इन्दुप्रभा सखी प्रशंग :

ब्रज के जावट में प्रेममयी श्री राधा रत्न पलंग पर शयन कर रही हैं। कुछ समय तक विश्राम करने के बाद श्री कृष्ण मिलनोत्कंठा में उठ बैठीं। सखी मंजरी भी जागृत होकर हस्त-मुखादि प्रक्षालन करके श्री राधा रानी के निकट आयीं। श्री गुरुदेवी के इशारे पर साधक दासी ने स्वर्ण पात्र में सुगन्धित जल तथा स्वर्ण की कुल्लादानी लाकर श्री राधा का मुख प्रक्षालन कराकर कोमल वस्त्र से पोंछा, किंकरी गण तांबूल दान तथा चामर व्यजनादि विविध सेवा करने लगीं। इसी समय वहाँ नन्दीश्वर से इन्दु प्रभा नाम की सखी का आगमन हुआ। उन्हें देखकर श्री राधा उत्कंठा पूर्वक पूछने लगीं—"सखी! कहाँ से आ रही हो?" इन्दु प्रभा बोलीं—"नन्दालय से।" श्री राधा—"तब नन्दालय की कुशल वार्ता कहो।" तब इन्दु प्रभा कहने लगीं-"ब्रजेश्वरी माता ने रामकृष्ण तथा श्रीनन्दादि को भोजन कराकर तुलसी-कस्तूरी को विदा देकर यत्न सहित दास-दासीगण तथा अन्यान्य गोपगण को भोजन कराया। तब मातृगण ने अपनी पुत्री एवं पुत्र वधुओं सहित एकत्र बैठकर भोजन आचमनादि किया। तुलसी-कस्तूरी के चले जाने पर धनिष्ठा ने निर्जन में सुबल को तांबूल विटिका देकर अभिसार का संकेत स्थान बता दिया एवं सुबल ने भी श्री कृष्ण के शयनालय में जाकर उन्हें तांबूल अर्पण करके उस संकेत वार्ता की जानकारी दे दी।

तत्पश्चात् श्री कृष्ण कुसुम शय्या पर शयन करके आपके विरह विषादित चित्त से सुबल के स्नेहमय दोनों हाथ अपने वक्ष पर रख कर बोले— "भाई सुबल! बोलो-बोलो, आज उत्तर गोष्ठ काल में जिस असीम सुषमा राशि ने मेरे धैर्य का नाश करके मुझे अत्यंत विमुग्ध कर दिया था, इस गोष्ठ प्रदेश में वह महामोहिनी तरंगायित सुषमा सिन्धु कहाँ से आया? सखा! यह क्या माधुर्य सिन्धु मथित सुधा की मूर्ति है? अथवा वस्त्र पहने हुई ललित विद्युत तरंग है! या परिमल राज्य की मूर्तिमती साम्राज्य लक्ष्मी है। अथवा चम्पक कुसुम निर्मित कंदर्प की बाण राशि है। बलिहारी जाऊँ! उस अपूर्व कांति राशि के ऊपर क्या कुंकुमाक्त कमल फूट रहा था? अथवा उज्ज्वल रस जलधि से चित्त क्षोभ जनक किसी रमणीय पूर्ण चन्द्र का उदय हुआ था? उस

विरही श्रीकृष्ण द्वारा श्रीराधा माधुरी वर्णन।

Scanned by CamScanner

अपूर्व चन्द्र (राधा का मुख) पर मेरी दृष्टि पड़ते ही चन्द्र के अंक में नृत्यशील मणिमय दो खंजनों (नयन युगल) ने अपने पुच्छाघात (कटाक्ष) से मेरी दृष्टि को अतिशय पीड़ित किया था। प्रिय सखे! ज्यों ही मैंने संभ्रम सहित उस अद्‌भुत वस्तु के लवांश मात्र अनुभव की चेष्टा की त्यों ही वह निबिड़ (घने) जलद जाल (नील साड़ी) में तत्क्षणात् आवृत होकर श्यामल विततिं वितान (लता विस्तार) में लीन हो गयी। हाय! मेरे भाग्य में उस वस्तु का आस्वादन और घटित न हो सका। प्राण सखे! उस अर्पूव वस्तु की खोज के लिए मेरा चित्त बलवान सेना नायक के समान हो गया हैं। मेरे नयन युगल उसे पथ दिखाकर ले गये हैं। अभी तक वह वापस नहीं आया। ऐसा लगता है कि कंदर्प दस्यु ने उसे बांधकर वन पथ में ही रखा हुआ है।"

हे राधे! श्रीकृष्ण के इन प्रेमावेश पूर्ण कातर वाक्य श्रवण कर उनके प्रिय सखा सुबल प्रीतिमधुर वाक्य में बोले–"हे सखे! तुमने जिस अपूर्व वस्तु का अवलोकन किया है, वह विधाता की एक नवीना सृष्टि त्रैलोक्य विमोहिनी श्री राधा हैं! तुम्हारे दर्शन मात्र से वे भी धैर्यहीन होकर मनोवेदना के विरह ताप का भोग करते हुए सखियों को भी रुला रही हैं एवं नयन धारा बहाते हुए धरातल पर लोट रही हैं। उनकी विकलता देखकर सखीगण सजल नयन से उन्हें सान्त्वना देते हुए जैसे ही मिथ्या वचन बोलीं–"हे राधे! यह देखो! रसनिधि मुकुन्द तुम्हें सुखी करने के लिए आ रहे हैं।" वैसे ही वे चेतना लाभ करके व्याकुल भाव से बोलीं–"सखी! कहाँ हैं, कहाँ हैं, मेरे प्राण नाथ, कहाँ हैं?" यह कहकर उनके उठकर बैठ जाने पर सखियों ने अंधकार की ओर संकेत कर दिया। प्रेमोन्मादिनी श्रीमती ने उस गाढ़ तिमिर को ही तुम आ गये ऐसा जानकर लज्जा वशतः वस्त्र द्वारा मुख कमल को आवृत किया एवं इसी से उनकी विरह ज्वाला की शांति हुई।" अयि प्रणयिनी श्री राधे! सुबल के मुख से तुम्हारी विरह वेदना की बात सुनकर श्री कृष्ण के नयन कमल से अश्रु बिन्दु समूह एक पर एक करके इस प्रकार से पतित होने लगे कि उन्हें देखकर ऐसा लगा जैसे मंजु (सुन्दर) चोंच वाले दो चकोरो ने सुधांशु की किरण के भ्रम में इसके पहले जो सब मुक्ता फल भक्षण किये थे, इस समय उनका जैसे एक पर एक करके वमन कर रहे हैं। तत्पश्चात् श्री कृष्ण मुझे देखकर उत्कंठा व्याकुल चित्त से बोले–"सखी! यमुना तीर पर कल्पतरु वन में अनुरागवती श्री राधा जैसे ही शीघ्रता से अभिसार (प्रिय से मिलने के लिए जाना) करेंगी, मैं राजसभा दर्शन करके निकुँज मंदिर में जाकर शीघ्र ही उनके साथ मिलूँगा। यह बात तुम श्री राधा को अभी जाकर बोल दो।"

सुबल द्वारा श्री राधा का विरह वर्णन।

इसी समय एक राजदूत ने आकर ब्रजराज के निकट राजसभा में सभासदों तथा विविध कला-कुशल गुणी-गुणों की आगमन वार्ता की जानकारी दी। तब ब्रजराज द्वारा भ्राताओं के साथ सभा-कक्ष में आकर रत्न सिंहासन पर बैठने पर सभा में स्थित सभी परमानन्द सागर में निंमग्न हुए। जो सब विप्रगण, मुख्य नागरिक गण, गुणी वृन्द, नाना कला-कुशल नर्तक वादकादि, सूत बंदी तथा प्रजावृन्द श्री कृष्ण दर्शन के लिए सभा कक्ष में आये हुए थे, उन सबके यथा योग्य प्रीति श्रद्धा तथा अभिवादनादि सहित ब्रजराज के साथ

Scanned by CamScanner

मिलने पर उन्होंने सबके प्रति यथा योग्य गौरव, प्रणय तथा अनुकम्पा प्रकाश करते हुए सुखी किया। श्री कृष्ण दर्शन के लिए सबको उत्कंठित देखकर ब्रजराज मन ही मन सोचने लगे—"श्रीकृष्ण भोजन करके गोचारण के श्रम से थककर सो रहा है, इधर सभी उसके दर्शन के लिए उत्कंठित हैं, इस समय क्या करना कर्तव्य है"—इस प्रकार चिन्ता करते ही सहसा सखाओं के साथ श्री कृष्ण राजसभा में उपस्थित हुए एवं उस मनोरम सभा का दर्शन करके सुखी हुए।

राज्यसभा वर्णन।

वह राज सभा अति रमणीय सुविस्तृत मणिरत्नमय है। हेमकान्त मणिमय दीवार पर असंख्य मणिदर्पण शोभा पा रहे हैं। सभा में स्थित एक व्यक्ति भी वहाँ हजारों व्यक्तियों की भाँति प्रतिबिम्बित हो रहा है। उसके बाहर मणि रत्नमय गृह है-उसमें असंख्य मणि स्तंभ शोभा पा रहे हैं। सामने हेमजाल से घिरी हुई परम शोभामय रत्न वेदी है। गायक, नर्तक वृन्द वहीं नृत्य गीतादि करते हैं। प्रांगण विचित्र स्फटिक मणि से बांधा गया है। सभा के सामने तथा दोनों बगल स्वर्णमय गृह मणि स्तम्भों से सुशोभित है। सभा के बाहर, अंदर, चबूतरा प्रांगणादि के ऊपर वाले भाग में विचित्र चंदवा शोभा पा रहा है। मध्य स्थल में माणिक्य जड़ित राज सिंहासन पर स्वयं ब्रजराज समासीन हैं। बाँये मणिमय सिंहासन पर मंत्रीवर्य उपानन्द आसीन हैं। दोनों सिंहासनों के बाँये तथा दाहिने दो रत्न सिंहासन हैं—जिस पर श्रीकृष्ण तथा बलदेव दानों युवराज बैठते हैं। श्री कृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता गण, मुख्य-मुख्य राज पात्रगण यथा-योग्य श्रेणी बद्ध होकर रत्नासन पर बैठे हैं। स्वर्ण बेंतधारी सैकड़ों सैनिक सुन्दर भाव से खड़े हैं। दास गण निरंतर असंख्य श्वेत चामर व्यजन कर रहे हैं। राज सभा उदय गिरि पर सहसा श्री कृष्ण चंद्र के उदय होने पर सभा सदों के हृदय-सिन्धु उच्छलित हो उठे! नयन चकोर सौन्दर्यामृत आस्वादन में विभोर हुए। हास्य कुमुदनी विकसित तथा रम्यौषधि प्रफुल्लित हो उठी। श्री कृष्ण ने सभा में स्थित ब्राह्मणों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया तथा भक्ति पूर्वक गुरुजनों की चरण वंदना की। सखाओं को हास्य दृष्टि सहित तथा प्रजावृंद को सदयावलोकन के साथ संभाषण करके मुस्कान के साथ आसन ग्रहण किया।

श्रीकृष्ण दर्शन से सभासदों का आनंद।

उस समय विप्र गण वेद ध्वनि के साथ जय-जय कार करने लगे। वन्दीगण विरुदावली (वंश का यश कीर्तन) स्तुति तथा वादक गण नाना प्रकार की वाद्य-ध्वनि करने लगे। जनगणों की समवेत हर्ष ध्वनि उठने पर घोष (कोलाहल को 'घोष' कहते हैं एवं गोप गणों के आवास को भी 'घोष' कहते हैं) नाम की सार्थकता सम्पादन की। ब्रजराज के आदेश पर स्वर्ण बेंतधारी सैनिक गण ने कर चालन द्वारा सबको हटाकर यथा स्थान पर बैठा दिया। तत्पश्चात् नाना प्रकार के कला कुशल व्यक्तिगण ब्रजराज के इशारे पर पृथक-पृथक अपनी-अपनी कलाओं का प्रदर्शन करके सभासदों को आनंद प्रदान करने लगे। कोई लास्य (स्त्रीनृत्य) कोई तांडव (पुरुष नृत्य) कोई-कोई श्री नृसिंह, श्री रामचन्द्रादि का चरित्र अभिनय, कोई अति आश्चर्य जनक इन्द्र जाल प्रदर्शन करने लगे। कोई पौराणिक कथा, कोई नाना प्रकार के गान, वाद्य, किसी-किसी

Scanned by CamScanner

कलाविद् गणों द्वारा कला प्रदर्शन। ने श्री कृष्ण की मधुमयी लीला कथा (जन्मादि क्रम से) वर्णन करके सभासदों को संतुष्ट किया। ब्रजराज तथा सभासदगण ने परितुष्ट होकर उन कलाकारों को प्रचुर धन, वस्त्र, भूषणादि दान किया यद्यपि वे सभी पूर्ण काम थे, श्री कृष्ण दर्शन तथा सेवा के अतिरिक्त उनकी अन्य कोई कामना नहीं थी, तथापि आचार वशतः उन सभी ने वह ग्रहण किया। सभासद वृंद के नयन चकोर श्री कृष्ण मुख विधु (चंद्र) की हास्यामृत रस माधुरी का अतृप्त प्राणों से पान करने लगे।

इसी समय 'रक्तक' नामक दास ने आकर बृजराज से कहा—"हे राजन! माता ब्रजेश्वरी श्री राम कृष्ण के दर्शन की अभिलाषा करती हैं।" यह सुनकर ब्रजराज द्वारा श्री राम-कृष्ण को घर जाने का आदेश

श्रीराम-कृष्ण का मातृ मंदिर गमन। करने पर श्री कृष्ण ने सबको स्निग्ध संभाषण तथा स्मित सुधा वर्षण से संतुष्ट करके बलदेव, मधुमंगल एवं सखागण के साथ माता के मंदिर की ओर गमन किया। एक सुमार्जित रत्न वेदी पर सबके आनंदित मन से बैठने पर माता ने नयन नीर तथा स्तन क्षीर से वक्ष वसन को भिगोते हुए शक्कर तथा कर्पूर युक्त थोड़ा गर्म गाढ़ा दुग्ध परम स्नेह पूर्वक उन्हें पान कराया। तदोपरान्त सखागण के अपने-अपने घर चले जाने पर श्री रोहिणी तथा यशोमती ने श्रीकृष्ण, बलदेव तथा मधु मंगल को अपने-अपने शयन मंदिर में शयन कराया। इसके बाद जिस प्रकार से उनका स्वच्छंद रूप से निद्रा सुख सम्पन्न हो, दासगण को तद्रूप सेवा में नियोजित करके माँ स्वयं अपने

माता द्वारा श्री कृष्ण को शयन कराना। शयनालय में मन्द गति से जाने लगीं। स्नेह व्याकुल चित्ता माता कुछ दूर जाकर पुनः वापस आकर दासगणों से बोलीं—"वत्सगण! मेरा पुत्र धेनु वत्सादि चारण तथा वन विहार से परिश्रांत होकर शयन कर रहा है, जिससे प्रातः काल तक सुख पूर्वक सो सके, उसी प्रकार से सावधान होकर रहना। उच्चवादियों (जोर से बोलने वाले) को यहाँ नहीं आने देना।" इस प्रकार से माता यशोदा श्री कृष्ण को शयन कराकर अपने शयनालय में चली गईं। श्रीकृष्ण सामने वाले दरवाजे की अर्गल लगाकर खिड़की वाले गुप्त द्वार से संकेत कुँज में आभिसार करेंगे। अतएव हे राधे! आप शीघ्र ही वेश-भूषा से सज्जित होकर अभिसार करो।" यह बात कहकर इन्दुप्रभा सखी के नन्दीश्वर चले जाने पर गुरुजन वर्ग निद्रित हुए हैं या नहीं यह जानने के लिए श्रीमती ने सुचतुरा किंकरी तुलसी को नियुक्त किया। सखीगण श्रीमती की अभिसारोपयोगी वेश-भूषा सम्पादन का आयोजन करने लगीं।

नवद्वीप : महाप्रभु का अभिसारानुकरण :

नवद्वीन में महाप्रभु परिकर सहित शयनालय के बरामदे में स्वरूप के गान से भावाविष्ट हैं। इन्दुप्रभा सखी की वार्ता सुनकर प्रेमावेश में हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। भक्त वृन्द के भी बाह्य दशा लाभ करने पर श्री स्वरूप गोस्वामी ने गान समापन किये। ब्रजलीला की मधुर स्मृति में महाप्रभु का मन उत्कंठा से भरपूर है। आरक्त नयन युगल अश्रुपूर्ण तथा व्याकुलित हैं, कदम्ब केशर के समान देह पुलकित

Scanned by CamScanner

है। स्वरूप दामोदर एवं रामनन्द का हाथ पकड़कर गद्‌गद कंठ से बोले—"सखी! शीघ्र मुझे निकुँज में ले चलो-और अधिक विलंब सहन नहीं हो पा रहा है।" यह कहकर प्रभु गजेन्द्र गमन के समान-भयपूर्ण नेत्रों से इधर-उधर अवलोकन करते हुए गणों सहित अभिसारिका राधा के भाव में उत्कंठा तरंगों से भासमान होकर चलने लगे। कभी स्खलित गति, कभी मंथर गति, तो कभी तीव्र गति से श्रीवास मन्दिर में आये। श्री वास के दिव्य प्रांगण में मनोहर रत्न मंडप में जाकर संध्या गगन के तारागणों से घिरे हुए चन्द्रमा की भाँति अपने गणों से घिर कर बैठ गये। स्वरूप प्रभु का मन जानकर श्री राधा के अभिसार, गोविन्द स्थली की नैसर्गिक शोभा तथा श्री कृष्ण-मिलन पद मधुर स्वर में गान करने लगे। उसे श्रवण कर सभी व्रजरस सिन्धु में निमग्न हुए।

ब्रजधाम : श्री राधा का अभिसार तथा श्री कृष्ण मिलनादि :

ब्रज में अभिसारोत्कंठिता श्री राधा सखियों के साथ बैठी हुई हैं। चित्त प्रिय मिलनाकांक्षा से व्याकुल है। इसी समय तुलसी ने आकर संवाद दिया—"गुरुजन तथा समस्त पुर वासी निद्रामग्न हैं, अतः अभिसार के लिए यह उत्तम अवसर है।" यह सुनकर सभी आनंदित हुई एवं गगन में पूर्ण चन्द्र का उदय देखकर

सखियों के साथ श्री राधा का शुक्लाभिसार।

सखीगण श्री राधा की शुक्लाभिसार की वेश रचना करने लगीं। कर्पूर चंदन के पंक द्वारा श्री अंग चर्चित करके शुभ्र वस्त्र पहनाया। विशाखा ने स्वर्ण कंघी द्वारा केश संस्कार करके वेणी रचना की एवं मल्लिका पुष्प के गर्भक (बालों के बीच धारण की हुई पुष्प माला) से जूड़ा बाँधा। सीमान्त में सिन्दूर देकर चंद्रकान्त मणि की सिंथी (मांग) तथा कर्ण में हीरे का अवतंस (कर्णाभूषण) पहनाया। नासाग्रे गज मुक्ता नोलक (नथ) पहनाकर उनके सुन्दर गल देश में मुक्ता माला एवं कुंद तथा मल्लिका कुसुम की माला पहनाई। मुक्ता तथा हीरक मणि का वलय, चूड़ी, अंगद आदि पहनाकर करांगुली में चन्द्रकांत मणि की मुद्रिका पहनाई। कटि में शुभ्रवर्ण कांची डालकर शुक्लाम्बर की उत्तरीय देकर दाहिने हाथ में श्वेत कमल दिया। नूपुर, किंकणी इत्यादि को रूई द्वारा निः शब्द करके सखीगण ने भी तदनुरूप वेश-भूषा रचना करके उत्कंठा सहित संकेत कुँज में अभिसार किया। (कृष्ण पक्ष की रात्रि के अभिसार में मृगमद द्वारा अंग लेपन, नील वसन परिधान, नील मणि का अलंकार तथा नील कमल का गर्भकादि पहनाकर अभिसार होता है।) श्री राधा के चारों ओर सखी गण, उनके पीछे मंजरी एवं गुरु मंजरी वर्ग सभी के पीछे साधक मंजरी ने मिष्टान्नादि का सम्पुट लेकर गमन किया। वृक्ष समह के छायावृत रास्ते से होकर अन्य लोगों से छिपकर भय चकित नेत्रों से चारों ओर निरीक्षण करते-करते दूर से वंशीवट की उच्च शाखा को लक्ष्य करके कृष्ण सिन्धु के साथ मिलनाकांछा लेकर तीव्र गति से सुरतरंगिनी श्री राधा चलने लगीं। चिन्मय ब्रज भूमि अति वेगवान यंत्र की भाँति (यंत्रारूढ़ व्यक्ति जैसे अनायास ही स्वल्प समय में बहुत दूर गमन करने में सक्षम होता है उसी प्रकार) सखियों सहित श्री राधा को अपने हृदय कमल में धारण करके क्षणकाल के अंदर ही श्रीमती के अभीष्ट

Scanned by CamScanner

स्थान यमुना के समीपवर्ती संकेत निकुँज स्थल में ले गयी। वे घुटने तक जल के यमुना निर्झर को पार होकर "श्री गोविन्द स्थली" नामक सर्व सुखसार महा आचिन्त्य योग पीठ को प्राप्त हुईं।

श्री वृन्दा देवी वन देवियों के साथ विचित्र सेवा-उपचार कुँज-कुँज में सुसज्जित करके श्री राधा कृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा में दृष्टि लगाये हुई हैं। इसी समय सहसा अपनी ईश्वरी श्री राधारानी को सखियों के साथ देखकर परमानंद में उठकर शीघ्र ही आगे होकर श्री राधा के निकट आकर श्रीकृष्ण कर्ण-भूषण के लिए दो रक्त संध्यक (रक्त कहलार पुष्प) उनके हाथों में देकर सखियों सहित श्रीमती को वन शोभा दर्शन कराते-कराते निकुँजराज की ओर ले चलीं। श्री वृंदा देवी उनसे बोलीं—"हे सखीगण! देखो-देखो! श्री गोविन्द स्थली की नैसर्गिक शोभा कितनी मनोरम है! यहाँ शाल, ताल, तमाल, अश्वत्थ, बकुल, नारियल, आम्र, कोविदार, पियाल, बिल्व, जम्बीर, पलाश, कटहल, वट, देवदारु, कदम्ब, अशोक, पारिजात, मन्दार, हरिचन्दनादि वृक्ष राशि पर माधवी, मल्लिका, स्वर्णयूथी, जाति, यूथी, अपराजिता, कुन्द इत्यादि लतावली विजड़ित होकर कितनी मनोरम शोभा का विस्तार कर रही हैं। इस योगपीठ के वृक्ष लतादि सभी कल्पवृक्ष तथा कल्पलता तुम्हारा सर्वाभीष्ट पूर्ण करने में समर्थ होने पर भी तत्तद् जातीय वृक्ष तथा लता रूप में ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं। यहाँ जल में चंचल 'शाल' समूह (मत्स्य विशेष) तथा स्थल में स्थिर शाल गण (वृक्ष विशेष) एवं जल में चंचल रोहित (मत्स्य विशेष) तथा स्थल में विचरण शील रोहित (मृग विशेष) तथा स्थिर रोहित (वृक्ष विशेष) शोभा पा रहे हैं। मुनिगणों के आश्रम जैसे हारीत, भरद्वाज तथा शुक नामक मुनियों के कर्णामृत वाक्य द्वारा मुखरित एवं वत्स, गालव, शांडिल्य नामक मुनियों से समलंकृत हैं, उसी प्रकार से यह स्थान भी हारीत, भरद्वाज तथा शुक पक्षी के कर्ण सुखद मधुर रव से कोलाहल पूर्ण तथा वत्स, गालव एवं शांडिल्य नामक वृक्षों से सुशोभित है। चार, छः, तथा अष्ट कोण युक्त एवं गोलाकर, विविध मणि भूषित सब ओर सोपान युक्त, गल देश, वक्षः स्थल, उदर, नाभि, जानु तथा उरु के परिमाण में उच्च आलबाल (जलाधार) युक्त वेदिका समूह वृक्षों के मूल देश में निबद्ध होने के कारण अति मनोहर शोभा हो रही है। जो वृक्ष जिस वर्ण का है उससे भिन्न वर्ण की वेदी तथा भिन्न वर्ण का आलबाल (जलाधार) शोभा पा रहा है। पुनः इन्द्र नील मणिमय भूमि पर हेम वर्ण, स्फटिक मणि की भूमि पर प्रवाल वर्ण, स्वर्ण वर्ण भूमि पर स्फटिक वर्ण, अरुण मणिमय भूमि पर इन्द्रनील मणि वर्ण एवं मरकत मणिमय भूमि पर पद्म राग वर्ण वृक्ष समूह सुशोभित हैं। इस स्थान के लता समूह स्वभाव से ही माल्याकृति कुसुम समुहों से आकीर्ण एवं उनके कूष्मांड (कुम्हड़ा, काशी फल) तथा लौकी के समान फल सभी आप सबकी लीला के उपयुक्त वस्तु के साथ अविरत शोभा पा रहे हैं। *

वृन्दा द्वारा गोविन्द स्थली वर्णन।

* श्री राधा कृष्ण के सखियों सहित जल विहार करके कुँज में आने पर वृन्दादेवी ने तुम्बाकृति बहुत से फलों को वृक्ष तथा लताओं से तुड़वाकर मंगवाया तो उनके अन्दर से श्रीकृष्ण श्री राधा तथा सखियों के नामांकित वस्त्र भूषण पाये गये।

Scanned by CamScanner

इस योगपीठ के घन-सन्निविष्ट पल्लवादि युक्त वृक्षों की शाखा-प्रशाखा में अनेकों कुसुमित लता श्रेणी विजड़ित होकर कुँज समूह सुरम्य मणिमय अट्टालिका की भाँति शोभा पा रहे हैं। यह कुँज गृह समूह नाना मणि निर्मित विचित्र भू-भाग कुसुम रचित शय्या, चन्द्रातप, उपाधान, भूषण, मधुपूर्ण पान पात्र, सुवासित जल, तांबूल, चन्दन तथा केशरादि के मणिमय पात्र, व्यजन, चामर, दर्पण, सिंदूर, अंजन तथा अलक्त (महावर) पात्र इत्यादि आप सब की विविध विलास सामग्रियों से भरपूर हैं। कपोत, पारावत, कोकिल, हारीत, कपिंजल, टिट्टिभ, मयूर, चकोर, चातक, चाष, लाब, बत्तख, शुक-सारिका,चटक, कलिंग (फिंगा), चरणायुध (मुर्गा), तित्तिर, भरद्वाज, भाष एवं कौक्कुभ नामक पक्षी समूहों के मधुर रव तथा विहार द्वारा यह कुँज समूह श्रवण तथा नयन को (शब्द द्वारा श्रवण तथा उनके रूप द्वारा नयन को) आकर्षण कर रहा है। इन सब कुँज गृह समूहों के मध्य स्थान में कनक स्थली है—जिसका स्वर्णमय भूखण्ड रत्न समूहों से चित्रित तथा कल्प तरु के निकुँज मंडल द्वारा घिरा हुआ है। इस कनक स्थली के मध्य भाग में विचित्र मणि रचित मंदिर-सोपान श्रेणी द्वारा मनोहर वेदिका बद्ध तथा चारों कोने में मन्दारादि कल्पतरु चतुष्टय से घिरा होकर शोभा पा रहा है। जिस मंदिर के मध्य में कांचन निर्मित अष्ट दल कमल सदृश अपूर्व सिंहासन विराजित है। उसी सिंहासन के नीचे चार रत्नमय सिंह जैसे उड्डीयमान हैं। अंग की कांति ही उनके पंख स्वरूप है, अग्रभाग के दो पद ऊपर उठे हुए हैं, पीछे के दो पदों पर देह भार अर्पित है। उनकी देह सूर्य कान्त मणिमय है, दोनों नयन माणिक्यमय हैं, पिंगल वर्ण केशर है, दोनों कर्ण तथा पुच्छ ऊपर की ओर हैं—वे जैसे आकाश में उड़े जा रहे हों ऐसा प्रतीत होता है। यह सिंहासन अष्ट दल पद्माकृति है। मणि कांति जाल ही जैसे उसका केशर है, मध्य में मणि कर्णिका सुचारु (सुन्दर) खट्टार (खटिया) के समान उत्तम तोषकादि (तकियादि) से परिमंडित है। इस मणि मंदिर के आठों ओर कल्पलतावृत कल्प वृक्ष से शोभित मनोहर अष्ट कुँज विराजमान हैं। उन आठ कुँजों के बाहर क्रमशः दुगुनी संख्या में अर्थात् सोलह, उसके बाहर बत्तीस, उसके बाहर चौसठ इस प्रकार से बहु-संख्यक कुँजावली विराजमान है। उसके बाहरी भाग में हेम स्थली स्वर्ण कांति से झलमल कर रही है। उसमें रत्नमय मृग, पक्षी मिथुनी भाव में शोभा पा रहे हैं। उसके बाहरी मंडल में केलावन है, वहाँ सुशीतल पत्र तथा फलयुक्त होकर सतत् कदली वृक्ष परिशोभित हो रहे हैं। जिनके बल्कल से उत्तम कर्पूर उत्पन्न होता है। उसके बाहरी मंडल में पुष्पोद्यान है। सतत् नाना जातीय पुष्पों ने प्रस्फुटित होकर परिमल से दिक् मंडल को सुरभित कर रखा है। उसके बाहर फलोद्यान में फलभार से अवनत होकर शाखा युक्त वृक्षावली जहाँ शोभा पा रही है। उस पुष्पोद्यान तथा फलोद्यान की सीमा के अंत में सेवोपकरण से परिपूर्ण अनेकों मनोहर गृहावली विराजमान हैं। उन गृहों में सैकड़ों कुँजदासीगण अध्यक्षागणों की आज्ञाक्रम से नाना प्रकार के सेवा संभार को सुसज्जित करके रखती हैं। उसके बाहर लतावली से घिरी हुई विविध वृक्षावली विराजमान है। उसके बाहर सुपारी वन है। जिस वृक्ष का हरित वर्ण पीला तथा लाल फलों का गुच्छा हाथ द्वारा ही ग्रहण किया जाता है। उसके बाहरी मंडल में

Scanned by CamScanner

नारियल वन है—जिन वृक्षों के फल गुच्छ समूह आलबाल के ऊपर ही झूल रहे हैं। उसके बाहर यमुना का उपकुल (किनारा) है—वहाँ चम्पक, अशोक, कदम्ब, आम्र, पुन्नाग तथा बकुलादि वृक्ष श्रेणी विरचित निकुँज समूह है। जिनकी शाखा पल्लवादि माधवी लता से समाकीर्ण होकर यमुना के नीर को स्पर्श कर रही है। वेतस-कुँज द्वारा भी यमुना तट का दिक् मंडल आच्छन्न है। मणि मंदिर से आरम्भ करके यमुना के नीर तक चारों ओर से घिरे हुए चार प्रशस्त पथ शोभा पा रहे हैं। रत्न बद्ध पथ दोनों बगल से बकुल वृक्ष श्रेणी द्वारा घिरे हुए हैं। इसी योगपीठ के ईशान कोण में मणि जड़ित तट युक्त 'ब्रह्म कुण्ड' है। उसके ईशान में 'गोपीश्वर' नामक शिव विराजमान हैं, उसके उत्तर में यमुना तट पर वंशी वट विराजित है। श्री कृष्ण वंशीवट की निम्न वेदिका पर त्रिभंग मुद्रा में खड़े होकर ब्रजरमणियों की चित्ताकर्षक वंशी ध्वनि द्वारा उनका आकर्षण करते हैं।

देखो-देखो, इस मनोहर गोविन्द स्थली को घेर कर जो विराज रही है - उस यमुना की क्या अपूर्व शोभा है। जानु, उरु, कटि, नाभि, वक्ष, कंठ तथा मस्तक परिमित जल एवं कहीं अगाध जल द्वारा मनोहरा यमुना आप सब के साथ श्री कृष्ण का जलकेलि सुख विस्तार कर रही है। कुमुद, कमल, कह्लार, कोकनद, इन्दीवर, रक्त सन्ध्यक, स्वर्ण पद्म इत्यादि पुष्पों से समाच्छन्न यमुना का तीर इन सबके पराग द्वारा सतत् सुगन्धित है। इन सब पुष्पों के सौरभ से उन्मत्त होकर भ्रमरों का फूलों पर मधुर रस विलास चल रहा है।

यमुना तथा पुलिन की शोभा वर्णन।

हंस, सारस, चक्रवाक, टिट्टिभ, कारण्डव तथा खंजन पक्षियों की सविलास ध्वनि से जिस तीर का नीर कोलाहलपूर्ण है। तट प्रदेश में स्वच्छन्द रूप से गोकर्ण, शम्बर, कृष्णसार, एण, रंकु (गवय), शशक, गन्धर्व, रोहित, समरू, चमरू तथा चीन नामक भिन्न भिन्न प्रकार के मृग समूह विचरण कर रहे हैं। सुविस्त्रित पुलिन का कोई अंश जलप्रपात से परिवृत, दूसरा प्रांत माधवीलता के मनोरम निकुँज समूह से परिवृत है। अन्य अंश कुसुमित उपवन से आवृत हैं, किसी अंश में कर्पूर चूर्ण के समान सुकोमल बालुका राशि विस्तीर्ण है, चन्द्र किरण के निपतित होने से जो और अधिक उजलित हो रही है। वहाँ श्री कृष्ण के साथ आप सब के रास नृत्य के समय के पद चिह्न विराजित हैं। वही रास स्थली यमुना पुलिन में विराजमान है। योगपीठ की उत्तर दिशा में यमुना पुलिन तथा तीरवर्ती अरण्य नीर की शोभा से अतिशय मनोरम है। बीच-बीच में अनेक निर्झर रासस्थली को घेरकर शोभा पा रहे हैं।"

इस प्रकार से श्री वृन्दा देवी द्वारा गोविन्द स्थली तथा योगपीठ मणि मंदिर की शोभा वर्णन करके दिखलाने पर सखियों सहित श्री राधा ने परमानन्द लाभ किया। स्वत: भावोद्दीपक, चन्द्र किरणों से

श्री राधा की उत्कंठा।

समुज्ज्वल, स्वभाविक सन्दर वन शोभा के दर्शन से प्रेममयी विपुल कृष्ण भावोद्दीपन से अतिशय अधीर हो गई। उनकी धैर्य राशि विपुल भाव झटिकावर्त (तूफान का भँवर) में पड़कर रूई पिण्ड के समान उड़ गई। उनका चित्त मन श्री कृष्ण प्राप्ति की आशा रूपी

Scanned by CamScanner

नदी प्रवाह के उत्कंठावर्त में घूर्णायमान होने लगा। वे बार-बार कुँज के अन्दर तथा बाहर आवागमन करके श्री कृष्ण के आगमन पथ का निरीक्षण करने लगीं। वृक्ष के शुष्क मर्मरित पत्ते के पतन शब्द से कान्त आगमन की संभावना से उनका चित्त आनन्दोल्लास में चौकने लगा। दूसरे ही क्षण, वे आये नहीं यह जानकर निराशांधकार उनके हृदय में व्याप्त हो गया। कभी वृन्दा से बार-बार कान्त आगमन वार्ता पूछने लगीं, तो कभी विविध विलास का संकल्प-विकल्प करने लगीं, कभी स्वयं को बार-बार विविध भूषणों से भूषित करने लगीं, तो कभी सज्जित कुसुम शय्या को पुनः सज्जित करने लगीं, कभी उज्वलित दीप माला को और अधिक उज्वलित तथा कपूरादि वासित तांबूल को अधिकतर वासित करने लगीं। क्षणकाल भी उन्हें श्री कृष्ण के बिना कल्प के समान प्रतीत होने लगा। इसी समय विधुमुखी (चन्द्रमुखी) प्रेमभ्रांति वशतः स्वर्ण वेदी पर ज्योत्स्ना जाल विमंडित तथा पवनान्दोलित एक नवीन तमाल वृक्ष देखकर कान्त का आगमन हुआ है यह जानकर सखियों से युक्ति करके उनसे परिहास करने के लिए एक रत्न मंदिर में प्रवेश किया। वहाँ रत्न प्रदीप धारिणी सब स्वर्ण प्रतिमा श्रेणी बद्ध रूप से विराज रही हैं। श्रीमती आत्मगोपन के लिए उनके बीच में स्वर्ण प्रतिमा के समान खड़ी हो गई।

इसी समय श्री कृष्ण के वृक्षाच्छन्न पथ से होकर वहाँ आने पर वृन्दादेवी ने हर्ष के साथ उनके निकट आकर कर्णिकार पुष्प रचित दो कर्ण भूषण उनके हाथ में समर्पित किये। श्री कृष्ण के आगमन से

श्रीकृष्णके आगमन से सखियों का आनंद।

ललितादि सखीगण बसन्त कालीन माधवी लता के समान दृष्ट होने लगीं। पुलक ही उनके मुकुल, आनंदाश्रु ही मकरन्द, मदन विकार रूपी मलय पवन से कंपित उनकी देहवल्लरी, हास्य कुसुम से शोभिम गद्‌गद रुद्ध कंठ ध्वनि ही भ्रमर ध्वनि के समान हुई। उनकी भाव दशा देखकर आनंदित मन से श्री कृष्ण उन सबसे बोले-"हे सखीगण! तुम सब की सखी श्री राधा कहाँ हैं?" सखी गण बोलीं-"वे अपने भवन में अवस्थान कर रही

श्रीकृष्ण एवं सखियों का संलाप।

हैं।" श्री कृष्ण-"उन्हें छोड़कर तुम सब क्यों आई?" सखीगण-"हम सब उनकी सूर्य पूजा के लिए पुष्प चयन करने आई हैं।" श्री कृष्ण-"तब उनका अंग सौरभ यहाँ कैसे आ रहा है?" सखीगण-"निरंतर उनके साथ एकत्र रहने के कारण हम सब के अंग से वही सौरभ निकल रहा है।" श्रीकृष्ण-"झूठी बात।" सखीगण-"यदि झूठ है तो अच्छा ही है। खोजकर देखो कहाँ हैं?" श्रीकृष्ण-"चन्द्रमा के उदय के बिना जैसे ज्योत्स्ना दर्शन संभव नहीं है, उसी प्रकार राधा के बिना इस वन में तुम सबका आगमन ही संभव नहीं हो सकता।" सखीगण-"ओहे! यह चन्द्रमा का उदय नहीं है, वृषभानुजा (ज्येष्ठ मास की सूर्य रश्मि) का अपूर्व उदय है। जो अपने कांति जाल द्वारा चन्द्र (चन्द्रावली) को म्लान करके तुम्हें इतना उत्कंठित कर रही है।"

श्रीकृष्ण ने इस प्रकार से सखियों के साथ हास्य-परिहास रस का विस्तार करते हुए कान्ता के दर्शन के लिए उत्कंठित होकर वृन्दा के इशारे पर स्वर्ण मंदिर में प्रवेश किया। स्वर्ण मंदिर की पीतच्छटा राधा की

Scanned by CamScanner

अंग कांति से दोगुनी उज्वलित होने से श्रीकृष्ण के निकट सब कुछ स्वर्णमय प्रतीत होने लगा। श्रीकृष्ण की श्यामल अंग कांति उस स्वर्ण छटा के साथ मिलने से मंदिर स्थित सभी वस्तुओं को ही श्री राधा मरकत मणिमय देखने लगीं। श्रीकृष्ण दर्शन के लिए आनंद जड़ता के कारण श्री कृष्ण स्वर्ण प्रतिमा के मध्य श्री राधा का अन्वेषण करके भी उन्हें स्वर्ण प्रतिमा ही समझने लगे। श्री राधा उत्कंठा, हर्ष, वाम्य, भय इत्यादि नाना भावों के उदय से श्रीकृष्ण के साथ मिलन की एक ही साथ इच्छा तथा अनिच्छा से व्याकुलित हो गई। अंत में लालसा के प्रबल होने पर प्रियाजी के कराग्र भाग ने श्रीकृष्ण को स्पर्श किया। गोविन्द स्पर्श से श्री

श्रीराधा कृष्ण की मिलन माधुरी।

राधा के अंग में हर्ष के कारण पुलक, कंप, अश्रु, वैवर्ण्यादि सात्विक भाव के उदय होने पर भी वाम्य में भरकर उन्होंने भृकुटि कुटिल करते हुए अपना हाथ खींच लिया। श्री राधा के सहास्य मुख, अरुण नेत्रान्त, कुटिल नयन, अश्रुसिक्त पक्ष्मराशि (पलकें), हेला, उल्लास, चापल्यादि नाना भावों का उदय हुआ। वे कटाक्ष के साथ हुँकार सहित श्री कृष्ण की भर्त्सना करने लगीं। श्री मती के नाना भावमय मुखचंद्र के दर्शन से श्री कृष्ण आनंद सरोवर में तैरने लगे। दोनों की कर्ण, नासिका, नयन, त्वक (त्वचा) तथा रसना, शब्द, स्पर्शादि अपने-अपने आकांछित विषय के लोभ में परस्पर के अंग राज्य में प्रवेश करके उसे लूटने लगे। श्री कृष्ण के पक्ष में बलपूर्वक प्रत्यक्षत: तथा श्री राधा के पक्ष में वाम्य भाव द्वारा अपने धन की रक्षा के छल से कौशल पूर्ण लूट चलने लगी। कामांकुशधारी श्रीकृष्ण के हस्तरूपी सुदक्ष चोर श्री राधा के कंचुक के भीतर प्रविष्ट होकर निर्भय होकर गुप्त हेमघट लूटने का प्रयास करने लगे। श्री राधा भी वांछित अविरोध का निषेध करने लगीं। अंत में सुमधुर लीला रस सिन्धु उच्छलित हो उठा-उसी रस सरोवर में श्री राधा माधव निमग्न हो गये। लीला के अंत में सखियों के कुँज में प्रविष्ट होने पर हर्ष वाम्य में भरकर राइ सखियों सहित बाहर आई, श्रीकृष्ण भी रस तरंग में तैरते हुए उसी स्थल पर उपस्थित हुए। श्रीमती के सखियों के मध्य छिप जाने पर श्रीकृष्ण उनके अन्वेषण के छल से सखियों का स्पर्श करने लगे। इससे सखियाँ अंत: करण से आनंदित होने पर भी बाहर से प्रणय के साथ कुटिल नेत्रों से उनकी भर्त्सना करने लगीं। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण द्वारा श्रमती को वाम भाग में लेकर रत्न वेदिका पर बैठने पर वृन्दादेवी ने वन्य पुष्प, माल्य तथा नाना आभरणों से सखियों साहित श्री राधा कृष्ण को भूषित किया। युगल माधुरी दर्शन करके सभी परमानंद रस में निमग्न हुई, श्री गुरुदेवी के इशारे पर साधक दासी मृदुमंद चामर व्यजन सेवानन्द में मग्न हुई।

इति ब्रज की प्रदोष लीला समाप्त।

नवद्वीप : भावशांति :

नवद्वीप में महाप्रभु सपरिकर श्री वास आंगन में भावाविष्ट हैं। स्वरूप के गान से श्रीराधा कृष्ण के कुँज-मिलन के अंत में बाहर की रत्न वेदिका पर सखीगण से घिर कर उपवेशन तथा वृन्दा द्वारा सखीसह युगल की वेश भूषादि पद श्रवण करके प्रेमावेश में हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। सभी भक्तों के

Scanned by CamScanner

बाह्य दशा लाभ करने पर स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त किया। महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु तथा अद्वैत प्रभु को प्रेमावेश में आलिंगन किया। भक्तवृन्द द्वारा प्रभु के चरणों में प्रणाम करने पर उन्होंने उन पर कृपा दृष्टि की। श्री वास पंडित ने तीनों प्रभु तथा भक्त वृन्द को श्री नृसिंह देव के प्रसादी माल्य, चंदन द्वारा भूषित करके तांबूलादि प्रदान किया। दास गण कालोचित व्यजनादि सेवा करने लगे। तीनों प्रभु की रूप माधुरी के दर्शन से सभी आनंद सागर में निमग्न हुए।

इति नवद्वीप प्रदोष लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

रात्रि लीला : नवद्वीप (१२ दंड)

(रात १० बजकर ४८ मिनट से ३ बजकर ३६ मिनट तक)

नवद्वीप : रात्रि लीला सूत्र :

श्रीश्रीवासगृहे मुदा परिवृतो भक्तैः स्वनामावलीं
गायद्भिर्गलदश्रुकम्प-पुलको गौरो नटित्वा प्रभुः।
पुष्पाराम-गते सुरत्नशयने ज्योत्स्ना युतायां निशि
विश्रान्तः स शचीसुतः कृतफलाहारो निषेव्यो मम।।

ज्योत्स्ना पुलकित रात्रि में जो श्री नाम-गान परायण भक्त गणों से परिवृत होकर श्री वास के गृह में ब्रज की रासलीला के भाव में विभावित चित्त से अश्रु-कम्प, पुलकादि, सात्विक विकारों से आक्रान्त होकर मधुर नृत्य करते हैं एवं नृत्य के अंत में श्री वास पुष्पोद्यान में जाकर फल-मूलादि भोजन करके रत्न शय्या पर शयन तथा विश्राम करते हैं—उन्हीं शचीनंदन श्री गौरांग महाप्रभु का ही मैं सेवन करता हूँ।

नवद्वीपः : योगपीठ मिलन तथा वन विहार :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु परिकरों से घिरकर श्रीवास आंगन में परम सुख पूर्वक बैठे हुए हैं। ब्रजधाम की श्री गोविन्द स्थली में श्री श्री राधा कृष्ण की योगपीठ लीला की स्मृति से तद्भावाक्रान्त चित्त में महाप्रभु श्रीवास के गृहोद्यान की योगपीठ कर्णिका में जाकर खड़े हुए। प्रभु का भाव जानकर श्री गदाधर पंडित प्रभु के बाँये, दाहिने श्री नित्यानंद, आगे श्री अद्वैत तथा श्री गदाधर के वामाग्रे श्रीवास पंडित खड़े हुए। तत्पश्चात् प्रातः कालीन योगपीठ की भाँति अष्ट दल में स्वरूपादि अष्ट महान्त, उपदल में श्री जाह्नवा तथा कविराज वर्ग, केशर में श्री रूप-सनातनादि अष्ट गोस्वामी, चारों ओर चार द्वारी तथा श्री जाह्नवा देवी को आवृत करके श्री गुरु वर्ग खड़े हुए। साधक दास द्वारा सपरिकर महाप्रभु की सेवा के लिए सेवोपकरण सुसज्जित करके दो स्वर्ण थाली सजाकर श्री गुरु देव के निकट ले जाने पर श्री गुरुदेव द्वारा एक थाली लेकर सपरिकर महाप्रभु की अर्चना (प्रातः कालीन योगपीठ सेवावत्) करके आने पर साधक ने श्री गुरुदेव द्वारा अर्चना की गई थाली के प्रसादी तुलसी, पुष्पादि से श्रीगुरु सेवा करके उनकी आज्ञा क्रम से योगपीठ में प्रवेश करके तुलसी, चंदन, धूप-दीपादि द्वारा सपरिकर महाप्रभु की अर्चना की। अर्चना के अंत में श्री गुरुदेव के पीछे आकर खड़े होने पर श्री गुरुदेव ने अपनी प्रसादी माला साधक दास के गले में पहना दी। तब श्रीवास पंडित ने सपरिकर महाप्रभु को फलमूल, मिष्टान्नादि सेवन कराकर तांबूल अर्पण किया। तदोपरान्त प्रभु ब्रज के भाव में ललित-त्रिभंग मुद्रा में खड़े होकर मुरली वाद्य का अनुकरण करने लगे। महाप्रभु का भाव जानकर श्री गदाधर महाप्रभु के बाँये खड़े हुए। परिकर वृन्द द्वारा प्रभु को आवृत करके खड़े होने पर महाप्रभु का भाव जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी श्रीकृष्ण द्वारा वंशी ध्वनि तथा प्रिया सहित वन

Scanned by CamScanner

विहार लीला पद गान करने लगे। गान श्रवण से महाप्रभु अश्रु-पुलकादि अष्ट सात्विक भाव में आक्रान्त होकर भक्त वृन्द के साथ श्रीवासोद्यान में भ्रमण करते-करते ब्रज के भाव में निमग्न हुए। भक्त वृन्द भी अपने-अपने सिद्ध स्वरूप की स्मृति में ब्रजरस में मग्न हुए। साधक दास अपने स्वरूप में आविष्ट होकर कालोचित व्यजनादि सेवा करने लगा।

रात्रि लीला : ब्रजधाम (१२ दंड)

(रात १० बजकर ४८ मिनट से ३ बजकर ३६ मिनट तक)

ब्रजधाम : रात्रि लीला-सूत्र :

तावुत्कौ लब्धसंगौ बहुपरिचरणैर्वृन्दयाराध्यमानौ
गानैर्नर्म- प्रहेलीलपन-सुनटनै रासलास्यादिरंगै :।
प्रेष्ठालीभिर्लसन्तौ रतिगतमनसौ मृष्टमाध्वीकपानौ
क्रीड़ाचार्यौ निकुंजे विविध-रतिरणौद्धत्य-विस्तारतान्तौ।।
ताम्बूलैर्गन्धमाल्यैर्व्यजनहिमपय: पादसंवाहनाद्यै:
प्रेम्णा संसेव्यामनौ प्रणयिसहचरी संचयेनाप्तशातौ।
वाचाकान्तैरनाभि-र्निभृत-रतिरसै: कुंजसुप्तालिसंघौ
राधाकृष्णौ निशायां सकुसुम-शयने प्राप्तनिद्रौ स्मरामि।।

जो रात्रि में परस्पर मिलन के लिए उत्कंठित होकर परस्पर एक दूसरे से मिलते हैं, परम प्रिय सखी वृन्द के साथ श्री वृन्दा देवी द्वारा नानाप्रकार की परिचर्याओं से आराधित होते हैं, गान, नर्म प्रहेली, रास नृत्य, मधुपान तथा निभृत निकुँज में विविध रति रणौद्धत्य प्रकाश करते हैं एवं प्रणयिनी किंकरी गणों द्वारा ताम्बूल, गंध, माल्य, बीजन, सुशीतल जल, पाद संवाहनादि द्वारा प्रीति पूर्वक सेव्यमान होकर निकुँज निलय में कुसुम शय्या पर निद्रित होते हैं—उन्हीं लीला-विनोदी श्री राधा कृष्ण का मैं स्मरण करता हूँ।

ब्रजधाम : योगपीठ मिलन तथा वन विहारादि :

श्री वृन्दावन के निकुँज कानन में रत्न वेदिका के ऊपर श्री श्री राधा माधव सखियों से आवृत होकर हास्य-परिहास रस में मग्न हैं। तत्पश्चात् श्री कृष्ण श्री राधा का हस्त धारण करके योगपीठ रत्न सिंहासन के मध्य कर्णिका में प्रियाजी को बाँये लेकर ललित त्रिभंग मुद्रा में खड़े हुए। तब अष्टदल में श्री ललितादि अष्ट सखी, अष्ट उपदल में श्री अनंग मंजरी, कलावती आदि, केशर में श्री रूपादि अष्ट मंजरी, चार द्वार पर वृन्दादि चार द्वारी एवं अनंग मंजरी को घेरकर श्री गुरु मंजरी वर्ग खड़ी हुई। साधक मंजरी द्वारा ससखी श्री राधा माधव की अर्चना के लिए सेवोपकरण सुसज्जित करके दो स्वर्ण थाली श्री गुरु मंजरी के निकट ले जाने पर श्री गुरु मंजरी द्वारा एक थाली लेकर प्रात: कालीन योगपीठ सेवा के समान ससखी श्रीश्री

Scanned by CamScanner

राधा माधव की अर्चना करके आने पर साधक मंजरी ने श्री गुरु मंजरी की सेवा से अवशिष्ट द्रव्य तुलसी, पुष्पादि द्वारा गुरु मंजरी की सेवा की। तदोपरान्त उनकी आज्ञा क्रम से योगपीठ में प्रवेश करके तुलसी, चंदन, धूप-दीपादि द्वारा सपरिकर श्रीश्री राधा माधव की प्रातः कालीन योगपीठ के समान सेवा की। बाद में श्री गुरु देवी के बाँये खड़े होने पर श्री गुरु देवी ने अपने गले की प्रसादी माल्य साधक मंजरी के गले में अर्पण की। युगल माधुरी दर्शन कर सभी आनंद सागर में मग्न हुई।

श्री वृन्दावन की शोभा दर्शन से श्री कृष्ण की रास वासना।

तदोपरान्त वही ज्योत्स्ना पुलकित रजनी, प्रफुल्लित कानन शोभा, मनोरम यमुना पुलिन उन्हीं महा भाववती ब्रज सुन्दरीगण तथा सर्वोपरि रासेश्वरी श्री राधा रानी के दर्शन से श्री गोविन्द के मन में रास-विलास माधुरी अस्वादन करने की वासना जगी। उन्होंने आकाश में उदित हो रहे अखंड पूर्णिमा के शशी चन्द्रमा * को देखा। उसके स्निग्ध किरण कण समूह आकाश से प्रकृति के वक्षः स्थल पर झर रहे हैं। स्वभाव से स्निग्ध श्री वृन्दावन की प्रकृति उनका स्पर्श पाकर शीतलतर हो रही है। प्रत्येक कुँज में मल्लिका, जाति, यूथी विपुल कुसुम संभार को हृदय में लेकर लोट रही है। मृदुल मलय हिल्लोल मल्लिका, मालती के हृदय में शिहरण जगाकर नाचते-नाचते जा रही है, कुसुम परिमल से दिगन्त को मतवाला करते हुए वायु अपना गंधवह नाम सार्थक कर रही है। फूलों की गंध से उन्मत्त भ्रमर समुदाय पुष्प गुच्छों पर सरस गुँजार कर रहा है। मयूरों के 'के का' रव से तथा कोकिलों की पंचम तान से दिगन्त प्रतिनादित हो रहा है। श्री राधा-माधव की सेवा में अपने को धन्य करने के लिए अपनी सहाय सम्पद के साथ स्वयं ऋतुराज वृन्दावन में आकर उदित हुआ है। वन शोभा दर्शन करके श्रीकृष्ण के चित्त में आनन्द हुआ एवं प्रियागण के साथ वन विहार की वासना उनके मन में जागृत हुई। उन्होंने वंशीगान द्वारा प्रियागणों को अपने मन की वासना ज्ञापन की एवं उन्होंने भी श्री कृष्ण नाम गान के साथ उसे अंगीकार किया।

श्रीकृष्ण वंशी सुर में बोले–

"कानने सुधांशुकांतिशुभ्रमंजुविग्रहे
पुष्पिते समयांन्त्वाद्य मे प्रियालिवर्ग हे।
रन्तुमत्र वांछितानि चित्तवृत्तिरुद्वहेत्॥"

अर्थात–"हे प्रियागण! पूर्ण चन्द्र की शुभ्र किरण माला से आज वृन्दावन उजलित एवं कुसुम संभार से सुरभित है। इस सुरम्य वृन्दावन में तुम सब के साथ विहार करने की वासना मेरे चित्त में उदित हुई है।" यह सुनकर गोपियाँ बोलीं–"एवमस्तु कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कान्त हे" अर्थात् "हे कृष्ण, हे कृष्ण, हे

* श्री वृन्दावन में जड़ीय वस्तु कुछ भी नहीं है। यहाँ का चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, आकाश, वायु, ऋतु आदि सब कुछ चिन्मय लीला के सेवक हैं। श्री कृष्ण के मन में रासलीला की वासना जागते ही किसी भी तिथी में पूर्ण चन्द्र उदित हो जाता है। श्रील शुक मुनि ने श्री भागवत् के रासलीला के आरंभ में "तदोडुराज उदगात्" इस श्लोक में इसी तत्व का प्रतिपादन किया है।

Scanned by CamScanner

कान्त! ऐसा ही हो।'' यह सुनकर श्री कृष्ण प्रियागणों के साथ मृदु मधुर स्वर में रति रसोद्दीपक गान करते-करते प्रत्येक वृक्षलता तथा कुँजावली की शोभा देखते-देखते चलने लगे। मलय पवन से वृक्ष वल्लरी के पत्र पल्लव मृदु मंद आन्दोलित होने लगे। कोकिल गण "कुहु कुहु" ध्वनि के साथ पंचम तान में गान करने लगे। भृंग की सरस गुँजार तथा मयूरादि के रव से वनभूमि कोलाहलपूर्ण हो उठी। श्रीकृष्ण विरह में मूर्छिता अटवी श्री कृष्ण दर्शनामृत से सिंचिता होकर जैसे संजीवित तथा पुलकित हो उठी हो । चन्द्रमा की शुचि-शुभ्र किरण अपने अंगों में लगाकर मलय हिल्लोल (हिलोर) से पुलक कंपादि आनंद सात्विक भाव प्रकाश करके सुशोभन (सुन्दर) पक्षी, मृग, भृंगादि ने अपने शोभा संभार को आगे लेकर प्रियागणों के साथ श्री कृष्ण का सादर स्वागत किया। गौरांगी गणों की स्वर्णोज्वल कांति माला शुभ्र ज्योत्स्ना के साथ मिलकर ऐसे प्रतीत हुई जैसे स्वर्ण तथा चाँदी के जल में यह वन समूह स्नान कर रहा हो। चंचल तमाल पत्र ज्योत्स्ना राशि से अनुरंजित होकर जिस प्रकार से शोभा पाता है—उसी प्रकार श्रीकृष्ण की तमाल श्यामल द्युति (ज्योति) श्री राधा की स्वर्ण ज्योति के साथ मिलकर शोभा को प्राप्त हुई।

प्रियागण के साथ श्री कृष्ण का वनविहार।

तत्पश्चात् श्री कृष्ण वृन्दावन के स्थावर जंगम से कुशल प्रश्न करते-करते बोले—''हे तरुलतागण! तम सब का कुशल तो है ना? हे पक्षीगण! तुम सब सुखी तो हो ना? हे मधुपगण! तुम सब निर्विघ्न रूप से कुशल तो हो ना?'' सहृदय बान्धवों के समान श्रीकृष्ण को देखकर वन समूह पुष्पिताग्र किशलय (कोपल) रूपी कर संचालन करके नर्तकी के समान नृत्य करने लगे। भृंग तथा कोकिलों का गान ही उनका मधुर संगीत है। मलय पवन ही जैसे गुरु होकर उन्हें मधुर नृत्य की शिक्षा देने लगी हो। श्री राधा कृष्ण को दिगन्त प्रसरण शील अंग सौरभ से समाकृष्ट असंख्य भृंग समूह को श्रांत जानकर माधवी लता वायुचालित पल्लव रूपी हस्त द्वारा मधुपान के लिए जैसे उन्हें आग्रह सहित आह्वान कर रही हो। अपना कुल धर्मादि त्याग कर गोपियाँ श्री कृष्ण को सुखी करती हैं—उनसे यह शिक्षा पाकर ही लगता है जैसे श्रीकृष्ण को सुखी करने के लिए भ्रमर गुँजार के छल से माधवीलता उनका स्तव करने लगी हो। चंचल भृंग ही जिनके कटाक्ष एवं कुसुम समूह ही हास्य है—वही मल्लिका पवनान्दोलन से नृत्य करते-करते श्री कृष्ण को सुखी करने लगी। वनभूमि पक्षी, भृंगादि की ध्वनि द्वारा कर्ण, सुखद समीर द्वारा त्वचा, परिपक्व फल समूहों से रसना, ज्योत्स्ना द्वारा धुली हुई अपनी सुषमासे नेत्र तथा प्रस्फुटित कुसुमों के सौरभ द्वारा नासिका—श्रीहरि की पंचेन्द्रियों का आनंद विधान करने लगी। इस प्रकार से श्री कृष्ण नवजलधर को श्री राधा सौदामिनी द्वारा आलिंगित होकर वंशी ध्वनि रूपी गंभीर नाद के साथ सौन्दर्यामृत वर्षण करते देखकर 'के का' रव करके मयूरी के साथ पुच्छ फैलाकर प्रमत्त मयूर कुल नृत्य करने लगा। तदोपरान्त श्री राधा द्वारा किंचित विकसित दो अशोक गुच्छ अपने हाथ से चयन करके आदर सहित श्रीकृष्ण को कर्णावतंस (कर्णाभूषण) के रूप में पहनाते समय भावावेश में

वृन्दावन की नैसर्गिक शोभा।

Scanned by CamScanner

उनके हाथ काँपने लगे, तब श्रीकृष्ण ने उन्हें श्रीमती के हाथ से लेकर उनके ही कर्णों में पहना दिया। इस प्रकार से स्तवकादि (पुष्पगुच्छादि) पहनाने के छल से सखियों को स्पर्श करके उन्हें भी मदन तरंग से उच्छलित करने लगे। इस प्रकार से किलकिंचित, बिब्बोक, ललित, विलासादि भाव भूषणों से सखियों सहित श्रीराधा रानी को भूषिता करके उन्होंने परमानन्द लाभ किया। इसके बाद श्री कृष्ण के नैसर्गिक शोभा का वर्णन करते हुए गान करने पर सखीगण उस गीत में ही एक दो वर्ण तथा अर्थ का विपर्यय करके श्री राधा कृष्ण की लीला माधुरी गान करने लगीं। चन्द्र तथा ताराओं का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण ने गान किया –

श्रीकृष्ण तथा गोपियों का गान।

"जगदाह्लादकशीलः प्रमदाहृदि वर्धितमनसिजशीलः।
राधानुराधिकान्तर्विलसन् शुशुभे कलानिधिः सोऽयम्॥"

अर्थात्—"विश्व को आनन्द प्रदान करना ही जिनका स्वभाव है, जो रमणियों के मन में कंदर्प पीड़ा वर्धित करते हैं, राधा तथा अनुराधा नामक दो नक्षत्रों के मध्य में वही कलानिधि चन्द्र शोभा पा रहे हैं।"

"जगदाह्लादकशीलः प्रमदाहृदि वर्धितमनसिजपीलः।
राधानुराधिकान्तर्विसन् शुशुभे कलानिधिः सोऽयम्।।

अर्थात्—"विश्व को आनन्द प्रदान करना ही जिनका स्वभाव है, जो प्रमदागणों की कंदर्प पीड़ा वर्धित करते हैं—वे ही राधा तथा अनुराधा अर्थात् श्री राधा तथा ललिता के मध्यवर्ति कलानिधि अर्थात् अखिल विलास वैदग्ध्यादि के कला निधान श्री कृष्ण शोभा पा रहे हैं।।"

वृक्षलता की शोभा वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण ने गाया—

"सन्मालत्यामस्यां मालत्यां मालतीभिः फुल्लाभिः।
संवेष्टित इह परितः पुन्नागोऽयं विराजते गहने।।"

अर्थात्— "इस ज्योत्स्ना वती रजनी में (श्लोक में स्थित पहले दोनों 'मालती' शब्द का एक अर्थ है 'ज्योत्स्ना' दूसरा अर्थ है 'रात्रि') प्रफुल्लित मालती लताओं से आवृत होकर पुन्नाग अर्थात् नागकेशर वृक्ष इस कानन के मध्य में शोभा पा रहे हैं।"

सखीगण ने इसी श्लोक में गान किया एवं उन्होंने इस अर्थ का प्रकाश किया कि—"ज्योत्स्नावती रजनी में प्रफुल्लिता नायिकागणों से (मालती शब्द का एक अर्थ युवती नायिका) परिवृत होकर पुन्नाग पुरुष श्रेष्ठ श्रीकृष्ण इस कानन के मध्य में शोभा पा रहे हैं।"

श्रीकृष्ण ने बसन्त ऋतु तथा माधवी लता का वर्णन करते हुए गान किया—

"माधवालिंगिता माधवी भ्राजते माधवश्चानया फुल्लया राजते।
विश्वमप्येतयोः संगमानन्दतश्चक्षुषी नन्दयन मोदते सर्व्वतः॥"

अर्थात्—"माधवी (लता) माधव (बसन्त) द्वारा आलिंगिता होकर शोभा पा रही है एवं माधवी द्वारा

Scanned by CamScanner

आलिंगिता होकर माधव भी शोभा पा रहे हैं। इनके मिलन से विश्व मानव का भी नयनानंद वर्धित हो रहा है।''

सखीगण ने इसी श्लोक में गान करके इस अर्थ को प्रकाशित किया कि–

''माधव (श्री कृष्ण) द्वारा आलिंगिता होकर माधवी (श्रीराधा) शोभा पा रही हैं एवं माधवी द्वारा आलिंगिता होकर माधव भी शोभा पा रहे हैं- दोनों के मिलनानंद से जैसे समस्त ब्रह्माण्ड सुशोभित हो रहा है।''

श्रीकृष्ण ने कांचन लता, तमाल वृक्ष तथा भृंग की शोभा वर्णन करते हुए गान किया–

''संफुल्ला संफुल्लोमिलनान्मिथ इह वने सदालीनाम्।
कांचनवल्ली चासौ सुखदा तापिञ्छमौलिश्च।।''

अर्थात्–''इस वन के मध्य प्रफुल्लिता कनकलता तथा संफुल्ल श्रेष्ठ तमाल वृक्ष भृंग समूहों के सर्वदा मिलन हेतु सुखद अर्थात् शोभा युक्त हो रहा है।''

सखियों ने इसी गान को गाकर इस अर्थ को प्रकाशित किया-

''कानन के मध्य में प्रफुल्लिता कनकलता श्री राधा एवं संफुल्ल 'तापिञ्छमौलि' श्रीकृष्ण 'अलि' अर्थात् सखियों के साथ मिलन हेतु परस्पर के लिए सुखद होकर शोभा पा रहे हैं।''

श्री कृष्ण ने कमलिनी तथा भृंग की शोभा वर्णन करते हुए गान किया–

''शंसन्निव मदनाज्ञां मदयन् हृदयं कलं गायन्।
नवपद्मिनीषु रात्रौ विलसति मधुसूदनश्चित्रम्।।''

अर्थात्– ''इस रात्रि में मधुसूदन (भ्रमर) गान द्वारा श्रोताओं के हृदय को आनंदित करके मदन की आज्ञा का प्रचार करते हुए नव पद्मिनियों के साथ विलास कर रहा है–यह अति आश्चर्यमय है।'' गोपीगण ने इसी श्लोक का गान करके इस अर्थ का प्रकाश किया–

''मधुसूदन (श्रीकृष्ण) मधुर गान द्वारा हृदय को आनंदित करते हुए नवपद्मिनी अर्थात् उत्तमा स्त्रीगणों के साथ रात्रि में विचित्र विलास कर रहे हैं।''

श्रीकृष्ण ने गान किया–

''रजनीरमणस्तमसां शमनो नलिनीकुलमुन्महसामपनुत्।
शितिगुर्गगने शितिभे विघने सुवभौ कुमुदावक एष मुदा।।''

अर्थात्–''यह अंधकार नाशक रजनीकांत शिति अर्थात् धवलकांति शशधर विघन या मेघशून्य शितिभ शुभ्र आकाश में रहकर कुमुद समुदाय की रक्षा करते हुए नलिनी समूहों के आनन्द को विनष्ट कर रहा है।''

गोपियों ने एक दो शब्द को विपर्यय करके गान किया–

Scanned by CamScanner

"रमणीरमणस्तमसां शमनः खलिनीकुलमुन्महसामपनुत्।
शितिगुर्गहने शितिभे विघने विभवौ कुमुदाकर एष मुदा।।"

अर्थात्— "रमणीकांन्त तमसा अर्थात् पाप समूह का शमन या नाशक शितिगु अर्थात् कृष्ण कांति श्री कृष्ण विघन अर्थात् विशेष प्रकार से घन या निबिड़ शितिभ नील वर्ण गहने अर्थात् वन में से कुमुद अर्थात् पाप कार्य में जिन्हें आनन्द होता है, वही खल समूह के आनन्द का विनाश करके प्रकाश पा रहे हैं।" श्रीकृष्ण ने गान किया—

"कमलिनीमलिनीकरणे पटुर्विधुरिताधुरितानिह चक्रवान्।
निविदधद्विदधद्भगने धृतिं न स मुदे समुदेति विधुर्म्मम्।।"

अर्थात्—"कमलिनियों के मालिन्य संपादन में निपुण विधु अर्थात् चन्द्रमा 'चक्रवान् विधुरिताधुरितान्' अर्थात् चक्रवाक् गण को दुखित करके भगन अथवा नक्षत्र समूह के धैर्य का विधान करते हुए सम्यक रूप से उदित हो रहा है।"

गोपियों ने गान किया—

"स सुदृशां सुदृशां रुचिकृद्रुचिर्विरहितारहिता निजतारकाः।
सुविदधद्विदधत् कुमुदावनं वरमुदे स मुदेतिविधुर्हि नः।।"

अर्थात्— "विधु जो विशेष रूप से दुःख खंडन करते हैं या सुख विधान करते हैं, वे ही रुचिकर श्रीकृष्ण ब्रजांगणाओं के सुन्दर नेत्रों के रुचिकर होकर अपनी प्रयसी वर्गों का विरह शून्य करते हुए असुरादि विनाश करके विश्व का आनन्द वर्धन पूर्वक हम सब के हर्ष विधान के लिए उदित हो रहे हैं।" इस प्रकार से परमानन्द में श्रीश्री राधा माधव सखियों से आवृत होकर वन-भूमि के शोभा संभार के दर्शन से वंशीवट में उपस्थित हुए एवं वंशीवट की रत्न वेदिका पर सखियों से घिरकर श्रीयुगल बैठ गये। तब दासियाँ बीजन, ताम्बूल दान इत्यादि सेवा करने लगीं। युगल माधुरी दर्शन से सभी परमानन्द रस सिन्धु में निमग्न हुए।

नवद्वीप : नर्म पहेली का भावावेश :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु सपरिकर स्वरूप के गान से ब्रजभाव में आविष्ट होकर श्रीवास पुष्पोद्यान में भ्रमण करते-करते माधवी मंडप में जाकर परमानन्द पूर्वक बैठ गये। भक्त वृन्द भी प्रभु को घेर कर बैठ गये। स्वरूप के गान समापन करने पर दासगण व्यजन, जलदान, ताम्बूल दान, पाद सम्वाहनादि सेवा करने लगे। महाप्रभु का मन जानकर श्री स्वरूप गोस्वामी वंशीवट रत्न वेदिका पर बैठे हुए सखियों सहित श्री श्री राधा कृष्ण के नर्म पहेली कथन पद गान करने लगे। पद गान श्रवण से महाप्रभु तथा भक्त वृन्द ब्रजभावाविष्ट होकर लीला रसास्वादन में निमग्न हुए।

Scanned by CamScanner

ब्रजधाम : नर्म पहेली का प्रश्नोत्तर :

ब्रजधाम में श्री श्री राधा कृष्ण वंशीवट वेदिका पर सखियों से आवृत होकर सुख पूर्वक बैठे हुए हैं। इस विश्रामावसर में ही वे परस्पर परमानंदित होकर सरस परिहासमय पहेली का प्रश्नोत्तर करने लगे। श्री कृष्ण हँसते-हँसते बोले- हे राधे! इस पहेली का अर्थ कहो तो देखें—"कौन प्राण रहित होकर भी कदाचित प्राण लाभ करने पर त्रैलोक्य के प्राणियों को मुग्ध करता है, जिसका देह नवद्वार विशिष्ट है वह कौन है?" श्री राधा कौतुक पूर्वक बोलीं—"हे नागरेन्द्र! आप जिसे अधर सुधा का उपहार दिया करते हैं, आप उसी कुट्टिनी 'वंशी' की बात कह रहे हैं।" यह बात सुनकर सखियाँ उच्च हास्य करने लगीं। श्रीराधा बोलीं- "हे प्रेमनिधे! मेरी इस पहेली का उत्तर दो तो जानें—"जो अनुरागिनी आपका यशगान करते-करते मूर्च्छित हो जाती है, जो ग्रामस्थ होकर भी अतनुरस में प्रवीणा है वह कौन है?" श्रीकृष्ण हास्य मुख से बोले— "हे प्रियतमे! जो ईर्ष्या परायण होकर मेरी मुरली को भी जीत लेती है, अपने माधुर्य से मुझे भी अतुलनीय आनंद दान करती है तथा तुम्हारे ही समान पीन स्तनी यह तुम्हारी वीणा ही है।" तत्पश्चात् जयाभिलाषिणी होकर ललितादि सखियाँ भी वाक् चातुर्य द्वारा श्री राधा की अंग वर्णनमय पहेली बोलने लगीं। ललिता ने कहा—"हे विदग्धवर! कहो तो—कौन बाला होकर भी अति वृद्धा है, वृद्ध होकर भी मोक्ष प्राप्त करती है, शुद्ध होकर भी तमोस्थानीय है, उन कुटिलागणों का नाम क्या है?" श्रीकृष्ण ने भक्त गणों की बात का उल्लेख करते हुए दो अर्थों वाली बात में उत्तर दिया—"श्री राधा के केश हैं।" भक्त के पक्ष में, भक्त जैसे 'बाला' अल्प वयस्क का होकर भी ज्ञान में वृद्ध होता है, वृद्ध के समान दिखने पर भी रति के उद्गम के कारण श्री कृष्ण उसे जीवन मुक्ति दान करते हैं एवं शुद्ध होकर भी तमोस्थानीय अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न होकर भी दीन भावापन्न होता है। श्री राधा के केशों के पक्ष में—'बाला' केश का एक अन्य नाम होकर भी वृद्धा अर्थात् अति वर्धित (दीर्घ) होता है, सखियाँ इन्हें सब समय बाँध कर रखती हैं फिर भी श्री कृष्ण रतिकाल में इन्हें मुक्त करते है जो शुद्ध अर्थात् धूली आदि से रहित होकर भी कृष्णवर्ण एवं अतिशय वक्र हैं, यही हैं वह श्री राधा के 'केश'। श्री कृष्ण बोले—मैं इनका भजन करता हूँ।" तदोपरान्त विशाखा बोलीं—"हे प्रिय! महदादि तत्व विचार में पंडिता विश्व भावदर्शिनी तथा विभूति धारण करने वाली जो योगिनी योगपथ में सर्वदा भ्रमण करती है, वह कौन है?" इसका अर्थ है श्री राधा के 'नयन'। जो मनोगत भाव विचार में निपुणा, 'विश्व' अर्थ में सर्व औत्सुक्यादि भाव जिससे प्रकाशित होते है, 'विभूति' अर्थात् काजल धारिणी, योगपथ में अर्थात् श्री कृष्ण मिलन की इच्छा से जो चंचल भाव से वृन्दावन में सर्वत्र भ्रमण या दृष्टिपात करती हैं। श्रीकृष्ण ने चातुर्य के साथ तदनुरूप उत्तर दिया—"हे विशाखे! अनंग सुख सिद्धि के लिए (योगिनी अर्थ में मुक्ति सुख, नयन पक्ष में रति सुख) मैंने जो कृपार्द्रा योगिनी के द्वारा उज्ज्वलात्म वेदन (योगिनी अर्थ में निर्मल आत्मज्ञान, नयन पक्ष में श्रृँगार रस ज्ञान) बार-बार अनुभव किया है, जिसके

श्री श्री राधा कृष्ण एवं सखियों की नर्म पहेली।

Scanned by CamScanner

आज्ञा क्रम से सब कर्म त्यागकर वन में जाकर आनन्द लाभ करता हूँ, वही प्रिया जी का दृक् (योगिनी पक्ष में जिसके द्वारा प्रिय ज्ञान लाभ होता है तथा नयन पक्ष में प्रियाजी के नयन) उसी गुरु योगिनी का मैं स्तव करता हूँ।'' तब चित्रा सखी बोलीं–''हे अच्युत! मेरी एक पहेली का उत्तर दो–''जो सदा अपवर्ग साधन नितान्त दान्त विग्रह, अतिशय अंतर्बाह्य–इन्द्रिय निग्रहकारी, शुचिप्रिय, अनुरागी तथा रुचिप्रद है–वह वस्तु क्या है–वर्णन करके अपनी रसना को धन्य करो।'' 'यह श्री राधा के अधर हैं।' सदापवर्ग साधन अर्थात् 'प' वर्ग का उच्चारण स्थान 'दान्त विग्रह' श्री कृष्ण के दंत के साथ जिसका विग्रह या युद्ध होता है, 'शुचि' श्रृँगार रस ही जिसका प्रिय, 'अनुरागी' अर्थात् रक्तिम 'रुचिप्रद' अर्थात् परम शोभनीय है। श्री कृष्ण बोले–''सखि चित्रे! उस वस्तु का रसना द्वारा वर्णन करने से ही आशा नहीं मिटेगी। मेरी उत्कंठित रसना के साथ तुम उस वस्तु का योग करा दो।'' यह सुनकर श्री राधा बोलीं–''हे कुटिला सखीगण! तुम सब इस लम्पट के साथ लाम्पट्य विस्तार करो–मैं घर चली।'' यह कहकर श्री कृष्ण के प्रति कटाक्षपात करके क्रोध पूर्वक गृह जाने को तैयार होने पर श्री कृष्ण उन्हें लौटाकर बोले–''हे साध्वी! यदि एक और प्रश्न का ठीक से उत्तर दे पाओ तो तभी तुम जयी होगी। तुम्हें इस प्रकार का एक पंचाक्षर शब्द कहना होगा जिसके प्रथम वर्ण में शोभा, द्वितीय वर्ण में देवगण, तृतीय वर्ण में तुम्हारा अभीष्ट, चतुर्थ वर्ण में कल्प वृक्ष, पंचम वर्ण में सखियों का कर्ण रसायन है, वह शब्द क्या हैं?'' अर्थात् जिसका उत्तर ज्ञात होने पर भी श्री राधा बोलने में समर्थ नहीं होंगी। इस प्रकार की दुरुह पहेली श्री कृष्ण बोले। शब्द है–'सुरतरुत' अर्थात् संभोगोत्थ ध्वनि विशेष। पहेली श्रवण करके श्री राधा लज्जा से वदनार विन्द को अवनत करके एवं मृदुहास्य को राकेने में असमर्था होकर भी प्रणय कोप के साथ भ्रू-भंगी करते हुए श्री कृष्ण से बोलीं–हे

नर्म पहेली में श्री राधा की जय।

विचक्षण श्रेष्ठ! तुम मेरे प्रश्नों का यथाक्रम से उत्तर दो, पश्चात् तुम्हारे प्रश्न के विषयीभूत अभीष्ट.....शब्द सुनने के लिए पद्मा की प्रिय सखी चन्द्रा के निकट जाओ। कहो–''गृहस्थ गण क्या इच्छा करते हैं।? युवा की वांछित वस्तु क्या है? चारू वाद्य क्या है? कर्ण वेद्य क्या है? सखियाँ क्या सुनने के लिए लता जाल में विलीन होती हैं?'' यह सुनकर श्रीकृष्ण वही 'सुरतरुत' शब्द ही बोले। अर्थात् इस प्रश्न के उत्तर में अंतः स्थित 'त' कार के साथ प्रथम से सभी शब्द क्रम पूर्वक योग करने पर ''सुरतरुत'' ही होगा। गृहस्थों का वांछित 'सुत' (पुत्र), युवा का वांछित 'रत' (रमण), चारूवाद्य 'तत' (वीणा), कर्ण वेद्य (रुत) तथा सखीगण यही 'सुरतरुत' सुनने के लिए लता जाल में निलीना होती हैं। सखीगण श्री राधा के बुद्धि कौशल रूपी अमृत का अस्वादन प्राप्त करके (अर्थात् श्री कृष्ण को पहेली का उत्तर श्री राधा ने उनके मुख से ही कहलवाया) श्री राधा की जय- जयकार करने लगीं। श्री मती भी इस जय से गर्वानुभव करके प्रमोदिता हुईं।

तत्पश्चात् बहुत से माल्य, गंध, तांबूल तथा दिव्याभरण वन देवी वृन्दा ने सखियों सहित श्री राधा कृष्ण

Scanned by CamScanner

की तत्कालोचित सेवा की। वे श्री कृष्ण को रास-विलास के लिए सतृष्ण देखकर यमुना-पुलिन की शोभा वर्णन करके उनकी वासना को उद्दीप्त करते हुए बोलीं—"हे रसिकेन्द्र। यह देखो! बालुका रूपी तुला समूह द्वारा यमुना-पुलिन में सुनिपुण शिल्पी पवन ऊँचे-नीचे रूप से तरंगाकार में कैसा सुन्दर चित्र अंकन कर रहा है। यमुना जल की सूक्ष्माकृति तरंगावली भी अवलोकन करो—जल तथा स्थल दोनों ही तुल्याकार हैं। केवल पुलिन की शुभ्र कांति तथा जल की श्याम कांति यही एक्य-भ्रांति को दूर कर रही है। यह देखो! यमुना के उत्तर तथा दक्षिण किनारे पर स्थिति पुलिन शुभ्र वर्ण की अधिकता के कारण कैसी शोभा पा रहा है—ऐसा लगता है जैसे कर्पूरमयी नदी अपने हृदय में मृगमद रस के प्रवाह को धारण कर रही है। अथवा रासलीला सम्बंधीय यमुना की असीम शुभ्र यश राशि ही जैसे पुलिन के रूप में यमुना को स्वयं आलिंगन करके विराज रही है। वृन्दा के वाक्य श्रवण करके श्री कृष्ण के स्मृति पथ में रास-रस की निरुपम आस्वादन माधुरी का उदय हुआ। वे रासलीला की वासना से अधीर होकर रासेश्वरी श्री राधा का हस्त धारण करके बोले—"हे प्रियतमे! आओ-आओ, हम सब रास-विलास आरंभ करें।" गोपियों से बोले—"हे सुनयना गोप सुन्दरी गण! यह देखो, रास विलास में हम सबको समुत्सुक देखकर जैसे किसी ने चाँदी के जल द्वारा पुलिन प्रदेश को धो दिया है। अथवा अखिल विश्व के शुक्ल गुण को चूर्ण करके माधुर्य जल में उसे सरस करते हुए वस्त्रपूत (वस्त्र से छानकर) करके उसके द्वारा पुलिन को सिक्त करके स्वयं विधाता अपने कला नैपुण्य का प्रकाश कर रहे हों। उसी छने हुए शुक्ल गुण के हेमांश को उन्होंने विशालपुलिन के मालिन्य की आशंका से नीचे न फेंककर ऊपर की ओर फेंक दिया है, इसीलिए आकाश में सकलंक चन्द्रमा के रूप में देखा जा रहा है एवं सूक्ष्म कणिका समूह ही असंख्य नक्षत्र राशि के रूप में दीप्तिमान हो रहे हैं।

श्री वृन्दा द्वारा पुलिन शोभा वर्णन।

श्रीकृष्ण के चित्त में रास का उद्दीपन।

इस प्रकार से श्रीकृष्ण द्वारा प्रियागणों के साथ सरस आलाप करते-करते यमुना जल के समीप आने पर यमुना ने तरंग रूपी हस्त के द्वारा उनके श्री चरणों में कमल समूह समर्पण करके उनकी अर्चना की एवं तरंग-हस्त से श्री चरण-स्पर्श करके बार-बार उनकी चरण वन्दना की। श्री कृष्ण की संतुष्टि के लिए यमुना द्वारा अपने प्रवाह को घुटनों तक करने पर निर्झर का जल सबके गुल्फ (टखना) तक हो गया। अतएव प्रियागण के साथ श्री कृष्ण इस निर्झर समूह में बार-बार उतरकर स्वच्छन्द विहार करने लगे। दर्शन, परिहास, आलाप, आलिंगन, स्तनालंभन, चुम्बन आदि द्वारा गोपियों की विलास वासना बढ़ाकर सुविस्तृत पुलिन में वे परमानंद पूर्वक भ्रमण करने लगे।

यमुना द्वारा श्री राधाकृष्ण की अर्चना।

नवद्वीप : रास की स्मृति में प्रभु का नृत्य :

नवद्वीप में सपरिकर महाप्रभु श्रीवास पुष्पोद्यान में सखियों सहित श्री राधा कृष्ण के वन-विहार के

Scanned by CamScanner

स्मृति रस में मग्न हैं। इसी समय पुष्प-सौरभ तथा भ्रमर गुँजार से प्रभु ने हुँकार करके बाह्य दशा लाभ की। हुँकार श्रवण कर भक्तों का भी भाव-शांत हुआ। स्वरूप गोस्वामी ने श्री राधा-कृष्ण के वन-विहार, पुलिन शोभा दर्शनादि पद गान समाप्त किये। महाप्रभु के दोनों प्रभु को आलिंगन करने पर भक्त वृन्द ने प्रभु की श्री चरण वन्दना की। श्रीवास पंडित ने तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को नृत्योपयोगी वेश-भूषा तथा माल्य चन्दनादि से विभूषित किया। गंगा की शोभा दर्शन से महाप्रभु द्वारा यमुना की स्मृति में आविष्ट होने पर स्वरूप गोस्वामी प्रभु का भाव जानकर श्री राधा कृष्ण की रासलीला के पद मधुर स्वर से गान करने लगे। गोविन्द, वासुदेवादि मृदंग, करतालादि बजाने लगे। श्री मन्महाप्रभु ने गदाधर को बाँये लेकर अश्रु-पुलक-कंपादि सात्विक भावों से भूषित होकर रासलीला के आवेश में मधुर नृत्य आरंभ किया। दोनों प्रभु तथा भक्त वृन्द मंडली रचना करके अपने-अपने ब्रजभाव मे आविष्ट होकर नृत्य करने लगे। सभी रास रस माधुरी में निमग्न हुए।

ब्रजधाम : रासनृत्य :

ब्रज के यमुना पुलिन में श्री कृष्ण कान्ता गणों के साथ मदन-रसावेश में भ्रमण करते-करते रास चक्र पुलिन में आ गये। वहाँ श्रीकृष्ण ने प्रियागणों के साथ "चक्र भ्रमण" नामक चक्र में आरोहरण किया। वितस्ति (बारह अंगुल की माप अर्थात् हाथ को पूरा फैलाकर अंगूठे से कनिष्ठा तक की दूरी) प्रमाण कीलक के ऊपर तीन नेमि (चक्र परिधि) युक्त विशाल चक्र है। उसके ऊपर मध्य स्थल में श्री राधा के साथ श्रीकृष्ण एवं तीन मंडली पर सखी मंडली ने आरोहण किया। सखीगण के राधा द्वारा आलिंगित श्री कृष्ण को घेरने पर स्वर्ण लतावृत तमाल वृक्ष जैसे स्वर्ण लता से आवृत होकर शोभा पाता है उसी प्रकार

चक्र भ्रमण रास।

उनकी शोभा का विकास हुआ। नृत्य कला गुरु श्री श्री राधा कृष्ण ललितादि सखियों को हल्लीशक नृत्य (मंडली बद्ध नृत्य) करने का आदेश देकर परस्पर के स्कंध भुजलता फैलाकर नृत्य करने में प्रवृत्त हुए। नितम्बिनी गणों के पाद-विक्षेपन चातुरी से रास चक्र, कुम्भकार के चक्र की भाँति अति वेग से भ्रमण करने लगा। कभी ललिता विशाखा को श्री राधा के दोनों बगल रखकर उनके कंधों पर बाहु फैलाकर नटराज श्रीकृष्ण नाचने लगे, तो कभी नृत्य परायणा अन्य सखियों के साथ परम सुख-पूर्वक नृत्य करने लगे। रासचक्र की गति के अनुसार कभी मन्द गति तो कभी तीव्र गति से नाना छन्द में वे नृत्य करने लगीं। श्री कृष्ण एक ही साथ दो-दो गोपियों के मध्य प्रविष्ट होकर उनके कंधों पर बाहु फैलाकर स्वर्णलता जड़ित तमाल तरु के समान शोभा पाने लगे। आलात चक्र के समान इस प्रकार की क्षिप्रगति (तीव्रगति) के साथ नृत्य करते हुए भ्रमण करने लगे कि सभी गोपियों ने समझा कि श्री कृष्ण केवल मेरे ही निकट हैं अन्यत्र कहीं नहीं गये हैं। चक्र के प्रान्त भाग में एक प्रथक मंडली रचना करके प्रियागणों के साथ उसके मध्य में नृत्य करते-करते चक्र को भ्रमण कराते हुए श्री कृष्ण शोभा पाने लगे। भ्राम्यमाण चक्र से कभी अवरोहण कही आरोहण एक ही साथ सभी अथवा अकेले

Scanned by CamScanner

इसी प्रकार से चढ़ उतर कर उन सबने अद्‌भुत मंडली बंधन नृत्य किया। श्री कृष्ण इस प्रकार चक्र भ्रमण रास में गोपियों के साथ विलास करके विशेष रासलीला के लिए चक्र से उतर गये। तदोपरान्त श्री राधा कृष्ण सखियों सहित ''अनंगोल्लास रंग'' नामक पुलिन में महा-आनंद के साथ उपस्थित हुए। यमुना की तरंग राशि द्वारा सुसंस्कृत, कुमुद की गंध वाही पवन द्वारा सुमार्जित तथा चन्द्र के ज्योत्स्नामृत से धुली हुई यह पुलिन-भूमि शोभा पा रही है। वहाँ श्री राधा कृष्ण को आवृत करके सखीगण मंडली बांध कर परस्पर एक दूसरे का हाथ धारण करके खड़ी हुई, जैसे तारा मंडली के मध्य में विशाखा नक्षत्र के साथ में पूर्ण चन्द्र मनोरम शोभा पा रहा है। मदन रूपी कुम्भकार रासलीला रूपी घट निर्माण के लिए गोपिका रूपी स्वर्ण चक्र को जैसे हरि दंड के द्वारा घुमा रहा हो। अथवा श्री कृष्ण के मन-रूपी महामीन को पकड़ने के लिए गोपांगना रूपी स्वर्ण जाल से स्तन रूपी गोल लौकी को तैराकर धीरे-धीरे मदन रूपी केवट उसे चला रहा है। मंडली बद्ध गोपीगण के परस्पर एक दूसरे का हाथ पकड़कर खड़ी होने पर श्री कृष्ण दो-दो जनों के मध्य में प्रविष्ट होकर उनके कंधों पर अपने दोनों बाहु फैलाकर रास चक्र में भ्रमण करते-करते शोभा पाने लगे, जैसे सुस्थिर सौदामिनी मंडल में मन के सुख से सुखी होकर चंचल जलधर खेल रहा हो। श्री कृष्ण की वंशी ध्वनि, प्रियागण की कंठ ध्वनि के साथ वलय, कांची तथा नूपुर के मधुर शब्द ने मिलकर तथा पदताल का अनुगामी होकर निखिल विश्व को महामाधुर्य से व्याप्त कर दिया।

अनंगोल्लास रंग-पुलिन में रास नृत्य।

श्री कृष्ण तथा ब्रज सुन्दरी गण अनिबद्ध तथा निबद्ध भेद से दोनों प्रकार के ही गान करने लगे। उनके मध्य पहले निबद्ध अर्थात् सा, रि, ग, म, प, ध, नि इन सप्त स्वरों का पृथक-पृथक आलाप करने लगे। पहले सात प्रकार के शुद्ध जाति तथा ग्यारह प्रकार के विकृत जाति के गान किये। षडज, मध्यम तथा गान्धार इन तीन प्रकार के ग्राम (क्रम) के मध्य में उन्होंने मनुष्यों के लिए अगोचर 'गान्धार' ग्राम का उच्चारण किया। सप्त स्वर के अंतर्गत बाइस श्रुति, उन्चास प्रकार की तान तथा इक्कीस प्रकार की मूर्छनाओं (लय परिवर्तन) का गान किया। पंद्रह प्रकार के 'तिरिप' नामक गमक सबको तालादि के साथ अनेक भेदों में गान किया। शुद्ध तथा सालग भेद से निबद्ध को दो प्रकार से गान किया। निबद्ध तीन प्रकार के होते हैं यथा-प्रबन्ध, वस्तु तथा रूपक। प्रबन्ध के मध्य भी स्वर तथा पाठादि भेद से नाना प्रकार के राग एवं विविध प्रकार के न्यास युक्त ग्रह समूहों का गान किया। सम्पूर्ण नामक सप्त स्वर, षाडव नामक सप्तस्वर, उत्तर नामक पंचस्वर, मल्लार, कर्नाटक, नट्ट, सामकेदार, कामोद,भैरव, गान्धार, देशाग, बसन्त तथा मालव राग गान किये। श्री, गुर्जरी, रामकिरी, गौरी, आशावरी, गोन्ड किरी, तोड़ी, बेलावली, मंगल, वराटिका, देश वराटिका, मागधी, कौशिकी, पाली, ललिता, पठ मंजरी, सुभगा एवं सिन्धुड़ा ये सब रागिनी गोपियों ने कीं। तब वृन्दादेवी द्वारा प्रदत्त घन (कांस्यादि वाद्य), आनद्ध (मुरजादि वाद्य), तत (वीणादि वाद्य) तथा शुषिर

रास लीला की राग रागिनी तथा तालादि का मूर्त प्रकाश।

Scanned by CamScanner

(वंशी आदि वाद्य) इत्यादि चार प्रकार के वाद्य यथाक्रम से बजाने लगीं। मुरज, डमरू, डम्फ, मंडू, ममक, मुरली, पाविका, वंशी, मंदिरा, करताल आदि नाना प्रकार के वाद्य बजाये। विपंछी, महती, वीणा, कच्छपी, करिनासिका, स्वर मंडलिका, रूद्रवीणा इत्यादि नाना प्रकार के वीणावाद्य बजाये। तत्पश्चात् उनके नृत्य काल में हस्तक (कर चालनादि द्वारा नाना प्रकार की भंगी) प्रकाशित हुए। पताका, त्रिपताका, हंसास्य, कर्तरीमुख, शुकास्य मृगशीर्ष, सन्दंश, खटका मुख, सूची मुख, अर्धचन्द्र, पद्मकोष तथा अहितुंडकादि * अनेक प्रकार की हस्तभंगी प्रकाशित कीं। कोई-कोई गोप सुन्दरी ध्रुवादि अनेकों प्रकार की ताल धारण करने लगी। (यही ताल अतीत, अनागत तथा सम यह तीन ग्रह (ताल), तद्युक्त समा, गोप-पुच्छिका तथा स्रोतावहा नामक तीन प्रकार यति (विराम) तद्युक्त द्रुत, मध्य तथा विलम्बित यह तीन लय, तद्युक्त एवं निः शब्द तथा शब्द युक्त भेद से दो प्रकार से धारण युक्त उसके मध्य में प्रथम को वर्धमान तथा द्वितीय को हीयमान कहते हैं। इस प्रकार दो आवर्त युक्त मान अर्थात् दो स्वरों के मध्यवर्ती विश्राम द्वारा जो पूर्वोक्त ध्रुवादि ताल नित्य मिली रहती है) चंचतपुट, चाचपुट, रूपक, सिंहनन्दन, गजलीला, एक ताल निः सारीमादि, अड्डक प्रतिमन्ठ, झम्प (झाँप ताल), त्रिपुट, यति, नलकूबर, नुद्घट्टक, कुघट्ट, कोकिला रव, उपाट्ट, दर्पण, राज कोलाहल, शचीप्रिय, रंगविद्याधर, वादक, अनुकूल कंकण, श्री रंग, कंदर्प, षटपिता पुत्रक, पार्वतीलोचन, राजचूड़ामणि, जय प्रिय, रतिलील, त्रिभंगी, बार विक्रम यह चौंतीस ताल श्री कृष्ण तथा ब्रजांगनागणों ने धारण कीं।

---

* नृत्य काल में सर्पफण हंसग्रीवादि तथा त्रिशूलादि के समान जो हाथ की भंगी की जाती है उसे 'हस्तक' कहते हैं। संगीत शास्त्र में लिखित है कि—हस्तक प्रधानतः तीन प्रकार के होते हैं यथा—असंयुत, संयुत तथा विप्रयुक्त। एक हाथ से ही जहाँ गीत का अर्थ प्रकाश किया जाता है उसे 'असंयुत्' कहते हैं। दो हाथों से अर्थ प्रकाश होने पर 'संयुत' तथा दोनों हाथ दूर फैलाकर अर्थ प्रकाश करने पर उसे 'विप्रयुक्त' कहते हैं।

अंगुष्ठ को वक्र करके तर्जनी के मूल में संयुक्त करने पर उसे 'प्रसारित करांगुली' पताका कहते हैं। कनिष्ठा तथा अंगुष्ठ को आगे-आगे संयोग करके तर्जनी, मध्यमा तथा अनामिका अंगुली को प्रसारित करने पर उसे 'त्रिपताका' कहते हैं। तर्जनी, मध्यमा तथा अंगुष्ठ इन तीनों के अग्रभाग को परस्पर संयुक्त करने पर उसे 'हंसास्य हस्तक' कहते हैं। कनिष्ठा, अनामिका तथा अंगुष्ठ इन तीन अंगुलियों के आगे परस्पर संलग्न तथा दूसरी दो अंगुली (तर्जनी तथा मध्यमा) प्रसारित होने पर 'कर्तरीमुख' हस्तक कहते हैं। तर्जनी, अनामिका तथा अंगुष्ठ के आगे मिलित होने पर 'शुकतुंड' हस्तक कहते हैं। अंगुष्ठ, मध्यमा तथा अनामिका के अग्र भाग को संयुक्त करके हस्त उत्तोलित (उठाना) करने पर 'मृगशीर्ष' कहते हैं। तर्जनी तथा अंगुष्ठ के अग्र भाग को कुंचित रूप से संयुक्त करके तथा अन्य अंगुलियों को विरल रूप से ऊपर अवस्थित रखने पर उसे 'सदंश, नामक पताका कहते हैं। दो हाथों के मध्य भाग में मुख होगा, दोनों अंगुष्ठ को आगे संयुक्त रखना होगा, दोनों तर्जनी भी आगे मिली रहेंगी, अनामिका तथा कनिष्ठा का ऊपरी भाग विरल होगा तब वह 'खटकामुख' होगा। अंगुष्ठ तथा मध्यमा का अग्रभाग संयुक्त, तर्जनी, कनिष्ठा तथा अनामिका के ऊर्ध्व भाग में अवस्थित होने पर 'सूचीमुख' अंगुष्ठांगुली को अन्य दिशा में आकर्षण कर लेने पर अर्ध चन्द्र धनु-कोण भाग के समान समस्त अंगुली संयुत होने पर उसे 'पद्मकोष' तथा इस पद्म कोष का यदि मध्य भाग नीचे किया जाय तब उसे 'अहितुण्डक' कहा जायेगा।

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात् श्री राधा के साथ श्री कृष्ण के द्वारा नृत्य आरंभ करने पर ललितादि सखी वृन्द गान करने में प्रवृत्त हुई, चित्रादि सखीगण ताल प्रदान करने लगीं तथा वृन्दादि सखीगण सभासद के रूप में अवस्थान करने लगीं। रंगालय में श्री कृष्ण द्वारा अकेले नृत्य करने पर श्री राधादि दुरुह (कठिन) ताल में गाने लगीं, श्री राधादि के नृत्य करने पर श्री कृष्ण भी आनंद पूर्वक दर्शन करने लगे। रंग स्थली गीत तथा वाद्यकारिणी से अंतः पट के समान घिरी हुई है। तत् (वीणादिवाद्य), घन, आनद्ध, शुषिर इत्यादि वाद्य में कंठ स्वर मिलाकर गति भंगी, भ्रू-भंगी, अंग भंगी, हस्त-पद तथा नयन चालन करते हुए गान तथा ताल को मूर्त करके नाना प्रकार के बोल उच्चारण करते हुए श्रीकृष्ण नाचने लगे। परम रमणीय श्रीकृष्ण ने पुनः पुनः श्री राधादि के मध्य में आकर नाना प्रकार की ताल तथा क्रम भंगी से सुन्दर पाद पद्म युगल तथा दोनों हस्त को संचालन करते हुए—"ताः तत्ता तथै दृगथि दृक् तथै दृक् तथै था" यह कहकर सखियों को आनंदित करके नृत्य आरम्भ किया।

श्रीकृष्ण का नृत्य।

"थो दिक् दां दां किट किट कनझें थोक्कु थो दिक्कु आरे, झें द्रां झें द्रां किटि किटि किटी धां झेंकु झें झेंकु झें झें झें थो दिक् दां दां दृमि दृमि दृमि धां कांकु झें झें कां कु झें" इस प्रकार स्वर उच्चारण करते हुए श्री कृष्ण सुचारु प्रबन्ध पाठ करते-करते नृत्य करने लगे। तब श्री कृष्ण नव जलधर की चंचला सौदामिनी के समान श्री राधा "तथ थै थै तथै थै तथै था" इस प्रकार बोल उच्चारण करके मनोहर नृत्य करने लगीं। इस नृत्य में कांची, कटक, नूपुर की रमणीय ध्वनि के साथ कंकण ध्वनि युक्त दोनों हस्त संचालित होने लगे। "धां धां दृक दृक चं चं निआं नं निनां नं निआं नं निआं नां तुत्तुक तुं तुं गुडु गुडु गुडु धां द्रां गुडु द्रां गुडु द्रां धेक धेक धो धो किरिटि किरिटि धां द्रां द्रिमिद्रां द्रिमिद्रां" मदीश्वरी श्री राधा इस प्रकार से पुनः पुनः मनोहर नृत्य करने लगीं। इसके बाद श्री ललिता आकर कनक वलय की झंकार के साथ कर कमल चलाते हुए श्याम कांति से उजलित रंगभूमि पर विद्युतलता के समान "थै थै थो थो तिगड़ तिगड़ थो थै तथै थो तथै ता" यह कहकर नृत्य करने लगीं। इसके बाद "कन कन कन" इस प्रकार वीणा वाद्य के साथ मिश्रित मृदंग की "दृमि दृमि धो धो धो" इस वाद्य (ताल) के सहयोग से "झनन झं झत्" इस प्रकार अलंकार का शब्द करके "दृगिति दृगिति दृक थै थो तथो थो" कहकर विशाखा नृत्य करने लगीं। कोई सखी नूपुर किंकिणी तथा कंकण की मधुर झंकार करके हस्त संचालन करते हुए "थैया तथैया तथैया तथैया" इस प्रकार कहकर नृत्य करने लगी। कोई पदन्यास तथा दोनों हस्त चलाते हुए नूपुर की ध्वनि के साथ तालोत्थान के लिये "थै थै थै थै थै तथै था" इस प्रकार उच्चारण करके, तो कोई रंगालय में आकर "थैया थैया तथ तथ थैया थैया थैया तिगड़ तथैया" कहकर नृत्य करने लगी।

श्री राधा का नृत्य।

ललितादि सखियों का नृत्य।

तत्पश्चात् श्री कृष्ण गान के साथ नृत्य कौशल प्रकाश करते हुए "आ आ, ई आ, तिआ, आति, अइ, अति, अ आ, आति आ" यह कहकर नृत्य के साथ गान छन्द में कहने लगे—"हे राधे! देखो ज्योत्स्ना से

Scanned by CamScanner

उज्ज्वल अंग होकर जैसे पुलिन भी नृत्य कर रहा है। आ आ आ आति आ आ कहकर गान छन्द में बोले-वन भी जैसे मन्द वायु से संचालित होकर नृत्य कर रहा है।'' तब श्री राधा भी गानाकार में—"हे प्रिय! आपके हास्य चन्द्र, कुन्द, हंस, क्षीर, हीर (हीरक) हार के समान शुभ्र हैं'' यह कहकर—''आई अ आई अ आरे आरे आई, अआई, अ'' इस प्रकार उच्चारण करके नृत्य करके लगीं। मृदंग समूह रास नृत्य में पुनः पुनः ताधिक, ताधिक, ताधिक'' शब्द करके इन ब्रज सुंदरी गणों के नृत्य कौशल से सुर वनिता उर्वशी आदि को जैसे बार-बार धिक्कार करने लगा। नृत्य काल में ब्रजांगनाओं की नीवी, वेणी, कंचुकादि शिथिल होने पर श्री कृष्ण उसी समय उसे बांधने लगे। ब्रज सुन्दरीगण षडज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद स्वरों के नानाविध बन्धों में नव नव अपूर्व तथा सर्वापेक्षा उत्तम राग प्रकाश करने लगे। श्री कृष्ण तथा ब्रज सुंदरियों के मंजीर, वलय, कंकण तथा किंकिणी के शब्दने अन्यान्य वीणा-मृदंगादि वाद्यों के साथ मिलकर वह लाभ किया। ब्रज सुंदरियों के मुख से गान, हस्त से अभिनय, चरणों से ताल, ग्रीवा तथा कटि से कंपन, नयन युगल से दोलन, नयन तारका का दायें बायें संचालन, विलोल (अतिशय लोभी) कटाक्ष सभी श्री कृष्ण के कंदर्प सुख वृद्धि के लिए हुआ था। जो जाति, श्रुति, मूर्च्छना तथा गमक वीणा के बिना कभी उच्चारित नहीं होता, ब्रंजागनागण उसे कंठ से अनायास ही उच्चारण करने लगीं। किसी गोपी द्वारा स्वर समूह के जाति समूह को असंमिश्रित व्यक्त श्रुति गमक में रमणीय करके उच्च स्वर से गान करने पर श्री कृष्ण ने गान श्रवण करके ''साधु साधु'' कहकर उसे धन्यवाद देकर सम्मानित किया। तब उस गोपी ने उत्तम रूप से जो भ्रू भंगी की उससे श्रीकृष्ण ने अत्यधिक आनंद लाभ किया।

श्री श्री राधा कृष्ण का संगीत नृत्य

श्री राधा रानी के अपूर्व 'छालिक्य' नृत्य का अवलोकन करके श्री कृष्ण ने पारितोषिक देने योग्य कुछ न पाकर उन्हें आलिंगन करके स्वयं को ही समर्पित कर दिया। कभी श्री कृष्ण द्वारा वंशी वाद्य से श्री राधा को नृत्य कराने पर श्री मती ने ताल की भूल को नयन इंगित द्वारा प्रकाश किया, श्री कृष्ण ने उसे उसी समय पूर्ण किया, तो कभी श्रीमती ने वीणा वाद्य करके श्री कृष्ण को नृत्य कराया। कोई गोपी दोनों घुटनों द्वारा भूमि का सहारा लेकर भुजाओं को फैलाकर स्वर्णमयी मदन चक्र के समान घूमने लगी। तो कोई लीला वशतः आकर तथा जाकर, बाहुओं को सिकोड़कर तथा फैलाकर एक-एक अंगद्वारा एक-एक अंग स्पर्श करके अति दुष्कर नृत्य करने लगी।

श्रीराधा का छालिक्य नृत्य।

कोई ब्रज सुंदरी स्थान तथा समय विशेष से एक हाथ से भूमि स्पर्श करके देह को पुनः पुनः आकाश में भ्रमण कराकर भूमि पर गिरकर नृत्य तो कभी भूमि अवलम्बन (सहारा) बिना ही शून्य पथ में अद्‌भुत नृत्य करने लगी। कोई क्षीणोदरी (क्षीण उदर वाली) ऊर्ध्व देश में पीठ को धनुलता के समान करके मुख को उत्तान, उदर भाग को वक्र, वेणी को टखने तक लंबा करके नृत्य करने लगी। कोई गोपी अद्‌भुत कौशल से पद चलाकर नूपुर के मध्य स्थित कलाईयों

गोपियों की अद्‌भुत नृत्य मुद्रा।

Scanned by CamScanner

(नूपुर के मध्य में स्थित छोटी गोली) को ताल तथा गति के अनुसार एक दो तीन इस प्रकार से क्रम पूर्वक बजाने लगी, तो कभी कलाई को निः शब्द करके अति अपूर्व नृत्य करने पर दर्शक वृन्द "साधु साधु" कहकर भूयसी प्रशंसा करने लगे।

श्री बैकुण्ठ लोक में भगवान को सुखी करने के लिए ब्रह्मा तथा शिवादि रचित जितने प्रकार के गीत वाद्य तथा नृत्य हैं, श्री विष्णु एवं लक्ष्मियों द्वारा आचरित जितने प्रकार के नृत्य, गीतादि हैं तथा ब्रज की रास नायिकाओं के द्वारा जो असाध्य नृत्य गीतों की सृष्टि हुई है, सभी का रास लीला में श्री कृष्ण एवं राधादि ब्रज सुंदरीगण ने आविष्कार किया है। श्री कृष्ण नृत्य रंग में भ्रमण करते-करते किसी गोपी को संदर्शन, किसी का अधरोष्ठ चुंबन, किसी को अभिप्राय सहित अवलोकन, किसी-किसी का कुचाकर्षण करके रास के छल से सबको आनंदित करके मधुर विहार करने लगे। जैसे बालक दर्पणादि में अपना प्रतिबिम्ब देखकर उसके साथ नाना प्रकार की क्रीड़ा करता है, उसी प्रकार अपनी आनंदिनी शक्तियों के साथ श्री कृष्ण श्रृँगार रस की अनन्त कला का प्रकाश करके रास विहार करने लगे। गोपियों के नृत्य श्रम से वस्त्र तथा केश शिथिल, सघन निःश्वास वायु से कुचाग्र कंपित, कपोल श्रमजल से क्लिन्न (गीला), श्रम जनित क्लान्त देह के निरुपम माधुर्य से श्री कृष्ण ने अपार आनन्द लाभ किया। कोई रास नृत्य श्रान्ता गोपी कृष्ण की चंदन लिप्त बाहु को अपने कंधे पर रखकर आघ्राण पूर्वक कंपाश्रु-पुलक से व्याप्त होकर मेघ में स्थिर सौदामिनी के समान शोभा पाने लगी। श्री कृष्ण के मकराकृति कुंडल-मंडित कपोल पर कोई गोपी अपने कपोल को रखते हुए उनके श्री मुख से चर्बित ताम्बूल ग्रहण करने लगी। तो कोई अपने स्पर्श से पुलकित श्रीकृष्ण के स्कंध देश पर कृष्ण स्पर्श से पुलकित अपनी बाहु रखकर क्षण काल विश्राम करने लगी। कोई गोप-सुंदरी श्रम-नाश के लिए अपने कुच युगल को स्वरमण श्री कृष्ण के हाथ में रखकर थकान दूर करने लगी। करुणा सागर श्री कृष्ण के अपने कर कमल द्वारा ब्रजसुन्दरीगणों का पसीना पौंछने पर कृष्ण स्पर्श से सात्विक भाव के उदय होने के कारण उनका दुगुना पसीना निकलने लगा। किसी गोपी के प्रणय सहित श्री कृष्ण के उत्तरीय वसनांचल द्वारा अपने मुख के पसीने को मार्जन करने पर श्री कृष्ण ने भी उसी गोपी के पहने हुए वसनांचल द्वारा अपना पसीना मार्जन किया। कोई-कोई गोपी श्री कृष्ण के अंग स्पर्शादि रूप विलास सिंधु तरंग में निमग्न होने पर शिथिल हुए माल्य कुंतल-वस्त्रादि को संवरण करने में भी समर्थ नहीं हुई।

रास में श्रृँगार रस की अनन्त कला।

नृत्य श्रांता गोपियों की विविध रसमय चेष्टा।

इस प्रकार से श्रीकृष्ण द्वारा रास-नायिका ब्रज सुंदरियों के साथ रास नृत्य समापन करके उनके साथ रति-क्रीड़ा की इच्छा करने पर श्री वृन्दादेवी द्वारा उनकी इच्छा जानकर उन्हें धवल कर्पूर-चूर्ण के समान बालुका राशि युक्त पुलिन में लाकर श्री राधा श्याम को बिठाने पर सखी वृन्द भी उनके समाने बैठ गईं। तब किंकरी गण सुशीतल जल, चामर, व्यजन, ताम्बूल प्रदान, पाद संवाहनादि के द्वारा उनकी सेवा करने लगीं।

Scanned by CamScanner

युगल माधुरी दर्शन कर सभी आनंद में मग्न हुई।

नवद्वीप : महाप्रभु का विश्राम तथा भावावेश :

नवद्वीप में गंगातीर पर श्री मन्महाप्रभु स्वरूप के रासलीला गान में परिकरों के साथ महा-आनंद में नृत्य-कीर्तनाविष्ट हैं। गोपियों के साथ श्रीकृष्ण रास नृत्य समापन करके ज्योत्स्ना से धुले हुए कोमल शुभ्र बालुका विस्तीर्ण यमुना के तट प्रदेश में विश्राम करने लगे। पद गान श्रवण कर महाप्रभु बाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप के गान समापन करने पर भक्त वृन्द ने भी बाह्य दशा लाभ की। उद्दण्ड नृत्य-कीर्तन से श्रान्त होकर प्रभु ब्रज के भाव में श्री वास के पुष्पोद्यान में रत्न मंडप में बैठकर सुगंधी शीतल वायु का सेवन करने लगे। भक्त वृन्द भी प्रभु को घेरकर बैठकर विश्राम करने लगे। नृत्य श्रम से सभी के शरीर पसीना युक्त हैं। एवं तीव्र निःश्वास-प्रश्वास बह रही है। यह देखकर दासगण सबको व्यजन तथा पाद संवाहनादि सेवा करने लगे। महाप्रभु का भाव जानकर श्री स्वरूप सखियों सहित श्री श्री राधा कृष्ण का मधुपान कुँज विलास तथा जल विहार पद मधुर कंठ से गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी अपने-अपने स्वरूप की स्मृति में ब्रज भाव में निमग्न हुए।

ब्रजधाम : मधुपान कुँजविलास, जलकेलि :

ब्रज में रास नृत्यावसान के पश्चात् श्री राधा कृष्ण सखियों के साथ यमुना पुलिन में विश्राम सुख का उपभोग कर रहे हैं—इसी समय वृन्दादेवी तथा वन देवीगण ने मणिमय पात्र भरकर फूल तथा फलों के रस से निर्मित नाना प्रकार के मधु, मणिमय चषक (पानपात्र) तथा नाना प्रकार के स्वादिष्ट फलों के विंदश (चांट) श्री कृष्ण तथा प्रियागणों के मध्य स्थल में लाकर यथा स्थान सजाकर रखे। श्रीकृष्ण अपनी शक्ति प्रकाश करके दो-दो गोपियों के मध्य में बैठकर नाना रंग में मधुपान करने लगे। श्री कृष्ण प्रिया गणों के अधर सौरभ से मधु को सुगंधित करके स्वयं यथेष्ट मधुपान करके प्रियागणों को भी पान कराने लगे। मत्तता के कारण गोपियों के वाक्यों में क्रमशः विच्युति, चित्त की अस्थिरता, अलस पूर्ण चक्षुओं का प्रसारण, अंगों का कंपन, पुनः पुनः हास्य, बुद्धि भ्रम, जड़ता, मौनादि चेष्टायें प्रकाश पाने लगीं। कोई सखी मधुपात्र के मध्य चन्द्र का प्रतिबिम्ब देखकर बोली—"सखी! इस मधु के अंदर चन्द्रमा प्रवेश कर गया है, क्या इसे पान किया जा सकता है? यदि इसे चबाकर मधुपान करूँ तो यह दुष्ट मेरे कंठ में फँस जायेगा।" कोई उनके अंग सौरभ से इतस्ततः संचरण शील भ्रमर के प्रतिबिम्ब को मधुपात्र में देखकर उसे गाढ़ा कल्क समझकर अंगुली के अग्रभाग से हिलाकर तथा कपड़े से छानकर मधुपान करने लगी। तो कोई मत्तता में प्रयुक्त—"हा कष्ट आकाश प प पतित हो रहा है, भू-भूमि घू घू घूम रही है। हे सखीगण! मुझे ध ध धारण करो। ओहे मैं तो गिर रही हूँ।" इस प्रकार प्रलाप करने लगी। तो कोई अन्य सखी को आलिंगन करके बोली—"सखी! कुछ समय

श्री श्री राधा कृष्ण तथा सखियों का मधुपान।

मधुपान से प्रमत्ता गोपियों की चेष्टा।

Scanned by CamScanner

तो बचूँगी ना?''

श्री श्री राधा कृष्ण परस्पर अतिशय आग्रह के कारण अत्यधिक मधुपान में मत्त होकर एक दूसरे के कान में कोमल तथा अर्थ शून्य वाक्य कहने लगे। उत्कट हँसी के साथ एक दूसरे पर गिर पड़े। गाल-गाल पर रसमय मधुर चुंबन आदि करने लगे। इस प्रकार से सैकड़ों प्रकार का रमणीय भाव प्रकाश पाने लगा। इस प्रकार की चेष्टा में ही श्री कृष्ण की कौस्तुभ मणि के पृष्ठ भाग में चले जाने पर श्री राधा बोलीं– ''तुम्हारी कौस्तुभ कहाँ गयी?'' श्री कृष्ण बोले–''तुमने ही चुराई है।'' श्री राधा बोलीं–''मैने नहीं विशाखा ने।'' विशाखा बोलीं–''हे सुमुखी, मैने नहीं ललिता ने।'' ललिता बोलीं–''मैने नहीं इन्दुलेखा ने।'' इस प्रकार से विवाद होने पर कोई सखी बोली–''यह वन माला तुम्हारे वक्ष स्थल में अकेले रहना चाहती है इसीलिए तुम्हारे सामने ही इसने कौस्तुभ को चुरा लिया है।'' तब श्रीकृष्ण बोले–''हाँ ठीक ही कहती हो। हे कुटिले माले! तुमने ही मेरी कौस्तुभ की चोरी की है, तुम दण्डनीय हो–उसे शीघ्र दो''–यह कहकर माला को खींच कर ताड़ना देते ही कौस्तुभ सामने आ गई। तब सभी हँसते-हँसते गिरने लगे। तब श्री कृष्ण ने मधु मद तथा कंदर्प मद में विमत्त होकर उसी प्रकार से आकुलितांगी श्री राधा को साथ लेकर विचित्र शय्या से शोभित पुलिन के कुँज में प्रवेश किया। वृन्दादेवी ने कंदर्प मदालसा (मद से उत्पन्न आलस्य) तथा उद्घूर्णिता सखियों को भी प्रथक-प्रथक कुँज में शयन कराया।

मधुपान से श्रीराधाकृष्ण की रसमय चेष्टा।

मधुमद तथा मदनमद में मत्त श्री कृष्ण निर्जन में सुरतरंगिनी श्री राधा को प्राप्त होकर महामत्त गजेन्द्र के समान विलास करने लगे। श्रीकृष्ण के बलपूर्वक आलिंगन में प्रवृत्त होने पर श्री राधा नखाघात करने लगीं, श्री कृष्ण के अधर दंशन में हठात प्रवृत्त होने पर श्री राधा ने बाहुओं द्वारा बांध लिया। श्री कृष्ण के वस्त्राकर्षण में प्रवृत्त होने पर श्री राधा कुबलय कुसुम द्वारा आघात करने लगीं। इस प्रकार श्री राधा ने रति की अपेक्षा भी लीला विलास द्वारा श्रीकृष्ण के अतिशय सुख का विस्तार किया। तत्पश्चात् कंदर्प लीला का महामहोत्सव संजात हुआ, विलास रस पारावार में युगल निमग्न हो गये। विलास के अंत में सुकोमलांगी श्री राधा के दोनों नेत्र निमिलित, मलयानिल द्वारा उनकी देह के स्वेदाम्बु (पसीना) लुप्त हो गये, क्रुटित (छिन्न हार) अमल हार से कुचयुगल उज्ज्वल-चन्द्र किरण से चित्रित तट कुँज में अपने अंग को डालकर किशोरी मणि श्री राधा श्रीकृष्ण का अपार आनन्द विधान करने लगीं। तदोपरान्त श्रीकृष्ण स्वाधीन भर्तृका कान्ता श्री राधा के आदेशानुसार उनकी वेश-भूषादि संपादन करते हुए पूर्ण मनोरथ होकर हँसते हुए कुँज से बाहर आये। तत्पश्चात् श्री राधा द्वारा प्रेरित होकर प्रत्येक सखी के कुँज में प्रवेश तथा विलास करके प्रत्येक को स्वाधीन भर्तृका दशा प्राप्त कराकर सबसे छिपकर हास्य मुखी तथा परमानंदिता श्री राधा से मिले। सखीगण के वस्त्रावृत देह से कुँजों से निकल कर श्रीमती के

श्रीश्रीराधाकृष्ण का विलास।

सखियों के साथ श्री कृष्ण का विलास।

Scanned by CamScanner

निकट आने पर उनके दर्शन से उन्हें हँसते देखकर सखीगण यत्नपूर्वक अपने-अपने अंगों को आच्छादन करते हुए लज्जा से नतमुखी तथा चंचल नयना हुई। श्रीमती हास्य मधुर मुख से बोलीं–"सखीगण! ये नायक रंगस्थल में मेरे तथा वृन्दा के निकट ही अवस्थान कर रहे हैं फिर तुम सब की देह की इस प्रकार दशा किसने की?" यह बात सुनकर श्रीकृष्ण हँसते हुए बोले–"हे राधे! मूर्तिमान रसनायक उज्ज्वल अथवा श्रृँगार रस ने ही इन नटी गणों को रति नृत्य में इस प्रकार से नचाया है, इसलिए इनके अंगों में नृत्य चिह्न दृष्टिगोचर हो रहे हैं।" तब सखीगण श्री कृष्ण तथा अपनी सखी श्री राधा से प्रणय ईर्ष्या पूर्वक बोलीं–"हे कृष्ण! हम सब की सखी श्री राधा ही इस रति नृत्य में सर्वदा तुम्हें नृत्य कराती है, इसलिए ये ही तुम्हारे रति नृत्य की गुरु हैं, तुम्हारे द्वारा हम सबको भी अनुशिष्या (शिष्य की शिष्या अर्थात् प्रशिष्या) करने की अभिलाषा कर रही हैं। लोग अपनी इच्छा से गुरु आश्रय करके शिष्य होते हैं परन्तु तुम बलपूर्वक हम सब से यह कार्य कराना चाहते हो-अतः तुम दोनों का परिश्रम विफल है।" तत्पश्चात् श्री राधा से बोलीं–हे सखी! भोगिनी! (पक्ष में हे सर्पि!) हम सब नकुलांगना हैं, हम सब की विशुद्ध बुद्धि से तुम अवगत नहीं हो, तब भी अपनी समता-सम्पादन के लिए हम सब के निकट अपने पति भुजंग (पक्ष में कामुक या लम्पट) को भेजकर वृथा क्यों खिन्न मना हो रही हो।?"

श्री राधा तथा सखियों का परस्पर परिहास।

तदोपरान्त मदमत्त हाथी जैसे हथिनियों के साथ श्रांति नाश के लिए नदी में उतरता है उसी प्रकार श्री कृष्ण ने प्रियागणों के साथ नृत्य श्रम दूर करने के लिए युमुना में जल विहार करना आरम्भ किया। किसी स्थान पर घुटनों तक, कहीं नाभि तक, कहीं कंठ तक जल में जाकर नृत्य परिश्रांता प्रेयसी वर्ग को जल में खींचकर परस्पर जलसिक्त होकर महा कुतूहल के साथ जल सिंचन क्रीड़ा आरंभ की। गोपियों के साथ श्री कृष्ण ने पृथक-पृथक मंडल रचना करके नाना प्रकार के दाव रखकर (बाजी लगाकर) जल युद्ध आरम्भ किया। एक दूसरे को जीतकर दाव ग्रहण करने लगे, एवं पराजित होने पर उसे लौटाने लगे। आदन-प्रदान कार्य में जो अनिच्छुक हुए उनके साथ कलह होने लगा। "रात में चक्रवाक मिथुन में संयुक्त प्रफुल्ल कमलिनी के मधुपान करने में भ्रमर प्रवृत होता है।" श्री कृष्ण के यह बात कहने पर प्रेयसी वर्ग शंकित होकर बायें तथा दायें बाहु युगल को स्वस्तिकाकार करते हुए उनके द्वारा दोनों कुच एवं वसनांचल द्वारा अपने मुख पद्म आच्छादित करने लगीं। श्री राधा के नयन माधुर्य से पराजिता मीन द्वारा श्री राधा के पाद स्पर्श करने पर उन्होंने चकित होकर कान्त को आलिंगन किया, जिससे कृष्ण प्रणय रस में विभोर हुए। तत्पश्चात् सखीगण परस्पर कमल, जल तथा मृणाल द्वारा जो परस्पर युद्ध करने लगीं उसमें किसी की भी जय या पराजय नहीं हुई, किंतु श्री कृष्ण का दूर से दर्शन करते ही जो उनका मन पराभूत हुआ, ये ही आश्चर्य का विषय है। तदोपरान्त श्री कृष्ण दो, तीन,पाँच, छः अथवा सात, आठ ब्रज सुंदरियों के साथ मंडली बनाकर जल मंडूक वाद्य का विस्तार करने लगे। उस समय

यमुना में जल विहार।

Scanned by CamScanner

ब्रज सुंदरियों के स्तन युगल निर्लेप, नयन समूह निरंजन, वस्त्र, केश तथा नीवी शिथिल एवं मुक्ताहार छिन्न हुआ। उनकी तात्कालिक शोभा विशेष का दर्शन करके श्री कृष्ण का नयन युगल प्रलुब्ध हो गया। गोपियों के कुच चंदन से कालिन्दी का जल श्वेत वर्ण होने पर गंगा के साथ यमुना समान होकर भी श्रीकृष्ण तथा गोपियों के जल विहार के सौभाग्य का लाभ करके यमुना ने गंगा को पराजित कर दिया। इस प्रकार से श्री कृष्ण गोपियों के साथ विचित्र जल विहार करने लगे। सेवा परा किंकरीगण तट पर खड़ी होकर उसका दर्शन करके आनंद सागर में निमग्न हुई।

नवद्वीप : गंगा स्नान :

नवद्वीप में महाप्रभु श्री वास पुष्पोद्यान में स्वरूप के गान श्रवण कर सपरिकार भावाविष्ट हैं। गोपियों के साथ श्री कृष्ण का मधुपान, रति क्रीड़ा तथा जल विहार पद श्रवण से भावावेश में हुँकार करके भक्त गणों के साथ बाह्य दशा लाभ की। स्वरूप गोस्वामी ने गान समापन किया। श्रीवास पंडित ने प्रभु की इच्छा जानकर सपरिकर प्रभु के जल-विहार के उपयोगी कोमल श्वेत वस्त्र मंगवाये। प्रभु भक्त वृन्द के साथ उन्हें पहनकर गदाधर का हाथ पकड़कर भक्त वृन्द से घिरकर गंगा स्नान के लिए चले। दासगण शुष्क वस्त्र लेकर पीछे-पीछे चलने लगे। महाप्रभु गंगा में उतर कर ब्रजभाव में आविष्ट होकर भक्तों के साथ जल विहार करने लगे। भक्त वृन्द भी ब्रजभाव में विभावित होकर प्रभु को घेरकर मृदु-मधुर जल सिंचन करने लगे। तत्पश्चात् श्री गौर-गदाधर का जल युद्ध चलने लगा। नित्यानन्द प्रभु तथा अद्वैत प्रभु ने परस्पर जलयुद्ध आरम्भ किया। भक्त वृन्द ने भी परस्पर जल युद्ध किया। तदोपरान्त प्रभु को घेरकर सभी "कया कया" शब्द से हाथ द्वारा जलवाद्य करते हुए जल क्रीड़ा करने लगे। इस प्रकार से काफी समय तक सभी के नाना भाव में जल-विहार करके तट पर उठने पर दासगण ने तीन प्रभु को सुगंधी तेल मालिश तथा उबटनादि लगाकर पुनः स्नान कराया। स्नानोपरान्त कोमल वस्त्र से श्री अंग पोंछकर दासगण ने महाप्रभु को अरुण वसन नित्यानंद प्रभु को नील वसन तथा अद्वैत प्रभु को श्वेत वसन पहनाये। सब भक्तवृन्द भी शुष्क वस्त्र पहनकर गंगा को प्रणाम करके श्रीवास पुष्पोद्यान में आये। दासगण ने आकर तीनों प्रभु का पाद प्रक्षालन करके श्रृँगार मंडप पर बिठाया। तीनों प्रभु तथा भक्तवृन्द का श्रृँगार समापन करके दासगण ने दर्पण दिखलाया। स्वरूप गोस्वामी ने तीन प्रभु की आरती की। महाप्रभु का मन जानकर स्वरूप गोस्वामी ने सखियों सहित श्री श्री राधा कृष्ण के श्रृँगार, भोजन तथा विश्राम पद गान किये। गान श्रवण कर सभी ब्रजरस में मग्न हुए।

ब्रजधाम: श्रृँगार, भोजन तथा विश्राम :

ब्रज में श्री श्री राधा कृष्ण सखियों के साथ परमानंदित होकर यमुना में जल-क्रीड़ा में निरत हैं। श्रीकृष्ण गोपियों सहित मनोसुख से विचित्र जल-विहार करके सबको साथ लेकर तट पर आये। मंजरी गण ने सुगंधी तेल से अभ्यंग (तेल मालिश) तथा सुगंधी चूर्ण का उबटनादि लगाकर पुनः स्नान कराया। स्नान

Scanned by CamScanner

के अंत में कोमल वस्त्र से अंग मार्जन करके सभी को उन्हेंने शुष्क वस्त्र पहनाये। तत्पश्चात् वृन्दा देवी

नीलाम्बुज कुंज में नैश-शृंगार।

सबको लेकर स्वर्ण मंडप में अर्थात् योगपीठ के नीलाम्बुज कुँज में रत्नमय वेदिका की कुसुम शय्या पर बैठ गई। तत्पश्चात् वनदेवियों के साथ वृन्दोदवी ने संपुटाकृति (रत्नपेटी के आकार का) कल्पलता के बहुत से फलों को मंगवाकर श्री राधा कृष्ण एवं सखियों को उपहार प्रदान किया। सेवा परा किंकरी गण ने श्री कृष्ण श्री राधा तथा ललितादि सखियों के नाम से अंकित सम्पुटों को खोलकर विचित्र वस्त्र, भूषण, अनुलेपन, सिंदूर वर्णकादि प्राप्त करके अपने-अपने नाम से अंकित संपुट-द्रव्य द्वारा उन्हें विभूषित किया। श्री कृष्ण उज्ज्वल रस मूर्ति अर्थात् साक्षात् श्रृँगार रस, श्री राधादि श्रृँगार रस के स्थायी भाव रति की परिपक्वावस्था (महाभाव स्वरूपा), श्री कृष्ण चन्द्र स्वरूप, श्री राधादि उनकी कला स्वरूपा हैं। इस प्रकार से परस्पर एकात्मा होकर भी लीला रसास्वादन के लिए पृथक-पृथक मूर्ति धारण किये हुए हैं। अतः परस्पर का स्नेह ही इनका अभ्यंग (तेल मालिश), सखियों का स्नेह उबटन, तारुण्यामृत धारा में ही श्री राधा का स्नान, समुज्ज्वल लावण्य वस्त्र द्वारा ही उनका अंग आच्छादित, सौभाग्य ही ललाट कर तिलक, सौन्दर्य कुंकुम से ही लेपित अंग, अष्ट सात्विक रूपी वर्णक से अंग चित्रित, हाव-भाव, किलकिंचित, औत्सुक्य, उन्मादादि भूषणों से ही अंग विभूषित हैं। इसीलिए बाहरी अंग में भूषण का कुछ भी प्रयोजन न होने पर भी सेवा परायणा दासी गण द्वारा उन्हें यत्न पूर्वक विभूषित करने पर वे सब परम शोभान्वित हुई।

तत्पश्चात श्री वृन्दादेवी सखियों सहित श्री श्री राधा माधव को योगपीठ के दाहिने उनके मनोरम रात्रि-भोजन के स्थान अरुणाम्बुज कुँज में ले गई। वृन्दा के आदेश से वन देवी गण ने पहले ही उत्तम-उत्तम

श्री कृष्ण का रात्रि भोजन।

फल लाकर उत्तम रूप से साफ करके स्वर्ण थालों में क्रम-पूर्वक सजाकर रखे हुए हैं। भक्ष्य द्रव्य का दर्शन करके सबने आनंद लाभ किया। वृन्दादेवी श्री कृष्ण को सुसज्जित आसन पर बिठाकर क्रमपूर्वक भोज्य सामग्री लाकर देने लगीं तथा श्री राधा अपने हाथ से परम सुख पूर्वक परोसने लगीं। श्रीकृष्ण के भोजन के लिए अमृत-विलास, अनंग गुटिका, दुग्ध, लड्डुकादि जो सब सामग्री श्री राधा गृह से लाई थीं, रूप मंजरी द्वारा यत्न के साथ उसे निकाल कर देने पर फलादि के साथ श्री राधा द्वारा परोसी गयी उन सब मिष्टान्नादि का श्री कृष्ण ने परम सुख-पूर्वक भोजन किया। भोजन के अंत में जलपान तथा आचमन करने पर श्री वृन्दा श्री कृष्ण को योगपीठ के

सखियों सहित श्री राधा का रात्रि भोजन।

पश्चिम में हेमाम्बुज कुँज में ले गई। जिसके चारों ही द्वार खुले हुए हैं, यमुना की जल कणावाही स्निग्ध समीर से जो सुशीतल है, स्वतः ही कोटि सूर्य की किरणों के समान उज्ज्वल होकर भी रत्न समूहों की किरण माला से परम उज्ज्वल एवं अगुरु-धूप की गंध से सतत् सुगन्धित है। उसी कंदर्प केलि मंदिर में विन्यस्त रत्न पलंग के हंस के समान धवल तूलिका (रूई से भरा गद्दा) युक्त प्रान्त देश में नाना उपाधान शोभित हैं। कोमल वस्त्रावृत

Scanned by CamScanner

निर्वृन्त कुसुम की शय्या के ऊपर वृन्दा देवी ने श्री कृष्ण को शयन कराया। दासीगण ताम्बूल दान, बीजन, पाद संवाहनादि सेवा करने लगीं वृन्दा अरुणाम्बुज कुँज में जाकर सखियों सहित श्री राधा रानी को भोजन कराने लगीं। श्री कृष्ण के भोजन-पात्र में श्री राधा उनके दायें तथा बायें ललिता, विशाखा, बगल तथा समाने अन्यान्य सखी गण बैठ गईं। श्रीमती कान्त के अधरामृत का परम प्रीतिपूर्वक सखियों सहित आस्वादन करने लगीं। वृन्दा तथा रूप मंजर्यादि परिवेशन करने लगीं। भोजन के अंत में जल पान तथा आचमन करके हेमाम्बुज कुँज में जाकर श्री कृष्ण के पलंग पर आनंदित चित्त से श्री राधा बैठ गईं। उसी पलंग के दोनों ओर दो रत्न चारपाई हैं, उन पर ललिता तथा विशाखा बैठकर श्री श्री राधा श्याम को ताम्बूल दान करने लगीं। इधर श्री रूप मंजर्यादि समस्त किंकरीगण एवं गुरु मंजरीगण सभी युगल अधरामृत का भोजन करके आचमन के अंत में हेमाम्बुज कुँज में आई। साधक मंजरी सबका अवशेष प्राप्त करके स्थान पात्रादि संस्कार कर गुरु देवी के चरण मूल में आई। श्री रूप मंजरी रति मंजरी के साथ परमप्रेम में भरकर श्री युगल के पाद संवाहन तथा अन्यान्य किंकरीगण बीजनादि सेवा करने लगीं। श्री रूप तथा श्री रति मंजरी परम सौभाग्यवती दोनों किंकरी श्री युगल के श्री चरण रूपी अभीष्ट देव को अपनी गोद रूपी स्वर्ण पीठ में बिठाकर पहले नयन नीर से पाद्य, उसके बाद उद्‌गत रोमांच रूपी दूर्वाकुर से अर्घ्य, सुकोमल कर कमलों से पुष्प, कुच युगलों से लिप्त चंदन, कर्पूर तथा कस्तूरी रूपी गंध * निःश्वास ही धूप, नखरत्न कांति ही दीप, दृष्टि रूपी पुष्पमाल्य, उरोज रूपी अनार द्वारा नैवेद्य कल्पना, नासिका से निर्गत पंचप्राण मृदुहास्य के साथ मिलकर जैसे कर्पूर वर्तिका हुए—उसके द्वारा आरती की, इस प्रकार षोडशोपचार से अर्चना की।

तत्पश्चात् श्री कृष्ण श्रीमती के साथ क्रीड़ाभिलाषी होकर उनसे बोले—"हे राधे! दासीगण नृत्यश्रम से अलसांग हो रही हैं, इन सब को शयन करने का आदेश दो। तुम्हारे चरणों में यदि अब भी श्रांति हो तो मुझे आज्ञा दो में ही चरण संवाहन करूँगा।"

श्री श्री राधा कृष्ण तथा सखियों का शयन।

श्री कृष्ण की बात सुनने मात्र से ही किंकरीगण वांछितार्थ सिद्धि (संभोग रस सिद्धि) का समय समागत हुआ जानकर देवपूजा की पुजारिनी के समान (पुजारिनी जैसे ईष्ट देव को शयन कराकर मन्दिर से बाहर चली जाती है उसी प्रकार) निकुँज मंदिर से निकल आईं। ललिता विशाखादि सखीगण कल्प वृक्ष-लतावृत अपने-अपने कुँजों में जाकर शयन कर गईं। सेवापरा मंजरी गण श्री युगल के शयन मंदिर के बाहर वेदिका पर अश्रु युक्त प्रेमाप्लुत चित्त से यंत्र पंखे की डोरी खींचकर कुँज रंध्र में नयन डालकर युगल की लीला माधुरी आस्वादन करने लगीं। रसालस में श्री श्री राधा कृष्ण के निद्रित होने पर किंकरीगण इसी वेदिका पर शयन

* पहले गंध देकर उसके बाद फूल दान करना होता है, अर्चना का यही विधान है, किन्तु यहाँ पहले पुष्प उसके बाद गंध प्रदान की यह व्यतिक्रम आनंद में विवश होकर किया गया है यह जानना चाहिये।

Scanned by CamScanner

कर गईं। श्रीगुरु देवी के श्री चरण संवाहन करके गुरुदेवी के निद्रता होने पर साधक दासी अपना उत्तरीयांचल बिछाकर गुरु देवी के पाद मूल में शयन कर गई।

जय श्री राधे!

इति ब्रज की रात्रि लीला समाप्त।

नवद्वीप : सपरिकर महाप्रभु का भोजन तथा शयन :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्री वासोद्यान में सपरिकर स्वरूप के गान श्रवण से भावाविष्ट हैं। सखियों के साथ श्री श्री राधा कृष्ण शयन लीला श्रवण से महाप्रभु प्रेमावेश में हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए भक्त वृन्द के बाह्य दशा लाभ करने पर स्वरूप ने गान समाप्त किया। महाप्रभु ने दोनों प्रभु को आलिंगन किया तथा भक्त वृन्द ने प्रभु के चरणों में प्रणाम किया। तब श्री वास पंडित भाईयों द्वारा फल, मूल, मिष्टान्नादि प्रचुर नृसिंह प्रसाद मंगवाकर भक्त वृन्द के साथ तीन प्रभु को भोजन मंडप में यथास्थान बिठाकर भाईयों के साथ परिवेशन करने लगे। महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ राधा-भाव में सखियों के साथ कृष्णाधरामृत आस्वादन के आवेश में परम सुख पूर्वक भोजन करने लगे। भोजन के अंत में जल पान तथा आचमन करके सुवर्ण मंडप मे जाकर शय्या के ऊपर बैठने पर श्री वास पंडित ने तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को ताम्बूल दान किया। दासगण तीन प्रभु का पाद संवाहन, चामर, व्यजनादि सेवा करने लगे। तब प्रभु की आज्ञा से श्री वास पंडित, भ्रातृगण, गोस्वामी वर्ग तथा गुरुवर्ग के साथ भोजन के लिए बैठने पर साधक दास परिवेशन करने लगा। भोजन के अंत में आचमन करके सभी के महाप्रभु के शयन मंदिर में चले जाने पर साधक दास सबका अवशेष भोजन करके स्थान पात्रादि संस्कार करके यथा स्थान रखकर महाप्रभु के निकट आकर व्यजनादि सेवा करने लगा। महाप्रभु सबको प्रीतिपूर्वक बोले—"संकीर्तन में नृत्य कीर्तनादि से सभी परिश्रांत हो गये हो, रात्रि भी अधिक हो गई है, सभी विश्राम करें! तब दोनों प्रभु तथा भक्त वृन्द ने अपने-अपने स्थान पर जाकर शयन किया। * साधक दास श्री गुरु देव के इशारे पर श्री मन्महाप्रभु के श्री चरण मृदु-मृदु संवाहन करने लगा। मधुर मद्रन से प्रभु के सुखपूर्वक निद्रित होने पर साधक श्री गुरु वर्ग के पाद संवाहन करते हुए क्रम-पूर्वक सबको निद्रित करा कर श्री गुरु देव के श्री चरण संवाहन करने लगा। श्री गुरु देव के निद्रित होने पर साधक ने श्री गुरुदेव के श्री चरण तल में शयन किया।

जय गौर हरि।

इति श्री नवद्वीप रात्रि लीला समाप्त।

* निशांत लीला में शयन का जो स्थान निर्दिष्ट है, सभी ने अपने-अपने उसी स्थान पर शयन किया।

Scanned by CamScanner

श्रीश्रीगौरगोविन्द की नैमित्तिक लीला

माघी शुक्ल बसंत पंचमी से फाल्गुनी पूर्णिमा तक ४० दिन नवद्वीप में उत्सव का स्थान निरूपण—

तिथि	स्थान
बसंत पंचमी	श्रीअद्वैताचार्य प्रभु के गृह में उत्सव।
षष्ठी	श्रीवास पंडित के गृह।
सप्तमी	श्रीअद्वैताचार्य प्रभु के गृह में (व्रत)।
अष्टमी	श्रीचन्द्रशेखर आचार्य के गृह।
नवमी	श्रीजगदीश पंडित के गृह।
दशमी	श्रीजगदानन्द प्रभु के गृह।
एकादशी	श्रीराघव पंडित के गृह (व्रत)।
द्वादशी	श्रीवनमाली सरकार के गृह।
त्रयोदशी	श्रीनित्यानन्द प्रभु के गृह (व्रत)।
चतुर्दशी	श्रीमधु पंडित के गृह।
पूर्णिमा	श्रीगंगादास आचार्य के गृह।
प्रतिपदा	श्रीस्वरूप दामोदर के गृह।
द्वितीया	श्रीराय रामानन्द के गृह।
तृतीया	श्रीगोविन्दानन्द ठाकुर के गृह।
चतुर्थी	श्रीवसुरामानन्द के गृह।
पंचमी	श्रीशिवानन्द सेन के गृह।
षष्ठी	श्रीगोविन्दमाधव वासुघोष के गृह।
सप्तमी	श्रीवक्रेश्वर पंडित के गृह।
अष्टमी	श्रीपुंडरीक विद्यानिधि के गृह।
नवमी	श्रीनरहरि सरकार के गृह।
दशमी	श्रीगदाधर पंडित के गृह।
एकादशी	श्रीशुक्लाम्बर ब्रह्मचारी के गृह (व्रत)।

Scanned by CamScanner

द्वादशी	श्रीगदाधर दास के गृह।
त्रयोदशी	श्रीसदाशिव पंडित के गृह।
चतुर्दशी	श्रीमन्महाप्रभु के गृह (शिव चतुर्दशी व्रत)।
अमावस्या	श्रीमान् पंडित के गृह।
प्रतिपदा	श्रीवासुदेव दत्त के गृह।
द्वितीया	श्रीगरुड़ पंडित के गृह।
तृतीया	श्रीअभिराम ठाकुर के गृह।
चतुर्थी	श्रीसुन्दरानन्द ठाकुर के गृह।
पंचमी	श्रीधनंजय पंडित के गृह।
षष्ठी	श्रीगौरीदास पंडित के गृह।
सप्तमी	श्रीकमलाकर पिप्पलाई के गृह।
अष्टमी	श्री उद्धारण दत्त के गृह।
नवमी	श्रीमहेश पंडित के गृह।
दशमी	श्रीपुरुषोत्तम दास के गृह।
एकादशी	श्रीनागर पुरुषोत्तम दास के गृह।
द्वादशी	श्रीपरमेश्वर दास के गृह।
त्रयोदशी	श्रीकालाकृष्ण दास के गृह।
चतुर्दशी	श्रीश्रीधर पंडित के गृह।
पूर्णिमा	श्रीमन्महाप्रभु के गृह।
	उनका आविर्भाव तिथि महोत्सव (व्रत)।

Scanned by CamScanner

श्रीश्रीगौरगोविन्द की नैमित्तिक लीला

बसंत उत्सव

नवद्वीप : महाप्रभु का भावावेश :

माघ मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया का दिवावसान होने पर श्री मन्महाप्रभु, श्री नित्यानंद प्रभु, श्री अद्वैत प्रभु तथा भक्त वृन्द अपने-अपने भवन के बैठक गृह में बैठे हुए हैं। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का भाव जानकर जावट में सखियों सहित श्री राधा के बरसाना में अपने पित्रालय में आगमन पद गान करते हैं। गान श्रवण कर सभी ब्रजभावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : स्वसखियों सहित श्रीराधा का पित्रालय गमन :

ब्रज में माघी शुक्ला द्वितीया के दिन की समाप्ति होने पर बरसाना से श्री दामचन्द्र अश्वारोहण करके रत्न पालकी तथा पदातिक (पैदल चलने वाले) के साथ सखियों सहित श्री राधा तथा अनंग मंजरी को लाने के लिए जावट में अभिमन्यु के गृह में आये। जटिला श्री राधा को नहीं जाने देगी, बहन वत्सल श्री दाम चिन्तन करते हैं कि—"कृपणा जटिला को कुछ देकर अपनी बहनों को पित्रालय ले जाना होगा।" तब वे जटिला से बोले—"आप क्या चाहती हो?" जटिला ने गो- सम्पद चाहा। श्री दाम दस हजार गो-सम्पद दान करके जटिला को संतुष्ट करते हुए तृतीया के भोजन के अंत में दिन की समाप्ति होने पर ससखी श्री राधा तथा अनंग मंजरी को पालकी पर चढ़ाकर वृषभानुपुर ले आये। वात्सल्य रस की मूर्ति माता कीर्तिदा श्रीमती के आगमन पथ की ओर दृष्टि लगाये हुई थीं, देखते ही शीघ्रता से जाकर आलिंगन करके नयन नीर से स्नान कराया। श्रीमती पितृ गृह में आगमन का आनंद तथा ससुरालय में पराधीनता पूर्वक अवस्थान के दु:ख के साथ-साथ आनंद तथा शोकाश्रु से विह्वला हो रही हैं। माता के हृदय में जैसे समा गई हों। माता अश्रुनीर बहाते हुए सोच रही हैं—"हा विधाता! पराधीन नारी जीवन की सृष्टि क्यों की।" बार-बार माता मुख चुम्बन तथा लालनादि करने लगीं। पिता वृषभानु ने भी नयन नीर बहाते हुए लालन किया। अनंग मंजरी को भी अनुरूप लालन किया। इसी प्रकार से सखी मंजरियों को भी माता-पितागण लालनादि करके अपने-अपने गृह ले गये।

स्वसखी सहित श्री राधा का पित्रालय आगमन।

पौर्णमासी द्वारा बसन्त मदन पूजा की घोषणा।

चतुर्थी के दिन श्री पौर्णमासी देवी ने ब्रजमंडल में घोषणा की—"आगामी काल से वृन्दावन में त्रिसन्ध्या, अशोक वृक्ष के नीचे बसन्त मदन पूजा करने से गोधनादि सम्पद लाभ तथा पति आदि की आयु वृद्धि हुआ करती है।" यह सुनकर वृद्धा गुरु जन वर्ग

Scanned by CamScanner

ने श्री राधिकादि सभी यूथेश्वरी तथा सखी मंजरी आदि को पौर्णमासी देवी की आज्ञा सुनाकर बसन्त मदन पूजा करने की अनुमति प्रदान की।

रामकृष्ण का गोचारण बन्द।

इधर श्री नन्द महाराज ने बसन्तोत्सव तथा होरी लीला के उपलक्ष में श्री कृष्ण बलरामादि के प्रति माघी शुक्ला पंचमी से फाल्गुनी पूर्णिमा तक चालीस दिनों के लिये गोचारण बंद करके बसन्त होरी लीला आदि आनन्दोत्सव करने का आदेश दिया।

नवद्वीप : बसंत पंचमी :

नवद्वीप में श्री अद्वैत प्रभु द्वारा बसन्त पंचमी के उपलक्ष्य में अपने भवन में सपरिकर श्री मन्महाप्रभु को निमंत्रण करने पर महाप्रभु ने प्रातः कृत्य स्नान, श्रृँगार तथा भागवत श्रवणादि के अंत में भक्त वृन्द सह अद्वैत प्रभु के साथ उनके गृह गमन किया। महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ संकीर्तन करते-करते श्री अद्वैत के भवन में उपस्थित होकर श्री मन्मदनगोपाल जीऊ के मंदिर में दंडवत प्रणामादि कर जगमोहन में बैठ गये। स्वरूप गोस्वामी मधु स्रावी कंठ से बसन्त राग में "ललित लवंग लता" पदगान करने लगे। पद श्रवण कर प्रभु ब्रजभावाविष्ट हुए। स्वरूप द्वारा प्रभु का मन जानकर कालोचित ब्रजलीला कीर्तन करने पर सभी अपने-अपने ब्रजभाव में आविष्ट हुए। पुजारी के श्री मन्मदनगोपाल जीऊ का प्रसादी आबीर, गुलालादि महाप्रभु तथा भक्त वृन्द के ऊपर फेंकने पर भक्त गण ने भी ब्रजभाव में आविष्ट होकर परस्पर आबीर गुलालादि फेंका। पुजारी के श्री मन्मदनगोपाल जीऊ को भोग निवेदन करने पर श्री स्वरूप गोस्वामी ब्रज में श्री श्री राधा कृष्ण के भोजन शयनादि पद कीर्तन करने लगे। पद गान श्रवण कर सभी ब्रजभाव में आविष्ट होकर लीला रसास्वादन में मग्न हुए।

ब्रजधाम : बसंत पंचमी :

ब्रज में बसन्त पंचमी के दिन श्री राधा नित्य लीलानुरूप स्नान वेश-भूषा समाप्त करके नन्दालय जाने के लिए कुन्दलता के पथ पर दृष्टि लगाये हुई हैं। इसी समय कुन्दलता ने आकर कीर्तिदा माता को यशोमती माता (श्री कृष्ण के लिए भोज्य सामग्री रंधन के लिए नन्दालय में श्री राधा को ले जाने के लिए) के आवेदन की जानकारी दी। कीर्तिदा माता के द्वारा श्री राधा को नन्दालय जाने का आदेश करने पर सखीगण के साथ श्री राधा को लेकर कुंदलता ने नन्दीश्वर के लिए प्रस्थान किया।

श्री राधा के सखियों के साथ हास्य परिहास के साथ नन्दालय गमन करते-करते सखाओं के साथ खेल में रत श्री कृष्ण ने अलक्षित रूप से आकर प्रचुर आबीर गुलालादि फेंकते हुए अंधकार करके श्री राधा को चुंबन, आलिंगनादि किया। बाद में श्री ललिता के गर्जन वाक्य से राइ को छोड़कर सखाओं के बीच में चले गये। तत्पश्चात् श्री राधा का नन्दालय गमन, रंधन, श्री राधा कृष्ण का भोजन, विश्राम, योगपीठ मिलनादि

Scanned by CamScanner

नित्यवत् होता है।

नवद्वीप : महाप्रभु का भोजन शयनादि :

नवद्वीप में श्री मन्महाप्रभु श्री अद्वैत भवन में श्री मन्मदनगोपाल जीऊ के जगमोहन में स्वरूप के गान श्रवण से आविष्ट हैं। ब्रज में श्री श्री राधा कृष्ण के भोजन-विश्राम आदि पदगान श्रवण कर प्रेमावेश में हुँकार कर भक्त वृन्द सहित बाह्य दशा प्राप्त होने पर स्वरूप ने गान समापन किया। पुजारी ने श्री मन्मदन गोपाल जीऊ का भोग हटाकर आरती आदि की। श्री अद्वैत प्रभु ने परम आदर के साथ सपरिकर श्री मन्महाप्रभु को विचित्र चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेयादि प्रसाद सेवन कराये। भोजन विश्राम तथा योगपीठ लीला * के अंत में महाप्रभु शयन गृह के बरामदे में बैठे हुए हैं। स्वरूप प्रभु का मन जानकर कालोचित ब्रजलीला पदगान करने लगे। गान श्रवण कर महाप्रभु राधाभाव में मदनपूजा के आवेश में श्रीअद्वैतप्रभु के गृह से भक्त वृन्द सहित पूर्व सिंह द्वार पथ से बसन्त ऋतु वन में जाकर माधवी मंडप में बैठ गये। भक्त वृन्द द्वारा प्रभु को घेरकर बैठने पर स्वरूप गोस्वामी प्रभु का मन जानकर बसन्तोत्सव लीला पद गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी अपने-अपने ब्रजभाव में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम : बसन्तोत्सव :

श्री राधा कृष्ण ने नित्यलीलावत् योगपीठ मिलन के अंत में अपने-अपने शयनालय में आकर शयन किया। क्षण काल तक विश्राम करने के बाद श्री कृष्ण बसन्त लीला की उपयोगी वेश-भूषा धारण करके सखागण के साथ खेलने गये। श्री राधाने भी विश्राम के अंत में वेशभूषा धारण करके सखियों सहित वृषभानुपुर में आकर मदन पूजा के द्रव्यादि लेकर वृन्दावन के लिए अभिसार किया।

वृन्दा द्वारा बासन्ती शोभा का प्रकाश।

वृन्दादेवी ने बसन्त ऋतु की निखिल शोभा संभार से वृन्दावन को विभूषित करके रखा है। प्रफुल्लित माधवी, लवंग लतादि से आवृत होकर मुकुलित आम्र वृक्ष शोभा पा रहे हैं। लाल अशोक, नागकेसर, मन्दार, बकुलादि वृक्षों एवं कनकलता, नवमल्लिका आदि लतावलियों के प्रफुल्लित पुष्पों के सौरभ से दिक् दिगंत आमोदित है। पत्र विहीन पलाश वृक्ष समूह शुक चोंच के समान लाल कलिका-जैसे तरुण-तरुणी का हृदय भेदी मदन का तीक्ष्ण नखास्त्र हो। आम्र मुकुल के भक्षण से कोकिलों का पंचम तान स्पष्टतर हो गया है। भृंग समूह कुसुम के मधुपान से प्रमत्त हो रहे हैं। मृदुल-मलयानिल तरुलता समूहों को नृत्य शिक्षा देते -देते कुसुम के सौरभ-संभार से वृन्दावन को सुरभित करके नृत्य छन्द में चल रहा है। कुसुम पराग से वन-भूमि आच्छन्न तथा मकरन्द रस से सिंचित है। कहीं चमरी मृग की पुच्छ से वन-भूमि परिष्कृत (स्वच्छ) है एवं कस्तूरी

* बसन्त एवं होरीलीला के चालीस दिन भक्त वृन्द के घर-घर में महोत्सव एवं योगपीठ सेवादि होती है।

Scanned by CamScanner

मृग के मृगमद से सुगन्धित हो रही हैं वृषभानु नंदिनी श्री राधा सखियों के साथ उसी परम शोभामय वृन्दावन में प्रवेश करके सखियों से परिवृता होकर माधवी मंडप में बैठ गईं-जैसे मूर्तिमती वासन्ती श्री विराजमान हों। तत्पश्चात् परम-प्रणय तथा आदर की अधिकता के कारण उन सबको वसन्तोत्सव योग्य वस्त्रालंकारादि एवं वन्य पुष्प-भूषणों से वन देवियों सहित श्री वृन्दादेवी मंगलमय वेश में भूषित करने लगीं। वृन्दा देवी ने स्वयं श्री वृषभानु नंदिनी को एवं श्यामला, चन्द्रावली आदि यूथेश्वरियों को वनदेवी गण ने विभूषित किया।

श्री वृन्दा द्वारा श्री राधा की वेश-भूषा।

वृन्दा देवी ने परम यत्न के साथ सुस्नाता (अच्छी प्रकार से स्नान की हुई) श्री राधा को अरुण वसन पहनाये, सर्वांग में चतुः सम चर्चा, ललाट में कामयंत्र-तिलक, चिबुक में कस्तूरी बिंदु, नागकेसर पुष्प द्वारा वेणी बंधन, केश कुसुमित करके घुंघराले बालों में बकुल पुष्प की माल्य, ललाट तथा गाल में पत्रावली तथा स्तनतट में चित्रावली, पट्टजादि युक्त विचित्र पट्ट डोरी से नीवी बंधन, वक्ष के स्तनाग्र में माधवी पुष्प की माल्य, नयन में काजल, नासिका के अग्र में मुक्ता, कर्ण में आम्र-मुकुल के अवतंस (कर्णाभूषण), श्री मुख में तांबूल, पद-तल में यावक (महावर) तथा दाहिने हाथ में लीला कमल प्रदान करके षोडश श्रृँगार से सजाया। तत्पश्चात् सीमान्त में मणि जड़ित स्वर्ण मुकुट, ललाट फलक में ललाटिका, कान में कुंडल तथा कान के ऊपरी भाग में चक्रीशलाका, कटितट में कांची, चरण में नूपुर, पदांगुली में उन्नत रत्नांगुरी, बाहु में स्वर्णांगद, कलाई में चूड़ी, करांगुलियों में मणि जड़ित स्वर्णांगुरीयक, गलदेश में मुक्ता का ताराहार, चिक (गले का हार) तथा पदक द्वारा द्वादश आभरण से विभूषित किया। अन्यान्य वन देवी गणने भी उसी प्रकार से वस्त्रालंकार द्वारा अन्यान्य यूथेश्वरियों को विभूषित किया। कल्पवृक्ष तथा कल्पलता समूहों ने रत्नमय अलंकार, कांचनमयी साड़ी, स्वर्ण वर्ण की कंचुलिका, अति विचित्र पतले वस्त्रों की ओढ़नी, तांबूल एवं मृगमद, कुंकुम तथा चंदनादि अनुलेपन एवं विविध वर्णों के सुंगधी पुष्प माल्यादि प्रदान किये। फिर जो थोड़ा हवा लगने पर फट जाता है इस प्रकार के पतले जातुष (लाक्षा) संपुट के अन्दर भरकर नाना वर्ण के आबीर, मृगमद पंक एवं विविध प्रकार के कुसुम धनु, कुसुम बाण, रत्नमय जलयंत्र (पिचकारी) समूह जिसे कल्प वृक्षों ने उत्पन्न किया था, वृन्दा के आदेश से वनदेवी गणने उसे यथा स्थान अच्छी प्रकार से सजाकर रखा।

मातंगी किन्नरी का आगमन तथा संगीतालाप।

वृषभानु नंदिनी श्री राधा विभूषित होकर सखियों के साथ बैठी हुई हैं। इसी अवसर पर संगीत विद्या की आचार्या "मातंगी" नामक किन्नरी (उपदेवी) अपने सहचरी वर्ग के साथ किन्नर लोक (उपदेवताओं का लोक) से परमानंद के साथ संभ्रम तथा संकोच सहित आकर यूथेश्वरी मुख्या श्रीराधा के सम्मुख उपस्थित हुईं। तब वृन्दादेवी श्री राधा से बोलीं-

Scanned by CamScanner

"अयि गुणमयी गुणग्राहिनी श्री राधिके! इसका नाम 'मातंगी' है। ये संगीत शास्त्र की श्रेष्ठ आचार्या हैं। इस बसन्तोत्सव में आपके चित्त-विनोदन के लिए अनुराग साहित किन्नर लोक से आयी हैं।" श्री राधा परम प्रीति सहित उन्हें बैठने के लिए आदेश देकर वृन्दा से पूछने लगीं—"मातंगी के सहचरी वर्ग का नाम क्या है?" वृन्दा बोलीं— "मातंगी की सभी सहचरियाँ वीणा वादन में सुनिपुणा हैं। इनमें जो नवनीरद कांति विशिष्ट जिनके केश-कलाप मयूर पुच्छ के चूड़ा से विभूषित हैं, आम्र मुकुल द्वारा पिक (कोयल) पोषण में निरत है। जो स्वभाव से ही मतवाला है, वह ही मूर्तिमान 'बसन्त राग' है— आपके निकट स्त्री वेश में सजकर आया है।" श्री राधा द्वारा बसन्त राग के श्री कृष्ण के समान वर्णाकार की बात सुनकर उनके प्रति कौतुक तथा प्रीति-पूर्वक किंचित दृष्टिपात करने पर बसन्त राग ने अभूतपूर्व आत्म कृतार्थता लाभ की।

मूर्तिमान बसन्त राग।

तब मातंगी बोलीं—"हे कालीय नाग फणोपरि नृत्य कौतुकी श्री कृष्ण दयिते! आपकी संतुष्टि के लिए सप्त स्वर बत्तीस श्रुतियों के साथ स्त्री वेश में सजकर आये हैं। इन श्रुतियों को किन्नरी गण भी अपने कंठ से विभाग नहीं कर पातीं।" यह बात सुनकर श्री ललिता कौतुक तथा उल्लास पूर्वक आश्चर्य भाव प्रकाश करते हुए रसमय वाक्य से बोलीं—"किन्नरी गण क्या अपने कंठ द्वारा श्रुतियों का विभाग नहीं कर पातीं?" इसके उत्तर में मातंगी बोलीं—"ब्रह्मा की सृष्टि के द्वारा कंठ में कफादि दोष विद्यमान हैं, अतः ये सब श्रुतियाँ कंठ से स्पष्ट रूप से उच्चारित नहीं होतीं, इसीलिए ब्रह्मा ने 'चल' तथा 'अचल' दो प्रकार की वीणा की सृष्टि की है। 'चल' वीणा में बत्तीस श्रुति तथा 'अचल' वीणा में सात स्वर निबद्ध किये हैं। मैं अधिक क्या कहूँ, आप सब इनके प्रति दृष्टिपात करके परीक्षा कर लें—कि इन षडज स्वरों की स्वर्ण वर्णाकृति चार श्रुति का एक तरफ कंठ से विभाग करना नितांत असंभव है।" यह बात कहकर मातंगी द्वारा षडज स्वर में चार श्रुतियों को समुज्ज्वल करके 'चल' वीणा से आलाप आरम्भ करने पर अति रमणीय षडज स्वरों की चार श्रुति के तनु स्वयं ही ध्वनि कर उठे। तदन्तर वीणा रखकर षडज स्वरों की चार श्रुतियों को अपने-अपने भाग में विभाग करके कंठ से गान आरम्भ करने पर एक श्रुति भी विशेष रूप से प्रति ध्वनित नहीं हो पाई। किन्तु 'चल' वीणा से यथार्थ रूप में ही चारों श्रुतियाँ आलापित हुईं।

चल तथा अचल वीणा के बिना कंठ से श्रुति का आलाप नहीं होता।

तत्पश्चात् "संगीत विद्या" नामक श्री राधा की कोई सहचरी सौहाद्र से परिहास पूर्वक कहने लगी—"हे संगीत देवते! आपका यह परम कौशल ही है क्योंकि इस एक षडज स्वर को ही अविकल रूप से उज्ज्वल रूप में चार भागों में विभक्त करके अखंडित रूप से वीणा तंत्री से आलाप करने पर एक श्रुति भी निषाद स्वर या ऋषभ स्वर को स्पर्श नहीं करती है। इन समस्त स्वरों का परिचय स्वर्ग वासियों के लिए भी दुर्लभ है—मनुष्यों की तो बात ही क्या?

ललिता कंठ से ही श्रुति विभाग करती हैं।

Scanned by CamScanner

तथापि हमारी श्रीवृषभानु नंदिनी की कोई नवीना 'ललिता' नामक सुललिता सखी कंठ के द्वारा ही इन सब श्रुतियों का यथानुरूप विभाग करने में समर्थ है। यदि सुनने की उत्सुकता हो तो आदेश करें—ये ललिता अपने कौशल का किंचित परिचय प्रदान करें। पुन:किसी स्वर की कोई-कोई श्रुति इन सबके जानने पर भी एक ही स्वर में गुप्त रूप से अवस्थित श्रुतियों एवं सप्त स्वरों की बत्तीस श्रुतियाँ सभी का इस कंठ से आलाप करके श्रुति तथा प्रतिश्रुति का विशेष रूप से बोध कराकर परिचय कराने में समर्था हैं।" यह सुनकर वृन्दादेवी बोलीं— "अयि संगीत विद्ये! इस मातंगी देवी की संगीत विद्या ब्रह्मा द्वारा सृष्ट है और तुम सब की संगीत विद्या ब्रह्मा की सृष्टि के बाहर है, अत: दोनों का ही वाक्य सत्य है।"

श्री राधा द्वारा मातंगी का सम्मान।

इस विचार से मातंगी देवी को कुछ उदास देखकर परम उदार तथा मानद स्वभावा करुणामयी श्री राधा रानी दुखित होकर भ्रूलता कुटिल करते हुए अपनी सखी संगीत विद्ये से बोलीं—"हे मिथ्यावादिनी संगीत विद्ये! सब श्रुतियों का कंठ के द्वारा विभाग करना देवगणों के लिए भी असाध्य है वह क्या कभी मनुष्यों का प्रयत्न साध्य हो सकता है? अर्थात कभी नहीं। अत: मिथ्या आलाप बंद करो। लक्ष्मी भी अपने कंठ द्वारा श्रुति विभाग करने में समर्थ नहीं होतीं—ललिता की बात तो दूर रहे। हे प्रिया संगीतालापी! परम माननीया मातंगी देवी! आप अपने संगीत द्वारा वन देवी सहित वृन्दा देवी को संतुष्ट करने योग्या हैं। अत: गान करने की आज्ञा हो।"

मातंगी का बेलावली राग आलाप।

तब वृन्दा मातंगी से बोलीं—"जब तक श्रीकृष्ण बसंत राग में गान करते-करते वन के मध्य विहार करना आरम्भ न कर दें, तब तक आप अन्य किसी राग में गान आरम्भ करें।" तब मातंगी देवी कौतुक रस पूर्ण हृदय से रस सागर की बेलावलीय (तटीयनीर) के समान "बेलावली" राग गंभीर आवेश में भरकर आलाप करने लगीं। मातंगी की सहचरीगण विपंछी, महती, कविलासिका, कच्छपी एवं स्वर मंडलिका नामों से श्रेष्ठ पाँच प्रकार की वीणा से श्रुति सुखप्रद स्वरों का विस्तार करने लगीं। यद्यपि वीणा पाँच प्रकार की होती है तथापि एक प्रकार के समान ही अनुभूत होने लगी। इस प्रकार के वीणा के स्वर तथा उत्कंठा युक्त कंठ स्वर से उठा हुआ निनाद अपूर्व आनन्द का उत्स (झरना) प्रवाहित करने लगा। श्रीराधा, चन्द्रावली, वृन्दादि एवं वनदेवीगण मनोयोग पूर्वक सुनने लगीं।

अनिर्वचनीय श्रुति सुखप्रद शब्द झंकार।

इस समय दूर से देवलोक के लिए भी चमत्कारी कोई परम रमणीय कर्णामृत शब्द श्रुतिगोचर हुआ। वीणा, वेणु, मृदंग, कांस्य, पनव (ढ़ोल) समभाव तथा सुमधुर स्वर से बज रहा है। जिसमें अनिर्वचनीय श्रुति सुखप्रद तथा श्रुति युगल के अभेद्य शब्द झंकार सम्यक रूप से उद्‌भूत होकर कर्ण युगल में स्पर्श होते ही यक्ष कद्रमवत् (कुंकुम, अगुरु, कस्तुरी, कर्पूर, तथा चंदन के मिलन से यक्ष कद्रम बनता है) सर्वेन्द्रियों

Scanned by CamScanner

के लिए सुखदायी हो रहा है। यह सुनकर गोपीगण मातंगी के लयतालादि युक्त संगीत रस की अवहेलना करते हुए "हेला" नामक भाव का उदय होने से चंचलमना हुई तथा मृगी के समान कान खड़े करके अपने आयत लोचनों से इधर-उधर दृष्टि करने लगीं। उसी समय वहाँ बैठा हुआ स्त्री वेशधारी मूर्त बसन्तराग सहसा अनुराग भरी ध्वनि कर उठा। तब सभी ने अनुमान किया कि बसन्तागमन से इस प्रकार की पहले अनुभव में न आने वाली ध्वनि का आनन्दमय उत्सव अखण्ड आनन्दमय स्वरूप साक्षात् श्रीनन्द किशोर द्वारा ही अनुष्ठित हो रहा है।

तत्पश्चात् दूर से उत्सव मंडित श्रीकृष्ण का दर्शन करके अभिनव उल्लास के साथ वृन्दादेवी कहने लगीं—"हे राधे! तुम्हारे प्राणनाथ श्रीकृष्ण सखाओं से घिरकर अनेक प्रकार की खेल सामग्री के साथ नृत्य-गीत वाद्यादि करते-करते बसन्तोत्सव को मूर्तिमान करके इधर ही आ रहे हैं। उनके मस्तक के बांयी ओर थोड़ी झुकी हुई श्वेत पगड़ी, इसके मध्य में पुन्नाग पुष्प का स्तवक (गुच्छा), इसके ऊपर मन्द वायु से चंचल एक मयूर पुच्छ, चंचल मणि कुंडल भार से दीर्घ छिद्र कर्ण युगल के ऊपर एक सद्य-भग्न (तुरन्त टूटा हुआ) आम्र-मुकुल का गुच्छा धारण किया है। उसका प्रतिबिम्ब उज्ज्वल गाल पर पतित होने से अपूर्व माधुर्य का विकास हो रहा है। ग्रीवा की सीमा पर बंधे केश में माधवी पुष्प की माला, अंग में पीत वर्ण की पोशाक, शोभायमान उज्ज्वल अलंकार, कटितट में काँची तथा मणिमय कर्पूरदानी धारण की हुई है। कटि स्थित किंकणी के पट्ट सूत्र निर्मित लम्बायमान गुच्छ जंघा तल का चुम्बन कर रहे हैं। पादाम्बुज में शब्दायमान नूपुर शोभा पा रहे हैं। बायें हाथ में वेणु तथा दाहिने हाथ में सिन्दूर वर्ण की गेंद उछाल रहे हैं। स्वयं बसन्त राग का गान न गाकर सुबलादि प्रिय सखाओं द्वारा गाये हुए इस राग की ताल-मान घूमते हुए मदालस नयनों से मस्तक घुमाते-घुमाते आस्वादन करते हुए शोभा पा रहे हैं। दोनों बगल में स्थित दो प्रिय सखाओं के कर कमलों से स्वर्ण-वर्ण तांबूल वीटिका स्निग्ध-अरुण अधरोष्ठ द्वारा आमोद क्रम से ग्रहण कर रहे हैं। सखाओं द्वारा फेंका गया अति सुगंधी अरुण वर्ण आबीर समूह हल्का होने के कारण आकाश में ही घूम रहा है-तुम्हारे नागर का चूड़ा (मुकुट) तिलक, अलकादि का स्पर्श नहीं कर पा रहा है। सहचर गण अल्प चर्चरी (लेपित), द्विपादिका-षडज, मध्यम, गान्धार नामक तीन ग्रामों का अमिश्र श्रुति को सप्त-स्वर में समुज्ज्वल करके बसन्त राग गान करते-करते अति कौतुक पूर्वक परस्पर सिंदूर, गेंद फेंकते हुए नृत्य कर रहे हैं। इस प्रकार अति ललित तथा अति रुचिकर गान के श्रवण से वृक्षलतादि स्थावर गण में भी विविध भाव विकार प्रकाश पा रहे हैं। कृष्णावलोकन जनित हर्ष में मृदुमंद मलयानिल से भ्रमर-भ्रमरी के गीत के साथ कर पल्लवादि के अभिनय से लतायें सरस नृत्य कर रही हैं। श्रीकृष्ण के पुष्प गुच्छ ग्रहण के लिए निकट होने पर कोई लता जैसे

वृन्दा द्वारा श्रीकृष्ण माधुरी वर्णन।

श्रीकृष्ण माधुर्य से स्थावर गणों का भाव-विकार।

Scanned by CamScanner

कुट्टमित भाव * में नवपत्र रूपी हस्त कंपन से भय, कुसुम हास्य से इच्छा, भ्रमर गुंजार रूपी कटाक्ष से जैसे रोष प्रकाश कर रही है। अन्य एक लता श्रीकृष्ण का चांचल्य देखकर वायु चालित किसी एक पत्र रूपी वाम हस्त से पुष्प स्तवक (गुच्छ) रूपी पयोधर को आवृत कर रही है। अन्य एक लता पत्र रूपी दायें हाथ से अपनी सहायता के लिए सखी को बुला रही है। अचेतन गण की यदि इस प्रकार की अवस्था है तब वृन्दावन के सचेतन गण किस प्रकार से धैर्य धारण कर पायेंगे?''

वृन्दा की यह बात सुनकर भी श्री राधा का इंगित समझकर श्यामला मृदु-मधुर हास्य से बोलीं—''हे वन देवते! वृन्दे! श्यामामृत कर से तुम्हारे आनन्द का पोषण होगा, अतः इस खेल को सुख पूर्वक परिपूर्ण करो। हम सब को उत्साहित करने से कोई लाभ नही हैं। कारण तुमने जो कहा है वह सत्य ही है किंतु कुलवतियों का लज्जारूपी कपाट इतना सुदृढ़ है कि उत्कंठा रूपी तीक्ष्ण कुल्हाड़ी द्वारा उसका छेदन नहीं किया जा सकता। इसलिए हम सब धैर्यावलम्बन पूर्वक हम सबकी हितकारी शिष्टाचार प्राप्त मदन पूजा के लिए यहीं कुसुम चयन करते-करते उत्सव मंडित इस युवराज का दर्शन करेंगी।'' श्यामला के इस प्रकार के सुरसाल वाक्य श्रवण कर श्री वृन्दादेवी पुनः वृन्दावनेश्वरी श्रीराधारानी से बोलीं-''नाम, रूप, गुण तथा आकृति में सब प्रकार से सुयोग्या आप सब के इस प्रकार के व्यवहार सौशील्यता के परिचायक हैं, तब भी मातंगी के साथ चन्द्रावली तथा उनकी सखी चारु चन्द्रा प्रबल महोत्सव की उच्च ध्वनि के साथ आम्रवन वाटिका में उपस्थित होकर मुझ जैसों के नयनों की सफलता प्रदान करके श्रुति सुखप्रद मूर्तिमान बसन्त राग के स्वर तथा श्रुतियों को मत्त करके मातंगी देवी को भी कृतार्थ करें।'' वृन्दादेवी की बात सुनकर विविध वीणा वादन में प्रवीणा चंद्रावली तथा चारुचंद्रा आदर पूर्वक मातंगी को साथ लेकर आम्र वाटिका में जाकर बसन्त कालोचित सुखद राग के साथ श्रुति सुखप्रद श्रुतियों को उज्ज्वल रूप में प्रकट करके गान, वाद्य नृत्यादि करनें लगीं।

चन्द्रावली तथा चारु चंद्रा का नृत्य गान।

चन्द्रावली तथा उनकी सखी चारुचन्द्रा कल्पवृक्ष द्वारा प्रदत्त विविध खेल की सामग्री अर्थात् उदीयमान सूर्य के समान लाल महासुगंधी विलास धूली (आबीर, गुलालादि) विविधमणि जड़ित पिचकारियों से चन्दन, अगुरु, कर्पूर, कस्तूरी कुंकुम का सुगंधित जल छोड़ते हुए महा-प्रमोद में भरकर संगीत ताल के साथ गमन तथा नृत्यादि द्वारा कोटि किन्नरियों का भी तिरस्कार करते हुए परमानन्द में मत्त होकर बसन्त क्रीड़ा उत्सव का आडम्बर पराकाष्ठा-प्रदर्शन करने लगीं। उसी समय श्रीराधा सरस मधुर स्मित मुख से,

* 20 प्रकार के अलंकार है, और दो प्रकार के मुग्ध एवं चकित को लेकर कुल 22 प्रकार के अलंकार हैं, उनमें से कुट्टमित नामक एक है, जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा राधारानी के अंग स्पर्श करने पर राधारानी अन्दर से प्रशन्न एवं बाहर से क्रोधवत् प्रकाश करती हैं यही कुट्टमित भाव है।

Scanned by CamScanner

विस्मय में आविष्ट मन से, निःशंक चित्त से, दोनों तरफ से अर्थात् श्रीकृष्ण द्वारा अनुष्ठित बसन्तोत्सव की ओर तथा मातंगी चन्द्रावली आदि द्वारा अनुष्ठित उत्सव की ओर दृष्टिपात करते-करते कुछ सखियों के साथ वहाँ स्थित माधवी वाटिका में पुष्प चयन के बहाने सुख पूर्वक अवस्थान करने लगीं।

इधर आनंद कंद श्रीकृष्ण सखाओं के साथ क्रीड़ा अनुक्रम में क्रमशः समीप होने लगे। उनके आगे भंड नृत्यशील मधुमंगल कंधा ग्रीवादि उचकाते हुए कंठ में स्थित रम्यहार को नचाते-नचाते कौतुक सहित गर्व से हँसते-हँसते तथा चारों ओर दृष्टि डालते हुए महोत्सव में प्रवृत चन्द्रावली तथा चारुचंद्रादि की संगीत वलय झंकार युक्त करताली, मुरज, मृदंग-वीणा आदि वाद्यों के साथ नर्तकियों की मणि-मंजर्यादि सम्मिलित होकर अर्पूव ध्वनि सुनने पर रोमांच का अभिनय करते हुए हर्षोत्कंठित होकर श्रीकृष्ण से बोले—"हे प्रिय सखा! यह सुमधुर ध्वनि जो हम सबके कर्ण गोचर हो रही है—यह क्या हम सबके ही संगीत की प्रतिध्वनि है? अथवा अन्य किसी के महोत्सव की संगीत कल ध्वनि आकर हम सब के महोत्सव की कलध्वनि का अतिक्रम कर रही है?" यह बात श्रवण कर श्रीकृष्ण बोले—"हे कांति निकेतन! यह वाद्यध्वनि किसी अन्य की होगी, अतः तुम स्वयं जाकर अच्छी प्रकार से जानकारी लेकर आओ कि यह वेगवती लय-तालादि युक्त वाद्यध्वनि कहाँ से आ रही है?"

बसन्त लीला में मधु मंगल की भूमिका।

श्रीकृष्ण की यह बात सुनकर अति चतुर बटु मधुमंगल ने परम उल्लास में भरकर शीघ्र आकर पहले परम रमणीया रमणी मणि सभा में पूजित लक्ष्मी की अपेक्षा भी सौन्दर्य शालिनी, झुकी हुई नम्र गुण युक्ता, जवा अरुण कर चरण पल्लवा, माधवी कुसुम चयन रता, मूर्तिमती बसन्त लक्ष्मी स्वरूपा वृषभानु सुता श्रीराधा एवं उनके निकट उनकी हिताचरण शीला ललिता तथा श्यामला का दर्शन किया। तथा उनके ही निकट आम्रवन वाटिका में महा-महोत्सव आनंद में मत्ता चारुचन्द्रा तथा चन्द्रावली आदि के भी दर्शन किये। तत्पश्चात् मधुमंगल सहसा कहने लगे—"हे साहसिके ललिते! इतने गर्व से गर्विता होकर इस प्रकार का गुरुतर अपराध क्यों कर रही हो?" आज इस नव बसन्तोत्सव में महत् इच्छा युक्त मेरे प्रिय सखा की इस माधवी कुसुम वाटिका का एक भी पुष्प मेरे तोड़ने के पहले ही तुम सब किस साहस से मेरे प्रिय सखा के इस माधवी कुसुम कानन को पुष्प पल्लवादि से शून्य कर रही हो?क्या आश्चर्य! तुम सबका इतना अभिमान! दर्पहारी मेरे सखा के भुजा रूपी भुजंग का भोग दर्प क्या तुम सब नहीं जानतीं? तब अभी जान जाओगी। अभी मैं जाकर उससे निवेदन करता हूँ।" यह कहकर शीघ्र कृष्ण के समीप जाकर बोले-हे सखे! अभी तुम्हारा बसन्तोत्सव सफल हुआ है। स्वयं मूर्ति मती बसन्त लक्ष्मी अपनी विभूतियों के साथ उपस्थित होकर निकट ही विविध विलास के साथ बसन्तोत्सव को मर्तिमान करके विराज रही हैं। वीणा, वेणु, मुरज, कांस्यादि अर्पूव वाद्य यंत्र जो मैं देखकर आया हूँ, त्रिभुवन में ऐसा और कहीं नहीं है। तथा

Scanned by CamScanner

उनकी संगीत भंगी का विस्तार भी उसी प्रकार का है। स्वर्गीय संगीत धुरन्धर गण के लिए वह अगोचर है, दूसरा कौन ऐसा करने में सक्षम होगा? और वहाँ जो-जो महोत्सव सामग्री विद्यमान है वह ब्रह्मा की सृष्टि के बीच कहीं नहीं है। मनुष्य किस प्रकार उसकी कल्पना कर सकेगा? अहो! आज में कितना सुमहान कौतुक दर्शन करके आया हूँ!! हे सखे! तुम ब्रजराजकुमार होकर भी एवं तुम्हारी उत्सव सामग्री यथेष्ट होने पर भी वहाँ के महोत्सव के समान अधिकतम रस-सामग्री की प्रचुरता नहीं है।''

तब सखागण बोले—''हे कुसुमासव! दूसरे पक्ष की इस प्रकार गर्व सहित बहुत बड़ाई मत करो। अपने पक्ष की ही बड़ाई करना उचित है। तुम निश्चय ही मत्त हो रहे हो।'' मधु मंगल बोले—''कुसुमासव (पुष्प मधु) कभी भी स्वयं मत्त नहीं होता, वरन सबको मत्त करता है। तथापि मैं वह कुसुमासव नहीं हूँ जो पान करके तुम सब मत्त हो जाओगे। मेरे ''तू'' शब्द से ही सभी मत्त हो जाते है। श्रीकृष्ण बोले—''साधु! सखे! साधु!! अभी जाकर उस महोत्सव स्थली का अक्षुब्ध चित्त से दर्शन करो। तत्पश्चात् हम सब भी जा रहे हैं। श्रीकृष्ण के इस प्रकार सरसता पूर्ण वचन सुनकर क्रीड़ा रस कौतुकी बटु आनन्द में भरकर पुनः वहाँ जाकर गर्व के साथ बोले—''हे दुर्ललिते ललिते! कमल नयन श्रीकृष्ण के आदेशानुसार यहाँ से शीघ्र चली जाओ। हम सबके माधवी पुष्प अपहरण ना करो, अन्यथा इसका प्रतिफल पाओगी।''

तत्पश्चात् ललिता बोलीं—''हे कपट पटो! साहसिक बटो! क्यों तुम इस प्रकार के घृणित वाक्य कहकर अपनी सज्जनता को नष्ट कर रहे हो?'' शिष्टाचार परम्परागत आज नव बसन्तोत्सव के दिन अनिन्दिता वधूगण अनुराग के अनुकूल यमुना तट पर रक्त अशोक वृक्ष मूल में मदन पूजा किया करती हैं, इसीलिए अनुराग पूर्वक उत्कंठा सहित अनेक दासियाँ होने पर भी अपनी सुमर्यादा त्याग कर अक्षय-कुल-मर्यादा सम्पन्ना सब नीतियों में पूर्णा, सभी गुणों से भूषिता, सख्य पूर्ण हृदया स्वयं नायिका मणि श्रीराधा नाम की किसी प्रिय सखी के साथ हम सब उक्त मदन पूजा के लिए यहाँ उपस्थित हुई हैं। तुम उन्मादी की भाँति प्रलाप क्यों कर रहे हो?''

मधु मंगल बोले—''रे ललिते! श्रीकृष्ण के अलावा दूसरों के मदगर्व का दमन करने वाला और दूसरा मदन कौन है? वे सबको उन्मत्त करते हैं एवं आनंद की मत्तता से कोमल हैं, वे मेरे सखा श्रीकृष्ण ही साक्षात मन्मथमदन हैं। उन्हें छोड़कर अहो! परोक्ष मदन में तुम सबकी पूजा-रति किस प्रकार हुई? इससे लगता है तुम सब ही उन्मत्त हो रही हो। अतएव मेरी बात सुनो—मैंने पहले भी तुम सब का हित किया है, इसलिए पुरोहित होकर स्वस्तिवाचन पूर्वक तुम सबको साक्षात मदन देव की पूजा कराऊँगा। इधर-इधर, उनके निकट आओ।''

श्रीकृष्ण ही साक्षात मन्मथ मदन।

श्रीराधा बोलीं—''हे ललिते! यह परम पटु बटु पूजा के योग्य है। अतः चन्द्रावली, चारुचन्द्रा आदि को आदेश करो—पूर्व हितकारी इस पुरोहित की पूजा जिस प्रकार भली-भाँति हो सके करें। यह बात

Scanned by CamScanner

सुनकर उत्सव मदान्धा चारुचन्द्रा तथा चन्द्रावली बल पूर्वक बटु को खींचकर नाना वर्ण के गंध चूर्ण सर्वांग में मलकर गंधोदक सिंचन द्वारा पराभूत करके "भूतों के राजा" के रूप में सजा दिया। तब बटु क्रोध पूर्वक चिल्लाकर कहने लगा–"हे प्रिय सखे श्रीकृष्ण! ग्वालिनी कन्याओं ने बसन्तोत्सव में उन्मत्ता होकर सिंदूर, कुंकुम, गंध चूर्ण समूह से मुझे अन्धा कर दिया है। गंध जल के स्नान से जड़ता के कारण मेरी किसी भी ओर भागने की सामर्थ्य नहीं है। जब तक ब्राह्मण का वध न हो, उसके पहले ही शीघ्र आकर मेरी रक्षा करो।"

पुरोहित की अर्चना।

श्रीकृष्ण दूर से ही मधु मंगल की चीत्कार सुनकर समझ गये कि सरला अबलाओं द्वारा उसकी प्रतिभा की प्रभा म्लान हो चुकी है। अहो! क्या कौतुक!! यह कहकर अनुरागी सखाओं के साथ कौतूहल से 'हला हला' शब्द करते हुए वेग सहित वहाँ जाकर उपस्थित हुए। तब गर्विता गोपियों द्वारा आदर भय लज्जा मिश्रित भाव में आलोक्यमान होकर परम ऐश्वर्यशाली श्रीकृष्ण बटु को निरानन्द, निश्चेष्ट तथा असंतुष्ट देखकर कृत्रिम क्रोध का भाव प्रकाश करते हुए बोले–"अहो! आप सब बसन्तोत्सव के मद में मत्त होकर मेरे ममतास्पद निरपराध सखा का यथेष्ट अपमान कर रही हैं। अतएव इसका उपयुक्त परिणाम ग्रहण करो।" यह कहकर सहचर के हस्त द्वारा प्रदत्त अशोक पुष्प गेंद हाथ से फेंककर एक ही साथ समस्त कुल बधुओं के कुच युगल के मध्य प्रदेश को विक्षोभित कर दिया। तब देवांगनाओं ने उनकी पूजा करके साधुवाद प्रदान किया।

तत्पश्चात् दोनों सेनाओं के बीच नीतिपूर्वक युद्ध आरम्भ हुआ। परस्पर एक-दूसरे पर स्निग्ध अरुण महासुगन्धी आबीर, गुलालादि रंग धूली, गेंद, 'पिचकारी' से कुंकुम, कस्तूरी, चंदनादि का सुगन्धित जल फेंकते हुए कमशः तुमुल युद्ध आरम्भ होने पर रंग-धूली से गहन अधंकार व्याप्त हो गया। तब श्रीकृष्ण साहस का विस्तार करते हुए विपक्षी सेना व्यूह में प्रविष्ट होकर सुरत-समर की भेरी वाद्य के समान मधुर वेणु ध्वनि करने लगे। तब चारों ओर से ब्रजांगनाएँ श्रीकृष्ण पर तीक्ष्ण कटाक्ष रूपी बाण फेंकने लगीं। श्रीकृष्ण भी लीला-लोल-कटाक्ष रूपी 'संप्रस्वापन' नामक निद्राकर्षण बाण भ्रू-रूपी धनुष पर चढ़ाकर ब्रजांगनाओं को लक्ष्य करके फेंकने लगे। तब एक ही साथ समस्त ब्रजांगनाओं के अंग शिथिल होकर आलस्य से उनके नयन मुद्रित होने लगे, शरीर में बार-बार जम्हाई का उद्गम होने लगा, गदगद् कंठ तथा अधर पुट चंचल होकर सभी निद्रित प्रायः हो गईं। यह देखकर मृगनयना सेनापति चंन्द्रावली ने अपनी सेना गण की कर्तव्य-विमूढता देखकर पराक्रम के साथ पद बढ़ाते हुए नयन कटाक्ष रुपी तीक्ष्ण बाण से श्रीकृष्ण का मर्म भेद करते हुए भुजा-भुजंग पाश में अवरुद्ध करके भुवन-मोहन को भी विमोहित कर दिया।

श्रीकृष्ण तथा गोपियों का बसन्तलीला कौतुक।

तत्पश्चात् क्षण काल के भीतर ही श्रीकृष्ण ने संज्ञा लाभ करके, मदमत्त हाथी जैसे पद्म वन को

Scanned by CamScanner

रौंद देता है उसी प्रकार पद्मिनी गण का आलिंगन चुंबन करते हुए हार, कंचुकादि छिन्न-भिन्न कर दिये। उसके बाद क्षण काल के भीतर ही रंग-धूली द्वारा उत्पन्न अंधकार दूर होने पर युद्ध क्षेत्रवत् अपूर्व दृश्य नयन गोचर हुआ। रंग धूली तथा रंग जल की रक्त वर्णता जैसे गोपी सेनाओं के मानरूपी आहत हथिनियों के रुधिर, मृगमद- कद्रम-समूह, हस्ती मद जल पान रत भृंग समूह, गोपियों के कर भ्रष्ट मणिमयी जल यंत्र समूह, जैसे हाथी की अस्थि दन्तादि के समान होकर युद्ध क्षेत्रवत् प्रतीत हुआ हो।

गोपी सेनागण की इस प्रकार की विकलता देखकर मधु-मंगल सुख सिंधु में निमग्न होकर "ही ही" शब्द से हँसते-हँसते दोनों बाहुओं को ऊपर उठाकर नाचते-नाचते श्रीकृष्ण के निकट आकर बोले-

मधुमंगल का उल्लास।

"सखे! साधु! साधु!! इस जीवन में पृथ्वी पर मैंने इतना सुख कभी अनुभव नहीं किया। इन निर्वंशिकाओं ने वंशीधारी तुम्हारे सहचर मेरी जिस प्रकार की दुरावस्था की थी उसी प्रकार ये सब भी चरम दुरावस्था को प्राप्त हुई हैं। अनके हार, कंचुलिका छिन्न-भिन्न हो गये हैं, उत्सव की समस्त सामग्री भूमि पर इधर-उधर बिखर कर धूल-धूसरित हो गई है, तथा इनके केश, अलक, ललाट, गंडयुग, दोनों नेत्र तथा वक्ष: स्थल आबीर, गुलाल से कैसे रंजित हो रहे हैं देखो!! ये सब अपने किये कर्म का फल पा चुकी हैं। किन्तु हाय! सखा! ये सब महाचतुरा हैं, चतुरानन की सृष्टि के बाहर हैं। अत: जब तक इन सब में परम श्रेष्ठ वृषभानुनन्दिनी आदि के साथ मिलकर तुम्हें पराजित करें इसके पहले ही चलो-चलो हम सब यहाँ से भाग चलें। शत्रुता दृढ़ होने पर ये क्या नहीं कर सकतीं?" मधुमंगल की बात सुनकर सखागण हँसकर बोले-"यह कुसुमासव अपने दुर्मुखता दोष के कारण कभी भयभीत तो कभी क्रोध में आकर तीव्र हो जाता है। अतएव हे सखे श्रीकृष्ण! तुम इसे इस प्रकार से आस्वासन प्रदान करो जिससे यह इस प्रकार से दुखी न हो।"

श्रीकृष्ण बोले-"हे कुसुमासव! जिससे तुम्हें भय लगता है, निर्भय पूर्वक उसे मुझे दिखा दो, मेरे रहते तुम्हें भय किस बात का?" यह बात सुनकर मधुमंगल का भय दूर हुआ। उन्होंने गर्व में भरकर आगे

श्रीकृष्ण का रसमोह ।

आकर "इधर-इधर" कहते हुए माधवी कुसुम वाटिका के निकट जाकर ललितादि सखियों के साथ पुष्प चयनरता अतीन्द्रिय रूपा श्रीराधा को दिखा दिया। वहाँ सखियों के कुटिल कटाक्ष रूपी लाखों-लाखों बाणों से बिद्ध होकर श्रीकृष्ण ने भी कटाक्ष बाण निक्षेप (फेंकने का भाव) किये। श्रीकृष्ण के कटाक्ष बाण ने श्रीराधा के वक्ष: स्थल पर गिरकर उनके लज्जा रूपी कवच को भेद दिया। श्रीराधा ने थोड़ा हास्य के साथ अपने कटाक्ष बाण से श्रीकृष्ण का हृदय विदीर्ण कर दिया। इससे श्रीकृष्ण को विमोहित देखकर मधुमंगल उल्लास में भरकर बोले-"हे सखे! मुझ तुम्हारे सर्वश्रेष्ठ सहायक के रहते हुए भय से विमोहित न होना। इस केलि कंदुक (गेंद) को ग्रहण करो तथा इन सब को भाग दो। जिसके पास मेरे जैसा इतना बड़ा सहायक हो-उसके लिए अशक्य क्या है?"

Scanned by CamScanner

तब श्रीराधा ने लीला रस मुकुलिताक्षी होकर भ्रू-भंगी करते हुए कंकण की झंकार के साथ कर कमल कोष को उठाकर अन्यों से छिपकर सिंदूर गेंद मुरारी के वक्ष पर फेंकी। तब सखा तथा सखियों के आनन्दप्रद श्रीकृष्ण निद्रा से जगे हुए सिंह युवक के समान कुपित होकर गेंद ग्रहण करते हुए श्रीराधा के पीछे-पीछे भागने लगे। तब ललिता बोलीं—"हे रसिक चूड़ामणि! किस रसिका ने तुम्हारे वक्षःस्थल में अपने हृदय के अनुराग तुल्य सिंदूर की गेंद फेंकी है, उसे कौन जानता है? इस समय अति मुग्ध होना उचित नहीं है। थोड़ा रुककर देखो, निरपराधी मेरी सखी के पीछे क्यों भाग रहे हो।" यह वाक्य सुनकर भी श्रीकृष्ण कौतुक पूर्वक भागने लगे।

सखियों सहित श्री राधा कृष्ण का बसन्त लीला कौतुक।

श्रीराधा ने कला कौतुक सहित थोड़ी हँसी के साथ अपांग-भंगी (कटाक्ष भंगी) के इंगित द्वारा श्यामा सखी को दिखाकर सखियों के बीच स्वयं को छिपा लिया। तब श्रीकृष्ण ने बसन्तोत्सव के वैभव गंधोदक, रंग धूली आदि द्वारा श्यामला के ललाट, केश कलाप, दोनों कपोल तथा वक्षःस्थल पर यथेष्ट रूप से विलेपन कर दिया। तब उनकी सखी बकुलमाला आकुलता प्रदर्शन करते हुए कहने लगी—"अहो! श्याम सुन्दर!! तुम्हारी इस वैदग्धी से मेरा हृदय दग्धीभूत हो रहा है। जिसने तुम पर गेंद फेंकी है—वे मुख मण्डल के द्वारा शारद सुधाकर को भी विडम्बित (वंचना) करके मुक्ता के समान दंतकांति का विकास करते हुए हास्य ज्योत्सना का विस्तार करती हैं, उसे छोड़कर मेरी निरपराधी सखी को व्यर्थ में पीड़ा प्रदान करते हो।"

यह बात सुनकर श्रीकृष्ण कौतुहल में भरकर गाढ़ अनुराग के आवेश में श्रीराधिका की ओर जाते हुए बोले-मेरे निकट आकर अपना बल प्रकाश करो तथा सब गेंदें फेंको।" यह बात कहकर कौतुक तथा उल्लास में भरकर स्मितावलोकन से जब राधा के निकट जाने लगे तब श्रीराधा ने सखियों को आदेश किया—"हे सखीगण! इसे चारों ओर से घेरकर निर्भय होकर गेंदादि फेंको।" तब सखीगण ने "घेरो-घेरो, मारो-मारो" के शब्द से चारों ओर से घेर लिया। उस शब्द के साथ कोकिलादि की ध्वनि मिलकर तीव्र कोलाहल पूर्ण ध्वनि उठने लगी। तिलक रसिक श्रीकृष्ण को कांतिमती नव वधूगण चारों ओर से घेरकर आबीर, गुलाल, पुष्प गेंद, मणिमय पिचकारी द्वारा सुगन्धित जल पुनः पुनः यथेष्ट रूप से फेंकने लगीं। श्रीकृष्ण क्रीड़ा क्रम से उन पर भी आबीरादि फेंकते हुए पुनः पुनः उन्हें हटाने लगे।

तत्पश्चात् बसन्तोत्सव प्रभाव से लज्जा दूर होने पर स्वाभाविक सदनुराग वशतः उत्कंठित चित्ता गोपीगण ने पुनः एक साथ गुरुतर साहस के साथ प्रियतम श्रीकृष्ण को चन्द्रिकावृत मेघ के समान आवृत किया। तब मातंगी आदि गायिकागण वेग सहित वीणादि वाद्ययंत्र की ध्वनि से दिक्मंडल को कोलाहलपूर्ण करते हुए परमानन्द में बसन्त कालोचित गान करने लगीं। सुमधुर कलरव-स्वर में भ्रमर कोकिल आदि

Scanned by CamScanner

विविध पक्षी स्तव करने लगे। लतायें मलयानिल की ताल में बद्ध होकर नृत्य करने लगीं। दूसरी ओर परमानन्द में सुबलादि कृष्णानुचरगण विविध वाद्य यंत्र बजाकर बसंत राग में गान करते-करते सुगंधी आबीर, गेंदादि परस्पर फेंकने लगे। हास्य रस पटु बटु मधुमंगल रसमय मधुर ध्वनि करते-करते नृत्य करने लगे।

श्रीराधादि के साथ बसन्त लीला में श्रीकृष्ण का पराभव।

इस प्रकार की परिस्थिति में नागरराज श्रीकृष्ण को चारों ओर से घेरकर कंकण झंकार युक्त मृणाल तुल्य बाहु को उठाकर कमनीय कर कमल द्वारा उनके अंग में गोपीगण मृदु मधुर आघात करने लगीं। रसिक शेखर श्रीकृष्ण प्रणयी अबलाओं के इस प्रकार जोर पूर्वक सुखमय चमत्कार को ही अपनी विजय के रूप में स्वीकार करके सर्वतोभाव से प्रतिकार की चेष्टा न करते हुए प्रभाव रहित की भाँति ग्लानि प्रदर्शन करते हुए मुखविधु (मुख चन्द्र) पर मलिनता का अभिनय करने लगे। तब कोई गोपी उनकी वंशी, कोई जलयंत्र, कोई पुष्पधनु, कोई पुष्प बाण, कोई पुष्प गेंदादि अपहरण करने लगीं। अन्य किसी गोपी द्वारा रस कौतुक से श्रीकृष्ण के अंग-भूषण अपहरण करने पर हँसमुखी श्रीराधा ने भ्रू-भंगी द्वारा उसका निवारण किया। तत्पश्चात् श्रीराधा ने श्रीकृष्णांग के कुंकुमादि पंक तथा पसीने को अपने हाथ से धीरे-धीरे दूर करके वेश-भूषा संपादन कर नयनों द्वारा उनके रूप माधुर्य अमृत का जो पान किया था वही पान पक्ष में "वीरपान" (युद्ध के आरंम्भ तथा अंत में किया जाने वाला मधुपानादि) के समान हुआ। तब श्रीमती ने किसी सखी के हाथ तांबूल वीटिका लेकर अपने प्राणनाथ के मुख में अर्पण की। श्रीराधा के इंगित से श्यामा सखी तत्क्षणात् उनको पंखा करने लगीं।

मधुमंगल द्वारा श्रीकृष्ण की जय घोषणा।

श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों का इस प्रकार सेवा व्यवहार देखकर रंगधूली धूसरितांग बटु ग्रीवाभंगी करते हुए उल्लास में भरकर हँसते-हँसते मेघ के समान गर्जन करके उच्च स्वर में कहने लगे—"हि! हि!! हे वयस्योत्तम गण! हम सब की जय हुई!! सर्वोत्तम अनन्त महिमा युक्त वृषभानुसुता सबसे अधिक गर्विता होकर भी आज हम सबके सखा श्रीकृष्ण द्वारा पराजित होकर उत्सव रस में श्रान्त मेरे प्रिय सखा की अधीना दासी के समान स्वयं सेवा कर रही हैं। इससे और अधिक कौतुक का विषय क्या हो सकता है क्योंकि मेरे सखा की सम्यक रूप से जय हुई है!! और होगी क्यों नहीं, मै जिसका मंत्री हूँ-उसकी क्या कभी पराजय हो सकती है? उनकी तो सदा ही जय सम्पद प्राप्ति अनिवार्य है!!!" यह बात कहकर सुखानुभव के कारण परम परितृप्त होकर दोनों बाहु उठाकर अतिशय नृत्य करने लगे। यह देख सखा तथा सखीगण सभी परम उल्लासित हुए। देवी श्रीराधिका ने परम संतुष्ट होकर मधुमंगल को प्रसाद के रूप में एक नवीन मणिमय हार प्रदान किया।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार दीर्घ समय व्यापी क्रीड़ा युद्ध में परिश्रांत होकर आलस्य तथा अवसाद से सखा तथा सखियों की देह से रुचिर रस तंरग पूर्ण अतिशय माधुर्य अवलोकन करके वृन्दादेवी वनदेवी गण एवं संगीताचार्य मातंगी देवी अपने को कृतार्थ मानकर उत्सव के विराम को ही सुख समझने लगीं। इस प्रकार से बसन्तोत्सव समाप्त होने पर अलिकुल (भंवरकुल) गुंजरित वनमालाधारी वेणुपाणि वनमाली सहचरों के साथ मिलकर वृक्ष श्रेणी की उत्तम छाया में बैठकर नव प्रवृत्त बसन्तोत्सव सम्बन्धी रसोद्‌गार करते-करते परमानंद रस सिन्धु में निमग्न हुए। समस्त कला विद्याओं में सुनिपुणा किशोरीमणि श्रीराधा ने भी खेल को विराम देकर अपनी सखियों के साथ श्रीकृष्ण संग जनित परमानंद सम्पत्ति आस्वादन करते-करते रमणीय आम्रवन वाटिका के बासंती मंडप में बैठकर संगीताचार्या मातंगी को उनकी सहचरियों के साथ बुलाकर वृन्दादेवी द्वारा पारितोषिकादि दान कराकर संतुष्ट करते हुए सम्मान सहित विदा किया। इसके बाद दासीगण ने सखियों सहित श्रीराधारानी की वेश-भूषा सम्पादन की। वृन्दादेवी ने वन देवियों सहित विविध फल-मूलादि लाकर सखाओं सहित श्रीकृष्ण तथा सखियों सहित श्रीराधा को भोजन कराया। श्रीकृष्ण तथा सखागण ने वृक्ष छाया में पल्लव शय्या पर शयन किया। श्रीराधा तथा सखीगण ने आम्र वाटिका में भिन्न-भिन्न कुँज गृह की पुष्प शय्या पर शयन किया। दासीगण अवशेष भोजन ग्रहण करके विविध कालोचित सेवा में निरता हुई। सखाओं के निद्रित होने पर श्रीकृष्ण अलक्षित रूप से आकर श्रीराधिकादि के साथ विविध विलास के अंत में माधवी मंडप में श्रीराधा के साथ निद्रित हुए।

सपरिकर श्रीराधाकृष्ण का विश्राम भोजन तथा शयन।

नवद्वीप : श्रीवासोद्यान में आगमन :

नवद्वीप में श्रीमन्महाप्रभु बसन्त ऋतु वन में भावाविष्ट हैं। श्रीस्वरूप गोस्वामी ने ब्रज में श्रीश्रीराधाकृष्ण के बसन्तोत्सव लीला के अंत में भोजन शयनादि पद गान समाप्त किये। महाप्रभु हुँकार करके सपरिकर बाह्य दशा को प्राप्त हुए। श्रीवास पंडित ने तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को चन्दन माला से विभूषित किया। तत्पश्चात् प्रभु के सपरिकर श्रीवासोद्यान में आगमन करके माधवी मंडप में बैठने पर स्वरूप दामोदर ब्रजलीला पद गान करने लगे। गान श्रवण कर सभी भावाविष्ट हुए। इसके बाद वन भ्रमणादि लीलाएँ नित्यवत् होती हैं।

ब्रजधाम : जागरण तथा नित्यवत लीला :

वृन्दावन में श्रीराधाकृष्ण बसन्त ऋतु वन में माधवी मंडप में शयन कर रहे हैं। कुछ समय तक विश्राम के बाद उन सबके जागृत होने पर श्रीगुरु देवी के इशारे पर साधक दासी ने युगल की मुख प्रक्षालनादि सेवा करके पानीय जल (पीने के योग्य शर्बतादि) तथा ताम्बूल दानादि विविध सेवायें कीं। सखीगण जागृत होकर श्री राधाकृष्ण को घेरकर बैठ गईं। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण सखाओं के साथ मिलकर

Scanned by CamScanner

पूर्ववत् गान वाद्य, रंग खेला करते-करते बलदेव के दल के साथ चले। कुछ दूर जाकर वन शोभा के दर्शन के छल से श्रीकृष्ण ने सुबल तथा मधुमंगल के साथ श्रीराधाकुण्ड गमन किया। श्रीराधा सखियों सहित राधाकुण्ड में आकर नित्य लीलावत् श्रीकृष्ण सह-मिलन, दशऋतु वन भ्रमण, मधुपान, जलविहार, पद्मम मंदिर में वेश-भूषा, भोजन, शयन, शुकपाठ लीला, पाशाक्रीड़ा, मदनपूजादि करती हैं। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण अपराह्न में सखा सहित मिलकर गृह गमन करते है। बाद में अन्यान्य लीलाएँ नित्यवत् होती हैं।

इति बसन्तोत्सव लीला समाप्त।

श्रीअद्वैताचार्य प्रभु का आविर्भाव महोत्सव

(बसन्त लीला के अन्तर्गत)

माघी शुक्ला षष्ठी के सांयकाल में श्रीनाभा देवी के कहने पर श्रीकुबेर पंडित ने भक्त वृन्द सहित श्रीमन्महाप्रभु को दूसरे दिन सप्तमी तिथी को अपने गृह में सादर निमंत्रित किया। सप्तमी के दिन महाप्रभु ने प्रातः कृत्य, स्नानादि तथा भागवत् श्रवण के बाद भक्तवृन्द सहित श्रीअद्वैत प्रभु के गृह गमन करते हुए श्रीमन्मदन गोपाल जी की आरती दर्शन करके बसन्त लीला गान, श्रीहरिसंकीर्तनादि किया। भक्त वृन्द परस्पर आबीर गुलालादि फेंकने लगे। तत्पश्चात् सबके प्रार्थना करने पर श्रीअद्वैत प्रभु स्नान मंडप में जाकर बैठ गये। दासगणों ने पहले से ही अभिषेक दृव्यादि सजाकर रखा हुआ था। श्रीवास पंडित यथा विधि अभिषेक करने लगे। श्रीपुरुषोत्तम पंडित अभिषेक मन्त्र पाठ करने लगे। श्रीमन्महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ अभिषेक दर्शन तथा गान वाद्यादि करने लगे। अभिषेक के अंत में श्री अद्वैत प्रभु के श्रृँगार मंडप में दिव्यासन पर जाकर बैठने पर दासगणों ने वेश-भूषादि सम्पन्न की। श्रीमन्महाप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीगदाधर पंडित गोस्वामी एवं भक्त वृन्द ने पृथक-पृथक श्री अद्वैत प्रभु को नाना मणिमय हार, वस्त्र तथा अलंकारादि पहनाये। श्रीवास पंडित ने आरती की एवं भक्त वृन्द पुष्प वर्षादि करने लगे। तत्पश्चात् श्री नाभा देवी तथा कुबेर पंडित ने सपरिकर तीनों प्रभु को भोजनालय में लाकर परम प्रीति पूर्वक श्रीमन्मदन गोपाल जी का विचित्र महाप्रसाद सेवन कराया। भोजन तथा आचमन के अंत में सबने विश्राम किया। साधक श्री अद्वैत प्रभु के गृह में ही योगपीठ सेवा, फल-मूलादि अनुकल्प अथवा वृत उपवासादि करता है। इसके बाद सभी लीलाएँ नित्यवत् हैं।

Scanned by CamScanner

श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु का आविर्भाव महोत्सव

(बसन्तोत्सव के मध्य)

माघी शुक्ला द्वादशी के सांयकाल में श्री पद्मावती माता के कहने पर श्रीहाड़ाई पंडित ने श्रीमन्महाप्रभु तथा भक्त वृन्द को अपने गृह में निमंत्रित किया। दूसरे दिन त्रयोदशी को महाप्रभु ने नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नान, भागवत श्रवणादि के बाद भक्त वृन्द के साथ श्रीमन्नित्यानंद प्रभु के गृह जाकर श्रीबाँके बिहारी जीऊ की आरती दर्शन करके जगमोहन में बैठकर बसन्त-लीला कीर्तन तथा श्रीनाम संकीर्तनादि किया। भक्त वृन्द परस्पर प्रसादी आबीर, गुलालादि फेंकने लगे। तत्पश्चात् सबके अनुरोध करने पर श्रीमन्नित्यानंद प्रभु स्नान मंडप की स्वर्ण चौकी पर जा बैठे। दासगण ने पहले से ही अभिषेक द्रव्यादि प्रस्तुत करके सजाकर रखे हुए थे। उन्हीं सब द्रव्यों से श्री सुदर्शन पंडित विधि पूर्वक अभिषेक करने लगे। श्रीवास पंडित अभिषेक मंत्र पाठ करने लगे। भक्त वृन्द के साथ महाप्रभु नृत्य गीत वाद्यादि करने लगे। अभिषेक के अंत में श्रीमन्नित्यानंद प्रभु के श्रृँगार मंडप के दिव्यासन पर बैठ जाने पर दासगण ने वेश-भूषादि की। महाप्रभु, अद्वैत प्रभु, गदाधर पंडित तथा भक्त वृन्द ने नित्यानंद प्रभु को वस्त्रालंकार मणिमय हार तथा माल्यादि प्रदान किये। सुदर्शन पंडित ने आरती की तथा भक्त वृन्द ने जय-जय ध्वनि के साथ पुष्प वर्षा की।

तत्पश्चात् पद्ममावती ठाकुरानी तथा श्रीहाड़ाई पंडित ने तीनों प्रभु को परम प्रीति पूर्वक भोजनालय में ले जाकर दिव्यासन पर बिठाकर तथा परिकर गणों को यथायोग्य आसन पर बिठाकर श्रीबाँके विहारी जीऊ का विचित्र प्रसाद सेवन कराया। भोजन के अंत में सबके जलपान तथा आचमन करके बरामदे में आकर बैठ जाने पर सेवक गण तांबूल देकर पाद संवाहन तथा व्यजनादि सेवा करने लगे। साधक दास स्थान पात्रादि स्वच्छ करके श्रीनित्यानंद प्रभु के गृह में ही योगपीठ सेवा, फल-मूलादि अनुकल्प अथवा व्रतोपवासादि करेंगा। कुछ समय तक विश्राम के बाद श्रीमन्महाप्रभु बसन्त ऋतुवन में बसन्त लीला आस्वादन करने लगे। इसके बाद की लीलाएँ नित्यवत् हैं।

होली लीला

(फाल्गुनी कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा तक)

नवद्वीपः होली लीलावेश :

नवद्वीप में श्रीमन्महाप्रभु ने फाल्गुनी पूर्णिमा प्रतिपदा के दिन प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषा, श्रीमद्

Scanned by CamScanner

भागवत् श्रवणादि समापन करके बसन्त लीलावत् निमंत्रित भक्तों के गृह गमन, होली लीला कीर्तन, भोजन, विश्राम, योगपीठ लीलादि की। तत्पश्चात् पूर्वाह्न काल में वन भ्रमण के लिए गमन करके वन शोभा दर्शन करते-करते बसन्त ऋतुवन के माधवी मंडप में जाकर बैठ गये। श्रीस्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर बसन्त राग में मधुर स्वर से वृन्दावन के बसन्त ऋतुवन में श्रीश्रीराधाकृष्ण के हाली लीला पदगान करने लगे। मृदंग, करताल, डम्फ आदि वाद्य को भक्तगण बजाने लगे। गान तथा डम्फ का वाद्य श्रवण कर महाप्रभु भावावेश में मधुर नृत्य करने लगे। भक्त वृन्द परस्पर आबीर, गुलालादि तथा सुगंधी रंगजल पिचकारी में भरकर छोड़ने लगे। गदाधर भी पिचकारी से महाप्रभु के श्रीअंग पर रंग जल छोड़ने लगे। सभी अपने-अपने सिद्ध स्वरूप में ब्रजलीला में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम : होली लीला का विविध कौतुक :

ब्रज के वृषभानुपुर में श्रीराधा ने नित्यलीलानुरूप प्रातः कृत्यादि करके यशोदा माता के आह्वान पर कुन्दलता तथा सखियों के साथ पाक कार्य के लिए नन्दालय गमन किया। गमन करते समय दासी गण ने होली लीला के द्रव्यादि भी साथ ले लिए। नंदीश्वर के निकट होने पर सखाओं के साथ श्रीकृष्ण आकर गेंद, रंगधूली, पिचकारी से रंग जल श्रीराधा तथा सखियों के ऊपर छोड़ने लगे। दोनों दलों के मध्य रंग खेल आरम्भ हुआ। रंगधूली से जब चारों ओर अंधकार छा गया, तब सहसा श्रीकृष्ण सखी मंडली के मध्य जाकर राइ को चुम्बन, आलिगंन करके भाग गये।

सखियों सहित राधाकृष्ण का रंग खेलना।

रंगधूली का अधंकार दूर होने पर सखियों के साथ श्रीराधा ने नन्दालय जाकर श्रीयशोदा माता के चरणों में प्रणाम किया। माता यशोमती उनकी यह दुर्दशा देखकर समझ गई कि यह गोपाल का ही कार्य है। तब माता श्रीराधा तथा सखियों को आलिंगन तथा मस्तकाघ्राण करके मधुर वाक्यों से सान्त्वना प्रदान करते हुए बोलीं—"हे पुत्रियो! मन में कुछ दुख न करना श्रीकृष्ण बालक तथा बड़ा ही चंचल है।" माता यशोदा ने दासियों द्वारा उनके पाद-प्रक्षालनादि तथा वस्त्र परिवर्तनादि कराकर स्नेह पूर्वक उत्तम मोदक, मिष्ठान्नादि भोजन कराया। तत्पंश्चात् श्रीमती ने सखियों सहित नित्यवत् रसोई, भोजन, विश्राम, योगपीठ मिलनादि के अंत में वृषभानुपुर में आकर कुछ समय तक विश्राम करके सूर्य-पूजा के लिए मिष्ठान्नादि प्रस्तुत किया। इसके बाद सखियों सहित होली लीला के उपयोगी वेश-भूषा धारण करके सूर्य-पूजा के उपकरण तथा होली लीला की सामग्री साथ लेकर सूर्य कुण्ड को गमन किया। एवं वहाँ पूजोपकरण रखकर वृन्दावन में जाकर बसन्त ऋतुवन के माधवी मंडप में सखियों से घिरकर बैठ गई। वहाँ भी वन देवियों सहित वृन्दादेवी ने होली लीला के उपयोगी समस्त द्रव्यादि सजाकर रखे हुए थे।

श्रीराधा तथा सखियों को यशोदा की सान्त्वना।

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात् श्रीराधा ने सखीवृन्द के साथ होली लीला गान तथा वाद्यादि आरंभ किया। उधर श्रीकृष्ण प्रिय नर्म सखाओं के साथ होली लीलोपयोगी वेश-भूषादि धारण करके गान, वाद्य नृत्यादि करते-करते वृन्दावन में श्रीराधा के दल के निकट के स्थान में आकर उपस्थित हुए। श्रीकृष्ण के मोहन गान, वाद्य तथा नृत्य की माधुरी दर्शन करके आनंन्द में सखा तथा सखीगण विभोर हुए। पक्षी भी नि:शब्द होकर डाल पर बैठकर निर्निमेष नेत्रों से उस नृत्य की माधुरी देखने लगे। मृगादि पशु गण भी स्वाभाविक चेष्टा का त्याग करके नृत्य दर्शन से नीरव तथा जड़िमा को प्राप्त हुए। यह देखकर मधुमंगल बोले–"अरे! सखा का नृत्य देखकर ये सब विमोहित हो गये हैं। मेरा नृत्य देखकर न जाने इन सबको क्या होगा।" यह कहकर वे नृत्योपयोगी वेश धारण करने लगे। मस्तक टेढ़ा करके मोटी पगड़ी पहनी। उसके चारों ओर रंग बिरंगे रेशमी वस्त्र के टुकड़ों को बाँधकर उनके छोर को पैर तक झुला दिया। मुख पर काले कस्तूरी का पंक लेपन करके बीच-बीच में बड़ा-बड़ा सिन्दूर का बिन्दु लगाया। तत्पश्चात् हाथ में स्वर्ण जड़ित छड़ी लेकर नाना भंगी के साथ ग्रीवा, कटि तथा मस्तक नचा-नचाकर अश्रुत पूर्व (जो शब्द पहले नहीं सुना गया हो) शब्द करते-करते नृत्य शुरु किया। उसे देखकर सखागण के जोर से हँसने पर बटु बोले–"अरसिकों के आगे विद्या-प्रकाश नहीं करनी चाहिये। अच्छा जो भी हो ये देखो, हमारे इस वृन्दावन में गोदोहन करने वाली कन्यायें होली लीला गान कर रही हैं। चलो हम चलकर इन्हें भगा दें।" यह कहकर मंडली से निकलकर कटि देश में यज्ञोपवीत जकड़कर लाठी फिराते-फिराते दो चार कदम आगे आकर बोले–"आओ तुममें से दो चार जन मेरे साथ आओ।" कृष्ण के नयन इंगित से सखाओं को जाने के लिए मना करने पर किसी को जाते न देखकर बटु मंडली में आकर बोले- "यदि खेलने नहीं जाओगे तो होली खेलने क्यों आये? जाओ घर में जाकर सो जाओ। मैं ब्रह्म तेज से सबको अकेले ही भगा सकता हूँ। ओहो! समझ गया, तुम सब चाहते हो कि ग्वालिन कन्यायें मुझ अकेले की ही रंगजल, आबीर, गुलालादि द्वारा दुरावस्था कर दें। किन्तु मैं तुम सबकी मन कल्पना के आधीन नहीं हूँ। तुम सबने तो नन्द बाबा के घर की रोटियाँ खाकर अकारण ही देह को पुष्ट किया है। मैं अपने ब्रह्म तेज के बल से तथा गायत्री के प्रभाव से तुम सबकी तो गणना भी नहीं करता-यहाँ तक कि कृष्ण को भी कंपित कर सकता हूँ।"

श्रीकृष्ण के नृत्य से स्थावर जंगम का मोह।

बटु का अद्भुत नृत्य।

यह बात सुनकर श्रीकृष्ण तथा सखागण के हँसने पर मधुमंगल श्रीकृष्ण से बोले–" तुमने अकेले मेरा अपमान नहीं किया अपितु सखाओं के द्वारा भी कराया। तुमने मुझ से मित्रता की थी, अभी तुमने ही मुझे छोड़ दिया। और मेरा कोई दोष नहीं, मैं अभी वृषभानुनंदिनी के निकट जाकर शपथ कर हाँ-हाँ करके शरण लूँगा। इससे मेरी क्या क्षति? तुम्हारे ही गौरव की हानि होगी।" यह बात कहकर छड़ी हाथ में लेकर वृषभानुनंदिनी आदि के

होली लीला की पट भूमिका में मधुमंगल।

Scanned by CamScanner

निकट उपस्थित हुए।

तब ललिता के इशारे पर सखीगण चारों ओर से घेरकर मधुमंगल के मस्तक पर कुंकुम का जल डालकर रंगधूली तथा कुंकुम, कस्तूरी के कद्रम द्वारा दुरवस्था करने लगीं। तथापि मधुमंगल आनंद में नृत्य करने लगे। तब किसी सखी ने उनके अंग की चादर लेकर दोनों हाथों को पीछे बाँध दिया। तब मधुमंगल कहने लगे-" हे वृषभानुनंदिनी! मैंने अपने सखा को छोड़कर तुम्हारी शरण ली है। उससे शरणागत को क्या इस प्रकार से करना चाहिये? हे ललिते! तुम यदि कृष्ण के प्रति क्रोध करती हो तो कृष्ण भी आकर हाथ जोड़कर तुम्हारी स्तुति करते हैं, तुम्हारे रहते मेरी ये दुर्गति! हे वृषभानुनंदिनी! हे करुणामयी! मैं ब्राह्मण हूँ, सबके द्वारा पूज्य हूँ, उस पर भी मैं तुम्हारा हुआ-मुझे मुक्त करो।" श्रीराधा बोलीं "मधुमंगल! क्या तुम हस्त बंधन से दुखी हो?" मधु मंगल बोले-"मैं हस्त बंधन से दुखी नहीं हूँ-तुम्हारी सखियाँ के वाक्य रूपी बाण से मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है। हे वृषभानुनंदिनी! मैं कृष्ण को छोड़कर तुम्हारे शरणागत हुआ, उस पर भी मेरी ये दुरवस्था!!" ललिता बोलीं-मधुमंगल! तुमने अपने प्रिय सखा का क्यों त्याग किया?" मधुमंगल बोले-"कृष्ण बड़ा ही कपटी है।" ललिता-"हे कपट पटु बटो! अभी विपत्ति में पड़ने पर मुक्त होने के लिये वाक्य चातुरी का विस्तार कर रहे हो, यह मैं समझ गई।" बटु-"नहीं-नहीं सचमुच केवल उसका ही दोष है। वंशी नाद से सबका धर्म विपर्यय करता है, नदी स्तम्भित हो जाती है, पाषाण द्रवित होता है, पक्षी मौन होते है, गोपांगनाओं के केश, वागादि शिथिल होते है-इन सबके कारण ही कृष्ण का त्याग किया है।" यह सुनकर श्रीराधा रानी बोलीं-" श्रीकृष्ण के तो ये सब गुण ही हैं।" मधुमंगल बोले-"तब भी मैं यज्ञोपवीत की शपथ करके कहता हूँ-मैंने तुम्हारी शरण ली है। तब श्रीराधारानी अपने हाथ से मधुमंगल का बंधन खोलकर बोलीं-"मधुमंगल! तुम अपने सखा के निकट सदा ही कहते हो-मैं ब्राह्मण हूँ, अपने ब्रह्म तेज से सबको भगा सकता हूँ। अभी तुम्हारा वह गौरव कहा गया? समझ गई, तुम अनाचार करते हो। इसलिए तुम्हारा उपवीत भाग गया है। तुम्हारे पास उपवीत नहीं, तुम कैसे ब्राह्मण हो?" मधुमंगल बोले-"मैं अन्य ब्राह्मणों के समान उपवीत के अधीन नहीं हूँ, उपवीत ही मेरे अधीन है। हे करुणामयी! अभी बड़ी भूख लगी है कुछ लड्डू खाने को दो।"

उनकी बात सुनकर चित्रा बोलीं-बिना उपवीत के ब्राह्मण जल भी पान नहीं करता, तुम्हारे पास उपवीत नहीं तुम कैसे खाओगे?" तब मधुमंगल कटि देश से उपवीत निकालकर बोले-यह देखो मेरा उपवीत! मुझे कुछ खाने को दो।" यह कहकर नृत्य करते-करते हाथ फैला दिये। तब चित्रा ने-यह लो लड्डू" ऐसा कहकर कुंकुम पंक (कीचड़) की एक गेंद मधुमंगल के हाथ में दे दी। बटु उसे दूर फेंककर बोले 'तुम्हारा कोई दोष नहीं। मेरी ही बुद्धि का दोष है। मैं जिस प्रकार से सखा कृष्ण को छोड़कर तुम सब के निकट आया हूँ, उसी प्रकार से प्रतिफल पाया है।" यह बात कहकर जाने को तैयार होते ही ललिता हाथ

Scanned by CamScanner

में छड़ी लेकर सामने आकर बोलीं—"कहाँ जा रहे हो? और कुछ खाओ।" यह देखकर श्रीराधा ने नयन इंगित से निषेद करके अन्य सखी द्वारा लड्डू मँगवाकर भोजन कराया। तब सुदेवी आकर बोलीं—"विप्र! भोजन हो गया? अब दक्षिणा लो।" यह कहकर डाबर (गमला) का कुंकुम जल मस्तक पर डाल दिया। तब अन्य सखीगण नाना रंग के कर्दम (कीचड़) से उनका अंग चित्र विचित्रित करने लगीं। मधुमंगल व्याकुल भाव में उच्च स्वर से श्रीकृष्ण को बुलाने लगे—"हे ब्रजराज नंदन! हे कृष्ण! हे सखे! ग्वालिन कन्यायें होली खेल में प्रमत्त होकर ब्रह्मवध कर रही हैं-शीघ्र आकर रक्षा करो।" यह सुनकर श्रीकृष्ण बोले—"सखे सुबल! मधुमंगल विपत्ति में पड़कर कातर स्वर से मुझे बुला रहा है तुम जाकर उसका उद्धार करके लाओ।" सुबल बोले—"मेरे जाने पर मेरी भी वही दुद्रशा करेंगी।" श्रीकृष्ण बोले—"नहीं-नहीं तुम बुद्धिमान तथा धीर हो, वह भंड है, इसीलिए उसकी दुरवस्था की है। भाई! तुम जाकर उसे छुड़ाकर लाओ।" तब सुबल वहाँ जाकर वृन्दा से बोले—"वृन्दे! मधुमंगल क्यों चीत्कार कर रहा है?" मधुमंगल बोले—"मैं वृषभानुनंदिनी की शरण लेकर सुखी हूँ। अब तुम्हारी, तुम्हारे सखागण यहाँ तक कि कृष्ण की भी गणना नहीं करता।" सुबल बोले—"तब इतना चीत्कार क्यों कर रहे थे? मधुमंगल हँसते-हँसते बोले—"मेरे प्रति सखा का प्रेम है या नहीं, इसकी परीक्षा के लिए। मैं अब जान गया प्रेम है अब तुम जाओ।"

तब सुबल वृन्दा से बोले—"हे वृन्दे! श्रीकृष्ण ने मुझे यह कहकर भेजा है कि तुम सब उनके प्रिय सखा की दुरवस्था करके व्याकुल कर रही हो। इससे प्रीति कैसे रह सकती है?" इसी समय पीछे से तुंगविद्या ने आकर सुबल की आँख में थोड़ा-थोड़ा अंजन लगा दिया। सुबल बोले—"हे राधे! तुमने विज्ञा होकर भी इन सबको अच्छी शिक्षा दे रखी है। बिना दोष के दंड देना क्या उचित है?" ललिता बोलीं—"इस होली खेल की नीति इसी प्रकार की होती है। वृन्दा बोलीं—"हे राधे! श्रीकृष्ण के इन दोनों सखाओं को छोड़ दो।" मधुमंगल द्रुतगति से श्रीकृष्ण के निकट जाकर बोले—"हे सखे! तुम्हारे प्रिय सखा सुबल को मैं छुड़ाकर लाया हूँ, मुझे कुछ पारितोषिक दो।" सुबल—"हाँ! वह तो है ही। भला करने से बुरा हो जाता है! मधुमंगल जिस संकट में पड़ गया था, अब तक वहाँ रहने से इसकी क्या गति होती, यह नहीं कहा जा सकता! केवल मैं ही इसे छुड़ाकर लाया हूँ। क्योंकि उस सभा में अन्य का जाना ही दुष्कर है, छुड़ाकर लाना तो दूर की बात है।" मधुमंगल बोले—"कौन किसे छुड़ाकर लाया है इसका प्रमाण देखो किसकी आँख में चिह्न है?" सुबल बोले—"तुम्हें छुड़ाने गया इसी का प्रतिफल है।" श्रीकृष्ण बोले—"हे मधुमंगल! ब्रजांगनाओं ने तुम्हारा यह कैसा सुन्दर वेश बना दिया है तथा तुम्हारा उदर भी अच्छा खासा मोटा दिख रहा है।" मधुमंगल बोले—"तुम नाम मात्र के ही ब्रजराजनंदन हो। वहाँ जैसे मनोहर लडडू आदि हैं, तुम्हारे यहाँ उसके बिन्दु मात्र भी नहीं है। तुम्हारी संपत्ति के मध्य केवल यह सूखे बाँस की वंशी है। वहाँ जिस प्रकार के वीणादि वाद्ययंत्र बज रहे हैं, नृत्य गीत हो रहा है, आबीर गुलालादि खेल हो रहा है—उसकी

Scanned by CamScanner

तुलना में तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है।''

श्रीकृष्ण का वंशीरव तथा श्रीराधा का भाव विकार।

तब श्रीकृष्ण ने मोहन वेणु ध्वनि की जिसे सुनकर श्रीराधा के अंग में अष्ट सात्विक भाव का प्रकाश हुआ। वे विशाखा के कंधे का सहारा लेकर मस्तक झुकाकर रहीं। तब श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ नृत्य-गीत, वाद्य कर महाकोलाहल किया। यह सुनकर ललिता बोलीं—''सखि राधे! तुम अब स्थिर होओ। उसे सुनो—श्रीकृष्ण सखाओं के साथ गर्वित होकर गान वाद्यादि कर रहे हैं, क्या यह सहन किया जा सकता है? चलो हम सब जाकर उनका गर्व चूर करें। मैं अकेली ही उन्हें भगा सकती हूँ, फिर तुम्हारे चरणों की नूपुर ध्वनि सुनते ही श्रीकृष्ण विभोर होकर कहीं वंशी, कहीं चूड़ा, धड़ा (कटि वसन) तो कहीं सखागण सब कुछ ही विस्मृत होकर यहाँ तक कि अपनी स्मृति भी भूल जायेंगे। अतएव चलो चलें।'' तब श्रीराधा ने भाव संवरण करके चलने का अदेश दिया।

श्रीराधा के आदेश से सखियों का होली खेल।

उसी समय सहस्र-सहस्र सखियाँ कपड़े की झोली में रंग धूली लेकर चलीं। सहस्र-सहस्र सखियाँ पुष्प निर्मित धनुर्बाण लेकर, सहस्र-सहस्र सखियाँ पुष्पों की छड़ी स्वर्ण घड़े में भरा हुआ सुगंधित रंग जल इत्यादि लेकर चलीं। सहस्र-सहस्र सखियाँ मणि जड़ित पिचकारियों में श्रावण की धारा के समान रंग जल वर्षा करते-करते चलीं, ललिता जी डम्फ बजाते- बजाते, विशाखा नृत्य करते-करते, सहस्र-सहस्र सखियाँ नाना वर्णों की रंगधूली फेंकते हुए चलीं, वृन्दा जी मृदंग तथा चित्रा जी वीणा बजाते-बजाते—''हो-हो-होली है, होली है'' ध्वनि करते-करते श्रीराधा के साथ गमन करके श्रीकृष्ण के दल के निकट पहुँच गई। श्रीराधा अनुराग में विह्वला होकर ललिता के कंधे का सहारा लेकर कहने लगीं—"सखि! जिनकी अंग कांति से चारों दिशाएँ श्याम वर्ण हो रही हैं, हास्य विकास से चन्द्र ज्योत्सना निन्दित है तथा पदतल की अरुणिमा से भूमितल अरुणिम हो रहा है, ये पुरुष रत्न कौन हैं?'' यह सुनकर ललिता के मृदु मन्दहास्य करने पर श्रीराधा यह जान गई कि वे अपने प्राण नाथ हैं। श्रीकृष्ण भी श्रीराधा के दर्शन से अष्ट सात्विक भाव में विह्वल होकर कदम्ब वृक्ष से अपनी देह लता को सहारा देकर सुबल से बोले—''सखे! जिनकी अंगच्छटा से दिक् मंडल स्वर्ण वर्ण, नेत्र शोभा से इन्दीवर प्रकाशमान, हास्य की प्रभा से चन्द्रप्रभा न्यकृत (धिक्कार योग्य) हुई है—ये रमणी शिरोमणि कौन हैं?'' यह सुनकर सुबल के थोड़ा हँसने पर श्रीकृष्ण उन्हें अपनी प्रिया जानकर पुलकित हुए। यह देखकर मधुमंगल उनसे बोले—''हे सखे! गोपांगनाओं को देखकर भयभीत क्यों हो रहे हो? मेरे जैसे सहायक के रहते तुम्हें भय किसका? मैं अभी ब्रह्म तेज से सबको भगा सकता हूँ।'' यह सुनकर उज्ज्वल बोले—''मधुमंगल के हृदय में महाभय है केवल मुख से महादंभ प्रकाश करके अपनी भीरुता तुम पर आरोपित कर रहा है। इसे घर भेज दो, अन्यथा एक जन के भागने से सभी

Scanned by CamScanner

भाग जायेंगे।'' यह सुनकर मधुमंगल बोले—''हे कपटी! तुम्हारा नाम अनुज्ज्वल न रखकर जिसने उज्ज्वल रखा है उसको बुद्धि नहीं है।''

इसी समय श्री कृष्ण मन्द-मन्द मुरली ध्वनि करने लगे। तब श्रीराधा अपनी मंडली छोड़कर पुष्प वाटिका में पुष्प चयन करने लगीं। उनके मस्तक पर कोई सखी पुष्प छत्र धारण किये हुई है, कोई सखी पुष्प गुच्छ से उन्हें व्यजन करने लगी। इस शोभा के दर्शन से श्रीकृष्ण ने आनंदित होकर उन्हें लक्ष्य करके कस्तूरी जल की पिचकारी से जल छोड़ा। श्रीराधा द्वारा अपने मुख पर गिरने वाली उस धारा को बाँये हाथ से प्रतिरोध करने पर उसके विक्षिप्त बिन्दु मुख कमल पर गिरने पर अनिर्वचनीय शोभा का विकास हुआ। इसके दर्शन से श्रीकृष्ण आनंद में प्रमत्त होकर श्रीराधा से बोले—''तुम सब मेरे वृन्दावन के पुष्पादि चयन करके छिन्न-भिन्न क्यों कर रही हो,'' ललिता बोलीं—''हे कृष्ण! इतना किसके लिए? मैं जब तक वाक्य प्रयोग नहीं करती तभी तक तुम्हारा गर्व है। सावधान! मेरी सखी सूर्य पूजा के लिए पुष्प चयन कर रही है, तुम उसे स्पर्श करके अपवित्र न करो।'' श्रीराधा अलक्षित रूप से जाकर श्रीकृष्ण के मुखकमल पर केशर का कर्दम लेपन करके लीला कमल से प्रहार करने लगीं। श्रीकृष्ण भी श्रीराधा के मुख कमल पर कुंकुम का कर्दम लेपन करके पुष्प गेंद मारने लगे। तब किसी सखी ने अलक्षित रूप से आकर श्रीकृष्ण के नयनों में थोड़ा-थोड़ा काजल लगा दिया। यह देखकर श्रीराधा की सखियाँ उच्च हास्य करके आनंद में नृत्य-गीतादि करने लगीं। सखागण ''हो-हो-होली-होली'' ध्वनि करते-करते कोई-कोई रंगधूली, कोई-कोई पिचकारी से रंगजल, कोई-कोई गेंद, कोई पुष्प बाण छोड़ने लगे। कोई-कोई सखा घाघरा, कांचुली (छोटा कपड़ा) पहनकर, तो कोई-कोई योगी का वेश धारण करके आये। सखीगण भी सखागणों पर नाना रंगजल की पिचकारी, गेंद, रंगधूली, पुष्प बाणादि छोड़ने लगीं। कभी सखियाँ सखाओं को भगाने लगीं, तो कभी सखागण सखियों को भगाने लगे। इस प्रकार बहुत समय तक युद्ध चलने पर सब सखीगण एक साथ मिलकर सखाओं को घेरकर रंगजलादि फेंकने तथा पद्म मृणाल आदि द्वारा प्रहार करने लगीं। तब श्रीकृष्ण सखाओं के साथ भागने लगे, सखियाँ भी उन्हें भगाते हुए पीछे दौड़ते हुए कहने लगीं-भागते क्यों हो? खड़े रहो।'' श्रीकृष्ण सखाओं के साथ कभी खड़े होते हैं, तो कभी भागते हैं। यह देखकर ललितादि सखीगण, मयूर, कोकिल, शुकसारी पक्षीगण श्रीराधारानी की जय-जयकार करने लगे।

श्रीकृष्ण भी सखाओं के साथ भागकर कुछ दूर जाकर बोले—''भाइयो! तुम सब अभी घर जाओ, मैं हारकर घर कैसे जाऊँगा? जाने पर गोपांगनाएँ और भी हँसी करेंगी। अतः मैं सायंकाल को जाऊँगा।'' श्रीकृष्ण के इस प्रकार कहने पर वे उनका मन जानकर जाने लगे। तब श्रीकृष्ण श्रीराधा के साथ मिलने के लिए अतिशय उत्कंठित होकर सुबल के साथ निकट के कुँज में बैठकर बोले—''भाई सुबल! राइ के बिना वन की शोभा तथा कोकिलादि की ध्वनि मेरे हृदय को विदीर्ण कर रही है। मलयानिल तथा पुष्पादि स्पर्श

Scanned by CamScanner

से मेरा अन्तर्मन अतिशय दग्ध हो रहा है। सभी शून्य प्रतीत हो रहा है।'' यह कहकर वे व्याकुल प्राण से अश्रुयुक्त होकर पुनःपुन दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगे।

उसी समय श्रीराधा भी श्रीकृष्ण के अदर्शन से व्याकुल होकर विशाखा से बोलीं—''सखि! श्रीकृष्ण खेल में हारकर लज्जावशतः किसी कुँज में छिप गये हैं अथवा चन्द्रावली की सखी कटाक्ष करके उन्हें ले गई होगी, अथवा मधुमंगलादि के साथ खेल रस में मत्त होंगे। सखि! प्राणनाथ के बिना वृन्दावन की शोभा मेरे हृदय को अतिशय दग्ध कर रही है। तुम उन्हें जहाँ पाओ, उन्हें लाकर मेरे व्यथित प्राण को सुशीतल करो।'' यह सुनकर विशाखा ने श्रीकृष्ण की खोज के लिए गमन किया। उधर श्रीकृष्ण द्वारा प्रेरित सुबल विशाखा को देखकर बोले—''विशाखे! तुम्हारी सखी के बिना श्रीकृष्ण अत्यंत कातर हो रहे हैं। धैर्य खोकर चारों ओर निरीक्षण कर रहे हैं। चम्पक देखकर वक्ष में धारण करते हैं तथा दीर्घ निःश्वास त्याग कर रहे हैं।'' यह सुनकर विशाखा के श्रीकृष्ण के समीप जाने पर श्रीकृष्ण बोले—"हे विशाखे! तुम्हारी सखी कहाँ है?'' विशाखा बोलीं—''तुम बहुवल्लभ हो, मेरी सखी साध्वी पतिव्रता है, तुम उसे कैसे पा सकते हो? यह सुनकर श्रीकृष्ण ने कातर प्राण से, अश्रु युक्त नेत्रों से दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए मौन धारण किया। यह देखकर विशाखा बोलीं- हे कृष्ण! यथार्थ—कहती हूँ, श्रवण करो। तुम्हारे लिए श्रीराधा भी अतिशय उत्कंठित हो रही हैं, तुम्हारे बिना वृन्दावन की शोभा उनके हृदय को दग्ध कर रही है। अतएव तुम अभी शीघ्र ही योगी का वेश धारण करके आओ।'' तत्पश्चात् विशाखा श्रीराधा के निकट जाकर बोलीं-''सखि! श्रीकृष्ण को नहीं पाया, तब एक अपूर्व योगी को इधर आते हुए देखा। इसी समय योगी आकर उपस्थित हुए। उनके सिर की श्वेत वर्ण जटा पृष्ठ देश में भूमि पर झूल रही है, सभी अंगों में भस्म रमाये हुए हैं, ललाट पर सिन्दूर का मोटा बिन्दु है, कौपीन पहने हुए है, कंधे पर मृग चर्मासन, गले में वक्ष से लेकर घुटनों तक क्रम पूर्वक रूद्राक्ष की माला है। इस प्रकार के योगीवर को देखकर चम्पकलता बोलीं—"हे प्राचीन योगीवर आइये! आइये!!" चित्रा विचित्र आसन देकर बोलीं—''इस आसन पर बैठिये!'' योगीवर चरण द्वारा उस आसन को हटाकर अपने मृग चर्मासन पर बैठ गये। तब श्रीराधा ने आकर भूमि पर दंडवत् प्रणाम किया। योगीवर ने अस्पष्ट वचनों से आशीर्वाद प्रदान किया। ललिता दंडवत् प्रणाम करके बोलीं—''हे योगीवर! आप बहुत समय तक योग-साधना करके सिद्ध वाक्य हुए हैं मेरे मन की बात कहो तो देखूँ।'' योगीवर बोले—''मैं किसी का भी मुख दर्शन नहीं करता, एवं किसी के साथ बात नहीं करता, परन्तु तुम सबकी भक्ति से बाध्य होकर कह रहा हूँ, श्रवण करो। कांचन वर्णा एक युवती तथा नवमेघ वर्ण सदृश एक युवक पुरुष, इन दोनों के मिलन दर्शन के लिए तुम सबका हृदय सर्वदा उत्सुक है। यह बात सुनकर ललिता जी बोलीं—''सखि! ये योगी वर महासिद्ध हैं। हमारे मन का जो भाव है ठीक वही बोला है।'' तब श्रीराधा गोपन रूप से विशाखा से बोलीं—''इस योगी को देखकर मेरा मन आकृष्ट क्यों हो रहा है?'' कृष्ण के अलावा अन्य कहीं भी मेरा मन इस प्रकार से नहीं जाता!'' यह कहकर योगी पर कटाक्ष

Scanned by CamScanner

पात किया, इससे योगी के अंग में पुलक कंपादि भाव व्यक्त हुए। यह देख ललिता हँसते-हँसते बोलीं—"हमारी सखी इस योगी के संग कहीं योगिनी न हो जाय!" यह सुनकर योगी के शंकित मन से उठकर मृग चर्मासन को कंधे पर रखते हुए जाने के लिए उद्यत होने पर सखियों ने आकर चारों ओर से घेर लिया। कोई बोली—"हे योगीवर! आपने इस माला से बहुत समय तक भजन किया है—अब माला मुझे प्रदान करें।" यह कहकर हाथ से माला छीन ली। किसी सखी ने योगी के ललाट से सिंदूर बिन्दु पोंछ दिया, किसी सखी ने जटा हटा दी, किसी सखी ने कस्तूरी पंक से मुख को लेपन करके बीच-बीच में सिंदूर बिन्दु लगा दिये, किसी सखी ने दर्पण लाकर मुख के सामने रखकर कहा-" देखो योगीवर! आपकी कैसी शोभा हो रही है!" किसी सखी ने कुंकुम जल से भरा घड़ा मस्तक पर डाल दिया। कोई सखि छड़ी लेकर सामने खड़ी हुई। श्रीराधा के दर्शन से कृष्णांग में कंपादि विकार देखकर कोई सखी बोली-" लगता है हमारे भय से काँप रहे हो! अब कौन तुम्हारी रक्षा करेगा?" तुम्हारा प्रिय सखा मधुमंगल जो कहता है—"अपने ब्रह्म तेज से सबको भगा दूँगा, वह अब कहाँ है? उसे बुलाओ!" तब ललिता ने आकर सवको शांत करते हुए श्रीकृष्ण के अंग को पोंछकर पीतांबर पहनाया। इसी बीच श्रीराधा कुँजान्तर में छिप गई। श्रीकृष्ण प्रिया को न देखकर विषाद युक्त हुए। तब वृन्दा के नयन इंगित से उस कुँज को दिखाने पर श्रीकृष्ण उस कुँज के अन्दर प्रवेश करके प्रिया जी के साथ विविध विलास करके वेश-भूषा के अंत में बाहर आये। तब वृन्दा देवी ने श्रीराधा कृष्ण तथा सखियों को वेदी पर बिठाकर विविध पानकादि तथा फल-मूल सेवन कराया। तत्पश्चात् वृन्दा देवी बोलीं—"हे वृन्दावनेश्वरी श्रीराधे! इस होली लीला के समय वृन्दावन ने जो अपूर्व शोभा धारण कर रखी है उसे देखकर स्थावर जंगमादि को कृतार्थ करो।" यह सुनकर श्रीराधा ने सखियों सहित वन शोभा दर्शन के लिए गमन किया। तब श्रीकृष्ण बोले—"मैं भी साथ चलूँ क्या?" श्रीराधा बोलीं—"गोपांगनागणों के मुख चुम्बन से जब तुम्हारा मुख पद्म धुला हुआ है तथा आलिंगन से सब शरीर निर्मल हो रहा है तब तुम्हें साथ न लूँ तो और किसे लूँ," यह सुनकर श्रीकृष्ण खुशामद करने की भाँति कभी प्रियाजी के सामने कभी पीछे, कभी आस-पास में नाना भंगी कटाक्षादि तथा काकुवाद (कातर वाक्य) करने लगे। एवं श्रीराधा की ओढ़नी लता कंटकादि में फंस जाने पर तत्क्षणात अपने हाथ से छुड़ाने लगे। कोई-कोई सखीगण पुष्प छड़ी हाथ में लेकर श्रीराधा के आगे-आगे चलने लगीं, कोई सखी छत्र धारण करके श्रीराधा के पीछे पीछे चलने लगीं, कोई-कोई रंगजल पिचकारी चलाने लगीं। तो कोई-कोई विविध रंगधूली उड़ाने लगी तो कोई-कोई पुष्प गेंद फेंकने लगीं, कोई-कोई नाना वाद्य यंत्र बजाकर नृत्य गीत करते-करते चलने लगीं। मयूर-मयूरी "के का" रव के साथ नृत्य करने लगे। कोकिल-कोकिला गान तथा शुक-सारी स्तव करने लगे।

श्रीराधा बोलीं—"देखो विशाखे! मैंने कृष्ण को साथ में आने के लिए कितनी बार मना किया तथा कृष्ण नाना काकुवाद (कातर वाक्य) कर रहे हैं, कटाक्ष भ्रू-भंगी करके निषेध करने पर भी उत्तरीय

Scanned by CamScanner

पीताम्बर हाथ में धारण करके ''तुम्हारा बलिहारी जाऊँ'' यह कहकर मुख में अंगुली देकर "हा हा" कर रहे हैं। यह सुनकर विशाखा के ललिता को इशारा करने पर ललिता श्रीकृष्ण को कुँज के अन्दर ले आकर घाघरा तथा चोली पहनाकर श्यामासखी के रूप में सजाकर श्रीराधा के निकट आकर बोलीं–''राधे! तुम्हारी प्रिय श्यामा सखी तुम्हारे दर्शन की आशा में इस कुँज में बैठी हुई है जाकर दर्शन करो।'' यह सुनकर श्रीराधा के कुँज के अन्दर प्रवेश करने पर राधा-श्याम मिलकर विलासादि के अंत में वेश-भूषा करके बाहर आये। इसके बाद नित्य लीलावत् राधांग वर्णनादि समस्त लीला होगी। अथवा कभी प्रथम मिलन के अंत में श्रीकृष्ण सुबल, मधुमंगल के साथ राधाकुण्ड गमन करते हैं। बाद में श्रीराधा सखियों सहित वहाँ जाकर नित्य लीलावत् लीला करती हैं। अपराह्न में श्रीकृष्ण द्वारा सखाओं के साथ खेलते-खेलते गृह गमन के समय बरसाना के निकट होने पर श्रीराधा सखियों सहित आकर उन सबके ऊपर रंगजल, पिचकारी, रंगधूली, गेंदादि फेंकती हैं। दोनों दलों में तुमुल युद्ध होता है। बाद में श्रीकृष्ण सखाओं के साथ भाग कर नंदीश्वर जाते हैं। श्रीराधा सखियों सहित आकर अन्यान्य लीलाएँ नित्यवत् करती हैं।

श्री शिव चतुर्दशी लीला

(होली लीला के अन्तर्गत)

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी के दिन श्रीमन्महाप्रभु नित्य लीलावत् प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषा, भागवत श्रवण श्रीनारायण का भोग-आरती दर्शन, कीर्तनादि करके योगपीठ लीला के अंत में होली-लीला गान करते-करते भक्तवृन्द के साथ गोपेश्वर शिव पूजा के आवेश में गंगा तीर पर जाकर महादेव मूर्ति का दर्शन करके परिकरों से आवृत होकर बैठ गये। तब स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु का मन जानकर वृन्दावन में सखियों के साथ श्रीराधा द्वारा गोपेश्वर पूजा के पद बसन्त राग में गान किये। गान श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : गोपेश्वर पूजा :

ब्रज में श्रीश्रीराधा कृष्ण नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नान भोजनादि करके गुप्त कुण्ड तीर पर योगपीठ लीला के अन्त में श्रीकृष्ण सखाओं के साथ होली खेलने के लिए बाहर आये। श्रीराधा भी वृषभानुपुर में आकर गोपेश्वर पूजा के लिए मिष्ठान्नादि प्रस्तुत करके सखियों सहित मुखरा के साथ गोपेश्वर पूजा के लिए वृन्दावन में जाकर गोपेश्वर के निकट ब्रह्म कुण्ड के पुष्पोद्यान में सखियों सहित पुष्प चयन करने लगीं। उसी समय श्रीकृष्ण सखाओं सहित होली लीला गान तथा खेल करते-करते श्रीराधिकादि के निकट के स्थान पर उपस्थित हुए। तब मधुमंगल सखियों के निकट आकर पूछने लगे–''तुम सब किस लिए फूल

Scanned by CamScanner

तोड़ रही हो?'' ललिता बोलीं–"गोपेश्वर पूजा के लिए।'' मधुमंगल बोले-'' तुम सब माधव की पूजा करो।'' ललिता बोलीं–''माधव मधुऋतु वैशाख मास तथा तमाल इन सबकी पूजा कौन करे?'' मधुमंगल–''तब गोवर्धन धारी की पूजा करो।'' ललिता बोलीं–''वह गोपाल, गोचारण करता है, उसकी पूजा कौन करे?'' मधुमंगल बोले–''तब पशुपति की पूजा करो।'' ललिता–''तुम पशुपालक हो, तुम्हारे पति की?'' मधुमंगल बोले–''हाँ! हमारे पति श्रीकृष्ण उनकी पूजा करो।'' ललिता-तुम्हारा कृष्ण पंच पातकी है, उसकी पूजा कौन करे?" उसने अंग में सुवर्ण हरण किया है! मदघूर्णित नेत्रों से खंजन का मदनाश किया है, स्त्री वध किया है, वत्स वृष को मारा है तथा गोपांगनाओं का हरण किया है! यह कहकर पुष्प लेते हुए जाने के लिए उद्यत होने पर सुबल आकर बोले–''जरा देखें तुम्हारी पिटारी में क्या है?'' ललिता–''गोपेश्वर पूजा की पुष्प माला तथा द्रव्यादि है।'' सुबल–''देखूँ तो क्या है?'' यह कहकर पिटारी में हाथ डालने पर मुखरा बोली–''सर्प, सर्प!! यह सुनकर मधुमंगल बोले–''हम कालीय नाग दमन कारी श्रीकृष्ण के सखा हैं, हम सर्प से भय नहीं करते, यह सर्प तुम्हें खाये!''यह सुनकर मुखरा क्रुद्धा होकर चली गई। तब श्रीराधारानी ने सखियों सहित बसन्त ऋतु वन में जाकर पूर्ववत् गान-वाद्य, श्रीकृष्ण के साथ क्रीड़ा, वन भ्रमणादि लीला की। तत्पश्चात् गोपेश्वर स्थान में आकर पूजादि करके अपराह्न में सखियों सहित मुखरा के साथ अपने गृह लौट आई। बाद में होली लीलानुयायी लीलाएँ होंगी।

नवद्वीप : शिव पूजा :

नवद्वीप में महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ गंगातीर पर महादेव स्थान पर बैठकर ब्रजलीला गान श्रवण में आविष्ट हैं। तत्पश्चात् होली लीलानुसार नित्यवत् वन भ्रमणादि लीला करके पुनः गंगातीर पर महादेव स्थान पर आये। महाप्रभु के आदेश से गदाधर पंडित ने विधिवत् महादेव की पूजा की। श्रीवास पंडित तन्त्र धारक हुए। पूजा के अंत में दंडवत् प्रणाम विज्ञप्ति, स्तव पाठादि करके अपराह्न में भक्तगणों साथ गृह आगमन करके नारायण के प्रांगण में होली लीला गान, आबीर, गुलालादि क्षेपन लीला करके नित्य वत् स्नानादि एवं अन्यान्य लीला करते हैं।

फाल्गुनीपूर्णिमा

नवद्वीप : श्रीमन्महाप्रभु का आविर्भावोत्सव :

फाल्गुनी शुक्ला चतुर्दशी के दिन सायंकाल के समय श्री शची माता ने ईशान दास के द्वारा श्रीनित्यानंद प्रभु, श्री अद्वैत प्रभु तथा भक्त वृन्द को निमन्त्रण किया। दूसरे दिन पूर्णिमा तिथि को प्रातः काल में श्री नित्यानंद प्रभु तथा श्रीअद्वैत प्रभु एवं भक्त वृन्द श्रीमन्महाप्रभु के गृह आये। महाप्रभु ने नित्यवत्

Scanned by CamScanner

प्रातः कृत्य, स्नानादि करके भक्त वृन्द के साथ स्वल्पाहार करके श्रीमद्भागवत श्रवण की। तत्पश्चात् श्री नारायण की भोग आरती के अंत में महाप्रभु भक्त गणों की प्रार्थना पर स्नान मंडप में जाकर स्वर्ण चौकी पर बैठे। दासगण ने पहले से ही अभिषेक द्रव्यादि महौषादि जल, पंचगव्य, पंचामृत शत घट जल, सहस्र धारा एवं शंखोदक प्रस्तुत करके रखा हुआ था। श्रीवास पंडित विधिपूर्वक अभिषेक करने लगे। श्रीगदाधर पंडित मंत्र पढ़ने लगे, श्री नित्यानंद प्रभु, श्रीअद्वैत प्रभु भक्तवृन्द के साथ दर्शन, गान तथा वाद्यादि करने लगे। अभिषेक के अंत में महाप्रभु श्रँगार मंडप में जाकर दिव्यासन पर बैठ गये। दासगण ने षोडष श्रृँगार द्वारा वेश-भूषादि की। श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीअद्वैत प्रभु, श्रीगदाधर पंडित, श्रीवासादि भक्तवृन्द सभी ने क्रमपूर्वक पृथक-पृथक रूप से वस्त्रालंकार तथा नाना मणिहार माल्यादि महाप्रभु को पहनाये। स्वरूप गोस्वामी ने भक्तों द्वारा आयोजित आरती सामग्री द्वारा आरती तथा निर्मन्छन किया।

तदोपरान्त श्रीशची माता ने आनंद चित्त से तीनों प्रभु को परम प्रीति पूर्वक भोजनालय में लाकर आसन पर बिठाया। बीच में महाप्रभु, दाहिने श्री नित्यानंद प्रभु तथा बाँये श्रीअद्वैत प्रभु, गदाधर पंडित, जगदानन्द, मुरारी, मुकुंद, भक्त वृन्द, सामने अभिरामादि द्वादश गोपाल तथा प्रांगण में हरिदास ठाकुर आदि बैठ गये। श्रीशचीमाता मालिनी देवी के साथ स्नेह तथा परम आनन्दित मन से नारायण का महाप्रसाद, सद्वर्ण तथा सौरभान्वित चतुर्विध अन्न, शुक्ता, शाकादि, विविध प्रकार के षड्रस का व्यंजन, परमान्न, मिष्ठान इत्यादि परोसने लगीं। श्रीमन्महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ ब्रज के भाव में आविष्ट होकर भोजन कर रहे हैं, उसका गोस्वामी तथा गुरुवर्गगण आंगन में रहकर दर्शन कर रहे हैं। भोजन से परितृप्त होकर कर्पूर वासित जल-पान करके आचमन कर बरामदे में आये। श्रीगुरुदेव के इशारे पर साधक दास तीनों प्रभु की गंध-चूर्ण से हाथ की घृतादि चिकनाई छुड़ाकर जल तथा दंत शोधन के लिए खड़िकादि देकर सेवा करने लगे। प्रभु के प्रसादी ताम्बूल लेकर विश्राम करने पर दासगणों ने चामर व्यजन एवं पाद संवाहनादि किया।

साधक दास ने उसी समय सबका अवशेष एकत्रित करके स्थान पात्रादि संस्कार करके योगपीठ सेवा, फल-मूलादि अनुकल्प अथवा व्रत उपवासादि किया। तत्पश्चात् श्रीमहाप्रभु भक्त वृन्द के साथ वन-भ्रमण के लिए गमन करके बसन्त ऋतुवन में बसन्त लीला आस्वादन करते हैं। इसके बाद सभी लीलायें नित्यवत् हैं।

Scanned by CamScanner

झूलन लीला

(चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपद से लेकर शुक्ला एकादशी तक २६ दिन)

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में चैत्र कृष्ण प्रतिपद के दिन श्रीमन्महाप्रभु ने भक्त वृन्द के साथ नित्यवत् प्रातः कृत्य स्नानादि करके श्रीमद् भागवत श्रवण के अंत में भोजन तथा विश्राम किया। तत्पश्चात् योगपीठ लीला के अंत में पूर्वाह्न काल में भक्तवृन्द के साथ वन-भ्रमण के लिए गमन करके नित्यलीलावत् श्रीवास के पुष्पोद्यान में जाकर माधवी मंडप में बैठ गये। तब स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में श्रीराधा कृष्ण के दोल (झूलन) लीला पद सुमधुर स्वर में गान करने लगे। गान श्रवणकर महाप्रभु भावावेश में गदाधर का हस्त धारण कर दोला (झूला) के ऊपर बैठ गये। भक्त गण आबीर, गुलालादि प्रभु के अंग पर फेंककर झूला को झुलाते हुए अपने-अपने ब्रज भाव में आविष्ट होकर ब्रजलीला गान आस्वादन करने लगे।

ब्रजधाम : झूलन लीला :

ब्रज में वृषभानुपुर में श्रीराधा ने नित्यवत् प्रातःकृत्य, स्नान, वेश-भूषादि करके सखियों के साथ नंदीश्वर जाकर रंधन, भोजन तथा योगपीठ मिलन के अंत में पुनः वृषभानुपुर में आकर कुछ समय तक विश्राम करके देवपूजा के लिए मिष्टान्नादि प्रस्तुत की। उसके बाद वेश-भूषा करके पूर्वाह्न में देव पूजा के छल से सखियों सहित वृन्दावन में जाकर झूलन स्थली उपस्थित हुई। इसी प्रकार से चंद्रावली, श्यामला, विमलादि समस्त यूथेश्वरीगण भी देवपूजा के छल से वृन्दावन में आकर झूलन स्थली पर सबके साथ सम्मिलित हुई। तब वृन्दादेवी सबको झूलन स्थली की शोभा दिखाने लगीं।

इस झूला मंडप के चारों ओर मन्दार, हरिचन्दन, पारिजात तथा सन्तानक एवं चारों कोनों में आम्र, बकुल, चम्पक, कदम्ब नामक अष्ट कल्प वृक्ष विराजित हैं। इन वृक्षों की शाखाओं के ऊपर की ओर उठकर मध्य स्थल में सुन्दर रूप से मिलने से अपूर्व मंडपवत् सुशोभित हो रहा है। इन सब वृक्षों के मूल देश की वेदिका तथा आलबाल (वृक्ष के मूल में जल भरने का स्थान) समूह भिन्न-भिन्न प्रकार की विपरीत वर्ण की मणियों से निर्मित तथा विचित्र सोपानों (सीढ़ियों) से परिशोभित हैं। प्रत्येक वृक्ष के कांड, शाखा-प्रशाखा, पत्ते, कोरक (कली), पुष्प फलादि भी विभिन्न वर्णों की मणियों द्वारा निर्मित हैं। आम्र वृक्ष पर माधवी, बकुल पर लवंग, चम्पक पर मल्लिका, कदम्ब पर यूथिका एवं अन्यान्य कल्पवृक्षों पर यथाक्रम से जाती, नवमल्लिका, स्वर्ण यूथी तथा मालती लता प्रफुल्लता तथा आरोह्यमाना होकर अपूर्व पुष्प चंद्रातप (चंदवा) के समान शोभा विस्तार कर रही हैं। चारों ओर स्थित इन वृक्षों की शाखायें ऊर्ध्व

Scanned by CamScanner

देश के मध्य भाग में सम्मिलन संधि स्थान में विचित्र पटट् रज्जु द्वारा सहस्र दल पद्माकृति मणिमय झूला चारों कोनों से बाँधकर नाभि की ऊँचाई तक झूल रहा है।यह हिंदोला (झूला) पद्म कर्णिका पर तथा दलादि पर बैठने के लिए विचित्र आसन, सुकोमल गद्दी एवं पार्श्व तथा पृष्ठ उपाधान सहित शोभित हो रहा है। पुनः इसी हिंदोला मंडप के चारों ओर विभिन्न कल्पवृक्ष श्रेणियों के दो-दो वृक्ष के मध्य एक-एक रत्न हिंदोला विचित्र पट्ट रज्जु से बंधा होकर दोलायमान हो रहा है।

इस प्रकार की शोभा देखकर सभी आनन्द के साथ होली लीलानुरूप वेश-भूषा से सज्जित हुई। उधर श्रीकृष्ण भी गोवर्धन में सखागण को बलराम के निकट समर्पण करके गोधन रक्षण में नियुक्त कर सुबल, मधुमंगल के साथ वन शोभा दर्शन के छल से वृन्दावन में झूलन स्थली पर श्रीराधिका सखियों से मिले। तब सब सखीगण मिलकर परमानन्द में वीणादि, नाना वाद्य के साथ नृत्य गीतादि करने लगीं। शुक, पिकादि पक्षी गण भी अपने-अपने सुमधुर स्वर में आलाप करने लगे। मयूर पुच्छ फैलाकर "के-का" शब्द के साथ नृत्य करने लगे। सभी भ्रमर गुँजन नाद एवं मृगादि आनन्द से कूदते हुए घूमने लगे। श्रीकृष्ण अपने वाम बाहु को श्रीराधा के कंधे पर दाहिना बाहु ललिता के कंधे पर रखकर बायें हाथ में मुरली तथा दाहिने हाथ में लीला कमल धारण करके सखियों से आवृत होकर झूलन लीला गान वाद्य करते हुए मृदु-मृदु गति से चल रहे हैं। यह देखकर अन्यान्य यूथेश्वरियों के पथ छोड़ने पर श्रीराधा कृष्ण ललितादि सखियों के साथ सहस्र दल पद्माकृति झूले पर आरोहण करके सखीगण द्वारा आवृत होकर बैठ गये। कर्णिका में राधाकृष्ण तथा दल समूह अन्यान्य सखीगण क्रम पूर्वक बैठ गई। उनके चारों ओर झूलों पर अन्यान्य यूथेश्वरीगण अपनी-अपनी सखियों के साथ बैठ गई। पूर्व में चंद्रावली आदि, दक्षिण में भद्रादि पश्चिम में धन्यादि तथा उत्तर में श्यामलादि बैठ गई। देव-देवीगण शून्य मार्ग में विमान से दर्शन करने लगे। वृन्दादेवी ने पहले ही श्री राधाकृष्ण तथा सभी यूथेश्वरियों के रंग खेल समृद्धि के लिए विचित्र वर्ण की प्रचुर रंगधूली कपड़े की झोलियों में, केशरादि का सुगंधी चूर्ण-समूह लाक्षा निर्मित कूपिका समूह में तथा विचित्र वर्ण के पुष्प गेंदादि कल्प वृक्ष से लाकर रखे हुए थे।

तत्पश्चात् यूथेश्वरी गण ने चारों ओर से परस्पर रंग खेलना आरम्भ किया। कभी-कभी वे सुगंधी रंगधूली पूर्ण लाक्षा कूपिकाओं को श्रीराधा कृष्ण के झूले के ऊपर भी फेंकने लगीं। ललितादि सखीगण चारों ओर से उसका निवारण करने लगीं। श्रीराधाकृष्ण के अंग पर किसी भी तरह से न पड़ते देखकर चारों ओर से सभी यूथेश्वरी एवं उनकी सखियाँ एक ही साथ नाना वर्णो की रंगधूली लाक्षा कूपिका तथा पुष्प गेंदादि फेंकने लगीं। ललितादि सखियों द्वारा राधाकृष्ण के चारों ओर से आवरण के रूप में रहकर इन सबको निवारण करते रहने पर कूपिका तथा गेंदादि द्वारा सबके अंग आच्छादित तथा रंगधूली से आच्छन्न होकर दिक् मंडल अंधकारमय हो गया। तब देवतागण विमान से पुष्प वर्षा करने लगे। कुछ समय बाद जब

Scanned by CamScanner

रंगधूली का अंधकार दूर हुआ, तब ललितादि सखीगण झूले से उतरकर श्रीराधाकृष्ण को झुलाने लगीं। झूलन के वेग से श्रीराधाकृष्ण की गले की माला दोलायमान होकर सौरभ प्रसारित होने से भ्रमरगण आकृष्ट होकर उन पर बैठने की चेष्टा करके झूलन के साथ भ्रमण करने लगे। इस प्रकार कुछ समय तक झूलन लीला होने के बाद श्रीकृष्ण प्रियाजी के अभिमत से ललितादि अष्ट सखियों को क्रम-पूर्वक एक-एक करके अपने दाहिने बगल में बिठाकर कंधे पर हस्तार्पण करके कुछ समय तक झूलते रहे। बाद में श्रीराधा नीचे उतरकर ललितादि सखियों को क्रमपूर्वक दो-दो करके श्रीकृष्ण की दोनों बगलों में बिठाकर झुलाने लगीं। बाद में श्रीकृष्ण नीचे उतारकर श्रीराधा तथा सखियों को झुलाने लगे। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण श्रीराधा के साथ कर्णिका पर बैठकर तथा बहुमूर्ति धारण करके चारों ओर के दलों में सखियों के निकट बैठकर झूलने लगे। इस प्रकार से बहुमूर्ति से चारों ओर स्थित झूलों पर सभी यूथेश्वरियों के साथ पृथक-पृथक रूप से झूलने लगे। बाद में झूलन लीला समापन करके श्रीकृष्ण एक मूर्ति होकर श्रीराधा तथा सखियों के साथ मंडप में जा बैठे। परिचारिका गण ने व्यजनादि द्वारा युगल का श्रम दूर करके वेश सम्पादन किया। तत्पश्चात् सभी ने वृन्दा द्वारा दिये गये फल मूल, मिष्टान्नादि का भोजन करके किंचित विश्राम किया। तदोपरान्त श्रीकृष्ण ने सुबल, मधुमंगल के साथ राधाकुण्ड गमन किया। श्रीराधा भी सखियों सहित पुष्प चयन के छल से वन भ्रमण करते-करते राधाकुण्ड गई। इसके बाद नित्यवत् लीलादि करके सूर्य पूजा के अंत में अपराह्न काल में गृह को गमन किया। बाद की लीलाएँ नित्यवत् हैं। इस प्रकार झूलन लीला चैत्र कृष्ण प्रतिपद से चैत्र शुक्ला एकादशी तक छब्बीस दिन होती है।

नवद्वीप : भाव शांति :

महाप्रभु सपरिकर ब्रजभाव में झूलन लीला में आविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी ने ब्रज में राधाकृष्ण के झूलन लीला के समापन के अंत में वृन्दा द्वारा प्रदत्त सेवा ग्रहणादि पद गान समाप्त किये। पद श्रवण कर महाप्रभु हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। भक्त गण ने भी बाह्य दशा लाभ की। महाप्रभु गदाधर के साथ झूले से उतरकर वेदी पर बैठ गये। दासगण व्यजनादि सेवा करने लगे। श्रीवास पंडित ने पानकादि एवं फल-मूलादि प्रसाद लाकर तीनों प्रभु एवं भक्त वृन्द को सेवन कराकर माल्य चन्दनादि द्वारा सबको भूषित किया। सेवक वृन्द को अवशेष प्राप्त हुआ। इसके बाद वन भ्रमण आदि लीलाएँ नित्यवत् हैं।

झूलन लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner

यूथेश्वरी मिलन

(वर्ष में तेरह दिन)

यथा- बसन्त पंचमी से पूर्णिमा तक दस दिन।

चैत्र कृष्णा प्रतिपदा- एक दिन।

चैत्र शुक्ला एकादशी- एक दिन।

चैत्र पूर्णिमा-एक दिन।

बसन्त के दो महीने श्रीराधा कृष्ण सखियों के साथ गोवर्धन के सान्निध्य में "परासौली" में रास करते हैं।

श्री राम नवमी

नवद्वीप : श्रीश्रीरामचन्द्र का जन्मोत्सव :

चैत्र शुक्ला नवमी के दिन श्रीमन्महाप्रभु नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नान, भागवत श्रवणादि करके भक्त वृन्द के साथ मुरारी गुप्त के भवन में पधारे। श्रीमुरारी गुप्त ने पहले ही सपरिकर महाप्रभु को निमंत्रित किया था। पुजारी ने श्री रघुनाथ जीऊ का अभिषेक आरम्भ किया। महाप्रभु ने भक्त वृन्द के साथ कीर्तन करते-करते अभिषेक दर्शन किया। तत्पश्चात् भोगराग कीर्तनादि के अंत में फल-मूलादि अनुकल्प ग्रहण करके सबने विश्राम किया। तत्पश्चात् योगपीठ लीला के अंत में पूर्वाह्न में वन भ्रमणादि समस्त लीलाएँ नित्यवत् करते हैं।

ब्रज लीला नित्यवत् होती है।

श्रीराधा का जावटालय गमन

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में बैशाख शुक्ला तृतीया के दिन के शेष होने पर महाप्रभु भक्तवृन्द के साथ पुर में स्थित अपनी बैठक में बैठे हुए हैं। तब स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु का मन जानकर बरसाना से सखियों सहित श्रीराधा के जावटालय गमन पद गान किये। गान श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : श्रीराधा का जावट गमन :

बैशाख शुक्ला द्वितीया के दिन के शेष होने पर दुर्मद गोप श्रीराधा तथा श्रीअनंग मंजरी को लाने के लिए जावट से अश्वारोहण करके वृषभानुपुर आये। तृतीया के भोजनोपरान्त दिन के शेष होने पर सखियों

Scanned by CamScanner

सहित श्रीराधा तथा अनंग मंजरी को पालकी में आरोहण कराकर जावट ले गये।

दान लीला

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में बैशाख शुक्ला चतुर्थी के दिन श्रीमन्महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ नित्य लीला क्रम में पूर्वाह्न में श्रीवास के पुष्पोद्यान में गमन करके माधवी मंडप में बैठ गये। तब स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु का मन जानकर ब्रजस्थ गोवर्धन में श्रीराधा कृष्ण के दान लीला पद क्रमपूर्वक सुमधुर स्वर में गान किये। गान श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रज धाम : दानलीला कौतुक :

ब्रज में बैशाख शुक्ला चतुर्थी के दिन प्रातः काल में पौर्णमासी देवी ने घोषणा की—"आज गोवर्धन के गोविन्द कुण्ड के समीप महात्मा वसुदेव ने गर्गाचार्य के बहनोई भागुरी मुनि को प्रतिनिधि बनाकर यज्ञ आरम्भ कराया है। भागुरी मुनि अन्यान्य मुनि के साथ यज्ञ में दीक्षित हुए हैं। मुनिगण ने कहा है कि जो-जो गोप वनिता इस यज्ञ में हवन योग्य नवनीत या ताजा घी का उपहार स्वयं प्रदान करेंगी, उसी दिन ही उनकी अभीष्ट सिद्धि होगी, गोधनादि वृद्धि तथा पति आदि की आयु वृद्धि होगी, एवं वे सब मनोरम श्रेष्ठ आभूषणादि प्राप्त करेंगी। इसीलिए जटिला के आज्ञाक्रम से श्रीराधा ने नित्यवत् प्रातः कृत्यादि करके नन्दालय में रंधनादि समापन के अंत में जावट में लौटकर सूर्य पूजा के लिए मिष्ठान्नादि प्रस्तुत की। माखन पूर्ण स्वर्ण कुम्भ को मस्तक पर लेकर सूर्य कुण्ड तथा राधाकुण्ड से होकर गोवर्धन से गोविन्द कुण्डाभिमुख होकर यात्रा की।

उधर श्रीकृष्ण सखागण को संकर्षण कुण्ड तीर पर बलदेव के साथ गोचारण में छोड़कर कुछ प्रिय नर्म सखाओं के साथ बसन्त कानन शोभा दर्शन करते-करते मानस गंगा तट पर आये। उसी समय वृन्दादेवी आकर श्रीकृष्ण से बोलीं—"हे कृष्ण! ये देखो! श्रीराधा यज्ञ के लिए घृत कुम्भ लेकर इधर ही आ रही हैं। तुम सबकी यदि यज्ञ देखने की इच्छा हो तो जाओ। मैं यहीं इन्तजार करूँगी।"

श्रीकृष्ण मानस गंगा के दांयी बगल में जाकर दानघट रचना करके दानी के वेश में सजकर एवं सुबलादि पात्र-मित्र को लेकर गोपियों का पथरोध करके सखागण से बोले—"तुम सब शीघ्र दानघट की अधिकार सूचक श्रृँग ध्वनि करो।" यह कहकर स्वयं भी वंशी ध्वनि करने लगे।

सखियों सहित श्रीराधा वृन्दा देवी के साथ मिलकर जा रही हैं, इसी समय श्रीकृष्ण की वंशी ध्वनि सुनकर तथा उनका दानी-वेश दर्शन कर धैर्य गांभीर्य खो बैठीं।

Scanned by CamScanner

तब ललिता बोलीं–"सखी! श्री कृष्ण आकर नाना छल करेंगे, चलो हम सब उन्हें अनदेखा करके एक ओर से होकर चली जायें।" यह सुनकर श्रीराधा सखियों के साथ एक ओर से होकर धीरे-धीरे जाने लगीं। श्रीकृष्ण यह देखकर सुबल तथा अर्जुन को बोले–"ये देखो! ब्रजांगनागण हम सब की अवज्ञा करके एक ओर से चली जा रही हैं। तुम सब जाकर रोको।" तब सुबल तथा अर्जुन गोपियों के सामने आकर बोले–"क्या आश्चर्य! हे गर्विता गोघृत बेचने वाली गोपियो! तुम सब किस प्रकार से घाटपति का अनादर करके स्वच्छन्दता पूर्वक चली जा रही हो? शीघ्र ही लौटकर घाटपति का सन्तोष विधान करो।" ब्रजांगनागण सुनकर भी न सुनने की भाँती अपने मन से चली जाने लगीं। तब सुबल आगे दौड़कर बोले–"और आत्म महिमा का विस्तार नहीं करना होगा, शीघ्र ही लौटो।"

ललिता बोलीं–"सुबल क्या कह रहे हो? क्या चाहते हो?" सुबल बोले–"क्या चाहता हूँ–यह बाद में बताऊँगा, पहले घाटपति की अवज्ञा करने के लिए उन्हें भूमि-लग्न मस्तक से प्रणाम करके क्षमा माँगो।" विशाखा बोलीं–"भगवती पौर्णमासी की आज्ञा है कि इस अलौकिक यज्ञ में ताजा घृत संग्रह करने वाली वृत धारिणी हम सबको बाह्मणों के अलावा और किसी को भी प्रणाम नहीं करना चाहिए।" तब अर्जुन बोले–"ये हम सबके महादानीन्द्र वृन्दावन के भूदेव हैं इस समय इन्होंने भी व्रत आरम्भ किया है। अतः व्रत धारिणी गण यदि व्रत धारी को प्रणाम करें तो कोई दोष नहीं होगा।" ललिता बोलीं–"वह व्रत किस प्रकार का है?" श्रीकृष्ण बोले–"नित्य अबलार्बुद द्विज वसनदान।" * ललिता–"इस प्रकार का घाटाधिकारित्व उपयुक्त ही है। जो भी हो समय अधिक हो चला है हम सब को शीघ्र ही यज्ञशाला में जाना होगा।" मधुमंगल बोले–ललिते! तुम सब जब पूर्वाह्न के समय आई हो, तो तुम सबसे शुल्क ग्रहण करना उपयुक्त नहीं है, किन्तु हैयंगबीन (माखन) भार से भंगुर के अंदर तुम सब घाट पर आकर अपनी स्निग्धता सम्पादन करो एवं घाट पति की अवज्ञा जनित दोष निवारणार्थ सम्पत्ति पूर्वक कुछ प्रदान करके सुख पूर्वक प्रस्थान करो।" विशाखा बोलीं–"अहो! गोवर्धन में दान घाटी! यह तो पहले कभी भी नहीं देखी!!" श्रीकृष्ण बोले–"विशाखे! सत्य कह रही हो, क्योंकि अभी भी देखने के बाद भी नहीं देख रही हो।"

तब ललिता सखियों सहित मंत्रणा करके मधुर संभाषण द्वारा बोलीं–"हे गोकुलानंद एक ही ग्राम की निवासी हम सब विशुद्ध स्वभाव वालियों के प्रति प्रतिकूल आचरण करना तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है, अतएव जाने की अनुमति दो।" तब श्रीकृष्ण भी जैसे करुणा में ही भरकर बोले–"हे सुकुमारी! क्या करूँ! उपाय नहीं है, दुरन्त आग्रह शाली महामन्मथ चक्रवर्ती द्वारा मैं इस घोर घाटपति के कर्म में नियुक्त हुआ हूँ। अन्यथा करने की शक्ति नहीं!" ललिता चकिता होकर आश्चर्य के साथ बोलीं–हम सबने कहीं

*अर्थात्- असंख्य युवतियों के ओष्ठाधर खंडन रूपी महाव्रत।

Scanned by CamScanner

भी 'महामन्मथ' नामक चक्रवर्ती का नाम नहीं सुना है!'' मधुमंगल विकट हास्य के साथ बोले—''ही-ही! क्या आश्चर्य! क्या आश्चर्य! इन सबने ''महामन्मथ'' कौन है, यह नहीं सुना है! महाकटक में प्रमद मंजरी नाम से जिनकी राजधानी है, मधुमंगल, सुबल, विजयादि जिनके श्रेष्ठ मंत्री हैं, तथा उत्तमारामावली जिनके विहार स्थान हैं, उन्हें कौन नहीं जानता?'' श्रीकृष्ण बोले—''ललिते तुम नीति जानती हो, अत: अपने घृत कलश को उतारकर शुल्क कार्य निर्धारण करो।'' चित्रा बोलीं—''हे गोकुलानन्द! वास्तविकता श्रवण करो! घाटदान के विषय में एक कौड़ी भी दान करने से यज्ञ का घृत अशुद्ध हो जायेगा, नहीं तो पंच ताम्रिका (बीस कौड़ी) दान के लिए हम सब दुखी नहीं हैं।'' ललिता—''सखी राधे! तुम घृत के महाभार से श्रांति युक्ता हो रही हो अतएव इस स्थान पर एक दंड के लिए विश्राम करने के लिए घटिका को उतार दो।'' यह बात सुनकर सबने घड़े उतार दिये।

श्रीकृष्ण बोले सखे सुबल! तुम्हारी यह ललितादि सुहज्जनगण आज इस दान घाटी की प्रथम अतिथि हैं, अतएव इन सबको अपूर्व माधुर्यशाली तांबूल वीटिका प्रदान करो।'' सुबल रत्नों के तांबूलाधार को खोलकर उनके सामने रखते हुए बोले—"तुम सब यह अपूर्व तांबूल ग्रहण करो।" विशाखा बोलीं—'सुबल! ये सब कह रही हैं कि हम सब व्रत धारिणी हैं, अतएव तांबूल की आवश्यकता नहीं हैं।'' ललिता—सुबल! विशाखा कह रही है कि सब घटपाल 'ठग वटिका' अर्थात् मोहनकारी औषधि का प्रयोग करते हैं, इसीलिए इनके तांबूल का कोई प्रयोजन नहीं है।'' श्रीकृष्ण मुख भंगी करते हुए चर्बित तांबूल दिखाकर बोले—''राधे! यह तांबूल द्विज द्वारा संस्कृत है, इसके आस्वादन में शंका न करो, स्वच्छन्द रूप से ग्रहण करो।'' ललिता—''लाखों कामुकी के उपयोग द्वारा सुपवित्र मुखबिम्ब का उद्गार यदि ग्रहण नहीं करेगी, तब मेरी सखी अपनी आत्मा को किस प्रकार से पवित्र करेगी? सुबल—''ललिते! हम सब अयोग्य पात्र को आदर कर रहे हैं, जो हो इस समय इस दान का अनुमोदन करो।'' चम्पकलता—''तुम सब क्या ब्राह्मण हो, जो हम सब तुम लोगों को दान देने का अनुमोदन करेंगी?'' मधुमंगल—''ओ चम्पकलते! ठीक ही बोल रही हो। मैं कुलीन ब्राह्मण हूँ। मुझे उदर पूर्ण करने लायक शक्कर सहित माखन प्रदान करो।'' विशाखा—''सखी चम्पकलते—ये सब उदरम्भरि (पेटू) हैं। घाट के छल से भिक्षा कर रहे हैं। अतएव इन सबको बीस कपद्रक (एक काकिनी) प्रदान करो, उसके द्वारा ये सब जहाँ-तहाँ चना खरीदकर चर्बन करते-करते गोचारण करते रहें।'' श्रीकृष्ण ''सखे! औदरिक महादानी हम लोगों के बीच में तुम ही महापात्र हो क्योंकि आज माखन द्वारा उदर पूर्ति के विषय में भी तुम्हारी दरिद्रता प्रकश हुई है।''

श्रीराधा—''हे ललिते! ये सब महादानी अपनी प्रशंसा कर रहे हैं। अतएव स्पष्ट ही समझ में आ गया कि परम उत्तम वर्णशालिनी तुम सबके सम्बन्ध में ये सब सर्वोत्कृष्ट पदार्थ दान करेंगे।'' श्रीकृष्ण थोड़ा हँसकर बोले—''हे वर वर्णिनी (उत्तमा स्त्री)! सत्य ही बोले रही हो, इसीलिए इस महावैभव को प्रदान करूँगा।'' यह बात कहकर आलिंगन की मुद्रा का अभिनय करते हुए सुबल को आलिंगन किया।

Scanned by CamScanner

श्रीराधा रोमांच के साथ क्रोधाभिनय पूर्वक भ्रू-कुटिल तथा तिरस्कार करके बोलीं—"ललिते! हम जैसी पतिव्रता गण को तुम्हारे निकुँजराज का लाम्पट्य दृष्टिगोचर हुआ है, जो हो तुम अनर्थ कारिणी हो, यहाँ हम सबको बलपूर्वक लाकर धूर्त घाटपाल के हाथ में दे दिया है।" ललिता—"कृष्ण! तुम गोकुल में विख्यात गुणशाली युवराज हो, इसीलिए हम सब मौन हैं। अब तुम यदि मर्यादा उल्लंघन में प्रवृत होओगे, तब हम सब भी क्यों अपने कार्य साधन की उपेक्षा करेंगी?" अर्जुन—"तुम सबका वह क्या कार्य है कि जिसकी उपेक्षा नहीं करोगी।" ललिता-गोपगण से अपने वृन्दावन का संरक्षण इसके अलावा और क्या कार्य है?" अर्जुन अवहेलना के साथ हास्य करते-करते हुँकार करके मस्तक घुमाने लगे।

तब विशाखा थोड़ा हास्य पूर्वक कहने लगीं-"ललिते! गोकुल युवती कुल चक्रवर्तिनी प्रिय सखी आज्ञा कर रही है कि ये सब गर्वित गोप हैं, लतापुँज-भंजन दक्ष लाखों गायों को चराते-चराते फल द्वारा उदर भरण एवं पुष्प पल्लव द्वारा परस्पर वेश रचना करके बहुत काल तक वृन्दावन की श्री विध्वंस कर रहे हैं अतएव दृढ़ता पूर्वक कहो—कि ये सब यहाँ से चले जायें अथवा कर प्रदान करें।" श्रीकृष्ण बोले—"इस बात की विवेचना बाद में की जायेगी। अभी शुल्क की बात सुनो।" तब नान्दी मुखी बोलीं—"हे नागरेन्द्र! तुम्हारे प्राप्य दान के बदले इन सबको यज्ञ भूमि में जाने दो।" श्रीकृष्ण—"अच्छा! आपके आदेश के अनुसार मैं अनुकूल भाव से ही इन सबको कह रहा हूँ, इनके बीच में जो प्रधाना है उसे छोड़कर अन्य सभी यज्ञ भूमि में गमन करें।" यह कहकर श्रीराधा के सामने जाकर पथ रोध करके खड़े हो गये। तब श्रीराधा का किलकिंचिताख्य भावालंकार से शोभित मुख दर्शन करके श्री कृष्ण ने संगम से भी अधिक सुख प्राप्त किया। यह देखकर वृन्दा देवी हास्य मुख से बोलीं—"हे निकुँज युवराज! श्रीराधा मणि भूषण समूह को गोपन कर रही हैं, अतएव भूमि-भूषण-भूषिता ललिता को रखने से तुम्हारे शुल्क कार्य की प्राप्ति होगी।" श्रीकृष्ण बोले—मुग्धे! देखो जो पके हुए अनार बीज के समान माणिक्य दशना, जिनके अधरोष्ठ पद्मराग मणि तुल्य, नासिका में मुक्ता फल, चन्द्रकान्त मणि के समान मुख बिम्ब पर मधुर हास्य, केश कलाप इन्द्र नील मणि तुल्य दीप्तिशाली एवं जो समस्त तरुणी रत्नों में प्रधाना हैं, उस राधा का परित्याग करना उचित नहीं हैं।" इसी समय पौर्णमासी देवी वहाँ आकर के श्रीकृष्ण से बोलीं—"हे नागर! तुम जिनके लिए महती इच्छा कर रहे हो, वे ही नागरी शिरोमणि निश्चय ही अतिदुर्लभा तथा अमूल्या हैं यह जान लो। श्रीकृष्ण प्रणाम करके बोले—"भगवती! केवल शुल्क वित्त प्राप्ति के लिए इस प्रकार से आग्रह कर रहा हूँ, पाँच कौड़ी के समान मूल्य शालिनी आपकी गोपियों के लिए नहीं।" श्रीराधा—"भगवती! आपके आगमन से हम स्वयं को इस विपत्ति रूपी समुद्र से पार हुई देख पा रही हैं।" यह कहकर चरणों में प्रणाम किया। तब पौर्णमासी देवी राइ को आलिंगन करके श्रीकृष्ण के हाथ अर्पण करते हुए बोलीं—"चन्द्रमुख! इस रमणी रत्न को तुम्हें शुल्क के रूप में प्रदान करती हूँ।" श्री कृष्ण बोले—"भगवती! आपके अनुग्रह से मैं भी अपना शुल्क पा गया हूँ। तत्पश्चात् ललितादि सखीगण ने पौर्णमासी के बल से बलबती होकर राधाकृष्ण

Scanned by CamScanner

को निर्जन केलि कुँज में प्रवेश कराया। कुछ समय के बाद विलास के अंत में दोनों के दिव्य वेश-भूषा से सज्जित होकर आने पर पौर्णमासी देवी बोलीं—"हे वैदग्धी चंद्रिका चंद्र! अब आज्ञा करो, ये सब यज्ञ भूमि में गमन करें, सायंकाल में तुम्हारा अभीष्ट शुल्क प्रदान करेंगी, इसकी साक्षी स्वरूप मैं हुई।" श्रीकृष्ण (सलज्ज भाव से)—"जो आज्ञा" कहकर पौर्णमासी देवी के साथ सभी यज्ञ स्थल में जाकर ताजा माखन का उपहार प्रदान करके याज्ञिक मुनिगण को विनय के साथ दंडवत् प्रणाम करती हैं एवं उनसे मनोरम श्रेष्ठ-श्रेष्ठ आभूषणादि प्राप्त करती हैं। इसके बाद वे सब मानस गंगा तट से होकर श्रीराधा कुण्ड में आकर नित्यवत् लीलायें करते हैं।

नवद्वीप : भाव शांति :

नवद्वीप में महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ श्रीवास के षड्ऋतु पुष्पोद्यान में माधवी मंडप में बैठकर दानलीला श्रवण से आविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी के दान लीला गान समाप्त करने पर सभी बाह्य दशा को प्राप्त हुए। दासगण तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को चन्दन-माल्यादि द्वारा भूषित करके व्यजनादि नाना सेवा करते हैं। बाद की लीलायें नित्यवत् हैं।

इति संक्षिप्त दानलीला समाप्त।

श्री नृसिंह चतुर्दशी

नवद्वीप : श्री नृसिंहाभिषेक :

नवद्वीप में वैशाखी शुक्ला चतुर्दशी के दिन प्रातः काल में श्रीनृसिंहानन्द ने तीनों प्रभु तथा भक्त वृन्द को अपने गृह में आने का निमन्त्रण किया। महाप्रभु प्रातः कृत्य, स्नान, भागवत श्रवणादि करके भक्त वृन्द के साथ नृसिंहानन्द के घर आये। वहाँ ठाकुर की भोग आरती दर्शन, कीर्तनादि के अन्त में योगपीठ मिलन लीला करके पूर्वाह्न में नित्यवत् वन भ्रमणादि लीला करके अपराह्न काल में नृसिंहानन्द के गृह में पुनः आगमन किया। वहाँ संध्या में श्रीनृसिंह देव का अभिषेक तथा आरती दर्शन एवं संकीर्तनादि करके सभी अपने-अपने गृह चले गये। जाते समय श्रीनृसिंहानन्द श्रीमहाप्रभु का पादपद्म धारण करके बोले—"आगामी कल प्रातः काल में परिकर सहित आकर श्रीनृसिंह देव का महाप्रसाद दर्शनादि करके इस दास पर अनुग्रह करने की प्रार्थना करता हूँ। अन्य लीलाएँ नित्यवत्।

श्रीराधा का पित्रालय गमन

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में अषाढ़ के शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन का अवसान होने पर महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ बैठे हुए हैं। तब स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में जावट से सखियों सहित श्रीराधा

Scanned by CamScanner

के बरसाना में पिता के गृह में गमन के पद गान किये। गान श्रवण कर सभी भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : श्रीराधा का बरसाना आगमन :

अषाढ़ के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन का अवसान होने पर श्रीदाम चन्द्र ने श्रीराधा तथा श्रीअनंग मंजरी को लेने के लिए अश्वारोहण करके पालकी आदि के साथ जावट में अभिमन्यु गोप के घर आगमन किया। दूसरे दिन द्वितीया को भोजन के अंत में दिन के अवसान होने पर सखियों सहित श्रीराधा तथा अनंग मंजरी को लेकर बरसाना गमन किया। गृह आकर सभी ने अपने-अपने माता-पिता के चरणों में दंडवत् प्रणाम किया। उन्होंने उन सबको गोद में लेकर लालन शिराघ्राण (माघी शुक्ला तृतीया के समान) तथा आशीर्वाद आदि दिये।

नौका विहार लीला

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में अषाढ़ी शुक्ला तृतीया के दिन महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ नित्य लीला क्रम से मध्याह्न में श्रीवास के पुष्पोद्यान में माधवी मंडप में बैठे हुए हैं। स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु का भाव जानकर ब्रज के गोवर्धन में मानस गंगा पर श्रीराधा-कृष्ण के नौका-विहार लीला पद मधुर स्वर में गान किये। गान श्रवण कर सभी अपने-अपने ब्रज भाव में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम : नौका-विलास :

ब्रज में अषाढ़ी शुक्ला तृतीया के दिन श्रीश्रीराधा-कृष्ण सखियों सहित नित्य लीला क्रम से मध्याह्न में श्रीराधाकृण्ड पर श्रीराधांग वर्णन के बाद वंशी प्राप्ति, योगपीठ लीलादि करते हैं। तत्पश्चात् वृन्दा देवी बोलीं—"हे राधे! हे कृष्ण! हे सखीगण! आप सब गोवर्धन में चलकर वनशोभा दर्शन तथा अशोक वाटिका में लीलादि करें।" तब श्रीराधा कृष्ण सखियों के साथ वनशोभा दर्शन करते-करते गोवर्धन में मानस गंगा के उत्तर घाट पर उपस्थित हुए। इसी घाट में एक सुन्दर नौका देखकर श्रीकृष्ण आगे जाकर नौका पर चढ़कर पतवार पकड़कर खड़े हो गये। यह देखकर कौतुक वशत: श्रीराधा भी सखियों के साथ नौका पर चढ़कर पतवार चलाने लगीं। क्रमश: नौका गंगा के मध्य में आ गयी। इसी समय आकाश में मेघाच्छन्न होकर प्रबल-झड़ के साथ रह-रहकर विद्युत चमकने लगी, मेघ गर्जन तथा वृष्टिपात होते-होते चारों ओर अधंकार हो गया। तब श्रीराधिका तथा सखीगण अत्यंत भयभीत होकर श्रीकृष्ण से नौका को तट पर लगाने का अनुरोध करने लगीं। प्रबल झंझावात तथा वृष्टिपात से गोपांगनाओं की केश कबरी बिखर गई तथा गीले वस्त्र अंगों से लिप्त होकर अदृश्य होने से मनोमुग्ध कर अपूर्व अंग श्री धारण कर रहे हैं। श्रीकृष्ण सानंदित मन से दर्शन करने लगे। इधर मानस गंगा के भीषण तरंगाकुल होने से तरंग उछलकर

Scanned by CamScanner

नौका में प्रवेश करने लगीं। सखीगण अत्यधिक भय-विह्वला होकर नौका को तीर पर लगाने के लिए श्रीकृष्ण से बारंबार आर्त वाणी से अनुरोध करने लगीं। कौतुकी कृष्ण कपट भाव से बोले–"चेष्टा तो कर रहा हूँ, परन्तु किस दिशा में तथा कहाँ लगाऊँ, कुछ भी नहीं देख पा रहा हूँ।" सखीगण अनन्योपाय होकर नौका का जल निकालने लगीं। तरंग के आन्दोलित होने से जब नौका अतिशय आन्दोलित होने लगी, तब श्रीराधा ने भयभीत होकर श्रीकृष्ण का कंठ जकड़ लिया। श्रीकृष्ण ने भी चरण से पतवार को दबाकर दोनों बाहुओं द्वारा श्रीराइ का दृढ़ आलिंगन किया। तब नौका घूमते-घूमते पुलिन पर जा लगी। श्रीकृष्ण श्रीराइ को वक्ष में लेकर पुलिन स्थित अशोकानंदद कुँज मंडप में प्रवेश करके केलि विलास सागर में मग्न हुए। तब झड़ वृष्टि भी रुक गई। विलास के अंत में सखीगण आकर कुँज छिद्र में नयन अर्पण करके श्रीराधा कृष्ण की रूप माधुरी दर्शनानन्द में मग्न हुई। श्रीराधा-कृष्ण विलास के अंत में वेश-भूषादि करके सखियों से मिले। तदोपरान्त वृन्दा द्वारा दिये गये फल-मूल, मिष्ठान्नादि सेवन करके राधाकुण्ड में आकर नित्य लीलावत् सभी लीलायें कीं।

नवद्वीप : भावशांति :

नवद्वीप में महाप्रभु श्रीवास पुष्पोद्यान में भक्त वृन्द के साथ स्वरूप के गान में आविष्ट हैं। श्रीराधा-कृष्ण के कुँज विलास के अंत का पद श्रवण करके महाप्रभु ने आनन्दावेश में हुँकार की। उसे श्रवण कर भक्तवृन्द भी भाव शांत दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त किये। महाप्रभु ने भाव शांत होने पर नित्य लीलावत् वन भ्रमणादि समस्त लीलायें कीं।

झूलन लीला

(श्रावण शुक्ला तृतीया से पूर्णिमा तक तेरह दिन)

नवद्वीप : झूलन लीलावेश :

नवद्वीप में श्रावणी शुक्ला तृतीया के दिन श्रीमन्महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ लीला क्रम से पूर्वाह्न काल में वन भ्रमण के लिए निकलकर श्रीवास पुष्पोद्यान में झूलन मंडप में जाकर वेदी पर बैठ गये। श्री पंडित ने पहले से ही झूला प्रस्तुत करके सुसज्जित करके रखा था। हिन्दोला (झूला) के शोभा दर्शन से महाप्रभु को ब्रजभाव का उद्दीपन हुआ। स्वरूप गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में श्रीश्रीराधाकृष्ण के झूलन लीला पद मधुर स्वर से गान करने लगे। गान श्रवण कर महाप्रभु भावावेश में श्री गदाधर को बाँये लेकर झूला पर बैठ गये। गदाधर महाप्रभु को तांबूल अर्पण करके व्यजनादि सेवा करने लगे। श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीअद्वैत प्रभु तथा श्रीवासादि भक्त वृन्द, स्वरूप के साथ मल्लार राग में झूलन लीला गान करते-करते

Scanned by CamScanner

ब्रज भावाविष्ट हुए। दासगण भी ब्रजभाव में विभावित होकर झूला झुलाने लगे।

ब्रजधाम : हिन्दोला लीला :

वृषभानुपुर में श्रावणी शुक्ला तृतीया से पूर्णिमा तक श्रीराधा नित्यवत् प्रातः कृत्यादि करके नन्दालय जाकर रंधन-भोजनादि समापन करके योगपीठ मिलन लीला के अंत में वृषभानुपुर में आकर कुछ समय तक विश्राम करती हैं। तत्पश्चात् सूर्य पूजा की मिष्ठान्नादि प्रस्तुत करके वेश-भूषा के अंत में सखियों के साथ झूला झूलने के लिए बरसाना के नैऋत्य कोण में स्थित कदम्ब खंडी को गमन करती हैं। वहाँ वृषभानु महाराज ने पहले ही अति मनोरम रत्नमय झूला प्रस्तुत करके रखा था। उसके आठों ओर स्वर्ण रचित तथा रत्न जड़ित अति उच्च आठ स्तंभ हैं, उन पर स्वर्ण सूत्र से बंधा हुआ अरुण वर्ण का विचित्र चंदवा है। उसके चारों ओर स्वर्ण सूत्र से गूँथी हुई मुक्ता की झालर तथा चारों ओर पत्र पुष्प निर्मित बहिर्द्वार वन्दनमाला से सुशोभित है, उस पर भ्रमर समूह गुँजार कर रहे हैं। मध्य स्थल में दो जोड़ा मणिमय स्तंभ हैं। उन पर अष्टदल पद्माकृति मणिमय झूला जरी से मोड़ी हुई पट्टडोरी से नाभि तक ऊँचा झुलाया हुआ है। इस झूले पर आश्चर्य जनक चित्र-विचित्र सुकोमल गद्दी तकियादि हैं तथा उसके ऊपर विचित्र चंदवा मुक्ता गुच्छों की झालर से युक्त वन्दन माला आदि सुशोभित हो रही हैं। इस झूला मंडप के चारों ओर वृक्ष श्रेणी पर रत्न निर्मित असंख्य झूलों की पंक्ति परम शोभा का विस्तार कर रही हैं। आकाश में मेघ सूर्य किरण को आच्छादन करके मन्द-मन्द गर्जन के साथ अति सूक्ष्म-सूक्ष्म वृष्टि बिन्दु वर्षा रहा है। मयूर गण पंख फैलाकर "के-का" की ध्वनि करते हुए चारों ओर नृत्य कर रहे हैं। कोकिल समूह 'कुहू-कुहू' ध्वनि के साथ गान तथा भ्रमर सुमधुर गुँजन कर रहे हैं। इन सबकी शोभा के दर्शन से राधा परमानंद में सखियों के साथ कदंब मंडप स्थित वेदी पर बैठकर श्रीकृष्ण के लिए उत्कंठित चित्त से उनके आगमन पथ पर दृष्टि डाले हुई हैं।

उधर श्रीकृष्ण सखा तथा धेनुगण को बलदेव के हाथ समर्पण करके कानन शोभा दर्शन के छल से (पूर्व संकेतानुसार) बर्षाना कदंब खण्डी झूलन स्थली पर आते हैं। दूर से ही श्रीकृष्ण की नूपुर ध्वनि सुनकर श्रीराधा कुँज के बीच में छिप गई। तब श्रीकृष्ण ने आकर राइ को न देखकर सखियों से प्रश्न किया—"तुम्हारी सखी श्रीराधा कहाँ हैं?" सखियाँ बोलीं—"हम नहीं जानतीं।" इससे श्रीकृष्ण के अत्यंत उत्कंठित होने पर वृन्दा देवी ने इंगित से कुँज को सूचित कर दिया। तब श्रीकृष्ण कुँज के मध्य में प्रवेश करके श्रीराधा के साथ विविध विलासादि कर दोनों वेश-भूषा से सज्जित होकर बाहर वेदी पर बैठ गये। तत्पश्चात् सभी ने क्रमपूर्वक मिष्ठान्नादि सेवन करके तांबूल सेवन किया। तब श्रीकृष्ण श्रीराधा का हाथ धारण कर झूला पर चढ़कर श्रीराइ को वाम भाग में लेकर कर्णिका पर बैठ गये। चारों ओर अष्ट दल में अष्ट सखी बैठ गईं। तब वृन्दा देवी ने पुष्प आरती की। झूला को दोनों ओर से दो सखियाँ झुलाने लगीं।

Scanned by CamScanner

अन्यान्य सखीगण नाना वाद्य-यंत्र बजाते हुए मल्लार राग में झूलन-लीला गान करने लगीं। भ्रमरगण राधा-कृष्ण के मुख सौरभ से आकृष्ट होकर झूलन के साथ-साथ भ्रमण करने लगे। इस प्रकार से कुछ समय तक झूलने के बाद राइ ने नीचे उतरकर दो-दो सखियों को श्रीकृष्ण के दोनों बगल में बिठाकर क्रम से सभी सखियों को झुलाया। तत्पश्चात् सभी नीचे उतरकर चारों ओर स्थित श्रेणीबद्ध झूलों पर सभी चढ़ गई। श्रीकृष्ण बहु मूर्ति धारण कर पृथक-पृथक रूप से सभी सखियों के साथ झूलने लगे। उनके मध्य में किसी एक श्रेणी के झूला पर श्रीकृष्ण राइ को लेकर अति वेग से झूलने लगे। झूलन के वेग से श्रीराधा के अंग के वस्त्र उड़ने लगे तथा आभूषणादि बजने लगे। श्रीराधा गिरने के भय से भीता होकर श्रीकृष्ण का कंठ पकड़ कर चक्षु बंद करके रहीं। यह देखकर झूला का वेग मन्द करने के लिए श्रीराधा की कोई किंकरी झूला की पाटी धारण कर नीचे झूलने लगी। तब श्रीकृष्ण दोला का वेग शान्त करके नीचे उतरकर सखियों सहित कदंब मंडप की वेदी पर बैठ गये। किंकरी गण तांबूल, व्यजनादि विविध सेवा करने लगीं। वृन्दादेवी ने पानक, फल-मूल मिष्ठान्नादि लाकर श्रीराधा-कृष्ण तथा सखी वृन्द को सेवन कराकर तांबूलादि प्रदान किया।

तब मुखरा को वहाँ आते देखकर वृन्दादेवी ने श्रीराधा को राधाकुण्ड में मिलन संकेत बताकर श्रीकृष्ण के साथ प्रस्थान किया। मुखरा आकर बोलीं—"क्या आश्चर्य! अब तक तुम सब यहीं बैठी हुई हो? बेला अधिक हो गई है। शीघ्र ही सूर्यकुण्ड में जाकर पुष्पादि चयन करके सूर्य पूजा करके आओ।" यह सुनकर श्रीराधा ने सखियों के साथ पूजोपकरणादि लेकर सूर्य कुण्ड को गमन किया। तत्पश्चात् श्रीराधाकुण्ड में मिलनादि लीला नित्यवत् है। (झूलन के समय में रात्रि अभिसार के प्रथम मिलन के अंत में झूलन लीला होकर बाद में रास लीला होती है)

नवद्वीप : भावशांति :

नवद्वीप में महाप्रभु श्रीवास पुष्पोद्यान में झूला पर बैठकर झूलन-लीला के गान में आविष्ट हैं। गान के अंत में महाप्रभु हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त होकर गदाधर के साथ झूला से उतरकर वेदी पर बैठ गये। दासगण ने व्यजनादि करके महाप्रभु का श्रम दूर किया। तत्पश्चात् वनभ्रमणादि अन्यान्य लीला नित्यवत् हैं। श्रावणी-शुक्ला एकादशी को ललिता सखी की जन्म तिथि के अवसर पर रात्रि में राधाकुण्ड स्थित उनके कुँज में रासादि लीला तथा शयन लीला होती है।

इति झूलन लीला समाप्त।

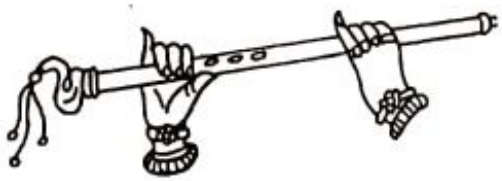

Scanned by CamScanner

रक्षा बन्धन लीला

(श्रावणी पूर्णिमा)

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में श्रावणी पूर्णिमा के दिन श्रीमन्महाप्रभु नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नान, वेश भूषा के अंत में भक्त वृन्द के साथ बैठक में बैठे हुए हैं। स्वरूप गोस्वामी ने भी महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में श्रीराधा-कृष्ण के रक्षा बन्धन लीला पद का कीर्तन किया। गान श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम : रक्षा बन्धन :

ब्रजस्थ बरसाना में श्रीराधा नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषादि करती हैं। तब गर्ग कन्या ने आकर श्रीराधा के बाँये हाथ की कलाई में राखी बाँधी एवं अन्यान्य सखियों को भी हाथ में राखी बाँधी। श्रीराधा ने उन्हें वस्त्रालंकारादि देकर मिष्ठान्नादि भोजन कराकर पूजा की। तब नन्दालय से आयी हुई हिरण्यांगी सखी के मुख से सुना कि—"भागुरी ऋषि ने श्रीकृष्ण के हाथ में राखी बाँधी है।" तत्पश्चात् सखियों सहित श्रीराधा ने स्वल्पाहार करके नित्यवत् नन्दालय में रंधन के लिए प्रस्थान किया। वहाँ भागुरी ऋषि की पत्नि ने श्रीराधा के हाथ में राखी बाँधी। श्री राधा दण्डवत् प्रणाम करके उनका मन जानकर बोलीं—"आप अनुग्रह पूर्वक मेरे पित्रालय में दर्शन देने की कृपा करें।" तत्पश्चात् रंधनादि लीला नित्यवत् है।

श्रीश्रीकृष्ण जन्माष्टमी प्रसंग

ब्रज में शुभ भाद्र मास में कृष्ण प्रतिपदा के दिन श्रीनन्द भवन में मंगल सूचक वाद्य प्रारम्भ हुए। षष्ठी तक पुर शोभा की रचना समाप्त हुई। प्रांगणादि में विचित्र चंदवा, रत्नमय वन्दन माला, प्रत्येक द्वार के दोनों बगल केले का वृक्षारोपण तथा पूर्ण घट पर आम्र पल्लव एवं स्थान-स्थान में पताकायें फहरा रही हैं। नगर की समस्त प्रजा के घर तथा हाट बाजार में भी इसी प्रकार की शोभा का विस्तार हुआ। राजपथ तथा उपपथ सभी सम्मार्जित तथा सुगंधी जल से सिंचित हुए। आगन्तुक लोग समझ नहीं पाते हैं कि कौन से घर में महोत्सव है।

षष्ठी के दिन सन्ध्या काल में श्रीनन्द महाराज ने श्री सुभद्र द्वारा पुरुषों को तथा धात्री कन्या धनिष्ठा द्वारा स्त्रियों को निमन्त्रण भिजवाये। सबसे पहले श्री सुभद्र जी वृषभानु पुर में जाकर श्रीवृषभानु महाराज से बोले—"परसों के दिन श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव होगा, इसी उपलक्ष्य में श्री नन्द महाराज ने आपको निमंत्रण किया है एवं उन्होंने कहा है कि—यह घर आपका ही है, आप आकर के इस उत्सव का

Scanned by CamScanner

सब भार ग्रहण करें, मैं कुछ नहीं जानता।' आगामी कल प्रात: काल में आप परिवार सहित नंदीश्वर में आकर सबका समाधान करें।'' इसी प्रकार धात्री कन्या धनिष्ठाने भी श्रीकीर्तिदा माता को श्री यशोदा माता का निमंत्रण दिया। जावट में एवं अन्यान्य सभी बन्धु-बान्धवों को इसी प्रकार से निमंत्रण ज्ञापन किया गया। (सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तीन दिन श्रीकृष्ण का गोचारण बन्द रहता है तथा श्रीराधिकादि की नन्दालय में ही स्थिति रहती है।)

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में भाद्र कृष्ण सप्तमी के दिन महाप्रभु नित्यवत् प्रात: कृत्यादि करने के बाद भक्त वृन्द के साथ में श्रीमद् भागवत श्रवण के लिए बैठे। श्रीगदाधर पंडित गोस्वामी महाप्रभु का मन जानकर बरसाना से सपरिकर श्रीवृषभानु महाराज की श्रीकृष्ण जन्मोत्सव में नंदीश्वर आगमन लीला वर्णन करने लगे। वर्णन सुनकर सभी ब्रजभाव में मग्न हुए।

ब्रजधाम : सप्तमी की लीला :

ब्रज में सप्तमी के दिन प्रात: काल में श्रीवृषभानुपुर से सभी ने प्रात: कृत्य, स्नान वेश-भूषादि करके स्वल्पाहार के पश्चात् भेंट देने के लिए वस्त्रालंकारादि लेकर नंदीश्वर के लिए यात्रा की। श्रीवृषभानु महाराज ने भ्रातृगण के साथ हाथी की पीठ पर आरोहण करके अपने-अपने लश्कर तथा वाद्यकार गण को साथ लेकर गमन किया। श्रीकीर्तिदा माता यात्री- धात्री आदि आत्मीय गण को साथ लेकर विचित्र पालकियों पर आरोहण करके परमानंद में चलीं। श्रीदाम चन्द्र अश्वारोहण करके अपने लश्कर तथा वाद्यकार आदि को साथ लेकर चले। तत्पश्चात् पालकी पर श्रीराधिका तथा उनकी सखीगण एवं चन्द्रावली आदि यूथेश्वरी गण विविध यानों पर आरोहण करके नन्दालय की ओर चलीं। क्रमपूर्वक सभी के नंदीश्वर के निकट पहुँचने पर वाद्य ध्वनि सुनकर श्रीनन्द महाराज द्वारा भ्राताओं के साथ आगे बढ़कर उन सबका स्वागत करके उनको लेकर आने पर श्रीवृषभानु महाराज ने हाथी की पीठ से नीचे उतरकर उनके साथ नमस्कार, आलिंगन तथा संभाषणादि किया। तत्पश्चात् लश्कर आदि ग्राम के बाहर स्थापन करके श्रीनन्द महाराज ने सबको लेकर पुर में प्रवेश करके यथा योग्य वास गृह प्रदान किया। इसी प्रकार श्री यशोमती माता आदि ने श्रीकीर्तिदा मातादि एवं श्री राधिकादि यूथेश्वरी वर्ग को उनकी सखियों सहित यथा योग्य गौरव प्रीति आदर तथा सम्भाषणादि करके सबको अंत:पुर में ले जाकर यथा योग्य वासगृह प्रदान किया। तत्पश्चात् सबने अपने-अपने स्थान पर विश्राम किया। उनके दासगण तथा दासी गण अपने-अपने सेवा कार्य में लग गये।

तदोपरांत श्रीवृषभानु महाराज आदि कीर्तिदा माता आदि तथा श्रीराधिकादि यूथेश्वरी गण सभी ने क्रमपूर्वक स्वल्पाहार किया। बाद में श्रीयशोदा माता के आदेश से श्री राधिका रंधन में नियुक्त हुई। उन

Scanned by CamScanner

सबके विविध मिष्ठान्न, पक्वान्न, अन्न, व्यंजनादि रंधन करने पर मधु मंगल ने श्री नारायण को भोग लगाया। तत्पश्चात् भोग के अंत में श्रीनारायण जी की आरती की। आरती के समय दासगण द्वारा नृत्यगीत वाद्यादि करने पर सभी ने आनन्द पूर्वक दर्शन किये। आरती के अंत में सबके दंडवत् प्रणाम करने के बाद ठाकुर को शयन कराकर मधुमंगल यशोमती माता की आज्ञा से भोजन के लिए सबको बुलाकर ले आये। विस्तृत प्रांगण में पूर्वाभिमुख होकर श्री नन्द महाराज उनके दाहिने क्रमपूर्वक अभिनन्द, उपानन्दादि, वृषभानु महाराजादि पंच भ्राता, श्रीदाम, बलराम, सुभद्र, गोभट्टादि तथा बाँये सुनन्द, नंदन, श्रीकृष्ण, सुबल, उज्ज्वल, कोकिलादि बैठ गये। श्रीनन्द महाराज के सामने श्रीकृष्ण के मातुलगण (मामागण) तथा वृषभानु महाराज के सामने अभिमन्यु आदि गोपगण बैठ गये। दाहिने विप्रगण तथा चारों ओर पुरवासीगण बैठ गये। श्रीराधा सखियों के साथ श्रीनन्द बाबा की ओर, श्यामा, चन्द्रावली आदि यूथेश्वरी गण श्रीवृषभानु बाबा की ओर परिवेशन करने लगीं।

वे सब अपने-अपने यूथ के साथ मिष्ठान्न, पक्वान्न, अन्न, व्यंजनादि क्रमपूर्वक यत्न सहित परिवेशन करने लगीं। सभी भोजन करने वालों ने हास्य कौतुक के साथ परमानन्द पूर्वक भोजन करके आचमन के अन्त में तांबूल चर्बन करते-करते अपने-अपने विश्राम गृह में जाकर शयन किया। दासगण समयोचित विविध सेवा करने लगे। श्रीराधा हाथ पैर धोकर खिड़की से श्रीकृष्ण की शयन शोभा दर्शन करके आनन्द में निमग्न हुई। तत्पश्चात् श्रीयशोमती माता के बुलाने पर राधिकादि यूथेश्वरी गण सभी भीतर के प्राँगण में जाकर बैठ गई। श्रीराधा सखियों के साथ एक पंक्ति में, चन्द्रावली श्यामलादि अन्य पंक्ति में, एवं यशोदा माता आदि कीर्तिदा मातादि के साथ दूसरी पंक्ति में बैठ गयीं। रोहिणी माता, तुंगीमाता तथा कुंदलता परिवेशन करने लगीं। परमानंदित होकर भोजन आचमन के अंत में सबने अपने-अपने स्थान में जाकर विश्राम किया। दासीगण तांबूल व्यजनादि सेवा करने लगीं। बाद में मंजरी गण एवं दासीगण ने क्रमपूर्वक भोजन किया। साधक दासी शेषामृत भोजन के अंत में स्थान-पात्रादि संस्कार करके श्रीराधा के समीप आकर पाद संवाहनादि सेवा करने लगी। श्रीराधा ने शयन से उठकर नित्यवत् गुप्त कुण्ड में योगपीठ-मिलन के अंत में पुनः नंदीश्वर पुर में आकर विश्राम के अंत में मिष्ठान्न प्रस्तुत करके वेश-भूषा के उपरांत सूर्य पूजा के बहाने से अभिसार किया। तत्पश्चात् सभी लीलायें नित्यवत् करके अपराह्न में नंदीश्वर आगमन किया। बाद की लीला नित्यवत् है।

नवद्वीप : भोजन-शयनादि :

नवद्वीप में महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ नारायण के भोग आरती कीर्तन में आविष्ट हैं। तब शचीमाता के आह्वान पर कीर्तन समाप्त करके नित्यवत् भोजन शयनादि लीला करते हैं। बाद की लीला नित्यवत् है।

Scanned by CamScanner

श्रीश्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-लीला

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में महाप्रभु भाद्र कृष्णाष्टमी के दिन नित्यानुयायी प्रातः कृत्य, स्नानादि के अंत में श्रीमन्नारायण की आरती दर्शन करके भक्त वृन्द के साथ श्रीमद्भागवत् श्रवण करने के लिए बैठ गये। श्रीगदाधर पंडित गोस्वामी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी अभिषेक लीला वर्णन करते हैं। वर्णन श्रवणकर महाप्रभु एवं भक्त वृन्द ब्रजभाव में आविष्ट हुए।

ब्रजधाम : अभिषेक :

श्रीनंदीश्वर में अष्टमी के दिन सखियों सहित श्रीराधा ने नित्यानुयामी प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषादि की। तब कुंदलता ने आकर कहा—"हे राधे! श्रीकृष्ण के अभिषेक दर्शन के लिए चलो।" यह सुनकर सखी मंजर्यादि के साथ श्रीराधा अभिषेक के स्थान पर आयीं। पुरवासी, बाल-वृद्ध, नर-नारी तथा निमंत्रित सभी लोग उपस्थित हुए।

श्रीकृष्ण के यथा रीति पूर्वक प्रातः कृत्य, स्नानादि करने पर दासगण ने श्रीकृष्ण को शुक्ल वस्त्र पहनाकर नासिका में मुक्ता, कंठ में स्वर्णहार, बाहु में बाजुबंद, हाथ में वलय, कटि में काँची (क्षुद्र घंटिका) तथा चरण में स्वर्ण नूपुर पहनाये। तब श्रीकृष्ण स्नान वेदी पर जाकर मणि-जड़ित स्वर्ण चौकी पर बैठ गये। वाद्यकार गण नाना प्रकार की भंगी में विविध वाद्य बजाने लगे। विप्रगण वेद ध्वनि तथा नारीगण जयकार एवं भाट वन्दीगण रायवार (कुल का यशोगान) पढ़ने लगे। श्री भागुरी ऋषि के अभिषेक मंत्र पढ़ते रहने पर दासगण अभिषेक करने लगे। सर्वप्रथम महौषधि के जल से स्नान कराकर क्रमपूर्वक पंचगव्य, पंचामृत, सौ घड़े जल, तब सहस्र धारा से तथा सबके अंत में शंखोदक से स्नान कराया। तब अंग पोंछकर पीताम्बर पहनाने पर श्रीकृष्ण श्रृँगार वेदी पर जाकर मणिमय आसन पर बैठ गये। तब दासगण श्रृँगार करने लगे।

नवद्वीप : अभिषेक :

नवद्वीप में महाप्रभु भावावेश में स्नान वेदी पर जाकर बैठ गये। दासगण द्वारा अभिषेक द्रव्य लाकर देने पर श्रीअद्वैत प्रभु ने यथाविधि अभिषेक किया। दासगण ने महाप्रभु के अंग पोंछकर पीताम्बर पहनाया। तब महाप्रभु श्रृँगार मंडप पर रत्नासन पर जाकर बैठ गये। दासगण ने महाप्रभु के केश संस्कार करके तिलकादि रचना कर चंदन माल्य तथा मणिमय अलंकारों से भूषित करके दर्पण दिखलाया। स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु की आरती की। तत्पश्चात् स्वरूप गोस्वामी ब्रज में श्रीकृष्ण की वेश-भूषा तथा स्वल्पाहारादि पद क्रम-पूर्वक कीर्तन करने लगे। कीर्तन श्रवण कर सभी ब्रजभाव में मग्न होकर लीला रस

Scanned by CamScanner

का आस्वादन करने लगे।

ब्रजधाम : श्रीकृष्ण का श्रृँगार तथा नन्दोत्सव :

नन्दालय में श्रीकृष्ण श्रृँगार मंडप में बैठे हुए हैं। दासगण ने श्रीकृष्ण के केश संस्कार करके मणि मुक्ता जड़ित मयूर पुच्छ युक्त स्वर्ण मुकुट पहनाया। ललाट में गोरोचना-तिलक तथा कपोल के दोनों बगल में पत्रावली, नासिका में मुक्ता, कान में मकर कुंडल, कंठ में मणिहार, बाहु में अंगद, हाथ में वलय, कटि में क्षुद्र घंटिका एवं चरणों में मणिमय नूपुर पहनाये। भागुरी ऋषि ने दूर्वाकुर हाथ में लेकर सात बार निर्मंछन किया। सभी विप्रगण ने आशीर्वाद प्रदान किया। श्रीवृषभानु महाराजादि ने स्वर्णथाल में वस्त्रालंकारादि भेंट देकर आशीर्वाद किया। श्रीकीर्तिदा माता तथा अन्यान्य मातृ समतुल्य गण ने भी नाना द्रव्य भेंट देकर आशीर्वाद किया। श्रीराधिका ने स्वर्ण थाली में वस्त्रालंकार आदि भेंट देकर श्रीकृष्ण के गले में मणिहार पहनाया। इसी प्रकार से चन्द्रावली आदि यूथेश्वरी गण ने भी नाना द्रव्य भेंट दिये। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण ने स्वर्ण मंडित श्रृँग तथा चांदी मंडित खुर युक्त एवं पीत वस्त्र एवं नाना अलंकारों से भूषित एक सुलक्षणा सवत्सा दुग्धवती गाय श्री भागुरी मुनि को दान की। श्रीनन्दमहाराज ने इसी प्रकार से हजार-हजार गाय ब्राह्मणों को दान कीं। तदोपरान्त श्रीकृष्ण ने वेदी से उतरकर श्रीपौर्णमासी देवी को प्रणाम करके विप्रगण को प्रणाम किया। पिता-माता को प्रणाम करके वृषभानु बाबा तथा कीर्तिदा माता को प्रणाम किया एवं पितृ मातृ तुल्य सभी मान्य गणों को प्रणाम किया। इसके बाद श्रीकृष्ण ने यशोमती माता के आह्वान पर सखाओं के साथ भोजनालय में आकर सबके साथ स्वल्पाहार किया। तत्पश्चात् सखियों सहित श्रीराधा तथा यूथेश्वरी गण सबके स्वल्पाहार करने पर ब्रजेश्वरी माता ने उन सबको रंधन में नियोजित किया। दूसरी ओर सैकड़ों ब्राह्मण प्रचुर परिमाण में विविध सामग्री रंधन करने लगे। यशोमती माता ने आकर रंधन सामग्री दर्शन करके मधुमंगल को भोग लगाने का आदेश दिया। मधुमंगल ने सभी द्रव्यों में से थोड़ा-थोड़ा लेकर श्री नारायण को भोग लगाया। तत्पश्चात् भोग के अंत में आरती करके ठाकुर को शयन कराया। तत्पश्चात् विभिन्न प्रांगण में दधि-कादा (कीचड़) खेल महोत्सव प्रारम्भ हुआ। बाहर वाले एक प्रांगण में श्रीनन्द महाराज, श्रीवषृभानु महाराज एवं उनके भातृगण तथा अन्यान्य वृद्धमान्य जनगण ने मिलकर दधि-कादा खेल आरम्भ किया। दूसरे प्रांगण में श्रीरामकृष्ण सखागण सहित दधि-कादा खेलानन्द में मत्त हुए। अंतः पुर के एक प्रांगण में ब्रजेश्वरी माता, कीर्तिदा माता तथा उनका यात्री वर्ग, अन्य प्रांगण में सखियों सहित श्रीराधा चन्द्रावल्यादि यूथेश्वरी वर्ग नृत्य गीत वाद्यादि के साथ दधि-कादा खेल में मत्त हुई। मुखरादि एवं अन्यान्य वृद्धा गोपी गण हाथ में लाठी लेकर बीच-बीच में नृत्य करने लगीं। सभी परस्पर दधि, दुग्ध, घृत, पनीर, मक्खन, तेल-हल्दी, चंदन, कुंकुम, केशरादि क्षेपन तथा जल सिंचन करने लगीं। आनन्द में मत्त होकर किसी को भी छोटे-बड़े का ज्ञान नहीं रहा, जो जिसे पाता उस पर ही दधि, दुग्धादि फेंककर विचलित करने लगा। फेंके गये दधि-दुग्धादि वेगवती नदी के समान नाली के रूप में बहकर जाने लगा। जब नाली

Scanned by CamScanner

के मुख में माखन-केशरादि की कीचड़ फँस जाती है, तब प्रांगण दधि-दुग्धादि से भरकर सरोवर के तुल्य हो जाता है। बाद में कीचड़ के हटने पर वही दधि-दुग्धादि नदीवत् वेगवान होकर बहने लग जाता है, देवगण अंतरिक्ष से इस आनन्दोत्सव को देखकर पुष्प वृष्टि करने लगे। कोई-कोई देव मनुष्य का रूप धारण करके गोपगण के मध्य प्रविष्ट होकर नृत्य करने लगे। कोई-कोई देव हंसादि पक्षी के रूप में इस माखनादि की कीचड़ का भक्षण करने लगे। वाद्यकार गण तथा नर्तक-नर्तकीगण आनन्द में नाना भंगी के साथ नृत्य करने लगे। भाट गण तथा वन्दी गण गोप कुल एवं श्रीकृष्ण के यश महात्म्यादि का वर्णन करके अपने को धन्य मानने लगे।

इसी प्रकार दधि-कादा (कीचड़) खेल समाप्त होने पर सभी ने पावन सरोवर में जाकर जल क्रीड़ा आरंभ की। उत्तर घाट में श्रीब्रजराज, श्रीवृषभानु राजादि, पूर्व वाले घाट में सखा सहित श्रीराम कृष्णादि, दक्षिण घाट में ब्रजेश्वरी एवं कीर्तिदा मातादि, पश्चिम घाट में सखियों सहित श्रीराधा-चन्द्रावल्यादि सभी परस्पर एक दूसरे पर जल फेंककर विविध जल-क्रीड़ा करके तट पर आयीं। तब अपने-अपने दास-दासी गण ने उनके अंगो को पोंछकर तेल-मर्दन करके उबटन लगाकर पुनः स्नान कराया। तत्पश्चात् अंग पोंछकर शुष्क वस्त्र पहनाये। सबके पुर में आने के बाद श्रीनन्द महाराज ने (पुरुष पक्ष में) जिनकी जितनी मर्यादा है तदनुरूप वस्त्रादि प्रदान किये। ब्रजेश्वरी माता ने भी अंतः पुर में स्त्री वर्ग को यथा योग्य वस्त्रालंकारादि देकर सम्मानित किया। अपने-अपने दास तथा दासियों द्वारा सभी विभूषित हुए। तत्पश्चात् नन्द महाराज ने पहले ब्राह्मण गण को प्रांगण में बिठाकर विविध मिष्ठान्न, पक्वान्नादि का उत्तम रूप से भोजन कराया। इसके बाद ब्रजेश्वरी माता ने बटु द्वारा सबको भोजन के लिए आह्वान कराया।

नवद्वीप : श्रीनारायण का भोग :

महाप्रभु श्रृँगार मंडप में बैठकर सपरिकर ब्रजभाव में मग्न हैं। अन्तः पुर में लक्ष्मी प्रिया, विष्णु प्रियादि ने विविध मिष्ठान्न, पक्वान्न, अन्न व्यंजनादि रंधन करके श्रीनारायण का भोग सजाया। तब शची माता के आदेश से ईशान दास आकर बोले—"हे महाप्रभो! श्रीनारायण का भोग प्रस्तुत है। माता भोग लगाने के लिए बुला रही हैं। यह सुनकर महाप्रभु हुँकार करके बाह्य दशा को प्राप्त हुए। भक्त गण भी बाह्य दशा को प्राप्त हुए। स्वरूप गोस्वामी ने गान समाप्त किया। तब महाप्रभु के आदेश से गदाधर पंडित ने जाकर श्रीनारायण को भोग लगाया। महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ नारायण मंदिर के जगमोहन (प्रांगण) में ब्रज के नंदीश्वर में श्रीकृष्णादि तथा श्रीराधादि के भोजन पद गान में मग्न हुए।

ब्रजधाम : भोजन तथा विश्राम :

ब्रजेश्वरी माता के आज्ञाक्रम से बटु द्वारा सबको भोजन के लिए बुला लाने पर ब्रजेश्वर वृषभानु राजा ने पुत्र-मित्रादि तथा ग्राम वासियों के साथ पहले दिन की भाँति विस्तृत प्रांगण में क्रमपूर्वक बैठकर

Scanned by CamScanner

आनंद सहित भोजन करके आचमन कर तांबूल चबाते हुए अपने-अपने स्थान में जाकर शयन किया, सभी ने अपने-अपने सेवकों द्वारा समयोचित यथारूप सेवा प्राप्त की। उधर अंत: पुर में ब्रजेश्वरी माता ने पहले दिन की भाँति कीर्तिदा मातादि तथा श्रीराधिादि को आदर पूर्वक ले जाकर भोजन कराया। तत्पश्चात् उन सबने तांबूलादि ग्रहण कर अपनी-अपनी शय्या पर विश्राम किया।

ब्रजराज ने विप्रगण को वस्त्रालंकार तथा मुद्रादि देकर सम्मान करके विदा किया। भाट-वन्दी, नर्तक, गायक आदि को भी उत्तम रूप से भोजन कराकर वस्त्रालंकार तथा मुद्रादि देकर विदा किया। तत्पश्चात् कंगाल आदि को भोजन कराकर यथोचित सम्मान के साथ विदा किया। बाद में अपने शय्यालय में जाकर विश्राम किया। श्रीराधा कृष्ण ने सखियों के साथ सप्तमी वत् समस्त लीलाएँ कीं।

नवद्वीप : श्रीनारायण की आरती आदि :

नवद्वीप में महाप्रभु ने भक्त वृन्द के साथ "ब्रज लीला का भोजन" गान समाप्त किया। गदाधर पंडित ने श्रीनारायण का भोग हटाकर आचमन देकर आरती की। महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ दंडवत प्रणाम करके अपने शयनालय के बरामदे में जाकर भक्त वृन्द के साथ बैठ गये। तत्पश्चात् नित्य लीलावत् योगपीठ मिलन के अंत में वन भ्रमणादि करके श्रीअद्वैत प्रभु के निमन्त्रण के अनुसार अपराह्न में उनके घर जाकर श्रीमदन गोपाल जी की आरती दर्शन-संकीर्तनादि किया। तदोपरान्त दुग्ध-फलादि सेवन करके सभी ने श्रीअद्वैत प्रभु के गृह में विश्राम किया। बाद में अभिसारादि रात्रि लीला नित्यवत् करके निशांत में पुन: श्री अद्वैत प्रभु के घर में आकर शयन किया।

अष्टमीलीला समाप्त।

नवमी-लीला

नवद्वीप : अद्वैत गृह में भोजनादि :

प्रात:काल में अद्वैतालय में जागकर प्रात: कृत्य, स्नान वेश-भूषादि तथा स्वल्पाहार करके श्रीमद्भागवत् श्रवण करते करते ब्रज भाव में आविष्ट हुए। भागवत श्रवण के अंत में श्रीमन्मदन गोपाल जीऊ का भोग-आरती दर्शन-कीर्तनादि किया। तब ठाकुर को शयन कराकर नन्दोत्सव कीर्तन तथा दधि-कादा खेल कर नगर भ्रमण करते-करते प्रत्येक भक्त के गृह-गृह में नृत्य कीर्तन तथा दधि- कादा (कीचड़) उत्सव खेल कर श्रीअद्वैत प्रभु के गृह में वापस आये। तब सभी गंगा स्नान के लिए जाकर जल क्रीड़ा करके स्नान के अंत में श्रीअद्वैत प्रभु के घर आये। श्रीअद्वैत प्रभु ने दोनों प्रभु तथा भक्त वृन्द को यथा योग्य वस्त्रालंकारादि प्रदान किये। तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद सेवन करके किंचित विश्राम किया। विश्राम के

Scanned by CamScanner

अंत में नित्यवत् योगपीठ मिलन एवं वन भ्रमणादि करके अपराह्न में महाप्रभु भक्तवृन्द के साथ अपने गृह में आये। तत्पश्चात् अन्यान्य लीला नित्यवत् करने के पश्चात् सायंकाल में महाप्रभु का मन जानकर स्वरूप गोस्वामी ब्रज की सांयकालीन लीला वर्णन करने लगे। वर्णन-श्रवण कर सभी ब्रज भावाविष्ट हुए।

ब्रजधाम :

नन्दीश्वर में प्रातः काल में सखियों सहित श्रीराधा ने नित्यवत् शय्या त्याग काके प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषादि करके श्रीकृष्णावशेष स्वल्पाहार करके ब्रजेश्वरी की आज्ञानुसार रंधन किया। मधुमंगल ने नारायण का भोग राग समापन करके शयन कराया। तत्पश्चात् पहले दिन की भाँति सभी ने क्रमपूर्वक भोजनादि करके विश्राम किया। बाद में योगपीठ तथा अन्यान्य लीला पहले दिन की भाँति होती हैं। सायंकाल में श्रीनन्द महाराजादि, श्रीवृषभानु महाराजादि तथा श्रीकृष्णादि के स्वल्पाहार के बाद सखियों सहित श्रीराधा तथा अन्यान्य यूथेश्वरी गण स्वल्पाहार करती हैं। तत्पश्चात् श्रीवृषभानु राजादि ने गृह वापस लौटने के लिए श्रीनन्द महाराज से आज्ञा माँगी। श्रीनन्दमहाराज ने वस्त्रालंकारादि देकर सबको यथा योग्य सम्मान करके विदा किया। इसी प्रकार से श्रीब्रजेश्वरी माता ने भी कीर्तिदा माता को वस्त्रालंकारादि देकर यथा योग्य सम्मान करके विदा किया। सखियों सहित श्रीराधा तथा यूथेश्वरी गण ने ब्रजेश्वरी माता के चरणों में प्रणाम किया। उन्होंने सबको आलिंगन चुंबन मस्तकाघ्राण करके मंगलाशीर्वाद दिया। उसके बाद सभी ने अपने-अपने यानों पर आरोहण करके अपने-अपने गृह के लिए यात्रा की। गमन करते समय ब्रजेश्वरी ने कुछ दूर तक अनुगमन किया। श्रीराधिकादि ने गृह में आकर चन्द्रशाला से श्रीकृष्ण की सायंकालीन गोदोहन लीला दर्शन की। बाद की लीलायें नित्यवत् हैं।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा नवमी लीला समाप्त।

श्रीराधाष्टमी लीला

ब्रज में वृषभानुपुर में भाद्र पद शुक्ला प्रतिपदा के दिन वृषभानु महाराज के सिंहद्वार पर मंगल सूचक वाद्य बजने लगे एवं पुरी की शोभा नन्दीश्वर के समान की गयी।

(भाद्र शुक्ला तृतीय में तुंगविद्या सखी की जन्म तिथि के अवसर पर इस रात्रि में राधाकुण्ड में उनके कुँज में रासादि लीला तथा शयन लीला होती है। इसी प्रकार अष्टमी-श्रीराधा तथा विशाखा की, नवमी चम्पकलता की, एकादशी इन्दुलेखा की, पूर्णिमा-रंग देवी तथा सुदेवी की एवं आश्विन शुक्ला तृतीया चित्रा सखी की जन्म तिथि- के कारण इन-इन रात्रियों में उनके अपने-अपने कुँजों में रासादि लीला

Scanned by CamScanner

तथा शयन लीला होती है।) षष्टी के दिन सायंकाल में श्रीवृषभानु महाराज ने श्रीदाम चन्द्र तथा ऋषि कन्या द्वारा नन्दीश्वर में श्रीनन्द- यशोदा को एवं अन्यान्य स्थानों पर श्रीकृष्ण जन्माष्टमीवत् निमंत्रण भेजा।

नवद्वीप : भावावेश :

भाद्र शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातः काल में श्री मन्महाप्रभु नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषा के अंत में जलयोग करके भक्त वृन्द के साथ श्रीमद्भागवत श्रवण के लिए बैठ गये। गदाधर पंडित महाप्रभु का मन जानकर नन्दीश्वर से श्रीनन्द महाराजादि का परिवार सहित श्रीवृषभानु पुर में श्रीराधा के जन्मोत्सव में आगमनादि विषय वर्णन करने लगे। वर्णन श्रवण कर सभी ब्रजभाव में मग्न हुए। अन्यान्य लीला कृष्ण सप्तमी वत् होती हैं।

ब्रजधाम : सप्तमी की लीला :

वृषभानुपुर में भाद्र शुक्ला सप्तमी के दिन सखियों सहित श्रीराधा नित्यवत् प्रातःकृत्य, स्नान, वेश-भूषादि करके श्रीकृष्ण आगमन की प्रतीक्षा में बैठी हुई हैं, इसी समय नन्दीश्वर से श्रीनन्दमहाराज तथा उनके भ्रातागण ने अपने-अपने परिवार वर्ग के साथ प्रातः कृत्यादि समापन करके स्वल्पाहार करके महासमारोह में बरसाना आगमन किया। दूर से ही वाद्य ध्वनि सुनकर श्रीवृषभानु महाराज ने भ्राताओं सहित तथा कीर्तिदा महारानी ने जातृ वर्ग (श्रीवृषभानु महाराज के भ्राताओं की पत्नियाँ) के साथ आगे बढ़कर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वत् स्वागत करके पुर में ले जाकर सबको यथा योग्य वास गृह प्रदान किया। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण के साथ सबके स्वल्पाहार करने पर सखियों सहित श्रीराधा एवं सब यूथेश्वरी गण ने स्वल्पाहार करके रंधनादि कार्य आरंभ किया। सबने मिलकर विविध प्रकार के मिष्ठान्न, पक्वान्न, अन्न व्यंजनादि रंधन किये। पुजारी ने श्रीनारायण को भोग लगाकर आरती करके ठाकुर को शयन कराया।

तब कीर्तिदा माता के आदेश से श्रीदाम चन्द्र ने सबको बुलाकर(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के समान) भोजन के लिए विस्तृत प्रांगण में बिठाया। पहले कौन परिवेशन करेगा? इस विषय में श्री राधा तथा यूथेश्वरी गण के बीच में प्रेम कलह होने लगी। श्यामा सखी बाहर से रोष प्रकाश के समान राइ से बोलीं—"यह तुम्हारे पिता का निमंत्रण है, हम सब का क्या दायित्व? पहले तुम परिवेशन करो या न करो।" इस प्रकार परस्पर की कलह सुनकर श्रीब्रजेश्वरी माता ने आकर समाधान करके परिवेशन की पंक्ति का विभाग कर दिया। तब सभी अपनी-अपनी पंक्ति में परिवेशन करने लगीं। तदोपरान्त सभी ने भोजन आचमन के अंत में तांबूल चबाते हुए अपने-अपने वास गृह में जाकर विश्राम किया। इस प्रकार से अंतः पुर में भी क्रमपूर्वक सभी ने भोजन आचमन के अन्त में अपने-अपने स्थान पर जाकर विश्राम किया। सखियों सहित श्रीराधा ने पुष्प चयन के बहाने पुर के पश्चिम में विलास कुण्ड के तट पर गमन किया। श्रीकृष्ण द्वारा भी गुप्त रूप से वहाँ आकर के श्रीराधा के साथ विलासादि करने पर योगपीठ मिलन के अंत

Scanned by CamScanner

में पुनः सभी ने अपने-अपने विश्राम गृह में आकर विश्राम किया। उसके बाद श्रीराधा ने पक्वान्नादि प्रस्तुत करके सूर्य पूजा के बहाने अभिसार करके राधाकुण्ड के तट पर आकर मध्याह्न लीलादि करके सूर्य कुण्ड में सूर्य पूजा के अंत में अपराह्न में गृह में आकर अन्यान्य लीलादि नित्यवत् कीं। (श्रीराधाष्टमी के उपलक्ष्य में सप्तमी से नवमी तक तीन दिन श्रीकृष्ण का गोचारण बंद रहता है।)

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीपः में भाद्र शुक्ला अष्टमी के प्रातः काल में श्रीमाधवाचार्य ने तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को निमंत्रण किया। महाप्रभु ने नित्यवत् प्रातःकृत्य, स्नान वेश-भूषादि करके श्री नारायण की आरती दर्शन करके श्रीमद् भागवत् श्रवण की। गदाधर पंडित गोस्वामी श्रीराधाष्टमी प्रशंग पाठ करते हैं। तत्पश्चात् महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ माधवाचार्य के गृह में गमन करके ठाकुर दर्शन प्रणाम आदि करते हैं। पुजारी द्वारा ठाकुर का अभिषेक करने पर स्वरूप गोस्वामी ने ब्रज में वृषभानुपुर में श्रीराधा के अभिषेकादि पद गान किये। गान श्रवण कर सभी ने ब्रज भावाविष्ट होकर दर्शन किया।

ब्रजधाम : श्रीराधा का अभिषेक उत्सव :

वृषभानु पुर में अष्टमी के दिन श्रीराधा-कृष्णादि सभी नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नानादि समापन करते हैं। तदोपरान्त श्रीराधा के अभिषेक दर्शनार्थीगण उपस्थित हुए। श्रीराधा स्नान के बाद शुक्ल चीन वस्त्र (रेशमी वस्त्र) पहनकर तथा नासिका में मुक्ता, कंठ में गजमती हार, बाहु में अंगद, हाथ में कंकण, कटि में मेखला, चरण में नूपुर आदि अलंकार पहनकर स्नान वेदी पर जाकर बैठ गयीं। तब वाद्यकार गण विविध वाद्य नाना भंगी में बजाने लगे। दासी गण ने पहले से ही अभिषेक द्रव्य प्रस्तुत करके रखा हुआ था। श्रीपौर्णमासी देवी अभिषेक मंत्र मढ़ने लगीं। पुरोहित वनिता (गार्गी) क्रमपूर्वक अभिषेक करने लगीं। पहले महौषधि के जल से, उसके बाद पंचगव्य से, तब पंचामृत से, सौ घड़े जल से, तब सहस्र धारा से तथा अंत में शंखोदक से स्नान कराया। तब दासी गण ने अंग पोंछकर सुगंधी तेल से समस्त अंगों में मालिश करके चतुः सम द्वारा उबटन लगाकरके स्नान कराकर नील वस्त्र पहनाये। तत्पश्चात् श्रीराधारानी के श्रृँगार वेदी पर बैठने पर दासियों ने सोलह श्रृँगार तथा द्वादश आभरणों से विभूषित किया। पुरोहित वनिता ने दूर्वा धान्य हाथ में लेकर सात बार न्यौछावर किया। दासियों के आरती करने पर श्रीपौर्णमासी देवी ने न्यौछाकर करके आशीर्वाद किया। यशोदा मातादि ने श्रीराधा के कंठ में मणिमय हार आदि पहनाकर वस्त्रालंकारादि भेंट देकर आशीर्वाद किया। इस प्रकार से सभी यूथेश्वरियों ने भेंट दीं। तदोपरान्त श्रीराधा ने सालंकृत एक गाय दान की। श्री वृषभानु महाराज ने इसी प्रकार से हजारों सालंकृत तथा सवत्सा दुग्धवती गायें दान कीं। श्रीराधा ने श्रीपौर्णमासी देवी आदि तथा पिता माता आदि मान्य गण को क्रमपूर्वक दंडवत् प्रणाम किया। इसके बाद श्रीकृष्ण द्वारा सखागण के साथ स्वल्पाहार करने पर सखियों सहित श्रीराधा तथा यूथेश्वरी गण

Scanned by CamScanner

ने भी स्वल्पाहार किया। बाद में श्रीराधिकादि सभी ने रंधन के लिए अलंकारादि उतारकर श्रीरोहिणी माता के साथ रंधन के कार्य में नियुक्त होकर अनेकों प्रकार के मिष्ठान्न, पक्वान्न, अन्न व्यंजनादि, प्रचुर परिमाण में प्रस्तुत किये। बाहर भी सैकड़ों ब्राह्मणों ने विविध सामग्री रंधन की। तब कीर्तिदा माता के साथ यशोदा आकर श्रीराधा द्वारा बनाई गई एकत्रित विविध प्रकार की रंधन-सामग्री का दर्शन करके अतिशय स्नेहार्द्र चित्त होकर श्री कीर्तिदा माता से कहने लगीं—"हे सखी! तुम्हारा हृदय बड़ा ही कठिन है। शिरीष पुष्प से भी अति मृदुला इस राधा के द्वारा ही तुमने इतनी राशिकृत सामग्री रंधन कराई है! तुम्हारे पास क्या कृछ भी स्नेह नहीं है! देंखो तो! परिश्रम से उसके शरीर से किस प्रकार पसीना बह रहा है?" तब कीर्तिदा माता बोलीं—"वर के प्रभाव से राधा का रंधन अमृत-विजयी सुस्वादु होता है यह जानकर बहुत दिनों से महाराज की इच्छा थी कि ब्रजराज को निमंत्रण करके उसके हाथ से रंधन किये गये द्रव्य भोजन करायें। इसीलिए आज उन्हीं के आदेश से राधा ने रंधन किया है। हे सखी ब्रजेश्वरी!! राधा के द्वारा पकाये गये सभी द्रव्य किस प्रकार के हुए हैं देखो।" तब रोहिणी देवी ने द्रव्यों का वर्णन करके दिखलाया। इसी समय श्रीराधा द्वारा आकर ब्रजेश्वरी के चरणों में प्रणाम करने पर वह आशीर्वाद करके बोलीं—"राधे" तुम्हारे द्वारा पकाये गये द्रव्य के सौन्दर्य तथा सौरभ से मेरे नयन तथा नासिका परितृप्त हुए।" तब ललिता तथा श्यामला द्वारा आकर ब्रजेश्वरी के चरणों में प्रणाम करने पर उन्होंने उन सबकी प्रशंसा करके स्नेह के साथ आशीर्वाद किया। श्रीरोहिणी देवी बोलीं—"हे कृष्ण जननी! ये श्रीराधा हेमकान्त मणि तथा श्रीकृष्ण इन्द्रनील मणि हैं। ये दोनों ब्रजकुल लक्ष्मी के कंठ भूषण युग्म हार स्वरूप हैं। यह सुनकर श्रीराधा नासापुट प्रफुल्लित करके लज्जिता हुई। यह देखकर ललितादि सखीगण उल्लासिता हुई। तब ब्रजेश्वरी माता ने दासी गण को ठाकुर का भोग सजाने के लिए तथा श्रीराधा को व्यजनादि करके उनका श्रम दूर करने का आदेश दिया। तत्पश्चात् पुजारी ने ठाकुर का भोग रागादि समापन करके शयन कराया। (बाहर भी सैकड़ों ब्राह्मणों ने एकत्रित विविध सामग्री रंधन की है) इसके बाद सभी यथा योग्य वस्त्रादि पहनकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वत् विभिन्न प्रागंण में पृथक-पृथक रूप से दधि-कादा (कीचड़) खेल कर भानुखोर नामक कुण्ड में जाकर पावन सरोवर वत् विभिन्न घाट में जल-क्रीड़ा स्नानादि करके गृह में वापस आये। श्रीवृषभानु महाराज तथा श्रीकीर्तिदा महारानी द्वारा पुरुष तथा स्त्री पक्ष में सभी को यथा योग्य वस्त्रादि प्रदान करने पर वेश-भूषा से सुसज्जित हुए। तत्पश्चात् श्रीवृषभानु महाराज ने पहले ब्राह्मणों को भोजन कराकर बाद में श्री कृष्ण जन्माष्टमी वत् सबको विस्तृत प्रांगण में पंक्ति बद्ध कर भोजन के लिए बिठाया। सभी ने परमानंद पूर्वक भोजन करके आचमन कर तांबूल ग्रहण करके अपने-अपने शयनालय में जाकर विश्राम किया। अंत:पुर में श्रीकीर्तिदा माता, श्रीयशोदा मातादि सभी ने क्रमपूर्वक भोजनादि करके अपने-अपने स्थान में विश्राम किया।

इधर वृषभानु महाराज ने ब्राह्मण तथा अन्यान्य सभी को यथा योग्य वस्त्रालंकार तथा दक्षिणादि

Scanned by CamScanner

दान करके विदा किया। तत्पश्चात् अपने शयनालय में जाकर विश्राम किया। श्रीराधिका ने विश्राम के अंत में सखियों के साथ पुष्प चयन के बहाने पश्चिम में विलास कुण्ड तीर पर गमन किया। जाते समय सखीगण खिड़की द्वार से श्रीकृष्ण को संकेत कर गई। श्रीकृष्ण द्वारा जाकर विलास कुँज में श्रीराधा के साथ विलासादि कर योग पीठ लीला करने पर पुनः सभी अपने-अपने विश्राम गृह में आये। तदोपरान्त श्रीराधा द्वारा सूर्य नैवेद्य प्रस्तुत तथा अभिसारादि लीला सप्तमीवत् होती है। रात्रि में राधाकुण्ड में विशाखा के कुँज में रासादि लीला तथा शयन लीला होती है।

नवद्वीप : अभिषेकादि :

नवद्वीप में महाप्रभु माधवाचार्य के गृह में ठाकुर का अभिषेकादि दर्शन करके भावावेश में स्नान मंडप में बैठ गये। भक्तवृन्द ने यथाविधि महाप्रभु का अभिषेक करके वेश-भूषा की। पुजारी ने ठाकुर का भोग राग समापन करके शयन कराया। इसके बाद महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ प्रांगण में दधि-कादा (कीचड़) खेल कर गंगा में जाकर जल-क्रीड़ा स्नानादि करके माधवाचार्य के गृह में वापस आये। माधवाचार्य ने सबको यथा योग्य वस्त्रादि प्रदान किये। भक्त वृन्द ने तीनों प्रभु को विभूषित करके सभी ने अपनी-अपनी वेश-भूषा की। तत्पश्चात् तीनों प्रभु ने प्रसादी दुग्ध फलादि सेवन करके थोड़ा विश्राम किया। महाप्रभु ने विश्राम के अंत में योगपीठ, अभिसार, वन भ्रमणादि लीला नित्यवत् की तथा निशांत में पुनः माधवाचार्य के गृह में आकर शयन किया।

नवमी लीला

नवद्वीप : अपने पुर में आगमन :

नवद्वीप में महाप्रभु ने नवमी के दिन माधवाचार्य के गृह में भक्त वृन्द के साथ प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषा भागवत् श्रवण तथा भोजनादि करके माध्वाचार्य के गृह में ही कुछ समय तक विश्राम किया। तत्पश्चात् योगपीठ लीला के अंत में पूर्वाह्न में वन-भ्रमण को जाकर नित्यवत् लीला करके अपराह्न में पुनः माधवाचार्य के गृह में आकर स्वल्पाहार किया। उसके बाद महाप्रभु ने भक्त वृन्द के साथ गृह जाने के लिए विदा माँगी। माधवाचार्य ने सबको यथायोग्य वस्त्रालंकारादि प्रदान करके विदा किया। अपने पुर में आकर महाप्रभु ने भक्त वृन्द के साथ नित्यवत् लीलादि की।

ब्रजधाम: नन्दादि की विदाई :

ब्रजस्थ वृषभानुपुर में नवमी के दिन श्रीराधा कृष्णादि सभी ने नित्यवत् प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषादि के अंत में क्रमपूर्वक स्वल्पाहार किया। तत्पश्चात् श्री राधिकादि के रंधन के बाद ठाकुर का

Scanned by CamScanner

भोग होने पर सभी ने पहले दिन की भाँति क्रमपूर्वक भोजन करके विश्राम किया। श्रीश्रीराधाकृष्ण पूर्व दिन वत् योगपीठ लीला के बाद अन्यान्य लीला वन भ्रमणादि नित्यवत् करके अपराह्न में (वृषभानुपुर में) गृह में आये तथा क्रमपूर्वक सभी ने स्वाल्पहार किया। तत्पश्चात् श्रीनन्दमहाराजादि सभी ने अपने-अपने गृह में जाने कि लिए श्रीवृषभानु महाराज से विदा माँगी। श्री वृषभानु महाराज ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वत् यथा योग्य सबको उपहारादि देकर विदा किया। परमानन्द में सभी ने अपने-अपने घर गमन किया। तत्पश्चात् श्रीराधा का गोदोहनादि लीला दर्शन नित्यवत् होता है। इसी नवमी तिथि को चम्पकलता सखी की जन्मतिथि की रात्रि में श्रीराधाकुण्ड में उनके कुँज में रासादि लीला तथा शयन लीला होती है।

श्रीराधाष्टमी एवं नवमी लीला समाप्त।

ज्ञातव्य :

गोलाई के अन्दर का भाग ऊपर लाना है। अष्ट सखियों की जन्म तिथि आदि पर रात्रि लीला में वृन्दावन में रासादि के बाद राधाकुण्ड में आकर उन-उन सखियों के कुँज में रासादि लीला तथा भोजन शयन लीला होती है। श्रीराधा तथा विशाखा की जन्म तिथि पर विशाखा कुँज में रास करके संगम स्थली में रास होता है। तत्पश्चात् सुबलानन्दद कुँज में मधुपान तथा विलास के अंत में मानस पावन घाट में स्नान एवं मदनसुखदा कुँज में भोजन शयनादि होता है। भाद्र पूर्णिमा में रंगदेवी के कुँज में रास के अंत में सुदेवी के कुँज में रास, मधुपान तथा विलास के अंत में जल केलि रंग देवी के कुँज में भोजन शयन लीला होती है।

श्रीश्री वामन देव का जन्म महोत्सव

नवद्वीप में भाद्र मास की शुक्ला द्वादशी के दिन श्रीवास पंडित ने तीन प्रभु तथा भक्त वृन्द को निमंत्रण किया। महाप्रभु ने नित्यवत् प्रातः, स्नानादि के अंत में श्रीमद् भागवत् श्रवण की। उसके बाद भक्त वृन्द के साथ श्रीवास भवन में जाकर श्रीवामन देव का अभिषेक दर्शन करके भावावेश में स्नान मंडप में जाकर बैठ गये। भक्त गण ने महाप्रभु का यथाविधि अभिषेक करके वेश-भूषा की। तब ठाकुर की भोग आरती के दर्शन के बाद ठाकुर शयन होने पर तीन प्रभु ने भक्त वृन्द के साथ प्रसादी दुग्ध, फल-मूलादि सेवन करके कुछ समय तक विश्राम किया। उसके बाद योगपीठ लीला के अंत में पूर्वाह्न में भक्त वृन्द के साथ वन-भ्रमण के लिए गमन करके नित्यवत् मध्याह्न लीलादि की। अपराह्न में नगर भ्रमण करके श्रीवास भवन में आकर अन्यान्य लीला नित्यवत् की। दूसरे दिन महाप्रभु ने श्रीवास भवन में प्रातः कृत्यादि नित्यक्रम से भोजनादि करके किंचित विश्राम के बाद योगपीठ लीला की। तत्पश्चात् पूर्वाह्न में वन भ्रमण करके अपराह्न में भक्त वृन्द के साथ अपने भवन में आये। बाद की लीला नित्यवत् है। यदि एकादशी में उपवास होगा तब द्वादशी में वामन देव के अभिषेक के अंत में पारण होगा।

Scanned by CamScanner

श्रीश्री राधारानी की श्रीवृन्दावन में राज्याभिषेक लीला

नवद्वीप : भावावेश :

नवद्वीप में भाद्र पूर्णिमा के दिन श्रीमन्महाप्रभु प्रातः कृत्यादि नित्य लीला क्रम से मध्याह्न में श्रीवास पुष्पोद्यान में माधवी मंडप में भक्त वृन्द के साथ बैठे हुए हैं। स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु का मन जानकर व्रज में श्रीराधा के वृन्दावन राज्याभिषेक लीला पद सुमधुर स्वर में गान किये। पद श्रवण कर सभी ब्रजभाव में आविष्ट होकर लीला रस का आस्वादन करने लगे।

ब्रजधाम : श्रीराधा का राज्याभिषेक :

ब्रज में श्रीराधाकृष्ण ने नित्यलीला के अनुरूप नन्दीश्वर में भोजन शयन योगपीठादि लीला क्रमपूर्वक की। तदोपरान्त पूर्वाह्न में श्रीकृष्ण द्वारा सखाओं के साथ गोचारण के लिए गमन करने पर श्रीराधा सखियों सहित पित्रालय में आयीं। उधर वृन्दावन में वृन्दादेवी श्रीकृष्ण तथा श्रीपौर्णमासी देवी के आज्ञाक्रम से श्रीराधारानी के वृन्दावन राज्य के अभिषेक के लिए आकाशवाणी करके श्रीपौर्णमासी देवी को लेकर वृन्दावन में हेमाम्बुज कुँज प्रांगण में एक विराट सभा का आयोजन कर रही हैं। सभापति श्रीपौर्णमासी देवी एवं प्रस्ताविका वृन्दादेवी हैं। श्रीराधा नित्य लीलावत् मध्याह्न में सूर्य पूजा के बहाने अभिसार करके वृन्दावन में हेमाम्बुज कुँज प्रांगण में उपस्थित हुई। श्रीकृष्ण भी गोचारण छोड़कर प्रिय नर्म सखागण के साथ वहाँ आये। वृन्दादेवी ने सबको यथा योग्य आसन पर बिठाया। तब सभा का कार्य आरम्भ हुआ। प्रस्ताविका वृन्दादेवी सभापति श्री पौर्णमासी देवी से बोलीं—''हे योगेश्वरी! इस वृन्दावन राज्य में श्रीराधा को अभिषिक्त करें, जिसके लिए हम सब के पहले किसी अशरीरी आकाशवाणी ने स्पष्ट रूप से इस प्रकार का आदेश किया है। तब महातपस्विनी श्रीपौर्णमासी देवी के आह्वान करने पर देवकी कन्या विन्ध्य वासिनी एकानंशा देवी, सूर्य पत्नि संज्ञा तथा छाया देवी एवं सूर्य पुत्री यमुना तथा मानस गंगा ये पंच देवियाँ उपस्थित हुई। सूर्य पत्नि छाया देवी ने कहा—''भगवती! आपका अभिप्राय हम सब जानती हैं, वह हमारे शिरोधार्य है किन्तु कहाँ यह महीयसी श्रीराधा और कहाँ यह मात्र सोलह कोश वृन्दावन राज्य!! मेरी इच्छा है कि ब्रह्माण्ड के आधिपत्य पर इनका अभिषेक करें।''

तब विन्ध्य-वासिनी देवी (श्री पौर्णमासी के प्रति दृष्टि देकर) बोलीं—''हे तुल्य रूपिणी सखी! यह सोलह कोश वृन्दावन भूमि अति असाधारण तथा असमोर्ध्व तत्व है। कोटि ब्रह्माण्ड के आधिपत्य की बात क्या? यह तो वृन्दावन के एक प्रदेश में ही स्थित है।" यह सुनकर सभी हर्ष से उत्फुल्लित हुई। तब दिव्य पुष्प वर्षा करने वाले आकाश मंडल पर दृष्टि डालकर सूर्य पुत्री यमुना बोलीं—''भगवती! ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती यहाँ आने के लिए उत्सुक होकर भी आपके बुलाये बिना नहीं आ पा रही हैं। वे दिव्य मंजूषा

Scanned by CamScanner

(पेटी) के साथ आकाश में प्रतीक्षा कर रही हैं।" तब पौर्णमासी देवी के आह्वान करने पर वागदेवी सभा में प्रवेश करके मंजूषा खोलकर कहने लगीं—"सावित्री माता ने यह सुगन्धित पद्म माला, इन्द्र पत्नि शचि देवी ने स्वर्ण सिंहासन, कुबेर पत्नि ऋद्धि ने रत्नालंकार, वरुण प्रिया गौरी ने छत्र, पवन पत्नि शिवा ने दो चामर, अग्नि भार्या स्वाहा ने वस्त्र द्वय एवं यम पत्नि धूमोर्णा ने मणि दर्पण कौतुक पूर्वक मेरे हाथ में दिये हैं।" तब आकाश मंडल में तुमुल स्वर्ग वाद्य ध्वनि आरम्भ हुई। तुम्बरु आदि गंधर्व गण मेघ के निकट आकर आनन्द सहित गान करने लगे। अप्सरा गण गगन में नृत्य करने लगीं। सौजन्यवती देव सुन्दरी गण ने आनन्द के साथ श्रीराधा का अभिषेकोत्सव आरम्भ किया। श्रीकृष्ण आनन्द चित्त से देखने लगे।

तब भगवती श्रीपौर्णमासी देवी की आज्ञा से भुवन पावनी नदियाँ, मानस गंगा, यमुना, सरस्वती तथा उनकी संगिनी देवीगण एवं सखीगण ने श्री राधा को स्वर्ण वेदी के ऊपर बिठाकर दिव्य महौषधि रसामृत को मणि कुंभों में भरकर उसके द्वारा अभिषेक करके वृन्दावन राज्य का आधिपत्य अर्पण किया। तब शची देवी द्वारा प्रदत्त स्वर्ण सिंहासन को वेदी के ऊपर स्थापित किये जाने पर श्रीराधा उसके ऊपर बैठ गई। तब यमुना देवी चामर व्यजन करने लगीं तथा सरस्वती देवी ने श्रीराधा के मस्तक पर छत्र धारण किया। ललितादि सखीगण चारों ओर स्थित होकर अपनी-अपनी सेवा में नियुक्त हुई। एवं मंजरी गण श्रीमती का महा श्रृँगार करने लगीं। तब सरस्वती देवी पेटिका से दिव्य सुगंधी पद्म माला लेकर बोलीं—"यह माला मेरी माता सावित्री देवी ने स्नेह के साथ भेजी है।" यह सुनकर विन्ध्यवासिनी देवी ने उस माला को लेकर श्रीकृष्ण के गले में अर्पण किया। यह देखकर परिहास-हास्यमुखी यमुना देवी बोलीं—"हे देवी! मेरी बहन श्रीराधा की माला तुमने अपने भ्राता को क्यों दी?" तब विन्ध्यवासिनी देवी हँसते-हँसते श्रीकृष्ण के कंठ से मनोहर हार के साथ दिव्यमाला लेकर श्रीराधा के कंठ में पहनाकर बोलीं—"अयि राधे! अपनी माला ग्रहण करो।" यह देखकर यमुना देवी बोलीं—"इस हार ने कठिन हृदय वाले का संग किया है, इसीलिए इससे हमें प्रयोजन नहीं है। यह बात कहकर हँसते-हँसते कौतुक सहित श्रीराधा का मनोहर हार उतारकर श्रीकृष्ण के कंठ में समर्पण किया। तब विन्ध्यवासिनी देवी ने श्री कृष्ण के वक्ष स्थल से मृगमद उतार कर श्रीराधा के ललाट पर तिलक निर्माण किया, सूर्य पुत्र शनि की जननी छाया देवी ने मस्तक में चूड़ा (मुकुट) बांधा, त्वष्टा नंदिनी संज्ञा देवी ने जूड़ा बांधा तथा ललितादि सखियों ने वागदेवी द्वारा लाये गये वस्त्रालंकारादि से वेश भूषा करके यम पत्नि धूमोर्णा द्वारा प्रदत्त मणि दर्पण सामने रखा। तब पौर्णमासी देवी ने घोषणा की—"हे वृन्दावन के स्थावर जंगम वृक्षलता! पशु, पक्षी आदि प्रजागण!! तुम सब उत्सव करो क्योंकि आज श्रीराधिका सखी रूपा सेनानी सबकी समृद्धा शालिनी होकर उद्यान पालिका वृन्दादेवी को विशुद्ध अमात्य पद पर नियुक्त करके तुम सब के राज्य शासन में प्रवृत्त हुई।" यमुना देवी बोलीं—"आज से अपने वृन्दावन के क्रीड़ा कानन में ललितादि सखीगण सुखपूर्वक तथा स्वच्छन्द रूप से कुसुमादि चयन करें।" विन्ध्यवासिनी देवी बोलीं—"यमुने! किन्तु कुसुम समूह माधव (बसन्त ऋतु तथा श्रीकृष्ण) के अधीन हैं।"

Scanned by CamScanner

इसके बाद सभी ने किंचित स्वल्पाहार किया। तत्पश्चात् देवी गण ने आनंदित मन से अपने-अपने स्थान के लिये प्रस्थान किया। श्रीकृष्ण ने भी प्रियनर्म सखाओं के साथ राधाकुण्ड के लिए गमन किया। श्रीराधा ने भी सखियों के साथ राधाकुण्ड में जाकर श्रीकृष्ण के साथ नित्यवत् मिलन विलासादि सभी लीलाएँ कीं।

नवद्वीप : भावशांति :

नवद्वीप में महाप्रभु भक्त वृन्द के साथ पुष्पोद्यान में ब्रजभावाविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी ने श्रीराधा का राज्याभिषेक लीला गान समाप्त किया। सभी भाव शांति दशा को प्राप्त हुए। बाद की लीला नित्यवत् हैं।

इति राज्याभिषेक लीला समाप्त।

श्रीराधा का जावटालय गमन

नवद्वीप में आश्विन शुक्ला त्रयोदशी के दिन के अंत में (सांयकाल में) महाप्रभु भावाविष्ट हैं। स्वरूप गोस्वामी ने महाप्रभु का मन जानकर ब्रज में सखियों सहित श्रीराधा के बरसाना से जावटालय गमन लीला पद गान किये। गान श्रवण कर सभी भक्त वृन्द ब्रजभाव में आविष्ट हुए।

ब्रज में आश्विन शुक्ला द्वादशी के दिन के अंत में जावट से दुर्मद गोप श्रीराधा तथा अनंग मंजरी को लेने के लिए वरसाना वृषभानुपुर आये। त्रयोदशी के सायंकाल में सखियों सहित श्रीराधा तथा अनंग मंजरी को पालकी पर आरोहण कराकर जावट ले गये।

दीपावली तथा अन्नकूट लीला प्रसंग

(कीर्तिक कृष्ण चतुर्दशी की लीला)

नवद्वीप :

नवद्वीप में महाप्रभु नित्यवत् लीला के अनुसार यथा समय स्वरूप के गान से ब्रज लीला यथानुरूप आस्वादन करते हैं।

ब्रजधाम : कृष्णा त्रयोदशी तथा चतुर्दशी :

ब्रज में कीर्तिक कृष्ण पक्ष में त्रयोदशी के दिन प्रातः काल में श्रीनन्द महाराज ने घोष वाद्य से

Scanned by CamScanner

घोषणा करवायी- "आज अपराह्न में गोवर्धन यज्ञ के लिए शकट पर द्रव्यादि सजाकर गोधनादि के साथ सभी गोवर्धन में गमन के लिए यात्रा करके तंबू गृह में जाकर अवस्थान करें।" श्रीकृष्ण ने नित्य लीला क्रम से गोचारणादि करके अपराह्न में सखाओं के साथ गृह में आकर स्नानादि करके स्वल्पाहार किया। तब श्रीनन्द महाराज परिवार सहित प्रजागण के साथ नानाविध द्रव्यादि लेकर शकट सजाकर गोवत्सादि के साथ गमन करके तंबू गृह में पहुँच गये। जावट तथा बरसाना से भी इसी प्रकार से सभी तंबू गृह में आ पहुँचे। इसके पहले ही नन्द महाराज ने तंबू गृह के स्थान आदि का संस्कार कराकर असंख्य तंबू गृह स्थापित कराये थे। वृषभानु महाराज एवं अभिमन्यु आदि ने भी इसी प्रकार से तंबू गृह का निर्माण कराया था। सभी ने परमानंद के साथ तंबू गृह में गोदोहन लीला तथा रात्रियापन लीला की। श्रीराधा कृष्ण ने रात्रि लीला में (प्रदोष काल में) तंबू गृह से वृन्दावन में अभिसार कर नित्यवत् रासादि लीला करके निशांत में पुनः वहीं आकर शयन किया। चतुर्दशी के दिन सभी ने तंबू गृह से प्रातः काल में गोवर्धन में आकर मानस गंगा से गोविन्द कुण्ड तक स्थान संस्कार करके तंबू गृह स्थापन किये। दक्षिण में श्रीवृषभानु महाराज के नील तंबू गृह समूह, उत्तर में अभिमन्यु आदि के रक्त वर्ण तंबू गृह समूह तथा मध्य में श्रीनन्द महाराजादि के पीत वर्ण तंबू गृह समूह संस्थापित हुए। सभी ने अपने-अपने डेरा में आकर नित्यवत् प्रातः कृत्य, मानस गंगा में स्नान, वेश-भूषा तथा भोजनादि किया। बाद में राधाकृष्ण की योगपीठ लीला नित्यवत् है। रात्रि लीला में राधाकृष्ण ने चन्द्र सरोवर में तथा वृन्दावन में वन भ्रमण तथा रासादि लीला करके नित्यवत् लीला क्रम से निशांत में अपने-अपने डेरे में आकर शयन किया।

(गोवर्धन वास के समय श्रीराधा पिता के डेरा में अवस्थान करती हैं।

कार्तिक अमावस्या—दीपदान लीला

(नवद्वीप में महाप्रभु की लीला अपराह्न तक नित्यवत्।)

ब्रजधाम : दीपदान :

ब्रज के गोवर्धन में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातः काल में श्रीनन्द महाराज एवं श्रीवृषभानु महाराज ने घोषणा की—"आज सांयकाल में दीपदान के लिए मानस गंगा के घाटादि को संस्कार करके उत्तम वातारण में सुसज्जित करना होगा।" तब श्रीनन्द महाराज ने ब्राह्मण गण तथा बंधु-बांधव सबको भोजन के लिए निमंत्रण भेजा। श्रीवृषभानु महाराज के डेरा में श्रीराधा सखियों के साथ प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषादि करके श्रीनन्द महाराज के डेरा में आई। तत्पश्चात् सभी ने स्वल्पाहार के बाद रंधन में नियुक्त होकर मिष्ठान्न, पक्वान्न, अन्न व्यंजनादि अनेकों प्रकार की सामग्री प्रस्तुत की। इसके बाद ठाकुर के भोग के अंत में सभी ने क्रमपूर्वक बैठकर भोजन करके आचमन के बाद तांबूल ग्रहण करके अपने-अपने तंबू में

Scanned by CamScanner

आकर विश्राम किया।

सखियों सहित श्रीराधा भोजन के अंत में कुछ समय तक विश्राम करके गोवर्धन निकुँज में श्रीकृष्ण के साथ मिलनादि करके योगपीठ लीला के बाद पुनः नन्द बाबा के डेरा में आयीं। वहाँ से वृषभानु बाबा के डेरा में आकर मिष्ठान्न आदि नैवेद्य प्रस्तुत करके सूर्य पूजा के बहाने अभिसार किया। उसके बाद नित्यवत् राधाकुण्ड में श्रीकृष्ण के साथ मध्याह्न लीलादि करके सूर्यकुण्ड में सूर्य पूजा करके अपराह्न में गोवर्धन में अपने-अपने डेरा में आकर सभी ने स्वल्पाहार किया। तब गोदोहन के बाद श्रीनन्द महाराजादि ने श्रीकृष्णादि को साथ लेकर मानस गंगा तीर पर गमन करके दीपदान उत्सव आरम्भ किया।

श्रीनन्द महाराज के आज्ञाक्रम से दास गण ने मानस गंगा के घाट तथा सोपान श्रेणी को उत्तम वातावरण में घृत- दीपावली से सुसज्जित करके प्रज्वलित किया। इस प्रकार से मानस गंगा के चारों ओर दीपमाला से उद्भासित होकर वृक्ष लता-भूमि आदि स्वर्ण ज्योतिर्मय हो उठी, यशोदा माता कीर्तिदा माता, सखियों के साथ श्रीराधादि, सखाओं के साथ श्रीराम कृष्णादि तथा समस्त गोप, गोपीगण ने दर्शन करके परम आनन्द लाभ किया। इसके बाद सभी अपने-अपने डेरा में आये। इसके बाद अन्यान्य लीला नित्यवत् हैं।

नवद्वीप में महाप्रभु नित्यवत् लीलाक्रम से सांयकाल में ब्रजभाव में भक्त वृन्द के साथ गंगातट पर आकर पूर्वोक्त मतानुसार दीपदान लीला करके गृह आकर अन्यान्य लीला नित्यवत् करते हैं।

ब्रजधाम : रासादि लीला :

ब्रज में राधाकृष्ण पहले दिन के समान अभिसार करके चन्द्र सरोवर में जाकर मिलन तथा विलास के अंत में दोनों कुण्ड के तीरस्थ योगपीठ की रत्न वेदी पर खड़े हुए। सखी तथा मंजरी गण चारों ओर यथा स्थान खड़ी हुई। तब योगपीठ सेवा के अंत में श्रीकृष्ण ने वंशी ध्वनि की तथा श्रीराधा ने पाविका बजायी। तब मानस गंगा, यमुना, पाताल गंगा, भानुखोर, पावन सरोवर आदि तरंगों से उच्छलित होकर स्रोत वेग से पद्मादि के साथ चन्द्र सरोवर में आकर श्रीराधाकृष्ण के पाद पद्मों का स्पर्श करके पद्मादि पुष्प समर्पण करते हुए पूजा करके स्वयं को कृतार्थ मानने लगे। तत्पश्चात् वन-भ्रमण तथा परासौली में रासलीला करके वृन्दावन में नित्यवत् रासादि लीला, मधुपान, कुँज मिलन, स्नान, भोजन तथा शयनादि लीला के अंत में निशांत काल में अपने-अपने डेरा में आकर सबने शयन किया।

Scanned by CamScanner

प्रतिपद लीला-अन्न कूट महोत्सव

(नवद्वीप लीला नित्यवत्)

ब्रजधाम : अन्नकूट :

गोवर्धन में प्रतिपद के दिन सभी ने यथारीति प्रातः कृत्य, स्नान, वेश-भूषादि की। श्रीनन्द महाराज ने ब्राह्मणों के द्वारा पंचामृतादि से श्री गिरिराज का अभिषेक कराया। तत्पश्चात् ब्राह्मणों के द्वारा अनेकों प्रकार के मिष्ठान्न, पक्वान्न, रोटी आदि तथा अन्न व्यंजनादि पर्वत के समान प्रचुर परिमाण में पाक करवाया। अनेक प्रकार के पूजोपकरण प्रस्तुत करके ब्रह्मणों ने विधिपूर्वक श्रीगिरिराज की पूजा करके समस्त प्रस्तुत सामग्री को बड़े-बड़े टोकनों (अति वृहदाकार पात्र विशेष) में भोग लगाया। श्रीकृष्ण एक मूर्ति से तो पिता के निकट विराजमान थे एवं अन्य एक प्रकाण्ड मूर्ति धारण करके श्री गिरिराज के ऊपर बैठ गये। ब्रजवासीगण ने जिस स्थान में बड़े-बड़े टोकनों में मिष्ठान्न, पक्वान्न, अन्न, व्यंजनादि एवं अनेकों प्रकार के फल-मूलादि भोग लगाये थे, उस सब सामग्री को वह विराट मूर्ति से सुवृहद् (अतिशय लम्बा) हाथ फैलाकर एक-एक ग्रास में एक-एक टोकना सामग्री भक्षण करने लगे। इधर श्रीकृष्ण सभी को सम्बोधन करके बोले—"ये देखो गिरिराज मूर्तिमान होकर समस्त द्रव्य का भोजन कर रहे हैं।" श्रीनन्द महाराजादि ब्रजवासीगण अति आश्चर्य चकित होकर परमानन्द में दर्शन करने लगे। श्रीगिरिराज ने इस प्रकार के आश्चर्यमय रूप से भोजन करके उसी आश्चर्यमय रूप से जलपान लीला करके आचमन किया। तत्पश्चात् स्तूपों में अर्पित तांबूलों को भक्षण करके ब्रजवासी गण द्वारा प्रदत्त राशि कृत माल्य चन्दनादि भी ग्रहण किया। ब्रजवासी गण ने शाल काष्ठ के स्तंभ से प्रदीप बनाकर यंत्र की सहायता से आरती की तदोपरान्त श्रीकृष्ण के साथ सभी के स्तव, स्तुति, दंडवत् प्रणामादि करने पर श्री गिरिराज देव सबको वांछित वर प्रदान करके अंतर्हित हो गये।

ब्रजवासियों के द्वारा—"किस में आपको संतोष होगा" यह बात पूछने पर श्रीगिरिराज देव ने कहा था—"मेरी परिक्रमा करने में ही मेरा परम सन्तोष है।" इसीलिए सभी ब्रजवासी गण ने गो-ब्राह्मणों को आगे करके श्रीगिरिराज जी की परिक्रमा आरम्भ की। आगे गायें, उसके बाद विप्रगण, उसके बाद गोपीगण उसके बाद गोपगण, उसके बाद सखियों सहित श्रीराधा तथा यूथेश्वरी गण—उसके बाद श्रीकृष्ण तथा सखा गण उसके बाद यशोदा-कीर्तिदा तथा उसके बाद नन्द महाराजादि एवं वृषभानु महाराजादि सभी श्रीकृष्ण कीर्ति यशोगान करते-करते गिरिराज की परिक्रमा करके डेरा में वापस आये। उसके बाद गाय तथा गोपाल पूजा के बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर गाय तथा स्वर्ण, चाँदी आदि दान किये। उसके बाद सभी ने भोजन करके अपने-अपने डेरा में विश्राम किया।

Scanned by CamScanner

श्रीराधाकृष्ण नित्यवत् गिरि-निकुँज में मिलन विलासादि करके योगपीठ मिलन के अंत में डेरा में वापस आये। उसके बाद श्रीकृष्ण वेश-भूषा करके सखाओं के साथ गोचारण के लिए गये तथा श्रीराधा सूर्य पूजा के बहाने राधाकुण्ड में जाकर श्रीकृष्ण के साथ मध्याह्न लीलादि करके सूर्य पूजा के अंत में अपने-अपने डेरा में वापस आये। तत्पश्चात् स्नान, भोजनादि करके विश्राम किया।

नवद्वीप में सांयकालीन लीला नित्यवत्।

ब्रज में सायंकाल में श्रीनन्द महाराजादि सभी ने सपरिवार अपने-अपने गोधनादि को लेकर वृन्दावन में कालीय दह के निकट जाकर डेरा डाला। वहाँ नित्यवत् गोदोहनादि तथा सांयकालीन भोजनादि करके राजसभा के बाद सभी ने अपने-अपने डेरा में शयन किया। श्रीराधा कृष्ण ने नित्यवत् अभिसारादि करके वृन्दावन में रात्रि लीलादि कर निशांत में अपने-अपने डेरा में आकर शयन किया।

इति गोवर्धन-पूजा तथा अन्न कूट-लीला समाप्त।

भातृ द्वितीया-लीला

(नवद्वीप में लीला नित्यवत्)

ब्रजधाम : भाई फोटा :

कालीय दह में कार्तिक शुक्ला द्वितीया के दिन प्रातः काल में श्रीराधिकादि सभी ने जागकर प्रातः कृत्यादि करके यमुना स्नान तथा वेश-भूषादि की। बहन सुनन्दा गोपी ने बलराम तथा श्रीकृष्ण के ललाट पर चंदन का फोटा (बिन्दु) लगाकर मिष्ठान्नादि भोजन कराया एवं श्रीराम-कृष्ण ने भी अपनी बहन को वस्त्रालंकार आदि प्रदान किये। यह सुनकर श्रीराधा ने श्रीदाम को इसी प्रकार से चंदन का बिन्दु लगाया मिष्ठान्नादि भोजन कराकर माल्य चंदन देकर प्रणाम किया। श्रीदाम चन्द्र ने श्रीराधा को वस्त्रालंकारादि दिये। तत्पश्चात् नित्यवत् नन्दीश्वर गमनादि लीला की।

नंदीश्वर में श्रीनन्द महाराजादि सभी ने स्वल्पाहार करके अपने-अपने शकटादि पर आरोहण करके साहार ग्राम में उपानन्द के गृह में गमन किया। वहाँ चतुर्विध रस युक्त अन्नादि भोजन करके सभी ने विश्राम किया। श्रीराधा कृष्ण कुँज विलास तथा योगपीठ लीला के अंत में घर आये। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण ने प्रिय नर्म सखाओं के साथ वन शोभा दर्शन के लिए गमन किया। श्रीराधा सूर्य पूजा के बहाने राधाकुण्ड में जाकर श्रीकृष्ण के साथ मध्याह्न लीला करके सूर्य पूजा कर अपराह्न में जावट में वापस आ गयीं। तत्पश्चात् स्नान, वेश-भूषादि करके स्वल्पाहार किया। नन्दमहाराजादि सभी ने उपानन्द से विदा लेकर अपने-अपने

Scanned by CamScanner

आलय गमन किया। श्रीराधा ने सखियों सहित जावट में आकर नित्यवत् गोदोहनादि लीला दर्शन की।

नवद्वीप में लीला नित्यवत् है।

इति भ्रातृ द्वितीया लीला समाप्त।

चन्द्र तथा सूर्यग्रहणकालीन लीला

(नवद्वीप—लीला नित्यवत्, ग्रहण के अंत में गंगास्नान।)

ब्रज में चन्द्र ग्रहण तथा सूर्य ग्रहण के समय बरसाना, नंदग्राम तथा जावट से सभी ने दीपदान लीलावत् गोवर्धन में आकर डेरा डाला। राधाकृष्ण मध्याह्न में राधाकुण्ड, रात्रि में चन्द्रसरोवर तथा वृन्दावन में लीलादि करते हैं। ग्रहण के अंत में सभी स्नान तथा वेश-भूषादि के बाद श्री गिरिराज का अभिषेक पूजा तथा भोगराग करके पूर्ववत् परिक्रमा करके भोजन विश्रामादि लीला अन्न कूट प्रतिपद के समान करते हैं।

दूसरे दिन प्रातः काल यमुना स्नान तथा वेश-भूषादि के बाद सबने स्वल्पाहार करके साहार में आकर भोजनादि किया। वहीं भातृ द्वितीयावत् लीलादि करके अपराह्न में सभी अपने-अपने गृह के लिए गमन करते हैं। तत्पश्चात् श्रीराधाकृष्ण की लीला नित्यवत् होती है।

इति नैमित्तिक लीला समाप्त।

Scanned by CamScanner